

## — दिन के चौघड़िये —

| रवि    | सोम    | मंगल   | बुध    | गुरु   | शुक्र  | शनि    |
|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|
| उद्वेग | अमृत   | रोग    | लाभ    | शुभ    | चल     | काल    |
| चल     | काल    | उद्वेग | अमृत   | रोग    | लाभ    | शुभ    |
| लाभ    | शुभ    | चल     | काल    | उद्वेग | अमृत   | रोग    |
| अमृत   | रोग    | लाभ    | शुभ    | चल     | काल    | उद्वेग |
| काल    | उद्वेग | अमृत   | रोग    | लाभ    | शुभ    | चल     |
| शुभ    | चल     | काल    | उद्वेग | अमृत   | रोग    | लाभ    |
| रोग    | लाभ    | शुभ    | चल     | काल    | उद्वेग | अमृत   |
| उद्वेग | अमृत   | रोग    | लाभ    | शुभ    | चल     | काल    |



## — रात्रि के चौघड़िये —

| रवि    | सोम    | मंगल   | बुध    | गुरु   | शुक्र  | शनि    |
|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|
| शुभ    | चल     | काल    | उद्वेग | अमृत   | रोग    | लाभ    |
| अमृत   | रोग    | लाभ    | शुभ    | चल     | काल    | उद्वेग |
| चल     | काल    | उद्वेग | अमृत   | रोग    | लाभ    | शुभ    |
| रोग    | लाभ    | शुभ    | चल     | काल    | उद्वेग | अमृत   |
| काल    | उद्वेग | अमृत   | रोग    | लाभ    | शुभ    | चल     |
| लाभ    | शुभ    | चल     | काल    | उद्वेग | अमृत   | रोग    |
| उद्वेग | अमृत   | रोग    | लाभ    | शुभ    | चल     | काल    |
| शुभ    | चल     | काल    | उद्वेग | अमृत   | रोग    | लाभ    |

### — मध्य मंगल —

हे प्रभो आनंददाता ज्ञान हमको दीजिये ।  
 शीघ्र ही इन दुर्दशा से पार बेड़ा कीजिए ॥  
 ऐसी अनुग्रह और किरपा हम पे हो परमात्मा ।  
 हो सभासद सब यहां के शीघ्र ही धरमात्मा ।  
 १- दो घोरा दो सांवरा दो लीला दो लाल ।  
 सोले जिनवर सुवर्ण वरणा बंधु वारवार ॥



# प्रकाशकीय निवेदन

आत्म कल्याण करने के साधन के रूप में स्वाध्याय और भजन स्तवनों का बहुत महत्त्व है। प्रभु की उपासना और धर्म की आराधना का यह बहुत आसान उपाय है। अतएव सर्व सामान्य जनता के लिये महिलाओं व पुरुष वर्ग के लिये भजन स्तवन आदि की विशेष उपयोगिता है। इसीलिये प्राचीन संत महात्माओं ने ढाल स्तवन आदि के रूप में धार्मिक तत्त्वों को सरल बनाया है, उन प्राचीन स्तवन ढाल आदि में वैराग्य रस खूब भरा हुआ है, वास्ते श्री वर्धमान स्था. जैन श्रमण संघीय परम पूजनीय महाराष्ट्र मंत्रीजी श्री १००८ श्री किशनलालजी महाराज सा. वी. प्रसिद्ध वक्ता पंडित रत्न श्री श्री १००८ श्री सौभागमलजी म. व कविवर श्री श्री १००८ श्री सूर्यमुनिजी म. साहेब के आज्ञा अनुयायी स्वर्गीय १००७ प्रवर्तनीजी श्री टीबूजी महाराज की सुशिष्या श्री स्व. प्रवर्तनीजी श्री राजकुंवरजी म. की सुशिष्या महासतीजी श्री केसर-कुंवरजी म. व सुशिष्या परम सेवाभावी श्री दिलसुख-कुंवरजी म. वैयावचणीजी श्री संपत कुंवरजी म. शान्त स्वभावी श्री दीपकुंवरजी म. विद्याभिलाषी श्री प्रमोदकुंवरजी म. आदि ठाणें चार का चातुर्मास रतलाम में हुआ। महासतीजी श्री दिलसुखकुंवरजी म. सा. ने बड़े परिश्रम पूर्वक जनता के लाभार्थ संग्रह किया है।

आशा है कि मुमुक्षु जन इसका सदुपयोग कर जीवन को समुन्नत बनावें। नोट-पुस्तक यत्न से पढ़ें।

# अनुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

पृष्ठ संख्या

|                                 |    |
|---------------------------------|----|
| चौबीसी                          | १  |
| चितामणी पार्श्वनाथ              | २  |
| परमेश्वर की महिमा               | २  |
| सद्गुरु वन्दना                  | ३  |
| वक्कारमंत्र की माला             | ४  |
| पार्श्वनाथजी का छन्द            | ४  |
| मंगलपाठ                         | ५  |
| अनुपूर्व                        | ६  |
| दशवैकालिक सूत्रम्               | ६  |
| सिरि वीरथुई                     | २१ |
| अहणवं नमिपवज्जाणामज्झयणं        | २४ |
| सुभाषित                         | ३० |
| श्री सुखविपाक सूत्रम्           | ३१ |
| श्री घंटाकर्ण स्तोत्रम्         | ४३ |
| श्री पेशठिया यन्त्र का छंद      | ४४ |
| श्री पार्श्वनाथ का त्रिभंगी छंद | ४४ |
| ॥ सप्तसंग्रह स्तोत्र बड़ा       | ४६ |
| ॥ ज्वर नो छंद                   | ४८ |
| कलश छप्पय                       | ५० |
| मंगल छन्द                       | ५० |
| श्री शांतिनाथ नो छंद            | ५१ |
| मंगलाष्टक छन्द                  | ५३ |
| पार्श्वनाथजी का छन्द            | ५४ |
| श्री शांतिनाथ स्वामी का छंद     | ५४ |
| चितामणी का छन्द                 | ५७ |
| श्री मणिभद्र वीर का छन्द        | ५८ |
| ॥ गुणगी गुण-माल                 | ६१ |

|                            |    |
|----------------------------|----|
| ॥ सिद्ध परमात्मा नी स्तुति | ६२ |
| ॥ भरत राजा की ढाल          | ६३ |
| शान्तिनाथजी का स्तवन       | ६५ |
| संधारा के स्तवन            | ६५ |
| मेरी भावना                 | ६६ |
| महावीर स्वामी की आरती      | ६८ |
| धावक के चौदह नियम          | ६८ |
| संवर लेने का पाठ           | ६९ |
| नमुक्कारसहिबं              | ६९ |
| उपवास                      | ६९ |
| एकासणा बियासणा             | ७० |
| आयंबिल                     | ७० |
| गौतम स्वामी की आरती        | ७० |
| महामंत्र की आरती           | ७१ |
| गुरु दर्शन                 | ७१ |
| श्री साधु वन्दना           | ७२ |
| श्री पद्मावती अलोचना       | ८० |
| स्तवन-अरणक मुनि            | ८४ |
| श्री शांतिनाथ              | ८५ |
| प्रार्थना                  | ८६ |
| स्तवन सौलह सतियां          | ८६ |
| स्तवन जैनी स्थान की अमर.   | ८७ |
| स्तवन ज्ञान लहरियों        | ८८ |
| स्तवन                      | ८८ |
| स्तवन चौबीस जिन            | ८९ |
| स्तवन ज्ञान की रेल         | ८९ |
| स्तवन सीता माता            | ९० |
| दया का स्तवन               | ९० |

| स्तवन                          | पृष्ठ |
|--------------------------------|-------|
| वीर प्रभु के दस सपना           | ६१    |
| स्तवन दिवाली का                | १२    |
| स्तवन चन्द्रगुप्त राजा के सोलह |       |
| स्वप्न                         | १२    |
| चवदह स्वप्न                    | ६७    |
| चौदह स्वप्ने                   | ६८    |
| स्तवन आदिश्वर प्रभु का         |       |
| पारणा                          | ६६    |
| स्तवन श्री मंदिर स्वामी को     | १००   |
| चुंदड़ी शील की                 | १००   |
| भावना                          | १०१   |
| स्तवन चन्दा प्रभु              | १०१   |
| श्री महावीर स्वामी को          |       |
| निशानो                         | १०२   |
| शान्तिनाथ का स्तवन             | १०६   |
| वीर जयन्ति                     | १०७   |
| आलोचना                         | १०८   |
| शांतीनाथ का तवन                | १०९   |
| तवन                            | ११०   |
| गौतम गणधर                      | ११०   |
| भजन सरवण का                    | १११   |
| राम को केवट की विनय            | ११२   |
| श्री जम्बूजी                   | ११३   |
| चन्दन बाला                     | ११४   |
| प्रेम                          | ११५   |
| सामायिक                        | ११५   |
| मीरा का भजन                    | ११६   |
| भजन                            | ११७   |
| इन्सान बनो                     | ११७   |

| स्तवन                        | पृष्ठ सं० |
|------------------------------|-----------|
| जैन साधु                     | ११८       |
| स्तवन                        | ११९       |
| श्री शांतिनाथ का जाप         | १२०       |
| विषापहार                     | १२०       |
| स्तवन-महावीर जयन्ति          | १२४       |
| श्री भक्तामर स्तोत्रम्       | १२५       |
| भक्तामर स्तोत्र की साधना     | १३१       |
| पाप की आलोचना                | १३२       |
| आरती श्रीगौतमस्वामी की       | १३५       |
| स्तवन-भगवान ऋषभदेव           |           |
| की बधाई एवं भजन              | १३६       |
| भजन                          | १३७       |
| माखन चोर से                  | १३७       |
| श्री कल्याण मन्दिर स्तोत्रम् | १३८       |
| चितामणी पार्श्वनाथ स्तोत्र   | १४३       |
| जैन झण्डाभिवादन              | १४५       |
| स्तवन जम्बू अणगार            | १४५       |
| संतो गुणग्राम २००६ के        | १४७       |
| जम्बूजी का स्तवन             | १४८       |
| बारहव्रत आराधना              | १५०       |
| सती अंजना की सज्जाय          | १५१       |
| प्रभु वन्दन                  | १५२       |
| विजयकंवर और विजया-           |           |
| कंवारी की                    | १५२       |
| चामड़ी का खेल                | १५३       |
| लघु साधु वन्दना की सज्जाय    | १५४       |
| देवानन्दाजी को स्तवन         | १५५       |
| श्री म. स्वामी का स्तवन      | १५६       |
| गौतम स्नेह                   | १५७       |



| स्तवन                       | पृष्ठ | स्तन                    | पृष्ठ |
|-----------------------------|-------|-------------------------|-------|
| नवपद का स्तवन               | १५४   | भावना                   | १८२   |
| महावीरजी की वंदना           | १५८   | शांतिनाथ प्रार्थना      | १८२   |
| माता की शिक्षा              | १५६   | शांति प्रार्थना         | १८३   |
| बहू का सास से कहना          | १६०   | भजन                     | १८३   |
| सासू के बोल                 | १६१   | भजन                     | १८४   |
| स्तवन                       | १६२   | आवश्यक                  | १८४   |
| „ चन्दनबाला                 | १६३   | शांतिनाथ का भजन         | १८५   |
| स्तवन                       | १६३   | शांतिनाथ                | १८६   |
| सोले सतियां रो स्तवन        | १६४   | दीवाली का स्तवन         | १८६   |
| स्तवन-श्रीगुहनी-गुणमहिमा    | १६४   | काया का स्तवन           | १८७   |
| सोले सतियों का स्तवन        | १६५   | श्री मंदिरजी का स्तवन   | १८७   |
| गुणधरजी के स्तवन            | १६६   | उत्पत्ति का स्तवन       | १८८   |
| शांतिनाथ के स्तवन           | १६६   | लावनी भरत प्रेम         | १८८   |
| सिद्ध शिला का स्तवन         | १६७   | भजन उपदेशी              | १८९   |
| पटराणी के स्तवन             | १६९   | लावणी कृष्णचंद्र म० की  | १८९   |
| गुरुणीजी गुण                | १७०   | प्रद्युम्न कुंवर चरित्र | १९०   |
| गुहणी गुणमाला               | १७०   | श्री शांभुकुंवर की ढाल  | २०४   |
| कलियुग का भजन               | १७१   | बुढ़ापे का स्तवन        | २१२   |
| मुक्तिरूपी लक्ष्मी का स्तवन | १७१   | राकड़ का स्तवन          | २१३   |
| एवंता मुनि को स्तवन         | १७२   | श्री मंदिरजी का स्तवन   | २१३   |
| श्री नेमिनाथ का स्तवन       | १७३   | नेमजी की घोड़ी          | २१५   |
| „ क्षमा धर्म                | १७५   | शरणा                    | २१७   |
| सीताजी का स्तवन             | १७६   | भजन                     | २१६   |
| अठारा पाप का स्तवन          | १७६   | चन्दनबाला को भजन        | २२०   |
| भजन                         | १७८   | विदाई का गीत            | २२०   |
| भजन काया की                 | १७६   | वीरा म्हारा गज          | २२१   |
| तीर्थंकर स्तुति             | १७९   | भजन                     | २२२   |
| सत्य उपदेश                  | १८०   | प्रभु गुण भजन           | २२२   |
| सतियां स्तवन                | १८०   | काया का स्तवन           | २२३   |
| दया का स्तवन                | १८१   | भजन                     | २२३   |
| भजन चुंदड़ी को              | १८२   | भजन सीताजी का           | २२४   |
|                             |       | संवत्सरी का स्तवन       | २२४   |
|                             |       | स्तवन                   | २२५   |
|                             |       | मेघरथ राजा का स्तवन     | २२५   |

स्तवन पृष्ठ

|                             |     |
|-----------------------------|-----|
| श्री शालभद्रजी की लावनी     | २२७ |
| „ ब्रह्मा सुन्दरीजीका स्तवन | २२६ |
| शांतिनाथ का स्तवन           | २३० |
| श्री शांतिनाथ का स्तवन      | २३१ |
| चेतनजी का स्तवन             | २३१ |
| स्वप्न का स्तवन             | २३२ |
| मोक्ष का स्तवन              | २३२ |
| भजन                         | २३३ |
| श्री मंदिर                  | २३४ |
| गुणधरजी का स्तवन            | २३४ |
| गौतम रास                    | २३४ |
| भजन                         | २३८ |
| पालना का स्तवन              | २३६ |
| भजन                         | २३६ |
| प्रभु से मांगणी का स्तवन    | २४० |
| तीन मोरथ                    | २४० |
| अरिहन्त स्तुति              | २४१ |
| श्री गुरु गुणमाला           | २४१ |
| राम का स्तवन                | २४१ |
| स्तवन                       | २४२ |
| सरसत का स्तवन               | २४२ |
| भजन                         | २४४ |
| गुरुवन्दन                   | २४५ |
| गुरुदर्शन                   | २४५ |
| स्तवन                       | २४५ |
| भोला रानी का स्तवन          | २४६ |
| भरुदेवी माता का स्तवन       | २४७ |
| श्रीमहावीर स्वामी का चौड़ा  | २४६ |
| अरिहन्त स्तुति              | २५४ |
| सिद्ध स्तुति                | २५५ |

स्तवन पृष्ठ

|                          |     |
|--------------------------|-----|
| श्री ऋषभदेव स्तुति       | २५६ |
| „ मंदिर स्वामी का स्तवन  | २५६ |
| समकित लावणी अष्टापदी     | २५७ |
| आगम काल की चौवीसी        | २५६ |
| प्रभु स्तुति             | २६० |
| बड़ी मांगलिक             | २६० |
| ऋषभदेव का स्तवन          | २६१ |
| रखियां का स्तवन          | २६२ |
| देवकी राणी का झरणा       | २६३ |
| पंच परमेश्वर स्तुति      | २६३ |
| चार झरणा                 | २६४ |
| वीरप्रभु का जन्माधिकार   | २६५ |
| श्री नवकार मंत्र का छन्द | २६६ |
| मृगा पुत्र का            | २६७ |
| कडुं बा की चौवीसी        | २६८ |
| ज्ञान पञ्चमी             | २७० |
| जिनवाणी                  | २७१ |
| पहेला मांगलिक            | २७१ |
| प्रभाती स्तवन            | २७२ |
| कर्मा को देणो            | २७३ |
| वर्ण की चौवीसी           | २७४ |
| धर्मरुचिजी का स्तवन      | २७५ |
| चौथा चक्रवर्ती का स्तवन  | २७६ |
| तेरह कांठिया             | २७८ |
| काली राणी का स्तवन       | २८० |
| होली का स्तवन            | २८२ |
| शांतिनाथ का स्तवन        | २८३ |
| शांतिनाथ का स्तवन        | २८४ |
| स्तवन                    | २८६ |
| पक्खावी की चौवीसी        | २८६ |

स्तवन पृष्ठ

|                            |     |
|----------------------------|-----|
| दशवैकालिक की ढाल           | २८८ |
| रुक्मणी की लावणी           | २९८ |
| श्री सुमद्राजी का स्तवन    | ३०१ |
| श्री भगु पुरोहित की ढाल    | ३०४ |
| कमलावती                    | ३०८ |
| शांतिनाथ का स्तवन          | ३११ |
| श्रीसोले सतियों का स्तवन   | ३१३ |
| स्तवन                      | ३१४ |
| स्तवन                      | ३१५ |
| श्रीधर्मदासजी म. की लावणी  | ३१५ |
| श्रीमहावीर स्वामी का स्त.  | ३१७ |
| भजन                        | ३१८ |
| रतनकामल                    | ३१८ |
| बड़ी चंदनघाला का स्तवन     | ३२३ |
| रावण की ढाल                | ३२५ |
| लकड़ी का तमासा             | ३३२ |
| श्री गुरुगुण की महिमा      | ३३२ |
| मरुदेवी माता का            | ३३३ |
| नवकारमंत्र                 | ३३३ |
| बलभद्रजी का स्तवन          | ३३४ |
| श्रीमेघकुंवर का स्तवन      | ३३४ |
| स्तवन                      | ३३६ |
| श्रीमहावीर स्वामी की लावणी | ३३६ |
| नेम राजुल का स्तवन         | ३३६ |
| भजन                        | ३४० |
| महावीर प्रार्थना           | ३४० |
| भजन                        | ३४० |
| भजन नारायण का              | ३४१ |
| श्री रहनेजी की ढाल         | ३४२ |
| कन्दु राजा का स्तवन        | ३४७ |
| चित्त समाधि का स्तवन       | ३४८ |
| स्तवन                      | ३५० |
| धन्नाजी की ढाल             | ३५१ |
| श्री अखाडभुतिजी की ढाल     | ३५७ |
| प्यारा पारसजी हो           | ३६५ |
| श्री आनन्दजी की ढाल        | ३६५ |

स्तवन पृष्ठ

|                         |     |
|-------------------------|-----|
| प्रार्थना               | ३७१ |
| तवन (श्री महावीर मंका)  | ३७२ |
| तीर्थरु गोत्र बांधे     | ३७२ |
| अरिहन्त का स्तवन        | ३७३ |
| स्तवन                   | ३७५ |
| शांतिनाथ का स्तवन       | ३७५ |
| गुणधरजी का स्तवन        | ३७५ |
| गीतम स्वामी का स्तवन    | ३७६ |
| श्री पुंडरीक कुंडरिक का |     |
| स्तवन                   | ३७७ |
| श्री नवकार मंत्र        | ३७८ |
| स्तवन                   | ३७८ |
| सोलमा शांतिनाथ का स्तवन | ३७९ |
| श्रीमंगल मोटका ए स्तवन  | ३८१ |
| श्री मेघकुंवरजी की ढाल  | ३८५ |
| स्तवन                   | ३८१ |
| स्तवन                   | ३८२ |
| स्तवन                   | ३९३ |
| भजन नींद का             | ३९३ |
| रसना का स्तवन           | ३९३ |
| स्तवन                   | ३९४ |
| स्तवन                   | ३९४ |
| आत्मा का भजन            | ३९४ |
| प्रेम का प्याला         | ३९५ |
| ॐ जय जगदीश हरे          | ३९५ |
| अनाथी मुनि की सज्जा     | ३९६ |
| स्तवन                   | ४०२ |
| तपस्या का स्तवन         | ४०३ |
| श्रीदशारण भद्रराजा की   |     |
| लावणी                   | ४०३ |
| भजन कबीरा का            | ४०५ |
| स्तवन                   | ४०५ |
| भजन                     | ४०६ |
| मां की भावना            | ४०७ |
| श्रीशांतिनाथ का स्तवन   | ४०८ |
| तवन                     | ४०८ |

# श्री दिलसुख माधुरी संग्रह

५

## चोबीसी

श्री आदि जिनंदं समरसकंदं, अजित जिनंदं भज  
प्राणी, संभव जगत्राता, शिवमग राता, द्यो सुख साता,  
हित आणी । अभिनंदन देवा, सुमति सु सेवा, करो नित  
मेवा, रिपुघाता ॥१॥ चोविस जिन राया मन वच काया,  
प्रणमू पाया, द्यो साता । टेर । श्रीपद्म सुपासं शशि गुणरासं  
सुविधि सुवासं हितकारी । श्री शीतलस्वामी, अंतरजामी,  
शिवगति गामी उपकारी । श्रेयांसदयाला, परम कृपाला  
भविजन बाला जगदाता ॥ २ ॥ वासु पूज्य सुकंतं, विमल  
अनंतं, धर्म श्रीसंत संतकारी । कुंथुं अहरनाथं, तज जग सार्थ  
मल्लि सुआथं संघधारी । मुनिसुव्रत सुनमि आत्माने दमी,  
दुर्मतिने वमी तप राता ॥३॥ रिष्ट नेमि बड़ाई, नार न  
व्याही, तोरण जाई छिटकाई । नाग नांगिन ताई, दिया  
बचाई, पारस साई सुखदाई । जय जय वर्धमानं गुण  
निधिखानं त्रिजग भानं शुद्ध आता । ४ ॥ संसार का फँदा,  
दूर निकंदा धर्म का छंदा, जिन लीना । प्रभु केवल पाया  
धर्म सुनाया, भवि समझाया, मुनि कीना । कहे रिख  
तिलोकं सदा तस थोकं, द्यो सुख थोकं, चित चाता ॥५॥



## चिन्तामणी पार्श्वनाथ

चिन्तामणी पारसनाथ हां रे २ चिन्ता तो म्हारी  
 चूरजो जी, पारसनाथ हां रे २ ॥ टेक ॥ अरज करुं कर  
 जोड़ हारे २ आशा तो म्हारी पुरजो जी, पार्श्वनाथ अश्व-  
 सैनराय ना कुंवर हारे २ वामादे राणी छावियाजी पारस  
 ॥२॥ ओच्छव करे सुर इन्द्र हारे २ त्रिलोकी जस छाविया  
 जी ॥३॥ जलता वचाया नागन नाग हां रे २ प्रभु तो  
 ऊपकारिया जी ॥४॥ हुवा घर इन्द्र देव हारे २ शासन  
 रखवालियाजी ॥५॥ जो सेवे प्रभु तोय हारे २ तेना तो  
 संकट सुर हरे जी ॥६॥ पग २ होवे प्रभु जीत हारे २  
 रागद्वेष दूराटलेजी ॥७॥ धननी मांगु प्रभु माल हारे २  
 सेवापुरी मेलदोजी ॥८॥ मांगु २ सेवा पुरीरो राज हारे २  
 फेर गर्भ नहीं आवसांजी पारसनाथ फेर जन्म नहीं आव-  
 सांजी ॥९॥ गुरु हीरालालजी प्रसाद हारे २ चौथमलजी  
 मुनि इम मणोजी पारसनाथ ॥१०॥

## परमेश्वर की महिमा

आनन्द मंगल करुं आरती, संत चरण की सेवा ।  
 शिवसुख कारण विघ्न निवारण, पंच परमेश्वर देवा ॥८॥  
 प्रथम आरति अरिहन्त देवा, कर्म खपे ततखेवा । चौसठ  
 इंद्र करे तुम सेवा, वाणी अमृत मेवा ॥१॥ द्वितीय आरती

सिद्ध निरंजन, भंजन भव २ फेरा । चिदानन्द सुखकंद  
अखंड, सिंटे भवो भव फेरा ॥२॥ तृतीय आरती श्री  
आचार्यजी, छत्तीस गुण गंभीरा । संघ सिरोमणि सोहे  
दिनमणि, दे हितबोध अनेरा ॥३॥ चौथी आरती उपा-  
ध्यायजी, भणै भणायै एहवा । सूत्र अर्थ करे ततखेवा सेवा  
करें तस देवा ॥४॥ पंचम आरती मर्व साधुजी, भारंड  
पंखी जेहवा पंच महाव्रत पाले दूषण टाले, अविचल शिव  
सुख लेवा । ५॥ भाव धरीने गावे आरती, पंच परमेष्ठि  
देवा । 'श्री विनयचन्द मुनि' गुण गावे, लेवा शिव सुख  
मेवा ॥६॥ गावे सीखे सुने आरती, भविजन भाषे एहवा ।  
तेह तया पातक टल जावे, नित उठ मंगल मेवा ॥७॥

### सद्गुरू वन्दना

गुरुदेव तुम्हें नमस्कार बार-बार है । श्री चरण शरण  
से हुआ जीवन सुधार है ॥ टेर ॥ अज्ञानतम हटा के ज्ञान  
ज्योति जगा दी, दृढ़ आत्म ध्यान में अखंड दृष्टि लगादी,  
उपदेश सदाचार सकल-सास्त्र सार है ॥१॥ विधि युक्त  
सिर झुका के कर रहे हैं वन्दना, अब हो रही मंगलमयी  
सद्भाव स्पन्दना, माधुर्य से मिटा रही मनका विकार है  
॥२॥ यह है मनोरथ नित्य रहे संत चरण में, अन्तिम  
समय समाधि मरण चार शरण में, यह 'सूर्यचन्द्र' मोक्ष  
मार्ग में बिहार है ॥ ३ ॥

## नवकार मंत्र की माला

सुबह और शाम की । प्रभुजी के नाम की, फेरो एक माला हो २॥ टेरे ॥ सकल सार नवकार मंत्र यह परमेष्ठि की माला । नरकादि दुर्गति का सचमुच जड़ देती है ताला कर्मों का यह जाला मेटे तत्काला ॥१॥ सुदर्शन और सीता ने जब फेरी यह माला । खूली भी सिंहासन बन गई, शीतल हो गई ज्वाला ॥ धर्म का यह प्याला, पीवो प्यारे लाला ॥२॥ सुमरन करके सोमा ने भी, नाग उठाया काला । महा भयंकर विषधर था वो, बनी पुष्प की माला शील जिसने पाला । सत्य है रखवाला ॥ ३ ॥ द्रौपदी का चीर बढ़ाया दुःशासन मद गाला । मैना सुन्दर श्रीपाल का, जीवन बना विशाला ॥ सुभद्रा जो महिला, चम्पा द्वार खोला ॥४॥ बाल कुमारी राजदुलारी देखो चन्दन बाला, दुःख भयंकर पाई फिर भी शिर मुंडा था मुला । तपस्या का तैला, सब दुःख टाला ॥५॥ विक्रय संवत् दो हजार ये बारह का तुम जानो । बालाघाट में चीमासा था, बड़ा ठाठ का मानो । गावो गुण भोला, हरि ऋषि बोला ॥ ६ ॥

## पार्श्वनाथजी का छन्द

ॐ जितु ॐ जितु ओजी उपसम धरि । ॐ ह्रीं पार्श्व अक्षर जपते ॥ भूत ने प्रेत ज्योतिष व्यंतर सरा । उपसमे

वार एक बीस गुणंते ॥१॥ दुष्ट ग्रह रोग शोग, जरा जंतु  
ने ताव एकांतरो दिन तपंते । गर्भ बंधन वारण सर्प विच्छीं  
विष बालका बालनी व्याधि हंते ॥२॥ शायणी डायणी  
रोहणी रांधणि, फोटीका मोटीका दुष्ट हंति । डाढ उंदर  
तणीं कोल नोला तणी, स्वान सियाल विकराल दंति ॥३॥  
धरण पदमावती समरी सोभों वति वाट अघाट अटवी  
अटंते । लक्ष्मी लुन्दो मले सुजस बेला बले सयल आसा  
फले मन हंसते ॥४॥ अष्ट महा भय हरे कान पीड़ा टले,  
उत्तरे सुल शीषक भणंते । वदति वर प्रीतयुं प्राति विमल  
प्रभु पार्श्व जिन नाम अभिराम मंते ॥५॥

## मंगल पाठ

अरिहन्त जय २ सिद्ध प्रभु जय २ साधु जीवन जय  
जय, जैन धर्म जय २ ॥ अरिहन्त मंगलं, सिद्ध प्रभु  
मंगलं । साधु जीवन मंगलं, जैन धर्म मंगलं ॥ अरिहन्त  
उत्तम, सिद्ध प्रभु उत्तम । साधु जीवन उत्तम, जैन धर्म  
उत्तम ॥ अरिहन्त शरणं, सिद्ध प्रभु शरणं । साधु जीवन  
शरणं, जैन धर्म शरणं ॥ चार शरण दुख हरण जगत में,  
और शरण नहीं कोई होगा । जो भवि प्राणि करे आराधन,  
उसका अजर अमर पद होगा ।



## तीन बार बोलने की धुन

ॐ अंतर्यामी देव, शुद्ध भावे कर्हं सेव ।

चित्त शान्ति नित्यमेव, ॐ अंतर्यामी देव ॥

## अनुपूर्वी

जहां १ है वहां नमो अरिहंताणं बोलना ।

जहां २ है वहां नमो सिद्धाणं बोलना ।

जहां ३ है वहां नमो आयरियाणं बोलना ।

जहां ४ है वहां नमो उदज्झायाणं बोलना ।

जहां ५ है वहां नमो लोए सव्वसाहूणं बोलना ।

## अनुपूर्वी गिनने का फल

अनुपूर्वी गुणिये जोय, छःमासी तपनो फल होय ।

संदेह मत आणो लिगार, निर्मल मने जपो नवकार ॥

शुद्ध वस्त्रे धरि विवेक दिन; दिन प्रत्ये गिणवी एक ।

एम अनुपूर्वी जे गुणे ते पांच सौ सागरना पापने हणे ॥

अशुभ कर्म के हरण को, मंत्र बड़ो नवकार ।

वाणी द्वादश अंग में, देख लियो तत्व सार ॥

सबसे बढ़कर है नवकार, करता है भव सागर पार ।

चउदे पूरन का यह सार, बारम्बार जपो नवकार ॥

2

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ |
| २ | १ | ३ | ४ | ५ |
| १ | ३ | २ | ४ | ५ |
| ३ | १ | २ | ४ | ५ |
| २ | ३ | १ | ४ | ५ |
| ३ | २ | १ | ४ | ५ |

2

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ४ | ३ | ५ |
| २ | १ | ४ | ३ | ५ |
| १ | ४ | २ | ३ | ५ |
| ४ | १ | २ | ३ | ५ |
| २ | ४ | १ | ३ | ५ |
| ४ | २ | १ | ३ | ५ |

m

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| १ | ३ | ४ | २ | ५ |
| ३ | १ | ४ | २ | ५ |
| १ | ४ | ३ | २ | ५ |
| ४ | १ | ३ | २ | ५ |
| ३ | ४ | १ | २ | ५ |
| ४ | ३ | १ | २ | ५ |

2

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| २ | ३ | ४ | १ | ५ |
| ३ | २ | ४ | १ | ५ |
| २ | ४ | ३ | १ | ५ |
| ४ | २ | ३ | १ | ५ |
| ३ | ४ | २ | १ | ५ |
| ४ | ३ | २ | १ | ५ |

4

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ५ | ४ |
| २ | १ | ३ | ५ | ४ |
| १ | ३ | २ | ५ | ४ |
| ३ | १ | २ | ५ | ४ |
| २ | ३ | १ | ५ | ४ |
| ३ | २ | १ | ५ | ४ |

3

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ५ | ३ | ४ |
| २ | १ | ५ | ३ | ४ |
| १ | ५ | २ | ३ | ४ |
| ५ | १ | २ | ३ | ४ |
| २ | ५ | १ | ३ | ४ |
| ५ | २ | १ | ३ | ४ |

9

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| १ | ३ | ५ | २ | ४ |
| ३ | १ | ५ | २ | ४ |
| १ | ५ | ३ | २ | ४ |
| ५ | १ | ३ | २ | ४ |
| ३ | ५ | १ | २ | ४ |
| ५ | ३ | १ | २ | ४ |

6

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| २ | ३ | ५ | १ | ४ |
| ३ | २ | ५ | १ | ४ |
| २ | ५ | ३ | १ | ४ |
| ५ | २ | ३ | १ | ४ |
| ३ | ५ | २ | १ | ४ |
| ५ | ३ | २ | १ | ४ |

9

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ४ | ५ | ३ |
| २ | १ | ४ | ५ | ३ |
| १ | ४ | २ | ५ | ३ |
| ४ | १ | २ | ५ | ३ |
| २ | ४ | १ | ५ | ३ |
| ४ | २ | १ | ५ | ३ |

20

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ५ | ४ | ३ |
| २ | १ | ५ | ४ | ३ |
| १ | ५ | २ | ४ | ३ |
| ५ | १ | २ | ४ | ३ |
| २ | ५ | १ | ४ | ३ |
| ५ | २ | १ | ४ | ३ |

११

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| १ | ४ | ५ | २ | ३ |
| ४ | १ | ५ | ० | ३ |
| २ | ५ | ४ | ० | ३ |
| ५ | १ | ४ | २ | ३ |
| ४ | ५ | १ | २ | ३ |
| ५ | ४ | १ | २ | ३ |

१२

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| २ | ४ | ५ | १ | ३ |
| ४ | २ | ५ | १ | ३ |
| २ | ५ | ४ | १ | ३ |
| ५ | २ | ४ | १ | ३ |
| ४ | ५ | २ | १ | ३ |
| ५ | ४ | २ | १ | ३ |

१३

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| १ | ३ | ४ | ५ | २ |
| ३ | १ | ४ | ५ | ० |
| १ | ४ | ३ | ५ | २ |
| ४ | १ | ३ | ५ | ० |
| ३ | ४ | १ | ५ | ० |
| ४ | ३ | १ | ५ | २ |

१४

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| १ | ३ | ५ | ४ | २ |
| ३ | १ | ५ | ४ | २ |
| १ | ५ | ३ | ४ | २ |
| ५ | १ | ३ | ४ | २ |
| ३ | ५ | १ | ४ | २ |
| ५ | ३ | १ | ४ | २ |

१५

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| १ | ४ | ५ | ३ | २ |
| ४ | १ | ५ | ३ | २ |
| १ | ५ | ४ | ३ | २ |
| ५ | १ | ४ | ३ | २ |
| ४ | ५ | १ | ३ | २ |
| ५ | ४ | १ | ३ | २ |

१६

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| ३ | ४ | ५ | १ | २ |
| ४ | ३ | ५ | १ | २ |
| ३ | ५ | ४ | १ | २ |
| ५ | ३ | ४ | १ | २ |
| ४ | ५ | ३ | १ | २ |
| ५ | ४ | ३ | १ | २ |

१७

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| ० | ३ | ४ | ५ | १ |
| ३ | २ | ४ | ५ | १ |
| ० | ४ | ३ | ५ | १ |
| ५ | २ | ३ | ५ | १ |
| ३ | ४ | २ | ५ | १ |
| ४ | ३ | ० | ५ | १ |

१८

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| २ | ३ | ५ | ४ | १ |
| ३ | २ | ५ | ४ | १ |
| २ | ५ | ३ | ४ | १ |
| ५ | २ | ३ | ४ | १ |
| ३ | ५ | २ | ४ | १ |
| ५ | ३ | २ | ४ | १ |

१९

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| २ | ४ | ५ | ३ | १ |
| ४ | ० | ५ | ३ | १ |
| २ | ५ | ४ | ३ | १ |
| ५ | २ | ४ | ३ | १ |
| ४ | ५ | ० | ३ | १ |
| ५ | ४ | ० | ३ | १ |

२०

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| ३ | ५ | ५ | २ | १ |
| ४ | ३ | ५ | २ | १ |
| ३ | ५ | ४ | २ | १ |
| ५ | ३ | ४ | २ | १ |
| ४ | ५ | ३ | २ | १ |
| ५ | ४ | ३ | २ | १ |

## दशवैकालिक सूत्रम्

धम्मो मंगलमुक्किड्डं, अहिंसा संजमो तवो । देवा वि  
तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो ॥१॥ जज्ञ दुमस्स पुप्फेसु  
भमरो आवियइ रसं । ण य पुप्फं किलामेई, सो य पीणेई  
अप्पयं ॥२॥ एमेए समणा भुत्ता, जे लोए नंति साहुणो ।  
विहंगमा व पुप्फेसु दाणभत्तेसणे रया ॥ ३ ॥ वयंच वित्ति  
लब्भामो, ण य कोइ उवहम्मइ अहागडेसु रीयते, पुप्फेसु  
भमरा जहा ॥४॥ महुगारसमा बुद्धा, जे भवंति अणिस्मिया  
नाणापिंडरया दंता, तेण वुच्चंति साहुणो । प्ति वेमि ॥५॥  
इति दुमपुप्फियनासं पढमज्झयणं समत्तं ॥१॥ कहं नु कुज्जा  
सामरणं, जो कामे न निवारण । पए पए त्रिसीयंतो,  
संकप्पस्स वस गओ ॥१॥ वत्थगंधमलंकारं, इत्थीओ सय-  
णाणि य । अच्छंदा जे न भुजंति, न से चाह ति वुच्चई । २ ।  
जे य कंते पिए भोए, लद्धे विपिट्ठि कुव्वइ । साहीणे चयइ  
भोए, से हु चाह ति वुच्चई । ३ । समाइ पेहाई परिव्वयंतो,  
सिया मणो निस्सरई बहिद्धा । न सा महं नोवि अहं पि तीसे  
इच्चेव ताओ विणएज्ज रागं । ४ । आयावयाही चय सोम-  
मल्लं, कामे कमाहि कमियं खु दुक्खं । छिदाहि दोसं विण-  
एज्ज रागं, एवं सुही होहिसि संपराए ॥५॥ यक्खंदे जलियं  
जोइ धूमकेउं दुरासयं । नेच्छंति वंतयं भोत्तुं कुले जाया  
अगंधणे ॥६॥ धिग्स्थु ते जसोकामी, जो तं जीवियवरणा ।

वतं इच्छसि आवेऊं, सेयं ते मरणं भवे ॥७॥ अहं च भोग-  
 रायस्त, तं चासि अंधगवणिहणो । सा कुले गंधणा होमो  
 संजमं गिहूओ चरा ॥८॥ जह तं काहिसि भावं, जा जा दिच्छ-  
 सि नारिओ । वायाविद्धो व्व हडो, अट्ठिअप्पा भविस्ससि  
 ॥९॥ तीसे सो वयणं सोच्चा, संजयाइ सुभासिर्यं । अंकु-  
 सेण जहा नागो, धम्मे संपडिवाइओ ॥१०॥ एवं करंति  
 संबुद्धा पंडिया पवियक्खणा । विणियट्ठंति भोगेसु, जहा से  
 पुरिसुत्तमो ॥त्ति वैमि ॥११॥ इति सामण्यपुव्वयं नाम  
 अज्झयणं समत्तं । २ संजमे सुट्ठिअप्पाणं, विप्पमुक्काण  
 ताइणं । तेसिमेयमणाइणं, निग्गंधाण महेसिणं । १। उद्दे-  
 सियं कीयगडं, नियागमभिइडाणि य । राइभरो सिणाणे  
 य, गंधमल्ले य वीयणे । २॥ सनिही गिहिमत्ते य रायपिंडे  
 किमिच्छए । संवाहणा दंत पडोयणा य, संपुच्छणा देहपलो-  
 यणा य ॥३॥ अट्ठावए य नालीए, छत्तस्य य धारणट्ठाए ।  
 तेगिच्छं पाहणापाए, समारंभं च जोइणो ४॥ सिज्जायर-  
 पिंडं च, आसंदीपलियंकए । गिहंतगनिसिज्जा य,  
 गायस्सुव्वट्ठणाणि य । ५॥ गिहिणो वेआवडियं, जा य  
 आजीववत्तिया । तत्तानिबुडभोइचं आउरस्सरणाणि य ६  
 मूलए सिंगवेरे य, उच्छुखंडे अनिबुडे । कंदे मूले य सच्चिरो  
 फले वीए य आमए ॥७॥ सोवच्चले सिंधवे लोणे, रोमा-  
 लोणे य आमये । नामुद्दे फंगुवाणे य कालालोणे य आमए

॥८॥ धुवणे चि वमणे य, वत्थीकम्मविरेयणे । अंजणे दंत-  
वणे य गायन्भंगविभूषणे ॥९॥ सव्वमेयमणाइन्नं, निग्गं-  
आणं महेसिणं संजमम्मि अ जुत्ताणं, लहुभूयविहारिणं । १०।  
पंचासनपरिणयाया, तिगुत्ता छसु संजया । पंचनिग्गहणा  
भीरा, निग्गंथा उज्जुदंसिणो ॥११॥ आयावयंति गिम्हेसु,  
हेमंतेसु अदाउडा । बासासु पडिसंलीणा, संजया सुसमा-  
दिया ॥१२॥ परीसहरिऊदंत । धूअमोहा जिहंदिया । सव्व-  
दुक्खपहोणद्धा, पक्कमन्ति महेसिणो ॥१६॥ दुक्कराहं  
करिआणं, दुस्महाइ सहित्तु य । केइ त्थ देवलोएसु, केइ  
सिज्झन्ति नीरया ॥१४॥ खविता पुव्वकमाहं संजमेअ  
तवेअ य । सिद्धिमग्गमणुप्पत्ता, ताइणो परिणिव्वुद्धा ॥ चि  
वेमि ॥१५॥ इति खुड्डयायारकज्ञा नाम तइयमज्झयणं समत्तं  
॥३॥ सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमवखायं इह खलु  
छज्जीवणिया नामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं  
कासवेणं पवेइया सुअक्खाया सुपन्नता सेयं मे अहिज्जिउं  
अज्झयणं धम्म पणत्तो । कयग खलु सा छज्जीवणिया  
नामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया  
सुअक्खाया सुपन्नता सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्म-  
पणत्ता ? इमा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयणं  
समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुअक्खाया  
सुपन्नता सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपन्नति । तं

જહા પુઢવિકાઈયા, આઝકાઈયા, તેઝકાઈયા, વાઝકાઈયા,  
 વળસ્સઈકાઈયા, તસકાઈયા । પુઢવી ચિત્તમંતમવલાયા  
 અળેગજીવા પુઢોસત્તા અન્નત્થ સત્થપરિણેણં । આઝ  
 ચિત્તમંતમવલાયા અળેગજીવા પુઢોસત્તા અન્નત્થ સત્થ-  
 પરિણેણં । તેઝ ચિત્તમંતમવલાયા અળેગજીવા પુઢો  
 સત્તા અન્નત્થસત્થપરિણેણં । વાઝ ચિત્તમંતમવલાયા અળેગ-  
 જીવા પુઢોસત્તા અન્નત્થ સત્થપરિણેણં । વળસ્સઈ ચિત્ત-  
 મંતમવલાયા અળેગજીવા પુઢોસત્તાઅન્નત્થ સત્થપરિણેણં  
 તં જહા અગ્ગવીયા, મૂલવીયા પોરવીયા, લંધવીયા વીપરુહા  
 સંમુચ્છિમા, તળલયા, વળસ્સઈકાઈયા, સબીયા, ચિત્તમં-  
 તમવલાયા અળેગજીવા, પુઢોસત્તા, અન્નત્થ સત્થપરિણેણં  
 સે જે પુણ્ણમે અળેગે વહવે તસા પાળા, જહા ઝંડયા,  
 પીયયા, જરાડયા, રસયા, સંસેઈમા, સંમુચ્છિમા, ઝભિયા,  
 ઝવવાઈયા, જેસિ કેસિ ચ પાળાણં, અભિકકંતં પઢિકકંતં,  
 સંકુચિયં પસારિયં, રૂપં ભતં તસિયં, પજાઈયં, આગઈ-  
 ગઈવિલાયા, જે અ કોહપયંગા જા ય કુંથુપિપીલિયા,  
 સવ્વે લેહંદિયા સવ્વે તેહંદિયા, સવ્વે ચ્ઞરિંદિયા, સવ્વે  
 પન્નિવિયા, સવ્વે તિરિકલ્લ જોળિયા, સવ્વે નેરઈયા, સવ્વે  
 મણુઆ. સવ્વે દેવા, સવ્વે પાળા, પરમાહમ્મિઆ, એસો  
 લલુ છઠ્ઠો જીવનિકાઓ તસકાઓ તિ પવુચ્ચઈ ।  
 ઇચ્છેસિ છળ્લં જીવનિકાયાણં નેવ સયં હંડં સમારંભિજ્જા,

नेवऽत्रेहि दंडं समारंभिज्जा दंडं समारंभन्ते विअत्रे न  
समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं  
वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न  
समणुजागामि । तस्स भंते पडिक्कमामि निन्दामि गरि-  
हामि अप्पाणं वोसिरामि । पढमे भन्ते महव्वए पाणा  
इवायाओ वेरमणं सव्वं भन्ते ! पाणांइवायं पच्चक्खामि ।  
से सुहुनं वा, वायरं वा, तसं वा, थावरं वा, नेव पाणे  
अइवाइज्जा, नेवऽत्रेहि पाणे अइवायाविज्जा, पाणे  
अइवायन्तेऽवि अत्रे न समणुजाणामि जावज्जीवाए  
तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि  
करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्क-  
मामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि । पढमे  
भन्ते ! महव्वए उवठिठ्ठोमि सव्वाओ पाणाइवायाओ  
वेरमणं ॥१॥ अहावरे दुच्चे भन्ते ! महव्वए मुसा-  
वायाओ वेरमणं । सव्वं भन्ते ! मुसावायं पच्चक्खामि ।  
से कोहा वा, लोहा वा, भया वा, हाता वा नेव सयं  
मुसं वइज्जा नेवऽत्रेहि मुसं वायाविज्जा, मुसं वयन्ते वि  
अत्रे न समणुजाणामि जावज्जीवाए, तिविहं तिविहेणं  
मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं  
न समणुजागामि । तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि  
गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि । दुच्चे भन्ते ! महव्वए



उवठिठ्ओमि सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं ॥२॥  
 अहावरे तच्चे भन्ते ! महव्वए ! अदिन्नादाणाओ वेर-  
 मणं । सव्वं भन्ते ! अदिन्नादागं पच्चक्खामि से गामे वा,  
 नयरे वा अप्पं वा, बहूं वा, अणुं वा, थूलं वा चित्तमंतं वा  
 अचित्तमंतं वा, नेव सयं अदिन्नं गिण्हज्जा, नेवऽन्ने हिं अदिन्नं  
 गिण्हाविज्जा, अदिन्नं गिण्हन्ते वि अन्ने न समणुजाणामि,  
 जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण मणेणं वायाए, कायेणं  
 न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि ।  
 तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं  
 वोसिरामि । तच्चे भन्ते ! महव्वए उवठिठ्ओमि सव्वाओ  
 अदिन्नादाणाओ वेरमणं ॥३॥ अहावरे चउत्थे भन्ते !  
 महव्वए मेहुणाओ वेरमणं सव्वं भन्ते ! मेहुणं पच्च-  
 क्खामि से दिव्वं वा, माणुसं वा, तिरिक्खजोगियं वा,  
 नेव सयं मेहुणं सेविज्जा नेवन्नेहि मेहुणं से वाविज्जा मेहुणं  
 से व न्ते वि अन्ने न समणुजाणामि । जावज्जीवाए तिविहं  
 तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि  
 करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भन्ते ! पडिक्क-  
 मामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि । चउत्थे  
 भन्ते ! महव्वए उवठिठ्ओमि सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं  
 ॥४॥ अहावरे पंचमे भन्ते ! महव्वए परिग्गहाओ  
 वेरमणं । सव्वं भन्ते ! परिग्गहं पच्चक्खामि ।

से अप्पं वा, वहुं वा, अणुं वा थूलं वा, चित्तमंतं वा  
 अचित्तमंतं वा । नेव सयं परिग्गहं परिगिण्हज्जा, नेव-  
 ण्हेहि परिग्गहं परिगिण्हाविज्जा, परिग्गहं परिगिण्हन्ते  
 वि अण्णे न समणुजाणिज्जा । जावज्जीवाए तिविहं  
 तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि  
 करंतांपि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भन्ते पडिक्क-  
 मामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि । पंचमे  
 भन्ते महव्वए उवठिठ्ओमि सव्वाओ परिग्गहाओ वेर-  
 मणं ॥५॥ अहावरे छठ्ठे भन्ते ! वए राइभोअणाओ  
 वेरमणं । सव्वं भन्ते ! राइभोयणं पच्चक्खामि । से  
 असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा । नेव सयं राइं  
 भुंजिज्जा नेवण्हेहि राइं भुंजाविज्जा, राइं भंजंतेऽवि  
 अण्णे न समणुजाणामि । जावज्जीवाए, तिविहिं  
 तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न कारेमि न कारवेमि  
 करंतांपि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भन्ते पडिक्कमामि  
 निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि । छट्ठे भन्ते !  
 वए उवठिठ्ओ मि सव्वाओ राइभोअणाओ वेरमणं  
 ॥६॥ इच्चेयाइं पंच महव्वयाइं राइभोअण विरमण-  
 छठ्ठाइं अत्तहियठ्ठ्याए उवसंपज्जित्ताणं विहरामि ॥  
 से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिह्यपच्च-  
 क्खायपावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परि-

सागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा से पुढवि वा भित्ति  
 वा सिलं वा लेलुं वा ससरक्खं वा कायं ससरक्खं वा  
 वत्थं हत्थेण वा पाएण वा कठ्ठेण वा किंलिचेण  
 अंगुलियाए व सिलागाए वा सिलागहत्थेण वा न  
 आलिहिज्जा, न विलिहिज्जा, न घट्टिज्जा, न भिदिज्जा  
 अन्नं न आलिहाविज्जा न विलिहाविज्जा न घट्टाविज्जा  
 न भिदाविज्जा । अन्नं आलिहंतं वा विलिहंतं वा घट्टंतं  
 वा, भिदंतं वा न समणुजाणिज्जा । जावज्जीवाए तिविहं  
 तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि  
 करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भन्ते ! पडिक्क-  
 मामि तिदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥  
 से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खा-  
 यपावक्कमे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा परिसागओ  
 वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से उदगं वा, ओसं वा  
 हिमं वा, महियां वा, करगं वा हरितणुगं वा, सुद्धोदगं  
 वा, उदउल्ल वा काय, उदउल्ल वा वत्थ, ससिणिद्धं  
 वा कायं, ससिणिद्धं वा वत्थं न आमुसिज्जा, न  
 संफुसिज्जा, न आवीलिज्जा, न पवीलिज्जा, न  
 अक्खोडिज्जा, न पक्खोडिज्जा न आयाविज्जा, न पया-  
 विज्जा, अन्नं न आमुसाविज्जा, न संफुसाविज्जा, न  
 आवीलावेज्जा न पवीलाविज्जा, न अक्खोडाविज्जा,

न पक्खोडाविज्जा, न आयाविज्जा, न पयाविज्जा, अन्नं  
 आमुसंतं वा, संफुसंतं वा, आविलंतं वा, पवीलंतं वा,  
 अक्खोडंतं वा, पक्खोडंतं वा, आयावन्तं वा, पयावन्तं वा न  
 समणुजाणिज्जा, जावज्जीवाए, तिविहं तिविहेणं मणेणं  
 वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करन्तं पि अन्नं न समणु-  
 जाणामि । तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि  
 अप्पाणं वोसिरामि ॥ २ ॥ से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा,  
 संजय-विरय पडिहयपच्चक्खाय पावकम्मे दिआ वा, राओ  
 वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्तो वा, जागरमाणे वा, से  
 अगणिं वा, इङ्गालं वा, मुम्ममुरं वा, अच्चि वा, जालं वा  
 अलायं वा, सुद्धागणिं वा, उक्कं वा, न उज्जेज्जा, न घट्टेज्जा  
 न भिन्देज्जा, न उज्जालेज्जा, न पज्जालेज्जा न निव्वावेज्जा  
 अन्नं न उज्जावेज्जा न घट्टावेज्जा, न भिन्दावेज्जा, न उज्जा-  
 लावेज्जा न पज्जलावेज्जा, न निव्वावेज्जा अन्नं उज्जन्तं  
 वा, घट्टन्तं वा भिदन्तं वा, उज्जालन्तं वा, पज्जालन्तं वा,  
 निव्वावन्तं वा, न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए, तिविहं  
 तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करन्तं  
 ऽपि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि  
 गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ ३ ॥ से भिक्खू वा  
 भिक्खुणी वा, संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे, दिआ  
 वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्तो वा,  
 जागरमाणे वा, से सिएण वा, विहुयणेण वा, तालियंटेण

वा, पत्तेण वा, पत्तभंगेण वा, साहाए वा, साहाभंगेण वा,  
 पिहूणेण वा, पिहूणहत्थेण वा, चेलेण वा, चेलकस्त्रेण वा,  
 हत्थेण वा, मुहेण वा, अप्पणो वा कायं, बाहिरं वा वि  
 पुग्गलं न फुमिज्जा, न वीएज्जा, अन्नं न फुमाविज्जा, न  
 वीआविज्जा, अन्नं फुमंतं वा, वीअंतं वा न समणुजाणिज्जा  
 जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं  
 न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि ।  
 तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि  
 अप्पाणं वोसिरामि ॥ ४ ॥ से भिक्खू वा, भिक्खुणी  
 वा, संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकस्से, दिआ वा राओ  
 वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्तो वा, जागरमाणे वा,  
 से बीएसु वा, बीयपइठ्ठेसु वा, रूढेसु वा, रूढपइठ्ठेसु वा,  
 जाएसु वा, जायपइठ्ठेसु वा, हरिएसु वा, हरियपइठ्ठेसु वा,  
 छिन्नेसु वा, छिन्न पइठ्ठेसु वा, सचित्तोसु वा, सचित्ताकोल-  
 पडिनिस्सिएसु वा न गच्छेज्जा, न चिट्ठेज्जा न निसीइज्जा,  
 न तुअट्ठिज्जा, अन्नं न गच्छाविज्जा, न चिठ्ठाविज्जा, न  
 निसीयाविज्जा, न तुअट्ठाविज्जा, अन्नं गच्छंतं वा चिठ्ठंतं  
 वा, निसिअन्नं वा, तुयट्ठंतं वा न समणुजाणामि जावज्जीवाए  
 तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि  
 करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि  
 निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥ से भिक्खू वा  
 भिक्खुणी वा, संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकस्से, दिआ

वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा,  
जागरमाणे वा, कीडं वा, पयंगं वा, कुंशुं वा, पिपीलियं वा,  
हत्थंसि वा, पायंसि वा, बाहुंसि वा, उरंसि वा, उदरंसि  
वा, सीसंसि वा, वत्थंसि वा, पडिग्गहंसि वा कंबलंसि वा,  
पायपुच्छणंसि वा, रयहरणंसि वा, गुच्छगंसि वा, उंडगंसि  
वा, दंडगंसि वा, पीढगंसि वा, फलगंसि वा, सेज्जंसि वा,  
संथारगंसि वा, अन्नयरंसि वा तहप्पगारे उवगरणजाए तओ  
संजयामेव पडिलेहिय पडिलेहिय पमज्जिअ पमज्जिअ  
एगंतमवणिज्जा, नो णं संघायमावज्जिज्जा ॥६॥ अजयं चर  
माणो अ, पाणभूयाई हिंसइ । बन्धइ पावयं कम्मं तं से  
होइ कडुअं फलं ॥१॥ अजयं चिट्ठमाणो अ, पाणभूयाई  
हिंसइ । बन्धइ पावयं कम्मं तं से होइ कडुअं फलं ॥२॥  
अजयं आसमाणो अ, पाणभूयाई हिंसइ । बन्धइ पावयं  
कम्मं, तं से होइ कडुअं फलं ॥३॥ अजयं सयमाणो अ,  
पाणभूयाई हिंसइ । बन्धइ पावयं कम्मं तं से होइ कडुअं  
फलं ॥४॥ अजयं भुंजमाणो अ, पाणभूयाई हिंसइ । बन्धइ  
पावयं कम्मं, तं से होइ कडुअं फलं ॥५॥ अजयं भासमाणो  
अ, पाणभूयाई हिंसइ । बन्धइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुअं  
फलं ॥६॥ कहं चरे कहं चिट्ठे, कहमासे कहं सए । कहं  
भुंजन्तो भासन्तो पावकम्मं न बन्धइ ॥७॥ जयं चरे जयं  
चिट्ठे, जयमासे जयं सए । जयं भुंजन्तो भासन्तो, पावकम्मं  
न बन्धइ ॥८॥ सव्वभूयप्पभूयस्स, सम्मं भूयाइ पासओ ।

पिहिआसवस्स दंतस्स, पावकम्मं न बंधइ ॥९॥ पढमं नाणं  
 तओ दया, एवं चिट्ठइ सव्वसंजए । अन्नाणी किं काही  
 किंवा नाही सेयपावगं ॥१०॥ सोच्चा जाणइ कल्लाणं,  
 सोच्चा जणाइ पावगं । उभयं पि जाणइ सोच्चा जं सेयं  
 तं समायरे ॥११॥ जो जीवे वि न याणइ, अजीवे वि न  
 याणइ । जीवाजीवे अयाणंतो कहं सो नाहीइ संजमं ॥१२॥  
 जो जीवे वि वियाणइ, अजीवे वि वियाणइ । जीवाजीवे  
 वियाणंतो, सो हू नाहीइ संजमं ॥१३॥ जया जीवमजीवे य,  
 दोवि एए वियाणइ । तया गइं बहुविह, सव्वजीवाण जाणइ  
 ॥१४॥ जया गइं बहुविहं, सव्वजीवाण जाणइ । तया पुण्णं  
 च पावं च, बंधं मुखं च जाणइ ॥१५॥ जया पुण्णं च  
 पावं च, बंधं मुखं च जाणइ । तथा निविदए भोए, जे  
 दिव्वे जे य माणुसे ॥१६॥ जया निविदए भोए, जे दिव्वे  
 जे य माणुसे । तया चयइ संजोगं, सब्बिन्तरं बाहिरं ।  
 ॥१७॥ जया चयइ संजोगं, सब्बिन्तरं बाहिरं । तथा मुंडे  
 भवित्ताणं, पव्वइए अणगारियं ॥१८॥ जया मुंडे भवित्ताणं,  
 पव्वइए अणगारियं । तथा संवरमुक्किट्ठं, धम्मं फासे अणुत्तरं  
 ॥१९॥ जया संवरमुक्किट्ठं, धम्मं फासे अणुत्तरं । तथा धुणइ  
 कम्मरयं, अवोहिकलुसं कडं ॥२०॥ जया धुणइ कम्मरयं,  
 अवोहिकलुसं कडं । तया सव्वत्तगं नाणं, दंसणं चाभिगच्छइ  
 ॥२१॥ जया सव्वत्तगं नाणं, दंसणं चाभिगच्छइ । तया  
 लोगमलोगं च, जिणो जाणइ केवली ॥२२॥ जया लोगमलोगं

च जिणो जाणइ केवली । तथा जोगे निहंभित्ता, सेलेसिं  
 पडिवज्जइ ॥२३॥ जया जोगे निहंभित्ता, सेलेसिं पडिवज्जइ ।  
 तथा कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं गच्छइ नीरओ ॥ २४ ॥ जया  
 कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं गच्छइ नीरओ । तथा लोगमत्थयत्थो,  
 सिद्धो हवइ सासओ ॥२५॥ सुहसायगस्स समणस्स, साया-  
 उलगस्स निगामसाइस्स । उच्छोलणापहोअस्स, दुल्लहा सुगई  
 तारिसगस्स ॥२६॥ तवोगुणपहाणस्स, उज्जुमइखन्तिसंजम-  
 रयस्स । परीसहे जिणंतस्स सुलहा सुगई तारिसगस्स ॥२७॥  
 पच्छा वि ते पयाया, खिप्पं गच्छंति अमरभवणाइं । जेसिं  
 पिओ तवो संजमो अ खंती अ बभचेरं च ॥ २८ ॥ इच्चेयं  
 छज्जीवणिअं, सम्मदिट्ठी सयाजए । दुल्लहं लहित्तु सामणं,  
 कम्मुणा न विराहिज्जासि ॥त्तिवेमि॥२९॥इति छज्जीवणिआ  
 णामं चउत्थं अज्झयणं समत्तं । ४॥

## सिरि वीरत्थुइ ( पुच्छिसुणं सुत्तं )

पुच्छिस्सु णं समणा माहणा य, आगारिणो या परतित्थिया य  
 से केइ णेगंत हियं धम्ममाहु, अणेसिं साहुसमिक्खयाए ।१।  
 कहं च नाणं कहं दंत्तणं से, सीलं कहं नायसुयस्स आसी ।  
 जाणासि णं भिक्खु जहा तहेणं, अहासुयं बूहि जहाणिसंतं ।२।  
 खेयअए से कुसले महेसी, अणंतनाणी य अणंतदंसी ।  
 जसंसिणो चक्खुपहे ठियस्स, जाणाहि घम्मं च धिइंच पेहा ।३।  
 उड्ढं अहेयं तिरियं दिसासु, तसा य जे थावर जे य पाणा ।



से निच्च निच्चेहि समिक्ख पन्ने, दीवेव धम्मं समियं उदाहु । ४।  
 से सव्वदंसी अभिभूयनाणी, निरामगंधे धिइसं ठियप्पा ।  
 अणुत्तरे सव्व जगंसि विज्जं, रांथा अतीते अभए अणाऊ । ५।  
 से भूइपन्ने अणिए अचारी, ओहं तरे धीर अणंतचक्खू ।  
 अणुत्तरे तप्पइ सूरए वा, वइरोयणिंदे वा तमं पगासे ॥ ६॥  
 अणुत्तरं धम्ममिणं जिणाणं, नेया मुणी कासव आसुपन्ने ।  
 इंदे व देवाणं महाणुभावे, सहस्सणेता दिवि णं विसिट्ठे । ७।  
 से पन्नया अक्खय सायरे वा महोदही वा वि अणंत पारे ।  
 अणाइले वा अकसाइ मुक्के, सक्के व देवाहिवई जुइसं । ८।  
 से वीरिएणं पडिपुत्त वीरिए, सुदंसणे वा नग सव्व सेट्ठे ।  
 सुरालए वासि मुदागरे से, विरायए णेग गुणोववेए ॥ ९ ॥  
 सयं सहस्साण उ जोयणाणं तिकंडगे पंडग वेजयंते ।  
 से जोयणे णवणवते सहस्से उदधुस्सितो हेट्ठ सहस्स मेगं १०।  
 पुट्ठे नभे चिट्ठइ भूमि वट्ठिए, जं सूरिया अणु-परियट्ठयन्ति  
 से हेमवन्ने बहु नन्दणे य, जंसि रइं वेदयन्ति महिदा ११॥  
 से पव्वए सह-महप्पगासे विरायइ कंचणमट्ठवण्णे ।  
 अणुत्तरे गिरिसु य पव्वदुग्गे गिरिवरे से जलिए व भोमे । १२।  
 महीए मज्झांमि ठिए णागिंदे, पन्नायते सूरिए सुद्धलेसे ।  
 एवं सिरिए उ स भूरिवण्णो, मणोरमे जोयइ अच्चिमाली १३।  
 सुदंसणस्सेव जसो गिरिस्स, पवुच्चइ महतो पव्वयस्स ।  
 एतोवमे सयणे नाय-पुत्ते, जाइ-जसो दंसण नाण सीले १४।  
 वा निसहायणाणं, रुयए व सेट्ठे वलयायताण ।

तओवमे से जग-भूइ-पन्ने, मुणीण मज्झे तमुदाहु पन्ने । १५॥  
 अणुत्तरं धम्ममुइरइत्ता अणुत्तरं ज्ञाणवरं ज्ञियाई ।  
 सुसुक्क-सुक्कं, अपगंड सुक्कं, संखिंदु एगंतवदात सुक्कं १६॥  
 अणुत्तरगं परमं महेसी, असेस-कम्मं स विसोहइत्ता ।  
 सिद्धिगए साइमणंत पत्ते नाणेण सीलेण य दसणेण १७॥  
 रुक्खेसु णाए जह सामली वा, जंसि रइं वेदयंति सुवन्ना ।  
 वणेसु वा नन्दणमाहु सेट्ठे, नाणेणं सीलेण य भूतिपन्ने १८॥  
 थणियं व सद्दाण अणुत्तरे उ. चन्दो व ताराण महाणुभावे ।  
 गंधेसु वा चन्दणमाहु सेट्ठं, एवं मुणीणं अपडिन्नमाहु ॥१९॥  
 जहा सयंभू उदहीण सेट्ठे, नागेसु वा धरणिदमाहु सेट्ठे ।  
 खोओदए वा रसवेजयन्ते तवोवहाणे मुणी वेजयन्ते ॥२०॥  
 हत्थीसु एरावणमाहु णाए, सीहो मियाणं सलिलाण गंगा ।  
 पक्खीसु वा गरुले वेणुदेवे, निव्वाणवादी णिह नायपुत्ते ॥२१॥  
 जोहेसु णाए जह बीससेणे, पुप्फेसु वा जह अरविंदमाहु ।  
 खत्तीण सेट्ठे जह दन्त वक्के, इसीण सेट्ठे तह वद्धमाणे ॥२२॥  
 दाणाण सेट्ठं अभय-प्पयाणं, सच्चेसु वा अणवज्जं वयन्ति ।  
 तवेसु वा उत्तम-बंभवेरं लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते ॥२३॥  
 ठिईण सेट्ठा लवसत्तमा वा सभा सुहम्मा व सभाण सेट्ठा ।  
 निव्वाण-सेट्ठा जह सव्व धम्मा ण नायपुत्ता परमत्थि नाणी ॥२४॥  
 पुढोवमे धुणई विगय-गेही न सण्णिहिं कुच्चइ आसुपन्नो ।  
 तरिउं समुदं व महाभवोर्धं अभयकरे वीर अणंत-चक्खू ॥२५॥  
 कोहं च माणां च तहेव मायं लोभं चउत्थं अज्झत्थ-दोसा

एआणि वंता अरहा महेसि, ण कुव्वई पावं ण कारवेइ २६॥  
 किरियाकिरियं वेणइयाणुवायं, अण्णाणियाणं पडियच्च ठाणं ।  
 से सव्ववायं इइ वेयइत्ता, उवट्टिए संजम दीहरायं ॥ २७  
 से वारिया इत्थी सराइभत्तां, उवहाणवं दुक्ख खयट्ठयाए ।  
 लोगं विदित्ता आरं पारं च सव्वं पभू वारियं सव्व पारं । २८  
 सोच्चा य धम्मं अरिहन्त भासियं, समाहियं अट्ठपदोवसुद्धं ।  
 तं सदहाणा य जणा अणाउ इंदेव देवाहिव आगमिस्संति ॥ २९ ॥  
 ॥ तिवेमि ॥



॥ अह एवमं नमिपवज्जा-णामज्झयणं ॥ ६ ॥

चइऊण देवलोगाओ उववन्नो माणुसम्मि लोगम्मि ।  
 उवसन्त-मोहणिज्जो सरई पोराणिटा जाइं ॥ १ ॥  
 जाइं सरित्तु भयवं, सयांसंबुद्धो अणुत्तरे धम्मे ।  
 पुत्तां ठवेत्तु रज्जे, अभि-खिक्खमई नमी राया ॥ २ ॥  
 सो देवलोगसरिसे, अन्तेउर-वरगओ वरे भोए ।  
 भुंजित्तु नमी राया, बुद्धो भोगे परिच्चयई ॥ ३ ॥  
 मिहिलं स-पुर जण-वयं बलसोरोहं च परियणं सव्वं ।  
 चिच्चा अभिनिक्खन्तो एगन्त-महिडिढओ भयवं ॥ ४ ॥  
 कोला-हलग-संभूयं, आसी मिहिलाए पव्वयन्तम्मि ।  
 तइया रायरिसिम्मि, नमिम्मि अभिणिक्खमन्तम्मि ॥ ५ ॥  
 अब्भुट्टियं रायरिसिं, पवज्जा-ठाण-सुत्तामं ।  
 सक्को माहण-रूवेण, इम वयणमव्वबो ॥ ६ ॥

किण्णु भो ! अज्ज मिहिलाए, कोलाहलगसंकुला ।  
 सुव्वन्ति दारुणा सदा, पासाएसु गिहेसु य ॥ ७ ॥  
 एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ कारण चोइओ ।  
 तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमव्ववी ॥ ८ ॥  
 मिहिलाए चेइए वच्छे, सीयच्छाए मणोरमे ।  
 पत्त-पुप्फ फलोवेए, बहुणं बहु-गुणे सया ॥ ९ ॥  
 वाएण हीरमाणम्मि, चेइयस्मि मणोरमे ।  
 दुहिया असरणा अत्ता, एए कंदन्ति भो खगा ॥ १० ॥  
 एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ कारण चोइओ ।  
 तओ नमि रायरिसि, देविन्दो इणमव्ववी ॥ ११ ॥  
 एस अग्गी य वाऊ य, एयं डज्झइ मन्दिरं ।  
 भयवं अन्तेउरं तेणं, कीस णं नावपेक्खह ॥ १२ ॥  
 एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।  
 तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमव्ववी ॥ १३ ॥  
 सुहं वसामो जीवामो, जेसिं मो नत्थि किचणं ।  
 मिहिलाए डज्झमाणीए न मे डज्झइ किचणं ॥ १४ ॥  
 चत्त-पुत्त-कलत्तस्स, निव्वावारस्स भिक्खुगो ।  
 पियं न विज्जई किंचि, अप्पियंपि न विज्जई ॥ १५ ॥  
 वहुं खु मुणिणो भहं, अणगारस्स भिक्खुणो ।  
 सव्वओ विप्पमुक्कस्स एगन्तमणुपस्सओ ॥ १६ ॥  
 एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ कारण चोइओ ।  
 तओ नमि रायरिसि, देविन्दो इणमव्ववी ॥ १७ ॥

पागारं कारइत्ताणं, गोपुरद्वालगाणि य ।  
 उस्सूलगतयग्घीओ, तओ गच्छसि खत्तिया ॥ १८ ॥  
 एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।  
 तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ॥ १९ ॥  
 सद्धं नगरं किच्चा, तव-संवर-मग्गलं ।  
 खन्ति निउण पागारं तिगुत्तं दुप्पधसयं ॥ २० ॥  
 धणुं परक्कमं किच्चा, जीवं च इरियं सया ।  
 धिइं च केयणं किच्चा, सच्चेण पलिमन्थए ॥ २१ ॥  
 तव-नारायजुत्तेणं भित्तूण कम्म-कंचुयं ।  
 मुणी विगय-संगामो, भवाओ परिमुच्चए ॥ २२ ॥  
 एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ कारण-चोइओ ।  
 तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी । २३ ॥  
 पोसाए कारइत्ताणं, वद्ध-माण-गिहाणि य ।  
 वालग-पोइयाओ य तओ गच्छसि खत्तिया ॥ २४ ॥  
 एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।  
 तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥ २५ ॥  
 संसयं खलु सो कुणई, जो मग्गे कुणई घरं ।  
 जत्थेव गन्तुमिच्छेज्जा तत्थ कुवेज्ज सासयं ॥ २६ ॥  
 एयमट्ठं निसामित्ता, हैऊ-कारण-चोइओ ।  
 तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमब्बवी ॥ २७ ॥  
 आमोसे लोमहारे य गंठिभेए य तक्करे ।  
 नगरस्स खेमं काऊणं, तओ गच्छसि खत्तिया ॥ २८ ॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ कारण चोइओ ।  
 तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ॥ २६ ॥  
 असइं तु मणुस्सेहिं, मिच्छा दंडो पजुञ्जई ।  
 अकारिणोऽत्थ वज्झन्ति, मुच्चइ कारओ जणो ॥ २७ ॥  
 एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ कारण-चोइओ ।  
 तओ नमि रायरिसी, देविन्दो इणमब्बवी ॥ २८ ॥  
 जे केइ पत्थिवा तुज्झं नानमन्ति नराहिवा ।  
 वसे ते ठावइत्ताण तओ गच्छसि खत्तिया ॥ २९ ॥  
 एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।  
 तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ॥ ३० ॥  
 जो सहस्सं सहस्साणं, संगामे दुज्जए जिणे ।  
 एगं जिणेज्ज अप्पाणं एस से परमो जओ ॥ ३१ ॥  
 अप्पाण-मेव जुज्झाहि किं ते जुज्झेण वज्झओ ।  
 अप्पणामेवमप्पाणं, जइत्ता सुहमेहाए ॥ ३२ ॥  
 पंचिन्द्रियाणि कोहं, माणं मायं तहेव लोहं च ।  
 दुज्जयं चेव अप्पाणं, सव्वं अप्पं जिए त्रियं ॥ ३३ ॥  
 एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-करण-चोइओ ।  
 तओ नमि रायरिसी, देविन्दो इणमब्बवी ॥ ३४ ॥  
 जइत्ता विउले जन्ने, भोइत्ता समण माहणे ।  
 दच्चा भोच्चा य जिट्ठा य, तओ गच्छसि खत्तिया ॥ ३५ ॥  
 एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।  
 तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥ ३६ ॥

जो सहस्रं सहस्राणं, मासे मासे गवं दए ।  
 तस्सवि संजमो सेओ अदिन्तस्सऽवि किंचणं ॥ ४० ॥  
 एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण चोइओ ।  
 तओ नमि रायरिसि देविन्दो इणमब्बवी ॥ ४१ ॥  
 घोरासमं चइत्ताणं, अन्नं पत्थेसि आसमं ।  
 इहेव पोसहरओ, भवाहि मणुयाहिवा ॥ ४२ ॥  
 एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।  
 तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ॥ ४३ ॥  
 मासे मासे तु जो बालो, कुसग्गेण तु भुंजए ।  
 न सो सुअवखाय-धम्मस्स, कलं अग्घइ सोलसिं ॥ ४४ ॥  
 एयमट्ठं निसामित्ता, हेउ कारण-चोइओ ।  
 तओ नमि रायरिसि देविन्दो इणमब्बवी ॥ ४५ ॥  
 हिरण्णं सुवण्णं मणिमुत्तं, कंसं दूंसं च वाहणं ।  
 कोसं वड्ढावइत्ताणं तओ गच्छसि खत्तिया ॥ ४६ ॥  
 एयमट्ठं निसामित्ता हेऊ-कारण-चोइओ ।  
 तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥ ४७ ॥  
 सुवण्ण-रूपस्स उ पव्वया भवे सिया हु केलाससमा असंख्या ।  
 नरस्सलुद्धस्स न तेहि, किंचि, इच्छा हु आगाससमा अणन्तिय  
 पुढवी साली जवा चेव-हिरण्णं पसुभिस्सह ।  
 पडिपुण्णं नालमेगस्स, इह विज्जा तवं चरे ॥ ४८ ॥  
 एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ कारण-चोइओ ।  
 तओ नमि रायरिसि, देविन्दो इणमब्बवी ॥ ४९ ॥

अच्छेरग मब्भुदए भोए चयसि पत्थिवा ।  
 असन्ते कामे पत्थेसि, संकप्पेण विहत्तसि ॥ ५१ ॥  
 एयमद्वं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ ।  
 तओ नमी रायरिसी, देविन्दं इणमब्बवी ॥ ५२ ॥  
 सल्लं कामा विसं कामा, कामा आसाविसोवमा ।  
 कामे पत्थेमाणा, अकामा जन्ति दोग्गइं ॥ ५३ ॥  
 अहे वयन्ति कोहेणं, माणेणं अहमा गई ।  
 माया गई-पडिग्घाओ, लोहाओ दुहओ भयं ॥ ५४ ॥  
 अवउज्झिऊण माहण-रूवं, विउव्विऊण इन्दत्तं ।  
 वन्दइ अभित्थुणन्तो, इमाहिं सहुराहिं वग्गूहि ॥ ५५ ॥  
 अहो ते निज्जिओ कोहो अहो माणो पराजिओ ।  
 अहो ते निरक्किया माया, अहो लोभो वसीकओ ॥ ५६ ॥  
 अहो ते अज्जवं साहु, अहो ते साहु मद्वं ।  
 अहो ते उत्तमा खन्ती, अहो ते मुत्ति उत्तमा ॥ ५७ ॥  
 इहं सि उत्तमो भन्ते, पच्छां होहिसि उत्तमो ।  
 लोगुत्तमुत्तमं ठाणं सिद्धि गच्छसि नीरओ ॥ ५८ ॥  
 एवं अभित्थुणन्तो, रायरिसि उत्तमाए सद्धयाए ।  
 पयाहिणं करेन्तो पुणो पुणो वन्दई सक्को ॥ ५९ ॥  
 तो वन्दिऊण पाए, चक्कंकुस-लक्खणे मुणिवरस्स ।  
 आगासेणुप्पइओ, ललिय चवल-कुंडल-तिरीडी ॥ ६० ॥  
 नमी नमेइ अप्पाणं, सक्खं सक्केण चोइओ ।  
 चइऊण गेहं च विदेही, सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥ ६१ ॥



एवं करेन्ति संबुद्धा, पंडिया पवियवखणा ।  
विणियट्टन्ति भीगेषु, जहा से नमी रायरिसी । त्ति वेमि ६२ ।

॥ इति नमिपव्वज्जानाम नवमं अज्जपणं समत्ता ॥१॥

*Jhumar No. 164, Sec. 1*

Kothi No. 164, Sec. 1 सुभाषित  
CHANDIGARH

पंच महव्वय सुव्वयमूलं, समणमणाइल साहु सुचिण्णं ।  
वेर विरामणपज्जवसाणं, सव्व समुद्धमहोदहि तित्थं ॥१॥  
तित्थंकरेहि सुदेसियमगं नरग तिरिय विवज्जिय मगं ।  
सव्व पवित्ता सुनिम्मिय सारं सिद्धि विमाणमवंगुयदारं ॥२॥  
देव नरिन्द नमंसियपूढं, सव्व जगुत्ताम मंगलमगं ।  
दुद्धरिसं गुणनायक मेकं मोक्खपहस्सवडिसगमूयं ॥ ३ ॥  
रूप अनुपम न कोई तुल्ले, वाणी सुणन्ता सब सुक्ख होई ।  
देही सुगंध रहे पुप्फवासं चौसठ इन्द्र करे अरदासं ॥ ४ ॥  
चवदाजी पूरब धार कहिये, जान चार वखाणिये ।  
जिन नहीं पण जिन सरीखा एवा सुधर्मास्वामी जाणिये ॥  
मात पिता कुल जात निर्मल रूप अनुप वखाणिये ।  
देवता ने वल्लभ लागे एवा श्री जम्बूस्वामी जाणिये ॥  
नहीं सुखी देवता देवलोए, नहीं सुखी पृथ्वीपति राजा ।  
नहीं सुखी सेठ सेनापति एगन्त सुखी साधु वीतरागी ॥  
नगरी सोहन्ती जल महल वृक्षं, राजा सोहन्ती चतुरंगी सेना ।  
नारी सोहन्ती शुद्ध शीलवन्ती साधु सोहन्ती अमृतवाणी ।

तैसो मीठो खीर समुंदरको पाणी वैसी मीठी जिनराजकी वाणी  
जो कोई सुणे सो उत्तम प्राणी नहीं सुणे सो मूढ़ अज्ञानी ।  
चलंति मेरु चलंति मन्दिरं, चलंति तारा रवि चन्द्र सूर्य ।  
कदापि काले पृथ्वी चलंति, सत्पुरुषाणां न चलंति धर्मः ।  
लव्भंति विमला भोए, लव्भंति सुरसंपया ।  
लव्भंति पुतामितां च एगो धम्मो न लव्भई ॥

## श्री सुखविपाक सूत्रम्

(१) तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णामं णयरे  
होत्था रिद्धित्थिमियसमिद्धे । गुणसिलए चेइए सुहम्मे अण-  
गारे समोसढे । जंबू जाव पज्जुवासइ-एवं वयासि जइ णं  
भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं दुह-  
विवागाणं अयमट्ठे पण्णत्ते । सुहविवागाणं भंते ! समणेणं  
भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ।  
तए णं से सुहम्मे अणगारे जंबू अणगारं एवं वयासि एवं  
खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुह-  
विवागाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता । तं जहा-सुवाहु, 'भद्दंद्दी'  
य सुजाए, 'सुवासवे' तहेव जिणदासे, धणवई 'य महव्वले'  
भद्दंद्दी, 'महचंदे' वरदत्ते' । जइ णं भंते ! समणेणं भग-  
वया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झयणा  
पण्णत्ता । पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स सुहविवागाणं सम-  
णेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

तएणं से सुहम्मे अणगारे जंबू अणगारं एवं वयासि-एवं खलु जंबू ! तेणं कालेण तेणं समएणं हत्थिसीसे णामं णयरे होत्था । रिद्धित्थिसिथसमिद्धे । तस्स णं हत्थिसीसस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसी भाए एत्थणं पुप्फकरंडए णामं उज्जाणे होत्था सव्वउयपुप्फफलसमिद्धे, रम्मे नंदणवणप्पगासे पासा-इए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे तत्थ णं कयवणमालपि-यस्स जवखस्स जवखायतणे होत्था दिव्वे । तत्थ णं हत्थिसीसे णयरे अदीणसत्तू नामं राया होत्था । महया हिमवंते राय-वण्णउ तस्स णं अदीणसत्तुस्स रण्णो धारिणी पामोक्खं देवी सहस्सं उरोहे यावि होत्था । तए णं सा धारिणी देवी अन्नया कयाइं तंसि तारिसगसि वासभवणंसि सीहं सुमिणे जहा मेह-जम्मणं तहा भाणियव्वं । णवरं सुबाहुकुमारे जाव अलं भोगसमत्थे यावि जाणंति २ ता अम्मापियरो पंच पासाय-वडिसगसयाइं करेति अब्भुग्गयमुसियपहसिएवि भवणं । एवं जहा महब्बलस्स रण्णो । णवरं पुप्फचूला पामोक्खाणं पंच-ण्हं रायवरकण्णासयाणं एग दिवसेण पाणिं गेण्हावेन्ति तहेव पंचसइओ दाउ जाव उप्पिपासायवरगते फुट्ठमाणा जाव विहरति । तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे सगव महावीरे समोसढे । परिसा निग्गया अदीणसत्तू जहा कोणिए निग्गए सुबाहुकुमारे वि जहा जमाली तहा रह्णेण निग्गए । जाव धम्मो कहिउ राया परिसा पडिगया । तए णं से सुबाहु-कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा

नेसम्म हट्ठ तुट्ठे ५ उट्ठाए उट्ठेइ जाव एवं वयासि  
 ऋहामि णं भन्ते ! निग्गंथं पावयणं जाव जहाणं देवाणु-  
 प्पेयाणं अंतिए वहवे राईसर तलवर माडंविय कोडुं-  
 विय-इवभसेट्ठी सेणावई सत्थवाह पभइउ मुंडे  
 भवित्ता आगाराउ अणगारियं पव्वइया । नो खलु अहं,  
 तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता आगाराउ अणगारियं  
 पव्वइत्तए अहं ण देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वयाइं  
 सत्तसिक्खावयाइं-दुवालसविहं गिहधम्मं पडिवज्जिस्सामि  
 अहा सुहं देवाणुप्पिया । मा पडिवंध करेह । तए णं से  
 सुवाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए  
 पंचाणुव्वयाइं सत्तसिक्खाव्वयाइं पडिवज्जइ २ ता,  
 तामेव चाउघटं दुएहइ २ ता, जामेव दिसं आसरहं  
 पाउव्वभूए तामेव दिसं पडिगए । तेणं कालेणं तेणं  
 समएणं समणस्स भगवउ महावीरस्स जेठ्ठे अंतैवासी  
 इंदभूई णामं अणगारे जाव एवं वयासी-अहो णं भन्ते !  
 सुवाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे १ कंतं कंतरूवे २ पिये  
 पियरूवे ३ मणुत्ते मणुत्तरूवे ४ मणामे मणामरूवे ५  
 सोमे सुभगे पियदंसणे सुरूवे, वहुजणस्सवि य णं भन्ते !  
 सुवाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे ५ सोमे जाव सुरूवे ।  
 साहुजणस्स वि य णं भन्ते ! सुवाहुकुमारे  
 इट्ठे इट्ठरूवे ५ जाव सुरूवे । सुवाहुणा

भंते ! कुमारेण इमे एयारूवा उराला माणुस्सरिद्धि  
 किण्णा लद्धा किण्णा पत्ता किण्णा अभिसमण्णा-  
 गया ? को वा एस आसी पुव्वभवे किं नामए वा किं  
 गोत्तए कयरंसिवा, गामंसिवा, सन्निवेसंसिवा, किं वा  
 दच्चवा किं वा भोच्चवा किं वा समायरित्ता कस्स वा  
 तहारूवस्स समणस्स माहणस्स वा अंतिए एगमवि  
 आयरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चवा निसम्म सुब्राहुकुमा-  
 रेणं इमे इयारूवा माणुस्सरिद्धि लद्धा पत्ता अभिसम-  
 ण्णागया । एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं सम-  
 एणं इहेव जंबूद्वीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे णामं  
 णयरे रिद्धित्थिमियसमिद्धे वण्णउ । तथ्य णं हत्थिणा-  
 उरे णयरे सुमुहे णामं गाहावई परिवसइ अड्ढे दित्ते  
 जाव अपरिभूए । तेणं कालेण तेणं समएणं धम्मघोसे  
 णामं थेरे जाइसंपत्ते जहेव सुहम्मसामी तहेव पंचहि  
 समणसएहि सिद्धि संपरिवृडे पुव्वाणुपुर्व्व चरमाणे  
 गामाणुगामं दुइज्जमाणे जेणेव हत्थिणाउरे णयरे जेणेव  
 सहस्संबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ २ ता अहा  
 पडिख्वं उग्गहं उग्गिण्हइ २ ता संजमेणं तवसा अप्पाणं  
 भावेमाणे विहरइ । तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघो-  
 साणं थेराण अंतेवासी सुदत्ते णामं अणगारे उराले  
 जाव तेउलेसे मासं मासेणं खममाणे विहरइ । तएणं

सुदत्तो अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए  
तज्ज्ञायं करेइ । वियाए पोरिसीए ज्ञाणं ज्ञियाएइ,  
जहा गोयमे तहेव धम्मघोसं थेरं आपुच्छइ जाव अड-  
माणे सुमुहस्स गाहावइस्स गिहं अणुपविट्ठे तएणं से  
सुमुहे गाहावई सुदत्तां अणगारं एज्जमाणं पासइ २ ता  
हट्ठ तुट्ठे आसणाउ अव्वुट्ठेइ २ ता पायपीढाड  
पच्चोरुहइ २ ता पाउयाउ उमुयति २ ता एगसाडियं  
उत्तरासंगं करेइ २ ता सुदत्ता अणगारं सत्ताट्ठपयाइं  
अणुगच्छइ २ ता तिखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ  
२ ता वंदई णमंसई २ ता जेणेव भत्ताघरे तेणेव  
उवागच्छइ २ ता सयहत्येण विउलं असणं पाणं खाइमं  
साइमं पडिलाभिस्सासि त्ति कट्ठु तुट्ठे पडिलाभेमाणे  
वि तुट्ठे पडिलाभिए त्ति तुट्ठे । तए णं तस्स सुमुह-  
स्स गाहावइस्स तेणं दव्वसुद्धेणं दायग सुद्धेणं पडिगाहय  
सुद्धेणं तिविहेणं तिकरण सुद्धेणं सुदत्तो अणगारे पडि-  
लाभिए समाणे संसारे परित्तीकए, मणुस्साउए निवद्धे  
गिहंसि य से इमाइं पच्च दिव्वाइं पाउव्वूयाइं । तं जहा-  
वसुहारा वुट्ठां १ दसद्धवणो कुसुमे निवाइए २ चेलु-  
वखेवे फए ३ आहयाउ देवदुंदुहीओ ४ अंतरा वि य णं  
आगासंसि अहो दाणं महादाणं घुट्ठे य ५ । तए णं  
हत्थिणाउरे णयरे सिघाडग जाव पहेसु बहुजणो अण्ण

मणस्स एवमाइक्खइ ४ धन्ने णं देवाणुप्पिया सुमुहे  
गाहावई सुकयपुण्णे कयलक्खणे सुलद्धे णं माणुस्स-  
जम्मे सुकयत्थरिद्धि य । तए णं से सुमुहे गाहावइ  
बहुइं वासाइं आउयं पालेइ २ ता कालमासे कालं  
किच्चा इहेव हत्थिसीसे णयरे अदीणसत्तुरण्णो धारि-  
णीए देवीए कुच्छिसि पुत्तात्ताए उववण्णे । तए णं सा  
धारिणी देवी सयणिज्जंसि सुत्ताजागरा उहीरमाणी २  
तहेव सीहं पासइ । सेसं तं चेव उप्पिगपासाए विहरइ ।  
तं एवं खलु गोयमा सुवाहुणा कुमारेणं इमे एयारूवा  
माणुस्सरिद्धि लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया । पभू णं  
भंते ! सुवाहुकुमारे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता  
आंगाराउ अणगारियं पव्वइत्ताए ? हंता पभू । तएणं से  
भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ २ ता  
संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । तए णं से  
समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइं हत्थिसीसाउ  
णयराउ पुप्फकरंडयाउ उज्जाणाउ कयवणमालप्पियस्स  
जक्खस्स जक्खायतणाउ पडिनिक्खमइ २ ता बहिया  
जणवयविहारं विहरइ । तए णं से सुवाहुकुमारे समणो-  
वासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे  
विहरइ । तए णं से सुवाहुकुमारे अण्णयाकयाइं चाउ-  
दसट्ठपुण्णमासिणीसु जेणेव पोसहसाला तेणेव उवा-

गच्छइ २ ता पोसहसाला पमज्जइ २ ता उच्चार-  
 षासवणं भूमिं पडिलेहइ २ ता दब्भसंथारगं सथरेइ २  
 ता, दब्भसंथारगं दुरूहइ २ ता अट्ठमभत्तं पणिहइ  
 २ ता पोसहसालाए पोसहिए अट्ठम भत्तिए पोसहं  
 पडिनागरमाणे विहरइ । तए णं तस्स सुवाहस्स  
 कुमारस्स पुव्वरत्तावरत्ताकाले धम्मजागरियं जागर-  
 माणस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणो-  
 गए संकप्पे ५ सगुप्पन्ते-धण्णा णं ते गामागर-णगर  
 जाव सन्निवेसा जत्थ णं समणे भगवं महावीरे विहरइ ।  
 धन्ना णं ते राईसर जाव सत्थवाह पभइउ जे णं सम-  
 णस्स भगवओ महावीरस्स अत्तिए मुंडे भवित्ता  
 आगाराउ अणगारियं पव्वइयंति धण्णाणं ते राईसरं  
 जाव सत्थवाह पभइउ जे णं समणस्स भगवउ महा-  
 वीरस्स अत्तिए धम्मं पडिसुणंति तं जई णं  
 समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्वं चरमाणे जाव  
 गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागच्छेज्जा जाव विहरेज्जा ।  
 तए णं अहं समणस्स भगवओ महावीरस्स अत्तिए  
 मुंडे भवित्ता जाव पव्वएज्जा । तए णं समणे भगवं  
 महावीरे सुवाहस्स कुमारस्स इमं एयारूवं अज्झत्थियं  
 जाव वियाणित्ता पुव्वाणुपुव्वं चरमाणे जाव गामाणु-  
 गामं दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिमीसे णयरे जेणेव पुप्फ-



मण्णस्स एवमाइक्खइ ४ धन्ने णं देवाणुप्पिया सुमुहे  
गाहावई सुकयपुण्णे कयलक्खणे सुलद्धे णं माणुस्स-  
जम्मे सुकयत्थरिद्धि य । तए णं से सुमुहे गाहावइ  
बहुइं वासाइं आउयं पालेइ २ ता कालमासे कालं  
किच्चा इहेव हत्थिसीसे णयरे अदीणसत्तुरण्णो धारि-  
णीए देवीए कुच्चिसि पुत्ताए उववण्णे । तए णं सा  
धारिणी देवी सयणिज्जंसि सुत्ताजागरा उहीरमाणी २  
तहेव सीहं पासइ । सेसं तं चेव उप्पिगपासाए विहरइ ।  
तं एवं खलु गोयमा सुवाहुणा कुमारेणं इमे एयारूवा  
माणुस्सरिद्धि लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया । पभू णं  
भंते ! सुवाहुकुमारे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता  
आगाराउ अणगारियं पव्वइत्ताए ? हंता पभू । तएणं से  
भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ २ ता  
संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । तए णं से  
समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइं हत्थिसीसाउ  
णयराउ पुप्फकरंडयाउ उज्जाणाउ कयवणमालप्पियस्स  
जक्खस्स जक्खायतणाउ पडिनिक्खमइ २ ता बहिया  
जणवयविहारं विहरइ । तए णं से सुवाहुकुमारे समणो-  
वासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे  
विहरइ । तए णं से सुवाहुकुमारे अण्णयाकयाइं चाउ-  
दसट्ठपुण्णमासिणीसु जेणेव पोसहसाला तेणेव उवा-

गच्छइ २ ता पोसहसाला पमज्जइ २ ता उच्चार-  
 वासवणं भूमि पडिलेहइ २ ता दब्भसंथारगं सथरेइ २  
 ता, दब्भसंथारगं दुरूहइ २ ता अट्ठमभत्तं पणिण्हइ  
 २ ता पोसहसालाए पीसहिए अट्ठम भत्तिए पोसहं  
 पडिजागरमाणे विहरइ । तए णं तस्स सुबाहुस्स  
 कुमारस्स पुव्वरत्तावरत्ताकाले धम्मजागरियं जागर-  
 माणस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणो-  
 गए संकप्पे ५ समुप्पन्ने-धण्णा णं ते गामागर-णगर  
 जाव सन्निवेसा जत्थ णं समणे भगवं महावीरे विहरइ ।  
 धन्ना णं ते राईसर जाव सत्थवाह पभइउ जे णं सम-  
 णस्स भगवओ महावीरस्स अत्तिए मुंडे भवित्ता  
 आगाराउ अणगारियं पव्वइयंति धण्णाणं ते राईसरं  
 जाव सत्थवाह पभइउ जे णं समणस्स भगवउ महा-  
 वीरस्स अत्तिए धम्मं पडिसुणंति तं जई णं  
 समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्वं चरमाणे जाव  
 गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागच्छेज्जा जाव विहरेज्जा ।  
 तए णं अहं समणस्स भगवओ महावीरस्स अत्तिए  
 मुंडे भवित्ता जाव पव्वएज्जा । तए णं समणे भगवं  
 महावीरे सुबाहुस्स कुमारस्स इमं एयारूवं अज्झत्थियं  
 जाव वियाणित्ता पुव्वाणुपुव्वं चरमाणे जाव गामाणु-  
 गामं दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिसीसे णयरे जेणेव पुप्फ-

करंडे उज्जाणे जेणेव कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खायतणे तेणेव उवागच्छइ २ ता अहापडिरुवं उग्गहं उगिण्हित्ता संजसेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । परिसा, राया निग्गया । तए णं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स तं सहया जहा पढमं तहा निग्गओ । धम्मो कहिओ परिसा राया पडिगया । तए णं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ-तुट्ठे । जहा मेहो तहा अम्मापियरे आपुच्छइ निखमणाभिसेओ तहेव जाव अणगारे जाए इरियास-मिए जाव गुत्तबंभयारी । तए णं से सुबाहु अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कोरस्स अंगाइं अहिज्जइ २ ता बहुहि चउत्थछट्ठट्ठमतवोविहाणेहि अप्पाणं भावित्ता बहूइं वासाइं सामण्णपरियाणं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाइं छेदित्ता आलोइयं पडिक्कंते समाहिपत्तो कालमासे कालं किच्चा सोहम्ये कप्पे देवत्ताए उववणणे । से णं ताउ देवलोगाउ आउक्खएणं भवक्खयेणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिइ २ ता केवलवोहि बुज्झहिइ २ ता तहारूवाणं थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वइस्सइ । से णं तथ

बहई वासाइ सामरणपरियागं पाउणिहिइ २ ता  
आलोइय पडिक्कतं समाहिपत्ते कालमासे कलां किच्चा  
सणकुमारे कप्पे देवत्ताए उववणणे । से णं ताओ देवलो-  
गाउ माणुस्सं जाव पवज्जा बंभलोए । ताओ माणुस्सं  
महासुक्के ॥ ततो माणुस्सं आणए देवे । ततो माणुस्सं ।  
ततो आरणे । ततो माणुस्सं सव्वट्ठसिद्धे । से णं तओ  
अंतरं चयं चइत्ता महाविदेहे वासे जाव अड्ढे जह,  
दढपइन्ने सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनि-  
व्वाहिति सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति । एवं खलु जंबू ।  
समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं  
पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पणते त्तिबेमि ।

इइ सुहविवागस्स पढमं अज्झयणं सम्मत्तां ॥ १ ॥

(२) वितियस्स उक्खेवउ । एवं खलु जंबू ! तेणं  
कालेणं तेणं समएणं उसभपुरे णामं णयरे थूंभकरंडगं  
उज्ज्जाणे ! धणो जक्खो । धणवहो राया सरस्सई  
देवी । सुमिणदंसणं कहणं जम्म बालत्ताणं कलाउ य  
जोवणे याणिगहेणं दाउ पासादा य भोगा य जहा  
सुबाहुस्स णवरं भद्दन्दी कुमारे । सिरीदेदी पामोक्खाणं  
पंचसया कत्ता पाणिगहणं । सामिस्स समोसरणं साव-  
गधम्मं पडिवज्जे पुव्वभव पुच्छा महाविदेहवासे पुंडरि-  
गिणि नगरीए विजए कुमारे जुगबाहू तित्थयरे पडिला-

भिण् मणुस्साउए निबद्धे इहं उव्वरणे । सेसं जहा  
 सुवाहुस्स जाव महाविदेहेवासे सिज्झिहिति वुज्झिहिति  
 मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमतं करेहिति ।  
 एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव  
 संपत्तेणं सुहविवागाणं वितियस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे  
 पणत्ते तिदेमि ।

इइ सुहविवागस्स वीयं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ २ ॥

(३) तइयस्स उक्खेवउ । वीरपुरे णाम णयरे । मणो-  
 रसे उज्जाणे वीरकएहे जक्खे, मित्ते राया सिरी देवी  
 सुजाए कुमारे । बलसिरि पामोक्खाणं पंचसया कन्ना ।  
 सामी समोसरिए । पुव्वभवं पुच्छा । उसुयारे णयरे  
 उसभदत्ते गाहावइ पुप्फदत्ते अणगारे पडिलाभिए  
 मणुस्साउए निबद्धे इहं उव्वरणे जाव महाविदेहे वासे  
 सिज्झिहिति ५ ।

इह सुहविवागस्स तइयं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ३ ॥

(४) चउत्थस्स उक्खेवओ । विजयपुरे णयरे ।  
 णंदणवद्धे उज्जाणे । असोगो जक्खो । वासदत्ते राया ।  
 कएहसिरी देवी । सुवासवे कुमारे । भद्दा पामोक्खाणं  
 पंचसया कन्ना जाव पुव्वभवं पुच्छा । कोसंबी णयरी ।  
 धणपालो राया । वेसयणे भद्दे अणगारे पडिलाभिए  
 इह उव्वरणे जाव सिद्धे ।

इइ सुहविवागस्स चउत्थं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ४ ॥

(५) पंचमस्स उक्खेवओ । सोगंधिया णयरी ।  
नीलासोगे उज्जाणे । सुकालो जक्खो । अपडिहय राया ।  
सुकण्हा देवी महचंदे कुमारे । तस्स अरहदत्ता भारिया ।  
जिणदासो पुत्तो । तित्थयरागमणं पुव्वभवं पुच्छा ।  
मज्झमिया नयरी । मेहरहे राया । सुधम्मि अणगारे  
पडिलाभिए जाव सिद्धे ।

इइ सुहविवागस्स पंचमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥५॥

(६) छट्ठस्स उक्खेवओ । कणगपुरे णयरे । सेया-  
सोये उज्जाणे वीरभट्टो जक्खो । पियचंदे राया । सुभट्टा  
देवी । वेसमणे कुमारे जुवराया । सिरीदेवी पामोक्खाणं  
पंचसया कन्ना । तित्थयरागमणं धणवई जुवरायपुत्तो  
जाव पुव्वभवं पुच्छा । मणिवइयां णयरी । मित्ते राया  
संभूइ विजए अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ।

इह सुहविवागस्स छट्ठं अज्झयणं सम्मत्तं ॥६॥

(७) सत्तमस्स उक्खेवओ । महापुरे णयरे । रत्ता-  
सोगे उज्जाणे । रत्तपाउ जक्खो । बले राया सुभट्टा  
देवी । महाबले कुमारे । रत्तवई पामोक्खाणं पंचसया  
कन्ना । तित्थयरागमणं जाव पुव्वभवं पुच्छा । मणिपुरे  
णयरे । णागदत्ते गाहावई इंददत्ते अणगारे पडिलाभिए  
जाव सिद्धे ।

इइ सुहविवागस्स सत्तमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥७॥

(८) अट्ठमस्स उक्खेवओ । सुघोसे णयरे । देवर-  
मणे उज्जाणे । वीरसेणो जक्खो । अज्जुणो राया ।  
रत्तवई देवी । भट्टनंदी कुमारे । सिरीदेवी पामोक्खाणं  
पंचसया कत्ता जाव पुव्वभवं पुच्छा । महाघोसे णयरे ।  
धम्मघोसे गाहावई । धम्मसीहे अणगारे । पडिलाभिए  
जाव सिद्धे ।

इइ सुहविवागस्स अट्ठमं अज्झयणं सम्मत्तां ॥८॥

(९) नवमस्स उक्खेवओ । चंपा णयरी । पुण्णभट्टे  
उज्जाणे । पुण्णभट्टो जक्खो । दत्तो राया । रत्तवई देवी ।  
महचंदे कुमारे । जुवराया सिरीकंता पामोक्खाणं पंच-  
सया कत्ता जाव पुव्वभवं पुच्छा । तिगिच्छा णयरी ।  
जियसत्तुराया । धम्मवीरिए अणगारे । पडिलाभिए  
जाव सिद्धे ।

इइ सुहविवागस्स नवमं अज्झयणं सम्मत्तां ॥९॥

(१०) जइ णं भंते ! दसमस्स उक्खेवओ । एवं  
खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं साइए णामं णयरे  
होत्था । उत्तरकरु उज्जाणे पासामिउ जक्खो मित्तनंदी-  
राया । सिरीकंता देवी । वरदत्तकुमारे वीरसेणा पामो-  
क्खाणं पंचदेवी सया तित्थियरागमणं सावगधम्मं पुव्व-  
भवं पुच्छा । सयदुवारे णयरे विमलवाहणे राया ।  
धम्मरुइ अणगारे पडिलाभिए मणुत्साऊए निबद्धेइह

उववण्णे । सेसं जहा सुबाहुस्स चिंता जाव पवज्जा  
कप्पंतरिए जाव सव्वट्ठसिद्धे । तओ महाविदेहे जहा  
दढपइण्णे जाव सिज्जिहिति ५ । एवं खलु जंबू ! सम-  
णेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं  
दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सेवं भंते २ त्ति  
बेमि ।

इइ सुहविवागस्स दसमं अज्झयणं सम्मत्तां ।

णमो सुयदेवयाए विवागसुयस्स दो सुयखंधा दुह-  
विवागे य सुहविवागे य । तत्थ दुहविवागे दस अञ्ज-  
मणा एक्कासरगा दससु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जंति ।  
एवं सुहविवागे वि सेसं जहा आयासरस्स ॥१०॥

॥ इति सुखविपाकसूत्रम् ॥

## श्रीघंटाकर्णस्तोत्रम्

ॐ श्रीं ह्रीं घण्टाकर्णो महावीर सर्वव्याधिविनाशक ।  
विस्फोटकभये प्राप्ते रक्ष रक्ष महाबल ॥१॥ यत्र त्वं  
तिष्ठसे देव, लिखितोऽक्षरणंक्तिभिः । रोगास्तत्र प्रण-  
श्यन्ति, वातपित्तकफोद्भवाः ॥२॥ यत्र राजभयं नास्ति  
यान्ति कर्णेजपाः क्षयम् । शाकिनी भूतवैताला राक्षसाः  
प्रभवन्ति न ॥४॥ नाकाले मरणं तस्य न च सर्पेण  
दश्यते । अग्निचोरभयं नास्ति ॐ ह्रीं श्रीं घण्टाकर्ण  
नमोऽस्तु ते ठः ठः ठः स्वाहा ॥४॥ इति ।



## श्री पैसठिया यन्त्र का छन्द

श्री नेमीश्वर संभव स्वाम, सुविधि धर्म शान्ति  
 अभिराम । अनन्त सुव्रत नमिनाथ सुजाण, श्री जिनवर  
 मुझ करो कल्याण ॥१॥ अजितनाथ चंदा प्रभु धीर,  
 आदिश्वर सुपाश्वर्क गम्भीर । विमलनाथ विमल जग  
 जाण, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ॥२॥ मल्लीनाथ  
 जिन मंगल रूप, पद्म बीस धनुष सुन्दर स्वरूप । श्री  
 अरहनाथ प्रणमं वर्द्धमान, श्री जिनवर मुझ करो  
 कल्याण ॥३॥ सुमति पद्म प्रभु अवतंस वासुपूज्य शीतल  
 श्रेयांस । कुन्थु पार्श्व अभिनन्दन जाण, श्री जिनवर  
 मुझ करो कल्याण ॥४॥ इण परे जिनवर संभारिये,  
 दुःख दारिद्र विघ्न निवारिये । पच्चीसे पैसठ परमाण,  
 श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ॥५॥ इम भगता दुःख  
 न आवे कदा, जो निज पासे राखो सदा । धरिये पंच  
 तणुं मन ध्यान, श्री जिनवर मुझ करो कल्याण ॥६॥  
 श्री जिनवर नामे वांछित फल मिले, मन वांछित सुहु  
 आशा फले । धर्मसिंह मुनि नाम निधान, श्री जिनवर  
 मुझ करो कल्याण ॥७॥

पार्श्वनाथ स्वामी का महाप्रभाविक त्रिभंगी छंद

सकल सार सुरतरु जग जाणं, जग जस वास जगत  
 प्रमाणं । सकल देव सिर मुकुट सुचंगं, नमो नमो जिन-

पति मन रंगं । १ जय जितपति मनरंगं, अकल अभंगं,  
 तेज तुरंगं नीलंगं । सुर शोभा संगं, दग्ध अनंगं, शीश  
 भुजंग चतुरंगं २॥ बहु पुण्य प्रसंगं नित उद्धरंगं, नव-  
 नव रंगं मरदंगं । कीरति जन गंगं, देश दूरंगं सुरनर  
 संगं सारंगं ३ सारंगा चक्रं, परम पवित्रं, रुचिर  
 चरित्रं जीवित्रं । जग जीवन मंत्रं पंकज पत्रं, निर्मल  
 नेत्रं सावित्रं ४॥ सावित्री वरणं मुकुटा भरणं, त्रिभु-  
 वन शरणं आचरणं । सुर अचित चरणं दारिद्र्य हरणं,  
 शिव सुख करणं महाचरणं ५॥ जय जितवर मंत्रं,  
 नाशन शत्रुं, मंत्रा मंत्रं महा मंत्रं । विश्वे जयवतं  
 चामर छत्रं, शीष धरत्रं पावित्रं ॥६ गो अमृत करणं,  
 भव जल तरणं, जनम न मरणं उद्धरणं । सुख सम्पति  
 करणं, अघ सब हरणं, वरणा वरणं आदरणं ७॥  
 आदरणा पाल, झाक झमाल, नित भूपालं उजियाल ।  
 अष्टम् शशि भालं, देव दयालं चित्रय चालं सुकुमालं ॥८॥  
 शणगार रसालं महके मालं, गात सुविशालं भूपालं ।  
 रिपु दुर्मद गालं, क्षमा कुदालं, मोह करालं दुर  
 टालं ॥९॥ त्रिभुवन रखवालं, काल दुकालं, महा  
 विकरालं भय टालं । महा गुण धारं, भविका धारं,  
 जगदा धारं निर्धारं ॥१०॥ तुम विरद विचारी, अरज  
 हमारी, वारी वारी अवधारी । तुम दर्शन पाऊं, अवर

न चाहं, इण भव परभव सुखकारी ॥११॥ आनन्द रस  
पूरे, संकट चूरे, मंगल मालं सुविशालं । इस छन्द को  
गावे, आनन्द पावे, संकट जावे तत्कालं १२॥

सकल स्वरूप उदार सार सम्पत्ति सुखदायक, रोग  
शोक सन्ताप पाप सब दूर निवारक । चहुं दिशि आण  
अखण्ड तपे जिम तेज दिनन्दो, नमे अप्सरा क्रोड यश  
गावे सुर इन्द्रो । तेविसमो जिनवर भलो, अधिक अधिक  
मंगल निलो, मुनि मेघराज इम वीनवे, प्रभु पार्श्वनाथ  
त्रिभुवन तिलो ।

## श्री उपसर्गहर स्तोत्र बडा

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण मुक्कं ।  
विसहर विसनिन्नासं, मंगल कल्लाण आवासं ॥१॥  
विसहर फुलिंग मंतं, कंठे धारेइ जो सयामगुओ । तस्स  
गह रोग मारी, दुट्ठु जरा जंति उवसामं ॥२॥ चिट्ठउ  
दूरे मतो, तुज्झ पणामोवि बहु फलो होइ । नरतिरिए  
सु वि जीवा, पावति न दुक्ख दोगच्चं ॥३॥ ॐ अमर  
तरु काम धेणु, चिन्तामणि काम कुम्भमाईए । सिरी  
पासनाह सेवा, गयाण सव्वेवि दासत्तां । ४॥ ॐ ह्रीं श्री  
ॐ ॐ तुहदंसणेण सामिय, पणासेई रोग सोग दोहगं ।  
कप्पतरुमिव जायइ, ॐ तुह दंसणेण सफल हेउ  
स्वाहा ॥५॥ ॐ ह्रीं श्री नमिऊण पणव सहियं, माया

बीएण ब्रह्म नागिंद । श्री कामराज कलियं पास जिणंद  
नमंसांमि ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्री पास विसहर, विज्जामंतेण  
ज्ञाण ज्ञाएज्जा धरणे पउमा देवी, ॐ ह्रीं क्षमल् ल्यं  
स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐ जयउ धरणिंद पउमा वइय नागिणी  
विज्जा । विमल ज्ञाण सहिओ, ॐ ह्रीं क्षमल् व्यं  
स्वाहा ॥ ८ ॥ ॐ थुणामि पासनाहं, ॐ ह्रीं पणमामि  
परम भत्तिए । अट्ठक्खर धरणिंदा, पउमावइ  
पयडिया कित्ति ॥ ९ ॥ जस्स पयं कमल मज्झे सया वसई  
पउमा वइय धरणिंदो । तस्स नामेण सयलं, विसहर  
विसनासेई ॥ १० ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्प  
पाय वव्वभहिए । पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामर  
ठाणं ॥ ११ ॥ ॐ नट्ठट्ठ मयट्ठाणे, पणट्ठ कप्पट्ठ नट्ठ संसारे ।  
परमट्ठ निट्ठीअट्ठे अट्ठगुणाधीसरं वंदे ॥ १२ ॥ इअ  
संथुओ महायस ! भत्तिब्भर निब्भरेण हियएण । ता  
देव ! दिज्ज बोहिं । भवे भवे पास जिण चन्द ॥ १३ ॥  
तुह नाम सुद्ध मंतं । सम्मं जो जवइ सुद्ध भावेणं ।  
सो अयरामरं ठाणं । पावई नय दोग्गइं दुक्खं ॥ १४ ॥  
ॐ पंडु भगंदर दाहं, कासं सासं च सूल साईणी ।  
पास पहु पभावेण, नासंति सयल रोगाइं ॥ १५ ॥ ॐ  
विसहर दावानल साइणि, वेयाल मारिआयंका । सिरि  
नीलकंठ पासस्स समरण मित्तेणं नासंति ॥ १६ ॥ पन्नासं

गोपीडा, कूरगह दंसणं भयं काप्रे । आवि ऋहंति एए,  
 तरु विति संज गुणिज्जासु । १७। पिडनंत भगंदर,  
 खास सूल तह निव्वारु । सिरि सामल पास महंत,  
 नाम पडर पडलेणं ॥१८॥ ॐ ह्री श्रीं श्री पास धरणं,  
 संभूतं विसहर विज्जं जवे सुद्धं मगंणं पावइ इच्छियं  
 सुहं, ॐ ह्रीं श्रीं धम्मल् व्यं स्वाहा १९॥ रोग जल  
 जलण, विसहर चोरारिः मइंद गयरण भूयाइं । पास  
 जिण नाम संकित्तणेण, पसमंति सव्वाइं । २०॥ जल  
 जलण तह सवसिहो, चोरारि संभवे विखिखं जो  
 समरेई पास पहु, पहवई न कयावि किंचि तस्स ॥२१॥

## श्री ज्वर (ताव) नो छंद

दोही—नमो आनंदपुर नगर, अजयपाल राजान ।  
 माता अजया जनमियो, ज्वर तू कृपा निधान । १।  
 सात रुप शक्ति हुआ, करवा खेल जगत । नाम धरावे  
 जुजुवा, पसर्यो तुं इत्त उत्त । २॥ एकांतरो बेयांतरो,  
 तिजो चोथो ताव । शीत उठण विषम ज्वर, ए साते  
 तुज नाम ॥३॥ छंद ॥ ए साते तुजनाम सुरंगा जपता  
 पूरे कोडी उमंगा । ते नम्या जे जालिम जंगा जगमा  
 व्यापी तुज जसगंगा । ४। तुज आगे भुपती सब रंका  
 त्रिभुवनमां वाजे तुज डंका । माने नहीं तुं केहनी

शंका, तुठयो आपे सोवन टंका ५। टंका ॥ साधक  
 सिद्ध तणां मद मोडे असुर सुरा तुज आगल दोडे ।  
 दुष्ट धोडुनां कंधर तोडे नमी चाले तेहने तुं छोडे  
 ॥६॥ आवंती थर हर कंपावे, डाह्याने जिमतिम  
 बहेकावे । पहिलो तुं केड मांथी आवे, सात शिरख  
 पन शीत न जावे ॥७॥ ही ही हुं हुंका करावे,  
 पासलियां हाडा ककडावे । उनाले पण अमल जगावे,  
 तापे पहिरण मां मुतरावे ॥८॥ आसोज कातिक मां  
 तुज जोरो, हट्यो न माने घागो दोरो । देश विदेश  
 पडावे सोरो, करे सबल तुं तातो तोरो ॥९॥  
 तु हाथीना हाडां भंजे, पापी ने ताडे कर पंजे । भक्ती  
 वत्सल भावे जो रंजे तो सेवक ने कोय न गंजे ॥१०॥  
 फोडक तोडक डमरु डाकं, सुरपतिसरिखा माने हाकं ।  
 धमके धुंसड धांसड धाकं, चढतो चाले चंचल चाकं  
 ॥११॥ पिशुन पछाडन नहीं को तोथी, तुज जस बोल्या  
 जाय न कोथी । शीअणखेल करो एथोथी, महेर करी  
 अलगा रही मोथी ॥१२॥ भक्तथकी एवडी कांखेडो,  
 अवल अमीना छांटा रेडो । लाखा भक्तनो ए निवेडों,  
 महाराज मुको मुज ५ केडो ॥१३॥ लाजवशो मा  
 अजीया राणी, गुरु आण मानो गुणखाणी । घरे सिधावो  
 करुणा आणी, कहु छुं नाके लीटी ताणी ॥१४॥  
 सहित ए छंद जे पढसे, तेहने ताव कदी न

काँती कला देही निरोगं, लेशे लक्ष्मी लीला भोगं ॥१५॥  
नोट—मुझकी जगह जिसको ताव चढ़ा हो उसका नाम लेना चाहिए ।

### कलश छाप्य

ॐ नमोधरी आदि, बीज गुरु नाम वदीजे ॥  
आनंदपुर अवनीश, अजयपाल अखीजे ॥ अजया जात  
अठार वाचिये साते बेटा ॥ जपता एहीज जाप, भक्तसुं  
न करे भेटा ऊतरे चडीयो अंग, पलमें तुज वयणे मुद्रा,  
कहे काँती रोग न आवे कदा, सार मंत्र गणिये सदा  
॥१६॥ इति

विधि—इस छन्द को ७ बार १४ या २१ बार  
पढ़ने से ज्वर उतर जाता है, श्रद्धा से पढ़े ।

### मंगल छंद

मंगल करणं दुरमति हरणं तारण तिरणं शिववरणं ।  
ऋषभअजित संभव अभिनंदन । सुमतीपदम प्रभुचित्त  
धरणं । इन्द्र नरिन्द्र सुरासुर वृन्दं छवी अवलोक  
हरक धरणं । भव दुःख भंजन नाथ निरंजन । चतुर  
बीस बंदु चरणं ॥१॥ पतित उद्धारण, तिमिर विदारण  
तेज प्रकाशी रवि किरणं । सुपासजिन चंद सुविधी  
शीतल, श्री हंस आसपुज आधरणं । सिद्ध गति वासी  
लील विलासी त्रिभुवन कीरति विस्तरणं ॥२॥ वंछित  
कर्मा के चूर्ण शासन पति असरण शरणं विमल

अनन्तजी । धर्म शांतिजी । कुंथ अरिगुण कर गौरणं  
 केवल कमला सहित विराजे, निरखत नैण अमिठरणं  
 ॥३॥ करुणा सागर गुण रत्नाकर, तत्त्व पदार्थ किया  
 निरणं, मल्ली मुनि सुव्रत नमीय नेमजी, पारस वीरजी  
 जगगरणं, अतिसा लायक, संत सुहायक, नमस्कार कर  
 पांय पडण । कलश-यह-चोवीस जिणवर कल्प तरुवर,  
 नाम निशदिन ध्यावीये, रिद्ध सिद्ध नव नंद थावे सुख  
 नवला पामिये । समत उगनीसो लाल पचवीस, आसोज  
 शुद्ध एकादशी, मगन श्रावक विनव मुझ स्वाम सेवा  
 उरबसी ॥४॥ इति

## श्री शांतिनाथ स्वामी नो छंद

श्री शांतिनाथ को कीजे जाप, क्रोड भवानो काटे  
 पाप । शांतिनाथजी, म्होटा देव, सुरनर सारे जेहनी  
 सेव ॥१॥ दुःख दारिद्र जावे दूर, सुख संपती होवे  
 भरपुर । ठग फासीगर जावे भाग बलती होवे शीतल  
 आग ॥२॥ राज लोकमां कीर्ति घणी शांति जिनेश्वर  
 साथे धनी ॥ जो ध्यावे प्रभुजी नो ध्यान राजा देवे  
 अधिको मान ॥३॥ गडगूँबड पीडा मिट जाय, देखी  
 दुश्मन लागे पाय । सघलो भाग्यो मननो भर्म पाम्यो  
 समकित काटो कर्म ॥४॥ सुनो प्रभुजी मोरीं अरदास  
 हूं सेवक तुम पूरो आस । मुज मन चितित कारज करो,  
 चिंता आरति विघ्नज हरो ॥५॥ मेटो म्हारा आल



जंजाल, प्रभुजी मुझने नयन निहाल । आपनी कीर्ति  
 ठामो ठाम सुधारो प्रभुजी म्हारा काम ॥६॥ जो नित्य  
 नित्य प्रभुजीने रटे, मोती बंधा फूला कटे । चेप लावण  
 दोनुं झड जाय, विन ओषध कट जावे छाय ॥७॥  
 शांतिनाथना नामथी थाय आंखे तुड पडल कट जाय ।  
 कमलो पिलो जल जल झरे, शांति जिनेश्वर शाता  
 करे ॥८॥ गरमी व्याधी मिटावे रोग, सयण मित्रनो  
 मले संयोग । एहवा देव न दिसे ओर, नहीं चाले दुश्-  
 मन को जोर ॥९॥ लुंठारा सब जावे नास दुर्जन  
 फोटी होवे दास । शांतिनाथजी कीर्ति घणी कृपा करो  
 तुमे त्रिभुवन धणी ॥१०॥ अरज करूं छूं जोड़ी हाथ  
 आपशुं नहीं कोई छानी जात । देखी रहया छो पोते  
 आप, काटो प्रभुजी म्हारा पाप ॥११॥ मुझ मन  
 चिंतित करिये काज, राखो प्रभुजी म्हारी लाज । तुम  
 सम जग मांही नहीं कोय तुम भजवाथी शाता होय  
 ॥१२॥ तुम पास चले नहीं मृगी को रोग, ताव तेजरो  
 नांखो तोड़ । मरी मिटाइ कीधी प्रभु संत, तुम गुणनो  
 नहीं आवे अंत ॥१३॥ तुमने समरे साधु सती, तुमने  
 समरे जोगी जती । काटो संकट राखो मान, अविचल  
 पदनुं आपो स्थान ॥१४॥ संवत अठारे चोराणु जाण  
 देश मालवो अधिक बखाण । शहर जावरो चातुर्मास,  
 हूं प्रभु तुम चरणा को दास ॥१५॥ ऋषि रणनाथजी

किधो छंद काटो प्रभुजी म्हारा फंद । हूं जोऊं प्रभुजी  
नी वाट मुज आरति चिंता सब काट १६॥

### मंगलाष्टक (छंद)

ब्राह्मी शुभ मुहूर्ते, उठी प्रातःकाल, मंगलाष्टक  
जपते कष्ट कटे तत्काल । रिषभादि जिनवर चोविसों  
जिनराज, मुझ मंगल देते, मिले सभी सुख साज १ ।  
नाभिराजादि, तीर्थंकर सब तात, मंगलकर होवे, रिद्धि  
सिद्धि मुझ हात । मरु देवी त्रिशला, चतुर्विंश जिनमात,  
मंगल मुझ करती टले मेरी दुःख घात । २॥ उसभ-  
सेनजी गौतम, आदि गणधरराज, श्रुतकेदली केवल, हो  
मुझ मंगल काज । लब्धितपधारी सती संत महाराज,  
निर्मल मन सुमरे पावे मंगल राज ३ । ब्राह्मी चंदनादि  
सोले सती सिरताज, शरणामें पाया, खुले भाग्य मुझ  
आज, जिन नाम प्रसादे. मंगल मुझ भरपुर, चक्रेश्वरी  
आदि, करती मुझ दुःख दूर ४ । जिन धर्म प्रभावे,  
यक्षादि अनुकूल समदृष्टि देव मुझ करते मंगल मूल ।  
धन धान्य सम्पदा मुझ घर निधिसार विध २ सुख  
देखूं, भर्या रहे भंडार ॥५॥ चिंतामणी सम यह, पूरे  
मंगल आस, रोग शोक दलिदर मिटे सभी मुझ त्रास ।  
यह कल्प तरु सम, महिमा अपरंपार, मंगल फल  
प्रसावे वरते मुझ जयकार ॥६॥ यह कामधेनुवत, पारस  
सम सुखकार, मुझ हृदय कमल में हुआ सुख संचार ।

यह चन्द्रकिरण सम चित चकोर सुहाय, देखी दुश्मन  
खल, पड़ते सब सुझ पाय ॥७॥ इसके शुभ तेजे, जहां  
कहीं मैं जाऊं, घर लक्ष्मी लीला, मनमाने सुख पाऊं ।  
संगलाष्टक जपते, वरते संगल माल, तासगांव वसंते,  
गावे घासीलाल । ८ ।

### श्री पार्श्वनाथ स्वामी का छंद

आपणे घर बेठा लील करो, निज पुत्र कलत्र शुं  
प्रेम धरो । तुमे देश देशांतर कांई दोड़ो, नित्यपास  
जपो श्री जिन रुडो । १ । मन बांछित सघला काज  
सरे, सिर उपर छत्र चांयर धरे कलमल आगल चाले  
घोड़ो । २ ॥ भूत प्रेत पिशाच बली सायणी ने डायणी  
जाय टली । छल छिद्र न कोई लागे जुडो ॥३॥ एका-  
तर तांव सियोदाहीं, ओषध बिण जाय क्षण मांही ।  
नवि दुःखे मांथु पग गुडो ॥४॥ कंठमाल गड़ गुंबड़  
सबला, तस उदर रोग टले सघला । पीड़ा न करे फिन  
गल फोड़ो ॥५॥ जागतो तीर्थकर पास बहु, एम जाणे  
सघलो जगत सह । ततक्षण अशुभ कर्म तोड़ो ॥६॥  
पास वाणारशी पुरी नगरी उदयो जिनवर उदयकरी ।  
समय सुन्दर कहे कर जोड़ो । ७ ।

### श्री शांतिनाथ स्वामी का छंद

शारद माय नमुं सिरनामी, हुं गुण गाऊं त्रिभुवन  
के स्वामी । शांति शांति जपे सब कोई, ते घेर शांति

सदा सुख होई । १॥ शांति जपी जे किजे काम, सो ही  
 काम होवे अभिराम । शांति जपी परदेश सिधावे, ते  
 कुशले कमला लेई आवे । २॥ गर्भ थकी प्रभु मारी  
 निवारी, शांतिजी नाम दियो हितकारी । जे नर शांति  
 तणा गुण गावे, ऋद्धि अचिती ते नर पावे ॥३॥ जे नर  
 कुं प्रभु शांति सहाई ते नर कुं कछु आरती नाहीं ।  
 जो कछु वंछे सोही पूरे. दुःख दारिद्र मिथ्या मति चूरे  
 । ४। अलख निरंजन ज्योत प्रकाशी, घट २ अन्तर के  
 प्रभु वासी । स्वामी स्वरूप कह्यु नवि जाय,  
 कहेता मुज मन अचरिज थाय ॥५॥ डार दिये सब ही  
 हथियारा, जीत्या मोह तणा दल सारा । नारी तजी  
 शिवशुं रंग राचो, राज तजो पण साहिब साचो ॥६॥  
 महा बलवंत कहीजे देवा, कायर कुंथु एक हणेवा ।  
 रिद्धि सकल प्रभु पास लहीजे, भिक्षा आहारी नाम  
 कहीजे ॥७॥ निंदक पूजक कुं सम भायक, पण सेवक  
 कुं है सुखदायक । तजी परिग्रह हुवा जगनायक, नाम  
 अतिथि सर्वे सिद्धि लायक ॥८॥ शत्रु मित्र समचित्त  
 गणीजे, नाम देव अरिहंत भणीजे । सकल जीव हित-  
 वंत कहीजे, सेवक जाणी महापद दीजे । ९। सायर  
 जैसा होत गंभीरा, दूषण एक न माहे शरीरा । मेरु  
 अचल जिम अन्तर जामी, पण न रहे प्रभु एकण ठामी  
 ॥१०॥ लोक कहे जिनजी सब देखे, पण सुपनांतर

कबहु न पेखे । रीस बिना वावीश परीसा, सेना जीती  
 ले जगदीशा ॥११॥ मान बिना जग आण मनाई, माया  
 बिना शिव शुं लय लाई । लोभ बिना गुण राशि ग्रहीजे,  
 भिक्षु भावे त्रिगड़ो सेवीजे । १२॥ निर्ग्रथ पणे सिर छत्र  
 धरावे, नाम यति पण चमर ढलावे । अभयदान दाता  
 सुख कारण, आगल चक्र चाले अरिदारण ॥१३॥ श्री  
 जिनराज दयाल भणीजे, कर्म सर्वे की मूल खणीजे ।  
 चउविह संघह तीरथ थापे. लच्छी घणी देखे नवि  
 आपे । १४ विनयवंत भगवंत कहावे, नांहि किसी कुं  
 शीश नमावे । अकंचन को बीरुद धरावे, पण सोवन  
 पद पंकज ठावे ॥१५॥ राग नहिं पण सेवक तारे, द्वेष  
 नहिं निगुणा संग वारे । तजी आरम्भ निज आतम  
 ध्यावे, शिव रमणी को साथ चलावे । १६॥ तेरी  
 महीमा अद्भुत कहिए, तेरा गुणा को पार न लहिए ।  
 तुं प्रभु समरथ साहेब मेरा हूं मन मोहन सेवक तेरा  
 । १७॥ तुं रे त्रिलोक तणो प्रतिपाल, हूं रे अनाथ ने  
 तुं रे दयाल । तुं शरणागत राखत धीरा, तुं प्रभु  
 तारक छे बड़वीरा । १८॥ तुं ही समो बड़ भागज  
 पायो, तो मेरो काज चडयो रे सवायो । कर जोड़ी  
 प्रभु वीनवुं तमशुं, करो कृपा जिनवरजी अमशुं ॥१९॥  
 जनम मरण ना भय निवारो, भव सागर थी पार  
 उतारो । २० थीणाप्र मंडल सोहे, त्यां श्री शांति

सदा मन मोहे ॥२०॥ पद्म सागर गुरुराय पसाया, श्री  
गुण सागर कहे मन भाया । जे नर नारी एक चित गावे,  
ते मन वांछित निश्चय पावे ॥२१॥

## चिंतामणी का छंद

सुगरु चिंतामणी देव सदा । मुज सकल मनोरथ  
पुरमदा । कमला घर दूर न होय कदा । जपता प्रभु  
पार्श्व नाम यदा ॥१॥ जल अनल मतंगज भय जावे  
। अरि चोर निकट पण नहि आवे । सिंह सर्प रोग  
न सतावे, धन्य धन्य प्रभु पार्श्व जिन ध्यावे ॥२॥  
मछ कछ मगर जलमांही भमै, वडवानल नीर अथाह गमै ।  
प्रवहण बैठा नर पार पमै । नित्य प्रभु पार्श्व जिनंद नमै  
॥३॥ विकराल दावानल विश्व दहै, ग्रह वस्ती धन ग्रास  
आकाश ग्रहै । तुम नाम लिया उपशांति लहै, वन नीर  
सरोवर जैम वहै ॥४॥ झरतो मद लोल कलोल करे, भ्रमरा  
गुंजारव भर रोष धरै । करि दुष्ट भयंकर दूरि करै श्री  
पार्श्वनाथजी के समरै ५ । छाना छल छिद्र विनाय छलै,  
यश वाश सुणी मन मांही जलै । ते पिशुन्य पड़े नित्य पाय  
तलै, जपलां प्रभु वेरी जाय टलै ६ ॥ धन देखी निशाचर  
कोढ़ धसै, मुझ मन्दिर पैश कदेन सकै । अति उच्छ्रव तास  
आवास अखै, परमेश्वर पार्श्व जोस पखै ७ असराल  
विदारण हाथ हटै, गललोल जिहां गज कुंभ घटै । मृगराज  
महा भय भ्रांति मिटै । रसना जिन नायक जेह रटै ॥८॥

फरतो चीहुं फेर फुंफार फणि, धरणैंद्र धसैं धर रीस घणी ।  
 भय त्रास न व्यापे तेह तणी, धरतां चित्त पार्श्वनाथ धणी  
 ॥६॥ कफ दुष्ट जलोदर रोग कृसैं, गड़ गुंबड़ देह अनेक  
 ग्रसैं । बिन भेषज व्याधि सबे बिनसैं वामा सुत पार्श्व जे स्तवसैं  
 ॥१०॥ धरणिंद्र धराधिप सुर ध्यायो, प्रभु पार्श्व २ करपायो ।  
 छबि रूप अनोपम जुग छायायो, जननी धन्य वामा सुत जायो  
 ॥११॥ करतां जिन जाप संताप कटैं, दुःख दारिद्र दोहग सोग  
 घटैं । हठ छोड़ी जीहां रिपु जोर हठैं, पद्मावती पार्श्व जीहां  
 प्रगटे ॥१२॥ ॐ नमो पार्श्वनाथाय, धरणिंद्र पद्मावती  
 सहिताय । विषहर फुलिंग मंगलाय ॥ ॐ ह्रीं श्रीं चिंतामणी  
 पार्श्वनाथाय । मम मनोरथ पूरय स्वाहाः ॥ मंत्राक्षर गाथा  
 गूढ़ पढ़यो । चिंतामणी जाणै हीं थ चढ़यो, वली मान महातम  
 तेज बढ़यो । श्री पार्श्वजीन स्तवन जेह पढ़यो । १३॥ तीर्थ-  
 पति पार्श्वनाथ तिलो । भणतां जस वास निवास फलो ।  
 मणी मंत्र सकोमल होय मिलो, अमचि प्रभु पार्श्व आश  
 फलो । १४॥ लुंका गच्छ नायक लाभ लिए, हित क्षेम  
 करण गुरुनाम हिये । दिन २ गच्छ नायक सुख दिये, कीरति  
 प्रभु पार्श्व मुख किये । १५॥

### श्री मणिभद्र वीर का छंद

दोहा—सरस वचन दो सरस्वती, पूजूं गुरुना पाय ।  
 गुण माणक ना गावतां, सेवक ने सुख थाय । १ । मणिभद्र  
 तिहां पासिये, सुर तरु जेवां स्वाम । रोग सोग दूरा हरो,

नमूं चरण चितलाय । २॥ तुम पागस तुं पोरसो, कमि  
 कुम्भ सुखदाय । साहिब वरदायक सदा, अन धन का आधार  
 ॥३॥ तुम हो रत्न चितामणि, चित्रा बेल समान । माणक  
 साहिब माहेरो, दौलत नो दातार ॥४॥ देव घणा दुनियां  
 नमे, सत्यवाद करे सन्मान । मणीभद्र मोटा मरद, दीपे देश  
 दिवान ॥५॥ छंद-दीप तो जग मांही दीसे, पीसुन तणा दल  
 तुं हिज पीसे । अष्ट भय थी तुं हिज उगारे, निंदा करता  
 शत्रु निवारे ॥६॥ जग मुख्य देव महा उपकारी, ऐरावत की  
 कीनी सवारी । मणिभद्र मोटा महाराजा, वाजे नित्य छत्रीसे  
 बाजा ॥७॥ हेम विमलसूरि वरदाई, क्षेत्रपाल क्षण खाड्यो  
 खाई । उण वेला माणक तूं उठयो, भैरव ने गुरजांसु  
 कुट्यो ॥८॥ मानोजी माणिक वचन हमारो, थे छोड़ो  
 चाकर थारो । मणिभद्रजी वाचा मानी, काला गोरा कीधा  
 कानी ॥९॥ पाठ भक्त पण वाचा पाली, वालती सामगरी  
 संभारी । जालिम माणिक वाहें झाल्यो, देश अठारे जदि  
 उजवाल्यो ॥१०॥ कुमति रोग कियो निकन्दन, मणिभद्र  
 तप गच्छरो मंडन । ध्यान धरे एक एक तारी ज्यारे,  
 तेहना कारज वेला सारे ॥११॥ बोल सीख राखे दरबारे,  
 वसुधा कीरती अधिक वधारे । आठम चउदश जे आराधे,  
 सघला जाप दिवाली साधे १२॥ श्री मणिभद्र पूजे जे  
 मोटो, तस घर कदियन आवे टोटो । भावे करीने तुझने  
 भेटे माणिक तेहना दालिद्र मेटे ॥१३॥ धन अखूट ते बहु



ऋद्धि पावे, साणिक ततखिण रोग गमावे । सेवक ते तुं  
 बाहे सांहे, नहीं मोथाये महीयल मांहे ॥१४॥ जो मुझने  
 सेवक करी जानो, तो साणिक एक विनती मानो । दिल  
 भरी दर्शन मुझने दीजे, कृपा करी सेवक सुख कीजे ॥१५॥  
 दोहा— तुं वासी गुजरात नो, नव खंडे तुझ नाम । मगर  
 वाड़े मोटो सरद, कविद्या सारे काम ॥१॥ सेवक ने थे शीख द्यो,  
 हुकम प्रमाणे हमेश । जिण विध हूं पूजा करूं, सेवा देवो  
 हमेश ॥२॥ करो अजाची कवीयण, मणिभद्र मां बाप । दिल  
 भरि दरिअण दीजिये, सेवक टाल संताप ॥३॥ मणिभद्र  
 महाराज सुं, उदय करे छे अरज । मूल सत्र मुझमे दियो,  
 राखो म्हारी लाज ॥४॥ छंद— वसुधा म्हारी लाज वधारो,  
 न्यात गोत्र में कुजस निवारो । दुःख दालिद्र हरिजे दूरे,  
 पुत्र तणी तुं वांछा पूरे ॥५॥ सेनानी ने तुं समझावे,  
 अवनी पति पण तुम पाय आवे । विघ्न अनंतो राज निवारो  
 मणिभद्र मुझ शत्रु निवारो ॥६॥ सघला नर नारी वश थाय,  
 शाकिनी डाकिनी नासी जाय । भूत प्रेत तुझ नामे नाशे नाहर  
 चोर कदिन त्रासे ॥७॥ मोटा दानव तुं हि मरोड़े, ताव तेजरा  
 तुं हिज तोड़े । हरि हर देव घणा ही होय, तिण में तुम  
 सरीसो नहीं कोय ॥८॥ भावे अडसठ तीरथ भेटो, भावे श्री  
 साणिक ने भेटो । सुरपति मारी अरज सुणीजे, कवीयण ने  
 तत्क्षण सुख कीजे ॥९॥ द्यो साणिक वंछित वरदाई, सेवक  
 ने गृह भट्ट सुहाई ।

\* कलश \*

गुण गाता गह गढ़ अन धन कपड़ो आवे ।

गुण गाता गह गढ़, प्रगट घर संपदा पावे ॥

गुण गाता गह गढ़, राज माने मोज दिरावे ।

गुण गाता गह गढ़, लोक सह पूजा लावे ॥

सुख कुशल आशा सफल, उदय कुशल इणि परे कहे ।

गुण माणिक ना गावता, लाख लाख रीझा लहे ॥

विधि- प्रतिदिन गिनने से मन वांछित लाभ होता है ।

## श्री गुरुणी गुण माल

शिवगामी को, सुखधामी को, मेरा वन्दन हो त्रिकाल  
रे । मेरी दाद गुराणी टिबूजी ॥टेर॥

गौर वर्ण शुभ्र कान्ति मनोहर, सुख मण्डल छवि प्यारी ।  
मन मन्दिर में प्रभू बसाकर, निज आत्म को तारी, सतीजी  
निज आत्म को तारी । धारे जैन धर्म, काटे अष्ट कर्म,  
तेरी बुद्धि महान विशाल रे ॥१॥ शिष्या आपकी थी गुणवंती,  
सतीवर राजकुमारी । मेरे वह परम गुराणी, जाऊँ चरण  
बलिहारी, सतीजी जाऊँ चरण बलिहारी । थे उपकारी, जन-  
सुखकारी, अरु षट काया प्रतिपाल रे ॥२॥ जैन धर्म को  
दिपा जगत में, प्रवर्तनी पद पाए । मुझ पर उपकार बहुत  
है, जो भूले नहीं जाए, सतीजी जो भूले नहीं जाए । दिये मुझ  
तारी, बड़े उपकारी, 'सती केशर' को किये निहाल रे ॥३॥

## श्री सिद्ध परमात्मानां स्तुति

तुम तरण तारण दुःख निवारण, भविक जीव आराधनं ।  
 श्री नाभिनन्दन जगत वन्दन, नमो सिद्ध निरंजनं ॥१॥  
 जगत भूषण विगत दूषण, प्रणव प्राण निरूपकं । ध्यान रूप  
 अनूप उपसं नमो ॥२॥ गगन मंडल मुक्ति पदवी, सर्व ऊर्ध्व  
 निवासिनं । ज्ञान ज्योति अनन्त राजे ॥३॥ अज्ञान निद्रा  
 विगत वेदन, दलित मोह निरायुषं । नाम गोत्र निरंतराय  
 ॥४॥ विकट क्रोधा मान योद्धा, माया लोभ विसर्जनं । राग  
 द्वेष विमर्द अंकुर ॥५॥ विमल केवल ज्ञान लोचन, ध्यान  
 शुक्ल समीरितं । योगिनातिगम्य रूपं ॥६॥ योग ने  
 समोसरण मुद्रा, परीपत्यंकासनं । सर्व दीप्ते तेज रूपं ॥७॥  
 जगत जिनके दास दासी, तास आस निरासनं । चिद्रूप  
 परमानन्द रूपं ॥८॥ स्व समय समकित दृष्टि जिनकी, सोय  
 योगी अयोगिकं । देख नामां लीन होवे ॥९॥ तीर्थ सिद्धा, अतीर्थ  
 सिद्धा भेद पंच दशाधिकं । सर्व कर्म विमुक्त चेतन ॥१०॥ चंद्र  
 सूर्य दीप मणि की, ज्योति येन उलंघितं । ते ज्योतिथी  
 अपरम ज्योति ॥११॥ एक मांहि अनेक राजे, अनेक मांहि  
 ऐकिकं । एक अनेक की नांहि संख्या ॥१२॥ अजर अमर  
 अलक्ष अनन्तर, निराकार निरंजनं । परब्रह्म ज्ञान अनन्त  
 दर्शन ॥१३॥ अनुल सुख की लहर में, प्रभु लीन रहे  
 निरन्तरं । धर्म ध्यान थी सिद्ध दर्शन । १४॥ ध्यान धूरं मनः  
 चान्द्रय हुताशनं । क्षमा जाय संतोष पूजा, पूजो देव

निरंजन ॥१५॥ तुम मुक्ति दाता कर्म घाता, दीन जाणि  
दया करो । सिद्धार्थ नंदन जगत वंदन, महावीर जिनेश्वरं  
॥१६॥

## श्री भरत राजा की ढाल

खट खण्ड भोगवे राज मोटा श्री भरत महाराज । मन-  
मोहनलाल आत्रे आदेसरजी ने बांदवा जी । १॥ चन्दन  
चरचीयो अंग केसर चड़ीयो सोरंग मन० वस्तर भारी  
पेरवाजी ॥२॥ पेरिया हे मोतीयां का हार, जांके शरीर  
किया सीणगार । मन० इन्दर आवे अकाश सु जी ॥३॥  
बेटा पोतारी जोड़ जाणै, दीपु दीपु करे देह । मन० कुटुम्ब  
सात करोड़ किया जी ॥४॥ मंत्रीसर तीन करोड़, जुगती  
जांकी जोड़ । मन० एक करोड़ वेपारी भला जी ॥५॥  
चौरासी लाख कोतवाल, जांके शहर तणा रक्षपाल । मन०  
तीन लाख वेद्य भला जी ॥६॥ सेनापति चौरासी हजार,  
पंडित अस्सी हजार । मन० तीन करोड़ सेठ सावठा जी  
। ७॥ चौरासी लाख निसाण, धज्जा दस लाख परमाण ।  
मन० पांच लाख दीविधरां जी । ८॥ चौरासी लाख घोड़ा  
जाण, जांके सोना रूपा का पलाण । मन० सोना की सांकर  
सुहावणी जी ॥९॥ मेंदी को रंग सोरंग, तुरा किलंगी सोरंग ।  
मन० आगे कोंतल हंसता जी ॥१०॥ चौरासी लाख हाथी,  
जाण जीण ऊपर होदा जोड़ । मन० अम्बावाड़ी आछी  
दीपती जी ॥११॥ हाथी ऊपर नगरा रया बाज, हाथी करे

घणा अग्राज । मन० ऊपर झूला सोवता जी । १२ । चौरासी  
 लाख रथ जाण, पैदल छन्यों करोड़ मान । मन० चाले  
 भरत मुख आंगले जो । १४ । हाथी ऊपर अम्बा वाड़ी मांय,  
 बैठा श्री भरत महाराज । मन० सेन्या सणगारी ने संचरया  
 जी ॥१५॥ चवर बीजे तीयां चार, देवता सोलह हजार ।  
 मन० सेवा सारे ओ राजा भरत की । १६ । हाथी होदे  
 कवरा की जोड़, बेटा पोता ठोड़े ठोड़ । मन० चोपदार  
 चाले घणा जी ॥१७॥ भरतेसर मनुषारा इंद्र, तारा बीचे  
 सोहे चंद । मन० आवे आदेसरजी ने वंदवा जी ॥१८॥  
 नगरी वनीता सणगार, चाल्या ए मध्य बजार । मन०  
 गोखाचढ़ी ने जोवे गोरड़ीयां जी । १९ । असवारी को अंधिका  
 थोड़ा में भाख्यो बीसतार । मन० सगलो कही पण नहीं सकु  
 जी ॥२०॥ चाल्या हे घन घोर घाट, हलवे हलवे रइया वाट ।  
 मन० आगे सोनैया उछालता जी ॥२१॥ आगे चाल्या छे  
 खंड का नाथ, पीछे मोरादेवी मात । मन० आवे आदेसरजी  
 के कने जी ॥२२॥ अतीसा प्रभुजी का देख, माता जाया  
 ओ बेटा एक । मन० समयसरण देखी हरसीया जी ॥२३॥  
 हाथी होदे मोरादेवी माय, पाम्या हे केवल ज्ञान । मन०  
 मोक्ष गया जाने वंदना जी । २४ । पूरी हुई अड़तीस वीं ढाल,  
 तीगडे विराजा जगनाथ । मन० ऋषि रायचन्द कहे आगे  
 सांभलो जी ॥२५॥

## शान्तिनाथ जी का स्तवन

रे तुम जपलो रे प्राणी बहु सुखकारी शांति जिनेश्वर  
नाम । हस्तिनापुर में जन्म लियो प्रभु विश्वसेन कुलचन्द ।  
अचला माता विश्व विख्यात गर्भ में कियो आनन्द ॥१॥  
महामारी सब रोग नसाया शांति हुई उस बार । शान्ति करी  
शान्तिनाथजी दुखिया का दुःख निवार ॥२॥ शान्ति २ मुख  
से जपता भय जावे सब भाग । दुःख दारिद्र्य दूरा जावे  
वरते मंगलाचार ॥३॥ जो कोई शुद्ध मन ध्यान धरे रे होवे  
आनन्द अपार । गुरुणी जी मेरे “केसाकंवरजी” मैं नमन  
करूँ हरबार रे ॥४॥ समत दो हजार सोलह में रे इन्दौर  
शहर के माय । “दिलसुखकंवर” कहे अब तो पूरा नाथ  
हमारी आस ॥५॥

## संधारा का स्तवन

संधारो प्यारो घणो, रत्न चिन्तामणि जेम हो भवियन ।  
पांचवीं गतिना पामणा हीरा जड़िया हेम हो भवियन ॥१॥  
कायर रो काम छे नहीं, सूर सनमुख थाय हो भवियन ।  
पंडित सरण प्रताप से, जन्म भरण मिट जाय हो भवियन  
॥२॥ अहार पाणी आदरे नहीं, नहीं करे मुख से हाय हो  
भवियन । तन धन समती त्यागने सर्व जीव राशि खमाय  
हो भवियन ३ करो नी शुद्ध आलोचना, लगादो मुगती सुं  
ध्यान हो भवियन । ऐसी चढ़ा दो मुझने वीरता, हो जावे  
परम कल्पाण हो भवियन ॥४॥ सूरी रा जाया होता सूरमा

करे ऐसी काम हो भवियन । समण हजारीमल इम कहे  
फिर नहीं आवे गर्भावास हो भवियन ॥५॥

## मेरी भावना

जिसने राग द्वेष-कामादिक जीते, सब जग जान लिया ।  
सब जीवों को मोक्ष-मार्ग का निस्पृह हो उपदेश दिया ॥  
बुद्ध, वीर, जिन, हरि, हर, ब्रह्मा या उसको स्वाधीन कहो ।  
भक्ति भाव से प्रेरित हो यह चित्त उसी में लीन रहो ॥  
विषयों की आशा नहिं जिनके, साम्यभाव धन रखते हैं ।  
निज पर के हित-साधन में जो निशदिन तत्पर रहते हैं ॥  
स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या बिना खेद जो करते हैं ।  
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के दुःख ससूह को हरते हैं ॥  
रहे सदा सत्संग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे ।  
उन्हीं जैसी चर्या में यह चित्त सदा अनुरक्त रहे ॥  
नहीं सताऊं किसी जीव को झूठ कभी नहीं कहा करूं ।  
परधन-वनिता पर न लुभाऊं, सन्तोषाश्रित पिया करूं ॥  
अहंकार का भाव न रखूं नहीं किसी पर क्रोध करूं ।  
देख दूसरों की बढ़ती को कभी न ईर्ष्या-भाव धरूं ॥  
रहे भावना ऐसी मेरी सरल सत्य व्यवहार करूं ।  
बने जहां तक इस जीवन में औरों का उपकार करूं ॥  
सैत्री भाव जगत में मेरा सब जीवों पर नित्य रहे ।  
दीन दुखी जीवों पर मेरे उर से करुणा स्रोत बहे ॥  
दुर्जन क्रूर-कुमार्गरतों पर क्षोभ नहीं मुझको आवे ।

साम्यभाव रखूँ मैं उन पर ऐसी परिणति हो जावे ॥  
 गुणी जनों को देख हृदय में मेरे प्रेम उमड़ आवे ।  
 बने जहां तक उनकी सेवा करके यह मन सुख पावे ॥  
 होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं द्रोह न मेरे उर आवे ।  
 गुण ग्रहण का भाव रहै नित दृष्टि न दोषों पर जावे ॥  
 कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे ।  
 लाखों वर्षों तक जीऊँ या मृत्यु आज ही आ जावे ॥  
 अथवा कोई कैसा ही भय या लालच देने आवे ।  
 तो भी न्याय मार्ग से मेरा कभी न पद डिगने पावे ॥  
 होकर सुख में मग्न न फूले, दुख में कभी न घबरावे ।  
 पर्वत नदी श्मशान भयानक, अटवी से नहीं भय खावे ॥  
 रहे अडोल-अकंप निरंतर यह मन दृढ़तर बन जावे ।  
 इष्ट-वियोग अनिष्टयोग में सहन शीलता दिखलावे ॥  
 सुखी रहें सब जीव जगत के कोई कभी न घबरावे ।  
 वैर, पाप, अभिमान छोड़ जग नित्य नये मंगल गावे ॥  
 घर २ चर्चा रहे धर्म की दुष्कृत दुष्कर हो जावें ।  
 ज्ञान-चरित्र उन्नत कर अपना मनुज जन्म फल सब पावें ॥  
 ईति-भीति व्यापे नहिं जग में वृष्टि समय पर हुआ करे ।  
 धर्मनिष्ठ होकर राजा भी न्याय प्रजा का किया करे ॥  
 रोग-मरी दुर्भिक्ष न फैले प्रजा शान्ति से जिया करे ।  
 परम श्रंहिसा-धर्म जगत में फैल सर्व-हित किया करे ॥  
 फैले प्रेम परस्पर जग में मोह दूर पर रहा करे ।



अप्रिय कटुक कठोर शब्द नहीं कोई मुख से कहा करे ॥  
 बन कर सब 'युगवीर' हृदय से देशोन्नति-रत रहा करें ।  
 वस्तु स्वरूप विचार खुशी से निजानन्द में रमा करें ॥

## महावीर स्वामी की आरती

जय महावीर प्रभो ! स्वामी जय महावीर प्रभो ! जग  
 नायक सुखदायक, अति गम्भीर प्रभो ! ॐ जय महावीर  
 प्रभो ! कुन्डलपुर में जन्मे, त्रिशला के जाए । पिता सिद्धार्थ  
 राजा, सुर नर हर्षाए ॥१॥ दीनानाथ दयानिधि, हैं मंगल  
 कारी । जगहित संयम धारा, प्रभु पर उपकारी ॥२॥  
 पापाचार मिटाया, सत्यपथ दिखलाया । दया धर्म का झंडा,  
 जग में लहराया ॥३॥ अर्जुन माली गौतम, श्री चन्दनबाला ।  
 पार जगत से बेड़ा इनका कर डाला ॥४॥ पावन नाम  
 तुम्हारा, जग तारण हारा निशदिन जो नर ध्यावे, कष्ट  
 मिटे सारा ॥५॥ करुणासागर ! तेरी सहिमा है न्यारी ।  
 ज्ञानमुनि गुण गावे, चरणन बलिहारी ॥

## श्रावक के १४ नियम (संचित)

१ संचित-पृथ्वी, पानी, वनस्पति, फल, फूल आदि २  
 द्रव्य-खाने पीने की वस्तुएं ३ विगय-दूध, दही, घी, तेल,  
 मिठाई । ४ पत्नी-पावों की रक्षा के लिये जो पहनी जाए  
 ५ ताम्बूल-भोजन के बाद मुख शुद्धि के लिये जो वस्तु  
 खाई जाती है ६ वस्त्र-पहनने ओढ़ने के कपड़े ७ कुसुम-  
 सुगंधित पदार्थ ८ वाहन-हाथी, घोड़ा, ऊंट, गाड़ी, तांगा,

मोटर, रेल, नाव, हवाई जहाज, आदि सवारी ९ शयन-  
पाट, पाटला, पलंग, बिस्तर आदि १० विलेपन-शरीर  
पर लेपन और मर्दन किये जाने वाले द्रव्य ११ ब्रह्मचर्य-  
चौथे व्रत की मर्यादा १२ दिशी-दिशाओं की मर्यादा १३  
स्नान-देश स्नान और सर्व स्नान की मर्यादा १४ भत्ते-  
भोजन पानी की मर्यादा ।

## संवर लेने का पाठ

द्रव्य से-पांच आश्रव सेवन का पञ्चक्खान । क्षेत्र से  
जितने क्षेत्र की मर्यादा रखी हो उससे आगे जाने का त्याग ।  
काल से-जितने काल का परिमाण किया हो या तीन नव-  
कार गिन कर पारुं तब तक पञ्चक्खाण । भाव से-उपयोग  
सहित दो करण तीन योग में दुविह तिविहेणं न करेमि,  
न कारवेमि मनसा वयसा कायसा तस्स भत्ते पडिवकमामि  
निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

## नमुक्कारसहिअं:

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं: पञ्चक्खामि चउविहंपि  
आहारं-असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहसा-  
गारेणं वोसिरामि ।

## उपवास

उग्गए सूरे उपवास पञ्चक्खामि तिविहं पि चउविहंपि  
आहारं-असणं पाणं खाइमं, साइमं अन्नत्थणाभोगेणं, सहसा-

गारेणं परिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सब्वसमाहिवत्ती-  
यागारेणं वोसिरामि ।

## एकासणा-बियासणा

उगए सूरे एकासणा-बियासणा पच्चक्खामि दुविहं  
तिविहंपि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थाभोगेणं  
सहसागारेणं सागरियागारेणं, आउट्टण पत्तारेणं, गुरुअब्भुट्ठा-  
णेणं परिठावणिया गारेणं, महत्तरागारेणं सब्वसमाहिवत्ति-  
यागारेणं वोसिरामि ।

## आयंबिलं

उगए सूरे आयंबिलं पच्चक्खामि तिविहंपि आहारं  
असणं खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, लेवा-  
लेवणं, गिहत्थसंसट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं परिठावणियागारेणं,  
महत्तरागारेणं, सब्वसमाहिवत्तियागारेणं, पाणस्स लेवेण वा  
अलेवेण वा, ससित्थेणं वा, असित्थेणं वा वोसिरामि ।

## गौतम स्वामी की प्रार्थना

जय गौतम स्वामी, प्रभु जय, गौतम स्वामी, रिद्धि  
सिद्धि के दाता, प्रणमं सिर नामी ॥ ओ३म् जय गौतम  
स्वामी ॥ ध्रुव ॥ वसुभूति के नन्दन, पृथ्वी के जाया, स्वामी ।  
कंचन वरण अनूपम, सुन्दर तन पाया ॥ १ ॥ ठाम २ सूत्रो  
मे नाम तेरा आवे, स्वामी । चार ज्ञान पूरवधर, सुर-नर गुण  
गावे ॥ २ ॥ महावीर से गुरु तुम्हारे, जग तारण हारे, स्वामी ।  
सब मुनियों में शिरोमणि गणधर तुम प्यारे ॥ ३ ॥ भव्य

हितार्थ तुमने, किया निर्णय भारी, स्वामी । पूछे प्रश्न  
अनेको निज आतम तारी ॥४॥ गौतम-गौतम जाप जये से  
दुःख दारिद्र जावे, स्वामी । सुख सम्पत्ति यश लक्ष्मी अना-  
यास आवे ॥५॥ भूत प्रेत भय नाशे, गौतम ध्यान धरे,  
स्वामी । चोट फेंट नहीं लागे, सब दुःख दूर हरे ॥६॥ दो  
हजार के साल सादड़ी सेखेकाल आया, स्वामी । गजानन्द  
आनन्द करो यूँ, चौथमल गाया । ७॥

### महामन्त्र की आरती

ॐ जय अरिहन्ताणं प्रभु जय अरिहन्ताणं, भाव भक्ति  
से नित्य प्रति प्रणमं सिद्धाणं । ओगम् जय अरिहन्ताणं ।  
दर्शन ज्ञान अनन्ता शक्ति के धारी, स्वामी । यथाख्यात  
समकित है, कर्म शत्रु हारी ॥१॥ हे सर्वज्ञ ! सर्वदर्शी बल,  
सुख अनंत पाये, स्वामी । अगुरु लघु असूरत अव्यय कहलाये  
॥२॥ नमो आयरियाणं, छत्तीस गुण पालक, स्वामी । जैन  
धर्म के नेता संघ के संचालक ॥३॥ नमो उवज्झायाणं  
चरण करण ज्ञाता स्वामी । अंग उपंग पढ़ाते, ज्ञान दान  
दाता ॥४॥ नमो सव्व साहुणं ममता मद हारी, स्वामी ।  
सत्य अहिंसा अस्तेय ब्रह्मचर्य धारी ॥५॥ चौधमल कहे शुद्ध  
मन जो नर ध्यान धरे, स्वामी । पावन पंच परमेष्ठी,  
संगलाचार करे ॥६॥

### गुरु दर्शन

गुरु दर्श हुये मेरे भाग्य जगे, पाप कटे मेरे युग २ के

॥टेर॥ धूली मात के मोती हैं, पूनमचन्दजी के ज्योति हैं  
बलिहारी मैं पग २ पे ॥१॥ नाम तुम्हारा श्री गणेश, जन्म  
विलाडा मरुधर देश विजयी तुम पथ २ पे ॥२॥ तुम शुभ  
मंगलकारी हो पंच महा व्रतधारी हो स्वामी हो तुम म  
द्भग के ॥३॥ तप एकान्तर में हो लीन, प्रभु दर्शन पाते  
असीस कल्याणी हो जन २ के ॥४॥ तुम कर्नाटक केसर  
हो, दक्षिण के उपकारी हो वृजेश प्रभु तेरे गुण गावे । ५।

### श्री साधु वन्दना

नमु अनन्त चौवीसी, ऋषभादिक महावीर । आर्य  
क्षेत्रमां घाली धर्मनी सीर ॥१॥ महा अतुल्य बली नर, शूर  
वीर ने धीर । तीरथ प्रवर्तवी, पहोच्या भजवल तीर ॥२॥  
श्रीमन्धर प्रमुख, जघन्य तीर्थकर वीश । छे अढीद्वीपमां  
जयवंता जगदीश ॥३॥ एक सोने सितर, उत्कृष्टा पव  
जगदीश । धन्य महोटा प्रभुजी, जेहने नमाऊं शीश ॥४॥  
केवली दोय कोड़ी, उत्कृष्टा नव कोड, मुनि दोय सहस्त्र  
कोड़ी, उत्कृष्टा नव सहस्त्र कोड ॥५॥ विचरे विदेहे, मोट  
तपस्वी घोर भावे करी वन्दु टाले भवनी खोड ॥६॥ चौवीसे  
जिनना, सघलाए गणधार, चउदेसेने बावन ते प्रणमु सुख  
कार ॥७॥ जिनशासन नायक. धन्य श्रीवीर जिनन्द, गौत  
मादिक गणधर, वर्त्ताव्यो आनन्द ॥८॥ श्री रिषभदेवना  
भरतादिक सो पूत, वैराग्य मन आणि, संयम लिपो अद्भूत  
॥९॥ केवल उपराजी, करी करणी करतूत, जिनमत

दीपावी, सघला मोक्ष पहुँत ॥१०॥ श्री भरतेश्वर ना, हुआ  
 पटोधर आठ, आदित्य जशादिक, पहुँत्या शिवपुर वाट  
 ॥११॥ श्री जिन अन्तरना, हुवा पाट असंख्य, मुनि मुक्ति  
 पहुँच्या, टाली कर्मना वंक ॥१२॥ धन्य कपिल मुनिवर,  
 नमि नमूँ अणगार, जेणे तत्क्षण त्याग्यो, सहस्र रमणी  
 परिवार ॥१३॥ मुनि हरिकेशिबल चित्त मुनिश्वर सार, शुद्ध  
 संयम पाली, पाम्या भवनो पार ॥१४॥ वली इक्षुकार राजा,  
 घर कमलावती नार, भग्गु ने जस्सा, तेहना दोय कुमार  
 । १५ । छये छति रिद्धि छांडिने, लीधो संयम भार, इण  
 अल्प कालमां, पाम्या मोक्ष द्वार ॥१६॥ वली संजति राजा  
 हरण आहिडे जाय, मुनिवर गर्दभाली, आण्यो मारग ठाय  
 ॥१७॥ चारित्र लईने, भेट्या गुरुना पाय, क्षत्रिराज ऋषिश्वर,  
 चर्चा करी चित्त लाय ॥१८॥ वली दशे चक्रवर्ति, राज्य  
 रमणी ऋद्धि छोड़, दशे मुक्ति पहुँत्या, कुल ने शोभा चोड़  
 । १९ ॥ इण अवसर्पिणीमां, आठ राम गया मोक्ष, बलभद्र  
 मुनिश्वर गया पंचमे देवलोक ॥२०॥ दशार्णभद्र राजा, वीर  
 वांछा धरि मान, पछे इन्द्र हटायो, दियो छकाय अभयदान  
 ॥२१॥ करकंडु प्रमुख, चार प्रत्येक बोब, मुनि मुक्ति पहुँ-  
 त्या जीत्या कर्म महा जोध ॥२२॥ धन्य मोटा मुनिवर,  
 मृगापुत्र, जगीश, मुनिवर अनाथी, जीत्या रागने रीश ॥२३॥  
 वलि समुद्रपाल मुनि, राजीमति रहनेम, केशीने गोतम,  
 पाम्या शिवपुर क्षेम ॥२४॥ धन्य विजयघोष मुनि जयघोष

वली जान, श्रीगर्गाचार्य, पहोत्या छे निर्वाण ॥ २५ ॥ श्री  
 उत्तराध्ययनमां जिनवरे कर्या बखाण, शुद्ध मन से ध्यावो,  
 मन में धीरज आण ॥ २६ ॥ वली खन्धक सन्यासी राख्यो  
 गौतम स्नेह, सहावीर समीपे पंच महाव्रत लेह ॥ २७ ॥ तप  
 कठिन करीने, झोसी आपणी देह, गया अच्युत देवलोके,  
 चवी लेशे भव छेह ॥ २८ ॥ वली ऋषभदत्त मुनि । शेठ सुद-  
 र्शन सार, शीवराज ऋषीश्वर धन्य गांगेय अणगार ॥ २९ ॥  
 शुद्ध संयम पाली, पाम्यां केवल सार, ए चारे जिनवर,  
 पहोत्या मोक्ष संझार ॥ ३० ॥ भगवंतनी माता धन्य २ सती  
 देवानन्दा वली सती जयन्ति, छोड़ दिया घरफन्दा ॥ ३१ ॥  
 सती मुक्ति पहोत्यां, वली ते वीरना नन्द, महासती सुदर्शना  
 घणा सतियोना वृन्द ॥ ३२ ॥ वली कार्तिक शेठे, पडिमा वही  
 शूरवीर, जम्मो महोरा ऊपर तापस बलती खीर ॥ ३३ ॥  
 पछी चरित्र लीधूं, मन्त्री एक सहस्त्र आठ वीर, मरी हुवा  
 शर्कोद्व चवी लेशे भव तीर ॥ ३४ ॥ वली राय उदायन, दियो  
 भाणेज ने राज, पछी चारित्र लइने, सार्या आतम काज  
 ॥ ३५ ॥ गंगदत्तमुनि आनंद, तिरण तारणकी जहाज, कुशल  
 मुनि रोहा, दीयो घणाने साज ॥ ३६ ॥ धन्य सुनक्षत्र मुनिवर  
 सर्वानुभूति अणगार आराधिक हुइने, गया देवलोक मझार  
 ॥ ३७ ॥ चवि मुक्ति जाशे, वली सिंह मुनिश्वर, सार, बीजा-  
 पण मुनिवर, भगवती मां अधिकार ॥ ३८ ॥ श्रेणिकना बेटा,  
 मुनिवर मेघ, तजी आठ अन्तेउरी आण्यो मन संवेग

॥३६॥ वीरपे व्रत लेइने, बांधी तपनी तेग, गया विजय  
विमाने, चवि लेशे शिव वेग ॥४०॥ धन्य थावच्छा पुत्र,  
तजी वतीसे नार, तेनी साथे निकल्या, पुरुष एक हजार  
॥४१॥ सुखदेव सन्यासी, एक सहस्र शिष्य लार, पंचसयशुं  
सेलक, लीधो संयम भार ॥४२॥ सर्व सहस्र अढाई, घणा  
जीवांने तार, पुंडरगिरि ऊपर, कियो पादोपगमन संधार  
॥४३॥ आराधिक हूइने, किधो खेवो पार, हुआ महोटा  
मुनिवर, नाम लिया निस्तार ॥४४॥ धन्य जिनपाल मुनि-  
वर, दोय धनावा साध, गया प्रथम देवलोके, मोक्ष जशे  
आराध ॥४५॥ श्री मल्लिनाथना छे मित्र, महाबल प्रमुख  
मुनिराय, सर्व मुक्ति सिधाव्या महोटी पदवी पाय ॥४६॥  
वली जित शत्रु राजा, सुबुद्धि नाम प्रधान, पोते चारित्र  
लेइने, पाम्या मोक्ष निधान ॥४७॥ धन्य तेतली मुनिवर  
दियो छकाय अभेदान, पोटिला प्रतिबोध्या, पाम्या केवल  
ज्ञान ॥४८॥ धन्य पांचे पांडव, तजी द्रौपदी नार, स्थिवरनी  
पासे लिधो संयम भार ॥४९॥ श्री नेमिवन्दन, नो एहवो अभि-  
ग्रह कीध, मास मासखमण तप, शत्रुंजय जई सिद्ध ॥५०॥ धर्म-  
घोष तणा शिष्य, धर्मरुचि अणगार, किडियोनी करुणा,  
आणि दया रस सार ॥५१॥ कडुवा तुंवानो, किधो सघलो  
आहार, सर्वार्य सिद्ध पहींत्यां, चवि लेशे भव पार ॥५२॥  
वली पुंडरिक राजा, कुंडरिक डगियो जाण, पोते चारित्र  
लेइने, न घाली धर्ममां हाण ॥५३॥ सर्वार्य सिद्ध पहींत्यां



चवि लेशे निर्वाण, श्री ज्ञातासूत्रमां जिनवरे कर्पा बखान  
 ॥५४॥ गौतमादिक कुंवर, सगा अढारे भ्रात, सर्व अन्धक  
 विष्णु सुत, धारनी ज्यांरी मात ॥५५॥ तजी आठ अन्तेउरी,  
 काढी दिक्षानी वात, चारित्र लेइने, कीधो मुकितनो साथ  
 ॥५७॥ श्री अनंग सेनादिक, छये सहोदर भ्रात, वसुदेवना  
 नन्दन, देवकी ज्यारी मात ॥५७॥ भद्रिलपुर नगरी, नाग  
 गाहावइ जाण, सुलसा घेर वधिया, सांभली नेमनी वाण  
 ॥५८॥ तजी बतीस २ अन्तेउरी, निकलिया छटकाय, नल  
 कुवेर समानां भेटया श्री नेमिना पाय ॥५९॥ करी छठ  
 छठ पारणां, मन में वैराग्य लाय, एक मास संथारे, मुक्ति  
 विराज्या जाय ॥६०॥ बली दारुण सारण, सुमुख दुमुख  
 मुनिराय, बली कुंवर अनादृष्टि, गया मुक्तिगढ मांय ॥६१॥  
 वसुदेवना वन्दन, धन्य धन्य गजसुकुसाल, रुपे अति सुन्दर,  
 कलावन्त वय बाल ॥६२॥ श्री नेमि समीपे, छोडयो मोह  
 जंजाल, भिक्षुनी पडिमा गया स्मशान सहाकाल ॥६३॥  
 देखी सोमिल कोप्यो, मस्तके बांधी पाल, खेरना खीरा शिर,  
 ठविया असराल ॥६४॥ मुनि नजर न खंडी, सेटी मननी  
 जाल, परीषह सहीने, मुक्ति गया तत्काल ॥६५॥ धन्य  
 जाली मयाली, उवयालादिक साध, शास्वने प्रद्युम्न अनि-  
 रुद्ध साधु अगाध ॥६६॥ बली सचनेमी दृढनेमी, करणी  
 कीधी अबाध दशे मुगते पहींत्या, जिनवर वचन आराध  
 ॥६७॥ धन्य अर्जुन साली कियो कदाग्रह दूर । वीरपे व्रत

लइने सत्यवादी हुआ शूर ॥६८॥ करी छठ छठ पारणां,  
 क्षमां करी भरपूर छंह मास मांही, कर्म किया चकचूर  
 ॥६९॥ कुँवर अइमुत्ते दीठा गौतम स्वाम, सुणी वीरनी  
 वाणी, कीधो उत्तम काम ॥७०॥ चारित्र लइने पहोत्या  
 शिवपुर ठाम, धुर आदि सकाइ, अन्त अलक्ष मुनि नाम  
 ॥७१॥ वली कृष्णरायनी, अग्र महिषी आठ, पुत्र बहु दोये  
 संच्या पुन्यनां ठाठ ॥७२॥ यादव कुल सतियां टाली दुःखं  
 उचाट, पहोत्या शिवपुर में, ए छे सूत्र नो पाठ ॥७३॥  
 श्रेणिकनी राणी, कालियादिक दश जाण, दशे पुत्र वियोगे  
 सांभली वीरनी वाण ॥७४॥ चन्दनवाला पे, संजम लेई  
 हुआ जाण, तप करी देह जोसी पहोत्या छे निर्वाण ॥७५॥  
 नन्दादिक तेरे, श्रेणिक नृपनी नार, सघली चन्दनवाला पे,  
 लीधो संजम भार ॥७६॥ एक मास सन्थारे, पहोत्या मुक्ति  
 संसार, ए नेदुं जणानो, अंतगडमां अधिकार ॥७७॥ श्रेणि-  
 कनां देटा जालयादिक तेंवीस, वीरपें व्रत लेइने, पात्यो  
 विश्वावीश ॥७८॥ तप कठिन करीने, पूरी मन जगीश,  
 देवलोके पहोत्या मोक्ष जाशे तजी रीश ॥७९॥ काकन्दिनी  
 धनो, तजी बत्तीसे नार, महावीर समीपे लीधो संजमभार  
 ॥८०॥ करी छट २ पारणां, आयंबिल उच्छिठ आहार,  
 श्री वीरे बखाण्या, धन्य धनो अणगार ॥८१॥ एक मांस  
 संधारे, सर्वार्थसिद्ध पहींत, महा विदेह क्षेत्रमां, करशे भवनो  
 अन्त ॥८२॥ धन्यानी रीते, हुवा नवेई संत, श्री अनुत्तरो-

ववाईमां, भाखी गया भगवन्त ॥८३॥ सुबाहु प्रमुख, पांच  
 पांचसे नार, तजी वीर पे लीधां, पंचमहाव्रत सार ॥८४॥  
 चारित्र लइने, पाल्यो निरतिचार, देवलोके पहोत्या, सुख  
 विपाके अधिकार ॥८५॥ श्रेणिकना पौत्रा पौमादिक, हुवा  
 दस, वीरपे व्रत लइने, काढ्यो देहनो कस ॥८६॥ संयम  
 आराधी, देवलोकमां जइ वस, महाविदेह क्षेत्रमां, मोक्ष  
 जाशे लेइ जश ॥८७॥ बलभद्रना नन्दन, निषठादिक हुवा  
 बार, तजी पचास २ अन्तेउरी, त्याग दियो संसार ॥८८॥  
 सहनेमसमीपे, चार महाव्रत लीध, सर्वमसिद्ध पहोत्या होशे  
 विदेहे सिद्ध ॥८९॥ धन्नो ने शालिभद्र, सुविश्वरोनी जोड,  
 नारीनां बन्धन, तत्क्षण नाख्या तोड ॥९०॥ घर कुटुंब  
 कबीलो, धन कंचनजी कोड, मास मासखमण तप, टालशे  
 भवनी खोड ॥९१॥ श्री सुधर्मस्वामीना शिष्य, धन्य धन्य  
 जम्बुस्वाम, तजी आठ अन्तेउरी, मातपिता धन धाम ॥९२॥  
 प्रभवादिक तारी, पहोत्या शिवपुर ठाम, सूत्र प्रवर्तवी  
 जगमां राख्युं नाम ९३॥ धन्य ढंढण मुनिवर, कृष्णरायना  
 नन्द, शुद्ध अभिग्रह पाली, टाली दियो भव फन्द ॥९४॥  
 वली खन्दक ऋषिनी देह उतारी खाल, परीषह सहीने, भव  
 फेरा दिया टाल ॥९५॥ वली स्कन्धक ऋषिना, हुवा पांचसे  
 शिष्य, घाणीमां पील्या, मुक्ति गया तजी रीस ॥९६॥  
 संभुतिविजय शिष्य भद्रबाहू मुनिराय, चउद पुरवधारी  
 द्रुपत आप्यो ठाय ॥९७॥ वली आद्रकुमार मुनि, स्थूली-

भद्र नन्दीषेण, अरणिक अइमुत्तो, मुनिश्वरोनी श्रेण ॥६८॥  
 चौबीसे जिनना मुनिवर, संख्या अठावीस लाख, ऊपर  
 सहस्र अढतालीस, सुत्र परम्परा भाख ॥६९॥ कोई उत्तम  
 वांचो, मोढे जयणा राख, उघाडि मुख बोल्यां, पाप लागे  
 इस भांख ॥१००॥ धन्य मरुदेवी माता, ध्यायो निर्मल  
 ध्यान गजहोदे पायो, निर्मल केवलज्ञान ॥१०१॥ धन्य  
 आदेश्वर नी पुत्री, ब्राह्मी सुन्दर दोय, चारित्र लेइने, मुक्ति  
 गया सिद्ध होय ॥१०२॥ चौबीसे जिननी, बड़ी शिष्यणी  
 चौबीस, सती मुक्ति पहोत्यां, पूरी मन जगीश ॥१०३॥  
 चौबीसे जिननी, सर्व साधवी सार, अढतालीस लाख ने,  
 आठ से सितर हजार ॥१०४॥ चेडानी पुत्री राखी धर्म शुं  
 प्रीत, राजीमती विजया, मृगावती सुविनित ॥१०५॥ पद्या-  
 वती मयणरेहा, द्रौपदी दमयन्ती सीता, इत्यादिक सतियों,  
 गइ जमारो जीत ॥१०६॥ चौबीसे जिननां साधु साधवी  
 सार, गया मोक्ष देवलोके, हृदये राखो धार ॥१०७॥ इण  
 अढीद्वीपमां, घरडा तपस्वी बाल शुद्ध पंच महाव्रत धारी,  
 नमो नमो त्रिकाल ॥१०८॥ ए जतियो सतियोना लीजे  
 नित प्रति नाम, शुद्ध मने ध्यावो, एह तरणनो ठाम ॥१०९॥  
 ए जतियो सतियोशुं, राखो उज्ज्वल भाव, एम कहे ऋषि  
 जेमलजी, एह तरणनो दाव ॥११०॥ संवत अढारने वरस  
 सातो शिरदार, गढ झालोरमां हे एह कहयो अधिकार ॥१११॥



## श्री पद्मावती अलोचना

हिवे राणी पद्मावती, जीव राशी खसावे जाणपणुं  
 जग दोहीलुं, इन वेला आवे ते सुज मिच्छामि दुक्कडं ॥१॥  
 भव अनंता करी, अरिहन्त नी. साख । जेमे जीव विराघीया,  
 चौरासी लाख ॥२॥ सात लाख पृथ्वी तणा, साते अपकाय,  
 सात लाख तेउ काय ना, साते वली वाय ॥३॥ दस लाख  
 प्रत्येक वनस्पती, चौदह साधारण धार । बेइन्द्रियादिक  
 जीवनां बेबे लाख विचार ॥४॥ देव तिर्यंच ने नारकी चार  
 २ लाख प्रकाश । चौदह लाख मनुष्यनां यह लाख चौरासी  
 ॥५॥ इह भव परभव सेविया, जे से पाप अठार । त्रिविध  
 त्रिविध परहरुं दुरगति ना दातार । ६॥ हिंसा कीधी जीवनी  
 बोल्या मृषावाद । दोष अदत्तादाननां, मँथुन उन्माद ॥७॥  
 परिग्रह मेल्यो कारमो, कीधो क्रोध विशेष । मान माया  
 लोभ में कर्या वली राग ने द्वेष । ८॥ बलेश करी जीव  
 दूहव्या दीधा कूडा कलंक । निन्दा कीधी पारकी, रति  
 अरति निःशंक ॥९॥ चाडी की पारकी, कीधो थापण सोषो ।  
 कुगुरु कुदेव कुधर्म नो भलो आण्यो भरोसो ॥१०॥ खाटि-  
 कीना भव में किया, कीनी जीवनी घात चौडीमार भव  
 चरकला मार्या दिन ने रात ॥११॥ सच्छीमार भवस छला  
 झाल्या जलवास, धीवर भील कोली भवे, मृग पाडिया पास  
 ॥१२॥ काजी मुल्ला ने भवे पढ्या मंत्र कठोर, जीव अनेक  
 कर्या किधा पाप अघोर ॥१३॥ कोटवालें भव में किया,

आकरा कर ने दण्ड बन्धीवान मराविया कोरडा छडी दंड  
 ॥१४॥ परमाधामी ना भवे दीधा नेरियानें दुख छेदन भेदन  
 वेदना तडिना अतिलीख । १५॥ कुंभार ना भव मे कीया,  
 कांचा निवार पकाया, तेली भवे तिल पीलिया पापे पिंड  
 भराया ॥१६॥ हाली भवे हल खेडिया, फोड्या पृथ्वी ना  
 पेट, सूङ्ग निदण कीधा घणा, दीधा बलव चपेट ॥१७॥  
 मालीना भवे रोपिया, नाना विधि से वृक्ष, मूल पत्र फल  
 फूलनां लाग्या पाप अलक्ष ॥१८॥ अधोवर्द्धियानां भवे, भरियो  
 अधिको भार, पोठी ऊंट कीडा पड्या जाणी दया न लगार  
 ॥१९॥ छीपा ना भवे छेतर्था, कीधा रंगण पोस, अग्नी  
 आरंभ कीधा घणा. वातु वाद अभ्यास ॥२०॥ सूरयणे रण  
 जुंझतां, मार्या मानुष वृन्द । सदिरा मांस मक्खण भाड्या,  
 खाधा मूल ने कन्द ॥२१॥ खाण खणार्ई धातुनी, अणगल  
 पाणि उल्लेच्या, आरंभ कीधा अतीघणा, पोते पापज सिंच्या  
 ॥२२॥ इंगाल कर्म कीधा वली, वनमे दव दीधा, सूख खार्ई  
 वीतरागनी, कुडा दोवज दीवा ॥२३॥ विल्ली भवे उंदर  
 गल्या, गरोली हत्यारी । मुढ मुख तणे भवे, जू लीख मै  
 मारी ॥२४॥ भड्भुजा तणे भवे, मार्या एकेन्द्री जीव । ज्वार  
 चणा गेडं सेकिया पाडंता रीव ॥२५॥ खांडण पीसण  
 गालनो आरंभ कीधों अनेक । रांघण पीसण अग्निनां, पाप  
 लग्या विशेष । २६॥ विकथा चार कीधी वली, सेव्या पंच  
 प्रमादे । इष्ट वियोग पडादिया रोदन विषवाद । २७॥ सोधु

ने श्रावक तणा, व्रत लेईने भांग्या । झूल अने उत्तर तणा, मुज  
 दूषण लागा ॥२८॥ सांप बिच्छू सिंह चितरा, सकरा ने  
 सखली । हिंसक जीव तणे भवे, हिंसा कीधी सखली ॥२९॥  
 सुवावड दूषण घणां काचा गर्भ गलाव्या । जिवाणी  
 ढोलया घणां शील व्रत भंगाव्या ॥३०॥ धोदीना भवे कर्या,  
 जल जीव सुकाया । धुल करी जल रेलिया, दान देतां  
 निवार्या ॥३१॥ लुवार् ना भव जे कर्या घडया शस्त्र अपार ।  
 कोस कुदाला ने पावडा, धग धगती तलवार ॥३२॥ गूजर  
 ना भव मै कर्या, लीला भारा कटाया । पाडी ने वेला से  
 लिया, वाजे ऊठी छे ज्वाला ॥३३॥ ओडनां भव जे कर्या,  
 कूवा वाव खोदाया । सरोवर ने गलाबिया, बली टांका  
 बंधाया ॥३४॥ वाणियानां भव जे कर्या, कूडा लेख लिखाया,  
 ओछो देय अधिको लियो, कूडा माप रखाया ॥३५॥  
 हाथीनां भव जे कर्या, वेलडी विलूरिया, पंखीमाला चूंधीया  
 पापे पेटज भरिया ॥३६॥ केरी ने कोठीं-बडावली निबुंज-  
 मीरिया, राई चलाई शेलणे पोते पापज सिंच्या ॥३७॥  
 अणगल आधण मेलीया, अणपूजे चुल्हे । अणसोध्या दण  
 ओरिया, ते पाप किम भूले ॥३८॥ भव अनेक भ्रमतां थकां,  
 कीधो देह सम्बन्ध । त्रिविध २ वोसरुं तेनो शुं प्रतिबंध  
 ॥३९॥ भव अनेक भ्रमतां थकां, कीधो कुटुम्ब सम्बन्ध,  
 त्रिविध २ वोसरुं तेवो शुं प्रतिबंध ॥४०॥ भव अनेक  
 भ्रमतां थकां कीधो परिग्रह सम्बन्ध । त्रिविध २ वोसरुं

तेवो शुं प्रतिबंध ॥४१॥ इन परे इह भव पर भवे कीधा  
पाप एकत्र । त्रिविध २ वोसरुं कहुं जन्म पवित्र ॥४२॥  
खातीनां भव मैं किया, लीलारुख कटाया । छोटा ने दलि  
मोटको पोते पाप कमाया ॥४३॥ ब्राह्मण रे भव मैं किया,  
कीधा अणगल स्नान । जोतिव निमित्त भाखतां, लियां  
व्रजदान ॥४४॥ वजाजनां भव मैं किया, जूना नवा करौं  
वेच्या कूड कपट केलव्या घणा, पोते पापज संच्या ॥४५॥  
परनारी मैं भोगवी, वेश्या ने विधवा, चोरी जारी मैं करी  
वोल्या मरम ने मोषा ॥४६॥ पुरुष पराया सेविया, घरका  
ने वली दुजा कीलोल हांसी ने मस्करी दीधा मरम मोषा  
॥४७॥ अण छाण्या आदण दिया, अण पूंजे चुल्हे । अण  
सोव्या धान ओरिया, ते किस जाय भूले ॥४८॥ जोर करी  
हिंडे हिचता भांगी तरुवर डाल । काचा फलफूल चूंटिया,  
फोडी सरवर पाल ॥४९॥ भोपा भरडाने भवे, कणहूना  
नचाया, वकरा भैंसा मुरगा वली बिना दोष लगाया ॥५०॥  
न्हावण धोवण मैं किया देश वांगा भराया आरिसे मुख  
जोवता बहु दोष लगाया ॥५१॥ सुल्या धान दलाविया  
इली धुन मसलाया । धनेरिया और तनेरिया मसली पाप  
कमाया ॥५२॥ दासी वेश्यानें भवे चोरी जारी भाई ।  
सातोंही वितन सेविया कुबुद्धि कनाई ॥५३॥ अनुर भवे  
मैं उपनो मुरगी गाय मराई । पंखी पिंजरे पाडिया करणा  
नहीं लाई ॥५४॥ चिलम होका बीड़ी पीधी वीन देल्या



झाड़ी । जीव घांसूलिया घणा होसी परम ख्वारी ॥५५॥  
 भेरु भवानी मानिया महारुद्र हनुमान । आठ मद में छक  
 करी दिया करमा दान ॥५६॥ माखी माला खेसिया भंवरा  
 घर ढाया । पुलिया धान दलाविया पापे पेट भराया ॥५७॥  
 भेखधारीरा भव मैं किया, लिधा असूझता आहार । हिंसा  
 धर्म बतावियो, आई दया नलिगार ॥५८॥ गृहस्थी केर  
 टुकड़ा खाया अनन्तीवार । करणी कुछ किधी नहीं पडिया  
 नरक सझार ॥५९॥ निंदा कीधी साधूनी, शुद्ध साधू सताया ।  
 कुगुरां संग लागने बहूला दोष लगाया ॥६०॥ रेरे कर्म किधा  
 घणा पाप किधा अपार । ये पाप उदय मे अविद्या पीछे  
 किणरो आधार ॥६१॥ अरिहन्त सिद्ध साधूनों, मुज शरणो  
 होजो । भगवन्त सुमरण कीजिये सूरज सामो जो जो ॥६२॥  
 समदृष्टी जीव समदरसी सुणता समता आवे । भारी कर्मा  
 जीवड़ा सुणता दुःख पावे ॥६३॥ हिवे राणी पद्मावती, लीधा  
 शरणा चार । सागारी अणसण कयों, जाणपणा तो सार  
 ॥६४॥ राग वेराडी जे सुने यह तीजी ढाल । समय सुन्दर  
 कहे पाप से छूटूं मैं तत्काल ॥६५॥

### स्तवन-अरणक मुनि

अरणक मुनिवर चाल्या गोचरी, तडके दाजे यो  
 सीसोजी । पाय उभराणेरे, वेलु पर जले, तन सुकुमाल  
 मुनीसोजी ॥१॥ मुख कुमलानोरे, मालतीरा फूलज्यों,  
 गोखारे हेठोजी । खरीरे दुयारारे दिठा एकला, सोयो

मानी मोठोजी ॥२॥ वयण रंगीलीरे, नयणा विंधियो, रिषी  
 थंभ्यो तिण ठामोजी । दासी ने केहेरे जाय उतावली यो  
 ऋषि तेडी ने आपो जी ॥३॥ पावन कीजेसे मुझ घर  
 आंगणो वेरो मोदक सारोजी । भर जोवन मेरे काया  
 कांइ दमी, सफल करो अवतारोजी ॥४॥ चंदावदनी सुं  
 चारित्र चूकियो, सुख विलसे विन रातोजी । एक दिन  
 गोखारे रमता सोगटा, तब दिठी निज मातोजी ॥५॥  
 अरणक अरणक करती मां फिरे, गलियां-गलियां बजारोजी ।  
 कहो किण दिठोरे मारो बालुडो, साथे बहु नर नारोजी  
 ॥६॥ तिहाथी उतर्योरे जननीरे पाय नम्यां, बहुलाज्यो  
 मन मायोजी । धिग वच्छ तोनेरे चारित्र चूकीयो, यहांथी  
 शिवपुर हूरोजी ॥७॥ अगन धकंती सिल्ला उपरे, अरनक  
 अनशन कीधोजी । समय सुन्दर कहे धन ते मुनिवरा, मन  
 वांछित फल लीधोजी ॥८॥ इति

## श्री शान्तिनाथ

श्री शान्तिनाथजी को ध्यान हिया में धर रे २ तू और  
 अनेक उपाय एक मत कर रे ॥८॥ तू पायो मनुष्या देह  
 भटक चौरासी २ तू ऐसी नामत करे होय तेरी हासी ॥९॥  
 तने दे सत गुरु उपदेश श्रुद्ध मारग चल रे २ तू इण  
 विषयो को, छोड़ धर्म लित घर रे ॥१०॥ जिन वाणी ऐसी  
 जान परम पद पाया २ चम्पाजी रामदयाल जैन गुण  
 गाया ॥११॥

## प्रार्थना

अरिहन्त की जय बोल मुख से ॐ अहम् बोल । तेरा  
 क्या लगेगा मोल मुखसे, ॐ अहम् बोल ॥ अरिहन्त जपसे  
 लाखों तिरे है, अरिहन्त जप से काज सरे है इधर उधर  
 मत डोल, । मुख से ॥१॥ अरिहन्त प्रभु है अन्तर्यामी,  
 बीतराग और त्रिजग स्वामी, दे घट के पट खोल, । मुखसे  
 ॥२॥ जिनवर प्रभु का नाम पियारा, कर्म खेल का काटन  
 हारा जरा हृदय में तोल, । मुख से ॥३॥ शान्ति समाधि  
 सुख का दाता, नाम प्रभु का मोक्ष प्रदाता “केवल” हृदय  
 से बोल, मुखसे ॥४॥ नाम प्रभु का सब मन भावे, खाचरोद में  
 सुख बताने, शान्ति नाम अनमोल, । मुखसे ॥५॥

## स्तवन सोले सतियां

गावो २ निसदिन नरनारी सतियां के गुण ग्राम  
 ॥ टेर ॥ रिखव देवजी की पुत्री कहीजे, भरत बाहुबल  
 बहेन सुजान । ब्राह्मी सुन्दर सहा सतीजी का नाम जपो  
 कल्याण ॥१॥ सती कौशल्या और सिपाजी, राजमती  
 गुणखान । कुन्ताजी और द्रौपदी वसुमती मतीमान ॥२॥  
 प्रभावती और वृगावतीजी, धरो चेलना ध्यान । सुभद्रा  
 और दमयंतीजी, जपो सदा कल्याण ॥३॥ सुलसाजी और  
 सेवा देवीजी पद्मावती प्रधान । भीर उठ कर नाम लेने  
 से नटे कर्म चट्टान ॥४॥ सोले सतीयां भजो शुद्ध मन से,

पूज्य खूब फरमाया । गरडे शहर में शुभ मनो कामना,  
होवे आत्म उद्धार ॥५॥

## स्तवन-जैनी स्थान की अमर झांकी

आओ जैनो तुम्हें बताएं, झांकी जैनस्तान की ।  
नमन करो सब हाथ जोड़ कर गाथाएं ये महान की ॥  
चन्दे शासनम् २ ॥टेरा॥ कौशिक नाग डसा पग में, फिर  
भी प्रभु बांदी से न टले । केवल कशणा खातिर नेमी,  
तोरण से मुंह मोड़ चले । संकट में श्री चन्दनबाला,  
प्रभु को पा हर्षायी थी । दिक्षा लेकर सतीजीं राजुलनें सच्चि  
प्रीत निभाई थी । आन न झुकने दी सीता ने, अपने शील  
महान की ॥१॥ मेघमुनी ने कष्ट सहन कर भी, जीवों  
को शरण दिया । गजसुकमाल मुनि ने जलते, अंगारों को  
सहन किया । धर्मरुची ने जहर भरे, कड़वे तुंबे को खाया  
था । जम्बू ने सारा अन्तःपुर, वैभव भी ठुकराया था ।  
मुनि बनकर धन्ता ने कर दी, कथनी सत्य जबान की  
॥२॥ रक्षा खातिर शान्ति प्रभू ने, जीवन को नौछार  
किया । अरणक श्रावक सत्य निभाने, मरने भी तैयार  
हुआ । केवल न्याय निभाने खातिर पद्मनाभ से कृष्ण  
लड़े । ब्रह्मचर्य के लिये सुदर्शन, हंसते-हंसते शूली चढ़े ।  
खेमा शाह ने जनता खातिर सम्पत्ती बलिदान किया ॥३॥  
प्राणों की परवाह न कर, लोक शाह ने धर्मोत्थान किया ।  
शासन हेतु धर्मदास ने, जीवन का बलिदान दिया ।

लोक शाह ने ज्ञान बाण ले, दुनिया का अज्ञान हना । केवल कहते 'पारस' तू भी, अपनी जीवन धन्य बना । आओ जैनों हम सब मिल कर, नाँद करें जय गान की ॥४॥

### स्तवन-ज्ञान लहेरियो

म्हारा सतगुरुसा रंग दियो लहेरियो, लहेर २ रंग आय ॥ १ ॥ राम नाम की मलमल भारी शुद्ध मन लेहुरे धुलाय । ए समता सागर रंग लगावूँ, औहूँ मन हुलसाय ॥ १ ॥ दया धर्म का लग्यारे गोखरू, सतका फूल जड़ाय । ए नेम की तारारे टीकी, ज्ञान की कोर बंधाय ॥ २ ॥ कूठ कपट का लग्यारे तागा, छटके रंग उड़ जाय । ए चुगली चोरी और निंदा से पडियो २ गल जाय ॥ ३ ॥ चौथमल कहे सुन मेरी बहेनों फेर मिलन को नाय । ए ईण लहेरिया ने औढ़ण वाली, जन्म मरण मिट जाय ॥ ४ ॥

### स्तवन

उठ भोर भई टुक जाग सही, भज वीर प्रभु भज वीर प्रभु । अब नाँद अविद्या त्याग सही, भज वीर प्रभु भज वीर प्रभु ॥ १ ॥ जग जाग उठा तू सोता है, अनमोल समय ये खोता है । तू काहे प्रमादी होता है, भज ॥ २ ॥ ये समय नहीं है सोने का, है वक्त पाप मल धोने का । अरु सावधान चित होने का, भज ॥ ३ ॥ तू कौन कहां से आया है, अब गमन कहां मन लाया है । टुक सोच ये

अवसर पाया हे, भज ॥४॥ रे चेतन चतुर हिसाब लगा,  
दया खाया खर्चा लाभ हुआ । निज ज्ञान जमा तू संभाल  
किया भज ॥५॥ गति चार चौरासी लाख रुला, ये कठिन  
कठिन शिवराह मिला । अब झूल कुमार्ग विषे मत जा,  
भज दीर प्रभु २ ॥६॥ इति

### स्तवन-चौवीस जिन

प्रातः उठ चौवीस जिनंद को सुमरण कीजे भावधरी ।  
रिपभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमती कुमती सब दूर  
हरी ॥ पद्म सुपास चन्दा प्रभु ध्यावो, पुष्प दंत हृण्या कर्म  
अरी ॥१॥ शीतल जिनश्रेयांस वासुपूज्य, विमल २ बुध  
देत खरी । अनन्त धर्म श्री शान्ति जिनेश्वर हरियो रोग  
असाध्य मरी ॥२॥ कुंथु अरह मल्लि मुनि सुव्रत नमी नेनी  
शिव, रमण वरी । पार्श्वनाथ वर्द्धमान जिनेश्वर, केवल  
लहयो भव ओघ तरी ॥३॥ तुम सम नहिं कोई तारक दूजो,  
इम निश्चय मन मांही धरी । त्रिलोत्त रिख कहे जिन तिम  
करिने मुक्ति दो अब महर करी ॥४॥

### स्तवन, ज्ञान की रेल

ये काया की रेल, रेलसे, अजब निराली है । टेर पाप  
पुण्य दो बना पेनाली, अकाल लटक ले जिसपे डाली मनका  
कांटा लगा, जिधर चाहे उधर घुमा ली है ॥१॥ दया धर्म  
का पैया लगाकर, सत की लाठी खूब जमाकर ज्ञान का बाण  
पेंच, ध्यान की सांगल डाली है ॥२॥ मुख लाठ बनी अति

भारी, सांस धुंवा है जिससे जारी ज्ञान की अग्नि लगा जेठा  
 अग्नि की बारी है । ३॥ नवज का घंटा, हिरदा में हिलता,  
 रेल टेम गई जिसमें बीती, हातों का सिंगल गिरा रेल अब  
 आने वाली है । ४॥ जीव मुसाफिर क्यों दुःख देगा, मुगत  
 पुरी का टिकट न लेगा कफ की घंटी बजी, कूच अब होने  
 वाली है ॥ ५॥ तार खबर जब हिचकी आई, मौत झंडी  
 आण बताई, भरम रेल गई छूट, पड़ा स्टेशन खाली है । ६॥

### स्तवन सीता माता

धन २ सीता माता तुमको लाखों प्रणाम ॥ २॥ देवी  
 हिन्द विख्याता तुमको लाखों प्रणाम ॥ ३॥ धर्म पतिव्रत  
 पूर्ण निभाया, अभिन का जल शीघ्र बनाया । जग सारा यश  
 गाता ॥ ४॥ लेते नाम राम के पहले, पाला धर्म कष्ट सब  
 झेले राम चरित्र दर्शाता । २॥ जिसने यह धर्म निभाया,  
 उसके हुआ सभी मन चाया, सुर नर शीश नवाता ॥ ३॥  
 छिन्नु साल किशनगढ़ मांहि, महिमा सोहन मुनि ने गाई,  
 नर नारी गुण गाते । ४॥ इति

### दया का स्तवन

जल बिना कमल, कमल बिन भँवरो, अरे कूप नहीं  
 सोहे बिन पाणी, दया बिन करणी दुःख दाणी ॥ १॥  
 तिल बिना तेल, दीपक बिना मन्दिर, और शाम बिना  
 कैसा पटराणी ॥ २॥ गुण बिना रूप, चन्दा बिना रजणी  
 अरे निर्धन नर नहीं अभिमानी ॥ ३॥ हरकचन्द कहे जल्म

आवे तो, अरे जान ले जिनवाणी ॥४॥

## वीर प्रभु के दस स्वप्ना

शासन नायक समरिये रे लाल, भगवन्त श्री वर्धमान  
हो भविकजन । राज छोड़ी ने संजम आदर्या रे लाल,  
चीवीसवां जगभाण हो ॥१॥ दश स्वप्ना वीरजी देखिया रे  
लाल । टेरा॥ पहिले पिशाच पछाड़ियो रे लाल, जीत्या  
मोहिनी कूर हो, कर्मा ने रावरंक कर दिया रे लाल, कर्म  
किया चकचूर हो ॥२॥ सफेद कोयल पंखी देखियो रे लाल,  
स्वप्ने दूसरे जान हो भ० रात दिवस धर्म ध्यावतारे लाल  
ध्याये शुयल ध्यान हो ॥३॥ विचित्र प्रकार ना पंखिया रे  
लाल, स्वप्न तीसरे जान हो भ० । प्रभुजी देवे देशना रे लाल,  
समझावे हित आन हो ॥४॥ दोय माला रत्ना तणीरे लाल,  
स्वप्ने चौथे विलोय हो भ० । साधु बली श्रावक तणा रे  
लाल, धर्म परुप्या दोय हो ॥५॥ उज्ज्वल वरण गाया तणा  
रे लाल, स्वप्ने पांचमें धार हो भ० । साधु साधवी श्रावक  
श्राविका रे लाल, तीरथ थाप्या चार हो ६ पदम सरोवर  
फमला छाड़ियो रे लाल, स्वप्नो छठो अखेव हो भ० । चारों  
जातरा देवी देवता रे लाल, सारे प्रभुजीरी सेव ॥७॥ भुजा  
करी समुद्र तिर गया रे लाल, सातमें सपने विचार हो  
भ० । संसार समुद्र तिर गया रे लाल उतर्या पेले पार  
हो ॥८॥ उगता सूरज दीठो आठमे रे लाल, ऊजलो अति  
असमान हो भ० । प्रभुजी ने आई उपनो रे लाल, निर्मल



भारी, सांस धुंवा है जिससे जारी ज्ञान की अग्नि लगा जेठा  
 अग्नि की बारी है । ३॥ नवज का घंटा, हिरदा में हिलता,  
 रेल टेस गई जिसमें बीती, हातों का सिंगल गिरा रेल अब  
 आने वाली है । ४॥ जीव खुसाफिर क्यों दुःख देगा, मुगत  
 पुरी का टिकट न लेगा कफ की घंटी बजी, कूच अब होने  
 वाली है ॥ ५॥ तार खबर जब हिचकी आई, मौत झंडी  
 आण बताई, भरम रेल गई छूट, पड़ा स्टेशन खाली है । ६॥

### स्तवन सीता माता

धन २ सीता माता तुमको लाखों प्रणाम ॥ २॥ देवी  
 हिन्द विख्याता तुमको लाखों प्रणाम ॥ ३॥ धर्म पतिव्रत  
 पूर्ण निभाया, अग्नि का जल शीघ्र बनाया । जग सारा यश  
 गाता ॥ ४॥ लेते नाम राम के पहले, पाला धर्म कष्ट सब  
 झेले राम चरित्र दर्शाता । २॥ जिसने यह धर्म निभाया,  
 उसके हुआ सभी मन चाया, सुर नर शीश नवाता ॥ ३॥  
 छिन्नु साल किशनगढ़ साहि, महिमा सोहन मुनि ने गाई,  
 नर नारी गुण गाते । ४॥ इति

### दया का स्तवन

जल बिना कमल, कमल बिन भँवरो, अरे कूप नहीं  
 सोहे बिन पाणी, दया बिन करणी दुःख दाणी ॥ १॥  
 तिल बिना तेल, दीपक बिना मन्दिर, और शाम बिना  
 कैसा पटराणी । २॥ गुण बिना रूप, चन्दा बिना रजणी  
 अरे निर्धन नर नहीं अभिमानी ॥ ३॥ हरकचन्द कहे जलम

आवे तो, अरे जान ले जिनवाणी ॥४॥

## वीर प्रभु के दस स्वप्ना

शासन नायक समरिये रे लाल, भगवन्त श्री वर्धमान  
 हो भविकजन । राज छोड़ी ने संजम आदर्या रे लाल,  
 चौबीसवां जगभाण हो ॥१॥ दश स्वप्ना वीरजी देखिया रे  
 लाल । टेरा॥ पहिले पिशाच पछाड़ियो रे लाल, जीत्या  
 मोहिनी कूर हो, कर्मा ने रावरंक कर दिया रे लाल, कर्म  
 किया चकचूर हो ॥२॥ सफेद कोयल पंखी देखियो रे लाल,  
 स्वप्ने दूसरे जान हो भ० रात दिवस धर्म ध्यावतारे लाल  
 ध्याये शुक्ल ध्यान हो ॥३॥ विचित्र प्रकार ना पंखिया रे  
 लाल, स्वप्न तीसरे जान हो भ० । प्रभुजी देवे देशना रे लाल,  
 समझावे हित आन हो । ४॥ दोय माला रत्ना तणीरे लाल,  
 स्वप्ने चौथे विलोय हो भ० । साधु वली श्रावक तणा रे  
 लाल, धर्म परुप्या दोय हो । ५॥ उज्ज्वल वरण गाया तणा  
 रे लाल, स्वप्ने पांचमें धार हो भ० । साधु साधवी श्रावक  
 श्राविका रे लाल, तीरथ थाप्या चार हो ६ पदम सरोवर  
 कमला छाइयो रे लाल, स्वप्नो छठो अखेव हो भ० । चारों  
 जातरा देवी देवता रे लाल, सारे प्रभुजीरी सेव । ७ भुजा  
 करी समुद्र तिर गया रे लाल, सातमें सपने विचार हो  
 भ० । संसार समुद्र तिर गया रे लाल उतर्या पेले पार  
 हो ॥८॥ उगता सूरज दीठो आठमे रे लाल, ऊजलो अति  
 असमान हो भ० । प्रभुजी ने आई उपनो रे लाल, निर्मल

केवल ज्ञान हो ॥ मानुखोतर आंता ब्रिटियो रे लाल, स्वप्ने  
नव में जान हो । भ० प्रभुजीरो तीन लोक मे रे लाल, जस  
फेल्यो असमान हो ॥१०॥ मेरुपर्वत नी चूलिका रे लाल,  
जाये सिंहासन ठाय हो भ० । समोशरण में विराजिया रे  
लाल, दसवां स्वप्ना माय हो ॥११॥ भुगति मन्दिर में  
विराजिया रे लाल, भगवन्त श्री वर्धमान हो ॥भ० रिख-  
रायचन्दजी इस कहे रे लाल, सूत्र भगवती प्रमान हो ॥१२॥

### स्तवन-दिवाली का

धन २ भुगत पधारिया जिनवरजी. तो सो दिन  
जाप जपारी रे ऐसी दया की दिवाली । दान दीपक,  
समणत नी बतियां तो ज्ञान जोत उजवारी रे ॥१॥ तप  
पकवान भर्म का सेवा, तो जीमो जी भर २ थारी रे ॥२॥  
सत को स्नान सिणगार लियल को, तो दीवे रूप रसारी रे  
॥३॥ संजममेल सेल शिवपुर की, तो समता की धर बारी  
रे ॥४॥ खन्या की लिङ्की ने जस का झरोखा. तो जयणां  
की राखो झारी रे ॥५॥ संजम सेज घर पोड़ो, तो आठो  
करस दीना हारी रे ॥६॥ लौढ़ निवारो मार मुझ मून की,  
यो फैरो नी नौकरवारी रे ॥७॥ जयपुर में 'जड़ाव' कहत  
हैं तो बरते मंगलाचारी रे ॥८॥

### स्तवन-चन्द्रगुप्त राजा के सोलह स्वप्ने

बुहा—पाडलीपुर नामा नगर, चन्द्रगुप्त तिहां राजा ।  
सोले सपना देखिया पक्खी पोषा मांय ॥१॥ तिन काले ने

तिन समय, पांच सौ मुनि परिवार । भद्रबाहु समोसर्पा,  
 पाडलीपुर वांग मंझार ॥२॥ वनमाली दीधी वधावणी,  
 चन्द्रगुप्त ने आय । भद्रबाहु स्वामी समोर्या, पाडली वांग  
 मंझार ॥३॥ भली दीधी वधावणी माली थे हिज आय ।  
 हाथी घोड़ा रथ पालखी, किलंगी, सेती सरपाव ॥४॥  
 चन्द्रगुप्त वंदन चल्या बैठी परषदा आय । मुनिवर दे धर्म  
 देसना, सर्व जीवां हितकार । ५॥ हाथ जोड़ राजा कहे  
 साम्भलजो मुनिराज । सोले सपना देखिया, जांरो अर्थ करोनी  
 चितलाय । ३ । बलता मुनिवर इस कहे, सांभलजो थे राय  
 सोले सपना देखिया जांरो अर्थ सुनो चित लाय ॥७॥  
 पहिलो सपनो देखियोजी, भांगी कल्प वृक्ष नी डालो नी ।  
 राजा संजम लेसी नहीं, दुःखमी पंचम आरोजी ॥८॥  
 चन्द्रगुप्त राजा सुनो । १॥ कहे भद्रबाहु स्वामीजी चवदा  
 पूर्व ना पाठिया, चांग ज्ञान अभिरामोजी । ६॥ सूरज अकाले  
 आथसे बीजे सपने राय, भेदोजी, जनम्या पंचम कालना  
 जाने नहीं होसी केवल जानोजी ॥२॥ तीजे चन्दा  
 चांदणी, जिनगे सुनो राय भेदोजी समाचारी जूई २,  
 बालुडो जैन धर्म थासाजी ॥३॥ भूत भूतनी देखिया नाचता  
 चौथे सपने राय भेदोजी । कुगुरु कुदेव कुधर्म नी, जांगी  
 महिमा घणी होसीजी ॥४॥ नाग दीठो बाराफणी, पांचवें  
 सपने राय भेदोजी । कितराक वर्षा रे आंतरे, पडसी  
 फाल दुवालोजी । ५॥ देव विमान छठे मले, जणीरो

सुनो राय भेदोजी । जंधा विद्याचारणी जासी लब्धि  
 विच्छेदोजी ॥६॥ उगो उखडलामाथी, सातवें कमल के  
 वासीजी । चारोही वर्ण मवें, वाण्यारे जैन धर्म थासीजी  
 ॥७॥ हेतु कथानें चोपीयां, तवन सजाय तणी जोड़ोजी । इम  
 घणा प्रतिबोधिया, सूत्र नी रुचि होसी थोडीजी ॥८॥ एको  
 नहीं होसी सहू वाणिया जुदो २ मत झालेजी । खेंच करसी  
 आपो आप की, विरुद्ध करीने हुवे सल्लोजी । दी॥ दीठो  
 सपनो आठयों आग्यारो चमत्कारोजी उद्योत होसी जैन  
 धर्म नो, बहू मिथ्यात अंधकारोजी ॥१०॥ तपता धर्म बखा-  
 निये, राग करीने होसी मेलाजी । इम कोई अजाणता, छुता  
 अछता देसी आलोजी ॥११॥ समन्दर सूखो तीनों दिशा,  
 दक्खण कानी डोलो पाणीजी तीनों दिसा धर्मविच्छेदसी  
 दक्खण कानी धर्म जाणोजी ॥१२॥ जिहा २ पन्च  
 कल्याणिका, तिहां २ धर्म नी हाणोजी । नवसा सपनारो  
 अर्थ यो, जणीरो सुनो राय भेदोजी ॥१३॥ सोनारी थाली  
 मध्ये, श्वान खीर खाता देखीयोजी । दससा सपनारो अर्थ  
 यो, जणीरो सुनो राय भेदोजी ॥१४॥ क्षत्री वंश ना ऊपन्या,  
 घणा केलीं पृथ्वी नाथोजी सोई मलीच्छारे आगले, जोडी ने  
 रेसी बहू हाथोजी । १५ । उंच तणिया लक्ष्मी नीचतणे घर  
 जासीजी । वधसी चुगल ने चोरटा साहुकार सीदासीजी  
 ॥१६॥ हाथी ऊपर वानरा, सपना इग्यारा में दीठोजी ।  
 मलीच्छ राजा ऊँचो होसी, असल हिन्दु होसी हेटाजी ॥१७॥

दीठो सपनो वारमो, समंदर लोपी छे कारोजी । छोरु गुरु  
 माइत नी, भक्ति करसी थोडोजी ॥१८॥ खतरी वंस मेरा  
 होसी, वचन कहीने नट जासीजी । दगो २ करसी घणा,  
 विश्वास घातज थासीजी ॥१९॥ विनय भाव थोडो होसी,  
 मच्छरवादी होसी जादाजी, राड बीराड करसी घणो ऊपर  
 आणसी बोलोजी ॥२०॥ कारण कुरण थोडो होसी, ओछो  
 होसी तोलोजी । माईत दांत करता थकां, बीच में लेसी  
 तोडोजी । २१ । कितरा क साधुनें साधवी, दरवे लेसी  
 दिक्षाजी । अज्ञा थोडी मानसी, सीख देतां करसी द्वेषोजी  
 ॥२२॥ आपो आपरे छांदे चालसी, छांदे गुरु के थोडाजी ।  
 लज्जा रहित संजम पालसी, करणी करतूत मांहे कोराजी  
 ॥२३॥ आकुल होईने वंछसी गुरुवादीक नी घातोजी । शिष्य  
 अक्नीत ऐसा होसी, उत्तम सुपातर थोडाजी ॥२४॥ मारग  
 जोत्या वाछरू, बालुडो जैन धर्म थासीजी । फदाचित्त बूडा  
 होसी, प्रमाद में पडजासीजी ॥२५॥ बालक सहृघर छोडसी,  
 आणसी वैराग भावोजी । लज्जा रहित संजम पालसी, करणी  
 करतूत माय कोराजी ॥२६॥ बालक सहू सरखा नहीं, बडा  
 नहीं सहू ढीटाजी । सचाई इम भांखसी, अरथ विचारीये  
 ऊंडाजी ॥२७॥ रतन झांखां देखिया चवदमें सपनारी  
 जोडोजी । भरतखेतरका साधु साधवी, हेत मिलाप होसी  
 थोडाजी ॥२८॥ रायकुँवर चढीया पोटीयां, सपनो पंदरमो  
 दीठोजी । जैन धर्म छांडी करी लागे मिथ्या मन मीठोजी ।

। २६॥ विना महावत हाथी लड़े, सपनो सोलमो दीठोजी ।  
 कितराक वर्षा रे आंतरे, मुंह सांग्या नहीं मिलसी मेहोजी  
 ॥३०॥ प्रशंसा करसी आपो आपरी, कपट वचन बहु गेराजी ।  
 आचारी साधां तणो, उलटा करसी वेरोजी ॥३१॥ कलह  
 राड करसी घणी, आस करीने व्यसन पोसेजी । छिद्र ताके  
 नीरबोधिया, करसी द्वेषा द्वेषोजी । ३२॥ एक एक जीवड़ा  
 ऐसा होसी, घाले घणा में शंकाजी । भेद पडावे साधां  
 मायने, करम करीने होसी वांकाजी । ३३॥ पांचमा आराका  
 राजवी, होसी बिगर आचारीजी । हाथी पालखी छांडने,  
 करसी ऊंटारी सवारीजी । ३४॥ भाई २ मायो माय ने,  
 हेत मिलाप होसी थोडोजी । घणी लड़ाईने ईर्ष्या, होसी  
 भरत मुझारोजी । ३५ । अकाले विरखा होसी, काल बरससी  
 थोडोजी । वाट घणी जोवाड़सी, अन्नरो पड़सी तोडोजी  
 ॥३६॥ ए सोले सपनो किया, सिंहरे परे पराक्रम करसीजी ।  
 जैन धर्म आराधने, शिवरमणी मांय जासीसी ॥३७॥ राज  
 सुंण्यो निज पुत्र ने, स्हे लेसुं संजम भारोजी । वलता गुरुजी  
 इसडी कही, मतकर ढील लगारोजी ॥३८॥ राज सुंण्यो  
 निज पुत्र ने, चन्द्रगुप्त रे पाटोजी । छता भोग छिटकाईने,  
 दियो छकायाने अभय दानोजी ॥३९॥ व्यवहार सूत्र में  
 चूलिका, भद्रबाहु किया निसतारोजी । अणि अनुसारे जाणजो,  
 रिषी चौथमलजी जोडोजी ।

## चवदह स्वप्न

दशवां स्वर्ग थकी चव्याजी, चौबीसवां जिनराय । चवदह  
 सुपनाजी देखियाजी, त्रिशला देवी माय ॥ जिनन्द माय  
 दीठा सुपना सार ॥८॥ पहले गयवर देखियोजी सूँडा दण्ड  
 प्रचंड । हूजे वृषभ देखियोजी धोरा धोलीं सण्ड ॥९॥ तीजे  
 सिंह सुलक्षणोजी करता मुख बगास ॥ चौथे लक्ष्मी देवताजी,  
 कर रह्या लील विलास ॥१०॥ पंच वरण फूलां तणीजी,  
 मोटी युगल दो माल छट्टे चन्द्र उजासियोजी असीय क्षरे  
 आकाश ॥११॥ दिनकर उगो तेजसूँजी किरणा झांक झमाल ।  
 फरकंती देखी धजाजी, ऊँची अति असराल ॥१२॥ कुंभ  
 कलश रतना जड्योजी उदकभर्यो सुविशाल । कमल फूलां  
 को ढाकणोजी नववे स्वप्न रसाल ॥१३॥ पद्म सरोवर जल  
 भर्योजी कमला करे रे शोभाय देव देवी रंग में रमेजी,  
 देख्या आवे दाय ॥१४॥ क्षीर समुद्र चारों दिशाजी, जेनो  
 मीठो नीर । दूध जैसो पानी भर्योजी कठिन पावणो तीर  
 ॥१५॥ मोत्या केरा झूमकाजी देख्या देव विमान । देव देवी,  
 कोतुक करेजी आवंतां असमान ॥१६॥ रत्नां की राशी  
 निरमलीजी देख्यो स्वप्न उदार । स्वप्नो देख्यो तेरमोजी  
 हियडे हर्ष अपार ॥१७॥ ज्वाला देखी दीपतीजी अगन शिखा  
 बहु तेज । इतने जाग्या पदमिनीजी धरता स्वप्ना से हेज  
 ॥१८॥ गजगति चाल्या मलकताजी आया राजन पास ।  
 भद्रासन आसन दियोजी राय पूछे हुल्लास ॥१९॥



कहो किमकारण आवियाजी कहो थारा मननी बात । चवदे  
 स्वप्ना देखियाजी अर्थ कहो साक्षात् ॥११॥ स्वप्ना सुनी  
 राय हर्षियाजी कीनो स्वप्न विचार । तीर्थकर चक्रवर्ती  
 हुसीजी तीन लोक आधार ॥१२॥ प्रभाते पंडित तेडियाजी  
 करनो स्वप्न विचार तीर्थकर चक्रवर्ती हुसीजी तीन लोक  
 करतार ॥१३॥ पंडित ने बहु धन दियोजी वस्तर ने फूल  
 माल । गर्भवास पूरा थया जव जनम्यां पुण्यवंत बाल ॥१४॥  
 चौसठ इन्द्र आवियाजी छप्पन दिशा कुंवार अशुची कर्म  
 निवारनेजी गावे मंगलाचार ॥१५॥ प्रतिबिम्ब घर में  
 धर्योजी माताजी ने विश्वास । शक्र इन्द्र लीधा हाथ में जी  
 पंच रूप प्रकाश ॥१६॥ मेरु शिखर न्हवरावियाजी तेहनो  
 बहु विस्तार इन्द्रादिक सुर नाचियाजी नाची अपसरा नार  
 ॥१७॥ अठाई महोत्सव सुर करेजी दीप नन्दीश्वर जाय ।  
 गुण गावे प्रभुजी तणाजी हियडे हर्ष न माय ॥१८॥  
 परभाते सुपना जो भणेजी भणता आनन्द थाय । रोग शोक  
 दूरा टलेजी अशुभ कर्म सब जाय ॥१९॥ इति ॥

### चौदह स्वप्ने

राय सिद्धारथ घर पटराणी नाम त्रिशला सुलक्षणिए  
 राज भवन मांहे पलंग पोढतां चवदे सुपना राणी देखिया ए  
 ॥१॥ पहिले ओ सुपने गयवर देख्यो दूजे वृषभ सुहामणोए ।  
 तीजे सिंह सुलक्षणो देख्यो, चौथे लक्ष्मी देवतांए ॥२॥ पांचमें  
 वर्णी फूलनी माला, छठे चन्द्र अमी झर्यो ए । सात में

सूरज, आठवें ध्वजा, नवमें कलश अमी भर्यो ए ॥३॥ पदम  
सरोवर दस में देख्यो, क्षीर समुद्र देख्यो ग्यारमें ए । देव  
विमाण ते बारमें देख्यो, रणझण घंटा वाजताए ॥४॥ रतनारी  
राशी ते तेरमे देखीं, अग्नि शिखा देखी चवदमेंए । चवदे  
सुपना देखी राणीजी जाग्या, राय समीपे पोंहचियाए । ५॥  
सुणो हो स्वामी म्हेतो सुपना देख्या, पाछली रात रलिया  
मणाए । राय सिधारथ पंडित तेडया कहो रे पंडित फल  
एहनो ॥६॥ हमकुल मंडन तुमकुल दीवो धनहो महावीर  
स्वामी अवतर्या ए ॥७॥ जे नर गावे ते सुख पावे आनन्द  
रंग वर्धामणाए ॥८॥

## स्तवन-आदिश्वर प्रभु का पारणा

मारी रस सेलडी, आदी जिनेश्वर कियो पारणो ॥टेर ।  
सुपनो आयो सुन्दरी सरे जहांज आई घर वाहर, भारी वस्त्र  
पेरियासरे जाग्या श्रेयंस कुमार ॥१॥ घडा एक सौ आठ  
सेलडी, रस भरिया है नीका उलट भाव से दान दिया है  
मांड लियो छे बूको ॥२॥ देव दुंदभी बाज रही सरे सो-  
नैया की बरखा, बारा मास में कियो पारणो, गई भूख ने  
तिरखा ॥३॥ रिद्ध सिद्ध और मनो कामना घर-घर  
मंगलाचार, दुनिया हर्ष बधावना सरे कोई आखातीज तिवार  
। ४॥ हाथ जोडने करूं विनती सारो मारा काज । अरजी  
म्हारी मान लो सरे रिखबदेव महाराज । ५॥

## स्तवन-श्री मन्दिर स्वामी को

श्री मन्दिर जुग मन्दिर, प्रभुजी बाहु सुबाहु सुभावत है वन्दना करूं बीस विहर मानजी की जो सुख सिवपुर पावत है ॥१॥ सुजात सेन प्रभु रिषभा नन्दन, अनन्त वीर गुण गावत है ॥२॥ सूर प्रभु विसाल वज्रधर, चन्द्रानन गुण गावत है ॥३॥ चन्द्रबाहु भुजंग इश्वरजी नेमीसर को ध्यावत है ॥४॥ वीरसेन, महाभद्र देवजस बन्धू अजत वीर्य गुण गावत है ॥५॥ स्फटिक सिंहासन जिनवर बैठे, चौसठ चँवर डुलावत है ॥६॥ हरी हरी चक्री में बीधा बिराज्या, बारे परखदा आवत है ॥७॥ उगणीस आडसठ घोड नदी में, तिलोक ऋषिजी गुण गावत है ॥८॥

## चुंदड़ी शीलकी.

बहिनो ओडो शियलनी चुंदड़ी रे चुंदड़ ओडयां लागो सवागण नार ॥१॥ सत प्रेम को कपड़ो मंगावजोरे पछे धर्म को रंग लगाय ॥२॥ गुरु भक्ति को गोदो मंगावजोरे पछे ज्ञान शेखरु लगाय ॥३॥ बहिनो तपस्या को फीतो मंगावजोरे दान धर्म का फूल दिराय बहिनो ॥४॥ आदे-श्वरजी की दोनों पुत्रियारे चुंदड़ ओड़ी मन हुलसाय ॥५॥ जम्बू स्वामी की आठोई कामण्यारे चुंदड़ ओड़ीने कर्म खपाय ॥६॥ बली रामण्यारी सती जानकी रे दिनो सुभद्रा को कलंक उतार ॥७॥ चन्दनबाला आदि सतियां हुई रे चुंदड़ ओड़ीने गत सिधाय सहावीर प्रभु ने फरमाविशो रे दीजो छोड़ी

विषय कषाय ।

## भावना

सिद्ध अरिहंत में मन रमाते चलो । सर्व कर्मों का बंधन हटाते चलो । इन्द्रियों के न छोड़े विषय में अड़ें जो अड़ें भी तो संयम के कोड़े पड़ें । तन के रथ को सुपथ पर चलाते चलो ॥१॥ संत निग्रह का ध्यान धरते चलो । पाप की वासनाओं से डरते चलो । सद्गुणों का परम धन कमाते चलो । लोग कहते हैं भगवान आते नहीं, साता मरु देवी जैसे बुलाते नहीं, चंद्रमा जैसी दृढ़ता दिखाते चलो । लोग कहते हैं भगवान आते नहीं । मोह माया ममता मिटाते नहीं । आत्मभावों की ध्वनियां गुँजाते चलो ॥ दुःख में तड़पे नहीं सुख में फूले नहीं प्राण जाय मगर धर्म भूलें नहीं, प्रेम श्रद्धा के बल को बढ़ाते चलो ॥ वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी । सिद्धी पायेंगे हम भी कभी न कभी । ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो । सूर्य और चन्द्र जब तक चमकता रहे, तेज सच्चे धरम का दमकता रहे । जैन शासन रसिक जग बनाते चलो ॥

## स्तवन चन्दा प्रभु

जय २ जगत शिरोमणी, हूं सेवक ने तू धनी, अब तोसु गाढीधनी प्रभु आशा पूरो हमतणी, मुज महर करो चन्द्र प्रभु जग जीवन अन्तरयामी, भवदुःख हरो सुणीए अरज हमारी त्रिभुवन स्वामी ॥ ढेर १ ॥ चन्द्रपुरी नगरी हुति महासेन नामे

## स्तवन-श्री मन्दिर स्वामी को

श्री मन्दिर जुग मन्दिर, प्रभुजी बाहु सुबाहु सुभावत है वन्दना करुं वीस विहर मानजी की जो सुख सिवपुर पावत है ॥१॥ सुजात सेन प्रभु रिषभा नन्दन, अनन्त वीर गुण गावत है ॥२॥ सूर प्रभु विसाल वज्रधर, चन्द्रानन गुण गावत है ॥३॥ चन्द्रबाहु भुजंग इश्वरजी नेमीसर को ध्यावत है ॥४॥ वीरसेन, महाभद्र देवजस बन्दू अजत वीर्य गुण गावत है ॥५॥ स्फटिक सिंहासन जिनवर बैठा, चौलठ चँवर डुलावत है ॥६॥ हरी हरी चक्री में वीधा बिराज्या, बारे परखदा आवत है ॥७॥ उगणीस आडसट घोड नदी में, तिलोक ऋषिजी गुण गावत है ॥८॥

## चुंदड़ी शीलकी.

बहिनों ओढो शियलनी चुंदड़ी रे चुंदड़ ओढया लागो सवागेण नार ॥८॥ सत प्रेम को कपड़ो मंगावजोरे पछे धर्म को रंग लगाय ॥१॥ गुरु भक्ति को गोठो मंगावजोरे पछे ज्ञान गोखरू लगाय ॥२॥ बहिनो तपस्या को फीतो मंगावजोरे दान धर्म का फूल दिराय बहिनो ॥३॥ आदे-श्वरजी की दोनों पुत्रियारे चुंदड़ ओड़ी मन हुलसाय ॥४॥ जम्बू स्वामी की आठोई कामप्यारे चुंदड़ ओड़ीने कर्म खपाय ॥५॥ वली रामप्यारी सती जानकी रे दिनो सुभद्रा को कलंक उतार । चन्दनबाला आदि सतियां हुई रे चुंदड़ ओड़ीने मुगत सिधाय महावीर प्रभु ने फरमावियो रे दीजो छोड़ी

विषय कषाय ।

## भावना

सिद्ध अरिहंत में मन रमाते चलो । सर्व कर्मों का बंधन  
हटाते चलो । इन्द्रियों के न छोड़े विषय में अड़ें जो अड़ें भी  
तो संयम के कोड़े पड़ें । तन के रथ को सुपथ पर चलाते  
चलो ॥१॥ संत निग्रथ का ध्यान धरते चलो । पाप की  
वासनाओं से डरते चलो । सद्गुणों का परम धन कमाते  
चलो ॥ लोग कहते हैं भगवान आते नहीं, माता मरु देवी जैसे  
बुलाते नहीं, चंद्रमा जैसी दृढ़ता दिखाते चलो । लोग कहते  
हैं भगवान आते नहीं । मोह माया ममता मिटाते नहीं ।  
आत्मभावों की ध्वनियां गुंजाते चलो ॥ दुःख में तड़पे नहीं  
सुख में फूले नहीं प्राण जाय मगर धर्म भूलें नहीं, प्रेम श्रद्धा  
के बल को बढ़ाते चलो ॥ वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी ।  
सिद्धी पायेंगे हम भी कभी न कभी । ऐसा विश्वास दिल  
में जमाते चलो । सूर्य और चन्द्र जब तक चमकता रहे,  
तेज सच्चे धरम का दमकता रहे । जैन शासन रसिक जग  
बनाते चलो ॥

## स्तवन चन्दा प्रभु

जय २ जगत शिरोमणी, हूं सेवक ने तू धणी, अब तोंसु  
गाढीधणी प्रभु आशा पूरो हमतणी, मुज महर करो चन्द्र प्रभु  
जग जीवन अन्तरयामी, भवदुःख हरो सुणीए अरज हमारी  
त्रिभुवन स्वामी । ढेर १॥ चन्द्रपुरी नगरी हुति महासेन नामे

नरपति राणी श्री 'लक्ष्मणासती' तसु नन्दन तु चढ़ती रती  
 ॥२॥ तू सर्वज्ञ महा ज्ञाता, आत्म अनुभव को दाता तू तूठा  
 लहीये साता, धन्य धन्य जे जगमें तुम ध्याता ॥३॥ शिवसुख  
 प्रार्थना करशुं उज्ज्वल ध्यान हिये धरशुं, रसना तुम महिमा  
 करशुं प्रभु इण विधि भवसागर तिरशुं ॥४॥ चन्द्र चकोरन  
 के मनमें, गाज धवाज हुवे घन में, प्रिय अभिलाषा त्रिय  
 तन में, ज्यों वसिये मेरे चितवन में ॥५॥ जो सु नजर  
 साहिब तेरी, तो मानो विनती मेरी, काटो करम भरम बैरी,  
 प्रभु पुनरपि नहीं पडूँ भव फेरी ॥६॥ आत्म ज्ञान दशा  
 जागी, प्रभु तुम सेती मेरी लव लागी, अन्य देव भ्रमना भागी,  
 विनयचन्द तिहारो अनुरागी ॥७॥

## श्री महावीर स्वामी की निशानी

कुंडलपुर नगरी देख पुण्याई, सिद्धार्थ राजा राज  
 करंदा है । तिहां चौथो धारो वरते सारो, आणंदी आणंदा  
 है । ब्रसलादे राणी, महा पटराणी, सज सिणगार सजंदा  
 है । रजनी हांदाई मेलांमाई, छे राग छत्तीस रागंदा है ।  
 सपना जब देख्या, मनमें हरख्या, हीये हुल्लास पाबंदा है ।  
 दसमा देवलोके, पुन्य संजोगे प्रभुजी अवतार धरंदा है । चैत्र  
 सुदी तेरस प्रभुजी जन्मया, इन्द्रासन चालंदा है । ज्ञानेकरी  
 देख्या, मनमें हरख्या प्रभुजी तीन भुवन का चन्दा है । ब्रशला  
 दे पूता बड़े अवधूता, प्रत्यक्ष वीर जिबंदा है । सब इन्द्र  
 आया चंदरआया, नरनारी का वृन्दा है । सब राजाराणा

मन हरकाणा, आवत शीश नमंदा है । पूनम उज्वाला, शंक  
झमाला, जिम तारा बीचे चंदा है । धरती अब छोटी भीड़ज  
मोटी, झगमग जोत जिनंदा है करुणा के सागर गुण के  
आगर, पूरा पूनम चंदा है । तब हस्त उठाया, इन्द्र आया,  
गीरवा मोछव करंदा है । रूपवेक्रिय कीना, सागे लीना,  
मेरु पास चलंदा है । पर्वत पर आया, प्रभुजी कुंलाया,  
सिंहासन धरदा है । वली क्षीर सरोवर, गंगा नदी, निर्मल  
नीर नवंदा है । तीर्थों को पानी, अधिक बखानी, कुंभ कलश  
भरंदा है । तब इन्द्र इन्द्रानी, देवी देवता, मनमें सोच करंदा  
है । नानी अवगहणा, कैसे फोरा मन मांही डरपंदा है । तब  
पड़े पनाला, मूसलधारा, प्रभुजी वेवंदा है । भगवन्त ने देख्या  
इन्द्र डरिया, मुझसे भय करंदा है । तब पांव हलाया पहाड़  
कंपाया, धरती धुज धुजंदा है । इन्द्र मन देख्या, मन में  
चमक्या, उपद्रव कोन करंदा है । तब ज्ञान लगाया, मन हर  
षाया, अहो आप जिनंदा है । बड़े बलवंता, हे दुरदांता ना  
कोई जीत सकंदा है । नानासा बालक, सबका पालक  
रखवाला राखंदा है । सारा मिल आया, भेला हुआ, चरण  
शीष नमंदा है । अपराध खमाया शीष नमाया, क्षमानाथ  
, करंदा है । गोदी मां लीना, मन हर कीना, श्रंगस्नान करन्दा  
है । दस शेष हजारों, कंचन धारा, मूसलधार पड़ंदा है । तब  
चारु दिसा में पड़े अखटी, अल्प भार लागंदा है । सिंघासन  
आसन, मेघ आडम्बर, छत्र चंवर ढोलंदा है । तब हिये हार



कानों में कुण्डल, मस्तक मुगट जड़ंदा है । गोलीस मिलाकर,  
 बावना ,चंदन केसर लेप करंदा है । तब जाई जुई और  
 चमेली, अन्तर फूल सुगंधा है । ऊंचासा बाजा, सबही राजा  
 जन्म मोछव करंदा है । परबत से आया, प्रभुजी को लाया,  
 त्रशला देवी को सोपंदा है । नगरी सिनगारी, फूल हजारी,  
 दारीदर दूर करंदा है । तब हीरा पन्ना माणक मोती, घर २  
 रत्न वरसंदा है । तब घर २ नारी, मंगलाचारी, सज  
 सिनगार संजदा है । तब छपन कुंवरी गावे मंगल हालरियो  
 हुलरन्दा है । कुंवर पद रहिया राजन करीया, मन वेराग भाव  
 भावंदा है । तब जोग कुंलीनो, अभिग्रो कीनो, छे मासी  
 त्यागंदा है । तपस्या में भारी, बहुपरिवांगी, सुरया सूर्य  
 उगंदा है । तब गाम नगर पुर पाटण विचरत, अनारज  
 देश आवंदा है । परीसह सहिया, सेठा रहिया, सुगती रमणी  
 पावंदा है । कानों में खीला, पग में खीरा, भमरा डील  
 कोरन्दा है । अटवी में आया ध्यान लगाया, चंडकोसीक नाग  
 डसंदा है । अटियापुर मन्दिर, महा दुक्कर, परमेश्वर ध्यान  
 घरन्दा है । तब गज दंतारा, सुंड सुंडारा, यक्ष सुरपाणी  
 परीसा देवंदा है । परमेश्वर पुरा, है पण सुरा, समता  
 रस पीवंदा है । कौसंबी नगरी, देवज रमणी, सतानीक राजा  
 राज करन्दा है । राजा की बेटो, व्रत में सेटी शीलव्रत पालंदा  
 है । वा चन्दन वाला, शिव सुख माला, सेठ धना पोचंदा  
 है । तब रायवर कन्या, बंधन पडिया अंग काच पेरन्दा है ।

हाथों में कड़ियां, पग में वेड़िया, मस्तक मूंड मुंडा है ।  
 तब एक पग बाहेर, एक पग भीतर नैना नीर झरन्दा है ।  
 डेली में बैठी, झांके टेडी, शुद्ध परणाम भाव भावन्दा है तब  
 खुणे छाजला, उडद बाकला, तेलो तप करन्दा है । चोवीसमा-  
 राया, हे जिण राया, भवजीवा को तान्दा है । भगवन्त  
 पधारिया, मुझको तार्या, उडद दान देवन्दा है । परमेश्वर  
 स्वामी, अंतरजामि तेरे, बोल फजन्दा है । रत्ना की बिरखा  
 रूपे रंभा देव दुंदुभी बाजन्दा है । सब संकट काटो विघ्न  
 निवारो, दुःख दूर करन्दा है । एक रजु बालका नदी, झम्ब  
 की नगरी, श्वास नाम परसन्दा है । एक बड के हेंटे वन  
 के पेठे, सुकल ध्यान धावन्दा है । पुरब दिसी कांती, पेर  
 पाछली, केवल ज्ञान उपजन्दा है । चौसठ इन्द्र, महाराज  
 शिकेन्द्र, देवी और देवन्दा है । तब जय २ नन्दा जय २ भद्रा,  
 केवल मोछव करन्दा है । वाणी परकासी, अमृत खासो,  
 हरषमाही आनंदी आनन्दा है । पावापुरी पदार्या नरनारी  
 हरख्या, हस्तीपाल राजन्दा है । हाथी और घोड़ा रथ का  
 जोड़ा, सेन्या सेत आवन्दा है । चरणा को चाकर, आप हो  
 ठाकर, मुझको पावन करन्दा है । भगवन्त पधारिया मुझको  
 तारिया, कृपानाथ केवन्दा है । तब वन्दना किधी, शीष नमाया  
 प्रदक्षणा देवन्दा है । एक सुजतीं शाला, धर्म उजाला, चोमासो  
 नाथ करन्दा है । चोमासो कीनो, नर नार हरख्या, धर्म ध्यान  
 करन्दा है । वाणी प्रकासी अमृत खाखी, भवी जीवा प्रति

बोध पावेंदा है । बेलो तप कीनो, अनशन लीनो, अमृत धार  
 वरसंदा है । वाणी परकाशी, अमृत खासी भविजीवा सुखकंदा  
 है । सोले पहर तक दी धर्म देसना, उसको शीष नमंदा  
 है । कार्तिक बदी अमावस, आधीरात को परमेश्वर मोक्ष  
 पहुँचंदा है । चौसठ इन्द्र महाराज शकिन्द्र, देवी और देवंदा  
 है । जय २ नंदा जय २ भद्रा निर्वाण महोत्सव करंदा है ।  
 देव दुंदुभी, बाजी गगन में, हर्ष में आनंदी आनंदा है । जिन  
 शासन नायक शिव सुख दायक, उनकूँ शीष नमंदा है ।  
 प्रभु केवल ज्ञानी, मोक्ष के गामी, बार २ ध्यावंदा है । अष्ट  
 कर्म खपाया, जिन मार्ग दिपाया, वे भी मोक्ष पहुँचंदा है ।  
 गुरु मयाचन्दजी स्वामी, गुण के ध्यानी, साध शिरोमणी  
 वंदा है । संवत उन्नीसे साल बतीसे चौमासो धार करंदा है ।  
 भादवा बदी चौथे गुण है बोते, मेरी अल्प बुद्धि धावंदा है ।  
 प्रभु भव जीवांका, कारज सारो, सिद्धी सिद्ध करंदा है ।

## शान्तिनाथ का स्तवन

तर्ज-जब तुमही चले परदेश

श्री शान्तिनाथ भगवान् बचा दे शान अरज सुन  
 लीजे अब दया दृष्टि कर दीजे । तेरा एक केवल आप  
 सहायी है मां वेन पिता और भाई है, प्रभु आशा पूरण  
 चिन्ता चूरण चिन्ता सब हर लीजे ॥ १ ॥ मेरी करणी की  
 और न देखो तुम सत भाव की और न पेखो तुम-प्रभु  
 ट हरण मंगल करण, शान्ति-शान्ति कर दीजे ॥ २ ॥

तुम नाम में जादू अजब भरा, तुम नामसे खोटा होय खरा ।  
हे दयानिधि करुणा के सागर चिन्ता दूरी कीजे ॥ ३ ॥ दिल  
मुख कुँवर ने भजन बनाया है, तन मन से गाय सुनाया है ।  
हे करुणा सागर कृपा करके आसा पूरण कीजे ॥ ४ ॥

## —: वीर जयन्ती :-

तर्ज-झडा ऊँचा रहे हमारा ।

तर्ज-वीर जयन्ती आज मनाओ, भेद भाव सब दिल  
का मिटाओ ।टेरा सब जैनो का मंगल दिन है, समय आज  
अति उत्तम है ! सभी परस्पर मिलो मिलाओ ॥१॥ मैं-मैं  
तू-तू से मुख मोड़ो द्वेष भाव को दिल से छोड़ो परम पिता  
का हुकम बजाओ ॥२॥ एक पिता के हम सब बेटे, सभी  
बराबर नहीं कोई छेदे, प्रेम सूत्र में आज गुंथाओ ॥३॥  
बढ़ें अगाड़ी सब मजहब हैं, सोते हम सब बड़े गजब हैं ।  
करना क्या अब सोचे आओ ॥४॥ फरमान वीर के खूब  
फैलाओ, तन मन धन से धूम मचाओ ! धर्म के खातिर  
बलि चढ़ जाओ ॥५॥ बाते बनाकर कुछ नहीं पाये, उलटे  
घर के और गमाये ! करके विश्व में कुछ दिखलाओ ॥६॥  
कायर बुजदिल मत कहलाओ, धर्म जङ्ग में अब डट जाओ ।  
वीर बनो और वीर बनाओ ॥७॥ शान्ति से रहना सब को  
सिखाओ, जैन धर्म की ज्योति जगा दो । पाखंड मिथ्य  
दूर भगाओ ॥८॥ शक्ति अपनी अजमाओ, जैन धर्म को शिखर  
चढ़ाओ ! केवल मुनि कहे प्रेम बढ़ाओ ॥९॥

## आलोचना

( रचयिता-स्व श्री केवल मुनिजी म. सा. )

वणू आराधिक अणी भवे जी, कहं निज पाप प्रकाश,  
पापी हूं माफी करो जी, दास २ ने दास । हो जिनजी मिच्छा  
दुक्कडं सोय ॥१॥ यत्ना नी करो जीव की जी झूठ वचन  
कह्या होय । चोरी कीधी भूल से जी, शील नी पाल्यो  
होय । ॥२॥ आशा तृष्णा वश भम्यो जी, दम्यो नी क्रोध  
कषाय । रागद्वेष मन में वसे जी, पाप कियो हरषाय ।  
हो ॥३॥ वृद्ध अपंग रोगी तणीं जी, सेवा न कीधी  
चितलाय । कटुक वचने सन्तापिया जी, पूछी नी शाताजाय  
हो ॥४॥ शुद्ध क्रिया में नहीं करी जी, टाली सब वेगार ।  
शुद्ध संजम पाल्यो नहीं जी, हा । हा मोय धिक्कार । हो  
॥५॥ इष्ट अनिष्ट वस्तु परे जी, राग द्वेष किया होय ।  
आरत रुद्धर ध्यान में जी, रह्या भाव मलिन होय । हो  
॥६॥ धर्म ध्यान ध्यायो नहीं जी, नहीं शुक्ल शुभ ध्यान ।  
शास्त्रा रुची जागी नहीं जी, कैसे होवे कल्याण हो ॥७॥  
कपट सहित किरिया करी जी, आत्म प्रशंसा हित गुणी का  
गुण गाया नहीं जी, कलंक उन पर देत हो ॥८॥ प्रभु  
आज्ञा पाली नहीं जी, प्रमाद कियो दिन रात । खाई पीने  
सूई रह्या जी कीधी संजम की घात । हो ॥९॥ झगड़ा  
पड़ाया संघ में जी, कीधा है गच्छ में भेद लड़ाया लड़ाया  
से जी, जिणरो मुझ मन खेद हो । १०॥ रसना वश हो

मोह से जी, भोग्या अनेषणिक आहार । ज्ञान ध्यान में नहीं  
 रम्योजी, गयो जमारो हार । हो ॥११॥ यु अरिहन्त, सिद्ध,  
 आचार्य की जी, उपाध्याय अणगार । सेवा न करी शुद्ध  
 भाव से जी, कैसे होऊं भव पार । हो ॥१२॥ परिग्रह बधायो  
 प्रेम से जी, भर्या है खूब भण्डार कूड़ कपट सेवन कियो  
 जी, पाल्या नी शुद्ध आचार । हो ॥१३॥ सुमति गुपति  
 निर्मल नहीं जी, नहीं निर्मल नववाड़ । परिषह में कायर घणो  
 जी, कीधा है तनरा लाड़ । हो ॥१४॥ प्रेमी दयालु करुणा  
 निधि जी, सुमति दो जिनराज । अनन्त अवगुण से भर्यो जी,  
 तारो गरीब निवाज । हो ॥१५॥ ज्ञान वैराग्य हो चित्त  
 में जी करुं प्रपन्न रो त्याग । इन्द्रिया दमूं मन वश करुंजी  
 संयम में अनुराग हो । १६॥ आत्मा दमूं समता धरुंजी,  
 करुं नित सत गुरु सेव । कषाय तजूं प्रभु ने भजूं जी, लूं  
 मुक्ति तत्क्षणमेव । हो ॥१७॥ सौभाग्य मुनि समता निधि  
 जी, केवल मुनि तस दास खाचरोद दश साल में जी किया  
 है पाप का नाश हो ॥१८॥

## शांतीनाथ का तवन

तुम रटो शांती भगवान यही है सार करो निस्तारा  
 दुख हर है प्राण हमारा । टेरा॥ जो सुद्ध मन ध्यान लगावेगें  
 तो जन्म मरण मिट जावेंगें । पावेगे इससे ही मुक्ति की  
 द्वारा ॥१॥ सब रोग शोक भय जाते हैं । मन तन से जो नर  
 गाते हैं करते हैं पापी जन का ये उद्धार ॥२॥ आत्मा को

सुख भरपुर मिले दुश्मन का कुछ नहीं जोर चले । ये रोग  
सोग संकट को काटन हार दुधारा ॥३॥ दिल सुख कवर  
कहे स्थीर मनकर केध्यावेगें । तो जन्म २ सुख पावेगें  
शान्ति ३ करने वाले ॥४॥

### तवन

हो थने जाणो हे जाणो जाणो जरूरी दिल में थे कर  
लो विचार ॥टेर बाप का बाप दादा गया रे । अब थारी  
कहीं आस एक दिन थाने जावणो रे । रहणो नहीं थीर  
वास ॥१॥ सारो २ करता मरी गया रे बिच में उठया छो  
आप शक्ति उमर थारी घटवाजो लागी, तोयन आई धाप  
॥२॥ देख रया छो आप आख्यांसे । आया सोई जाय  
कालबली तो कीसको नहीं छोड़े । सब दुनियाँ ने खाय ॥३॥  
मरती वखत में सब कोई रोवे थे भी रोवोगा खास । धन  
दोलत ने कुटुंब कबीलो कोई नी आवे लार ॥४॥ समत  
उगणीसे साल चुमोतर रामपुरा के माय रामरतनजी गुरु  
प्रसादे गायो छे चंपालाल ॥५॥

### (गोतम गुणधर)

गोतम गुणधर बंदीये पुरण लब्ध का भंडार २ ॥टेर ।  
चौबीसमा वर्धमान के चेला चतुर सुजान सब साधा में  
शिरोमणी उगो जगत में भाण ॥१॥ चवदे पुरबना पाठीया  
ज्ञानचार वखाण । तपस्या किधी हो चित निरमली नही  
मन्न गित्याण ॥२॥ परबत में मेरु बड़ो सीता नदीयाँ के

माय । संयभूरमण दधिया विषे ऐरावत गज माय ॥३॥  
 सव रस में इखुरस बड़ो दान में बड़ो अभयदान । इस  
 अनेक है ओपमा कहा लग कहजी वखाण ॥४॥ सर्वबाण  
 वर्पनो आउखो दस जुगरया घरमाय पीछे ऐवा गुरु भेटीया  
 चौबीसमा जिनराय ॥५॥ तीस वरस छदमस्त रया पीछे  
 केवलज्ञान दुवादस बरसनो पारणा पहोता निरवाण ॥६॥  
 अनंत सुख में विराजीया माता पृथ्वी को नन्द खुबचन्द  
 कहे थारा नामसु भयो मगन आनन्द ॥७॥

### ( भजन सरवण को )

बेटा सरवण पानी पिलाय वन माई प्यास लगी ॥  
 लाला सरवण पाणी पिलाय वन माई प्यास लगी ॥ टेक  
 आला गीला वांस कटायो कावड़ लीनो बनाय माता पिता  
 ने मांय बैठा के सरवण तीर्य करवा जाय ॥१॥ ना कोई  
 कुवा बावड़ी रे ना कोई समंद तलाव माता पिता ने प्यास  
 लगी है आछी करी रे भगवान ॥२॥ ऊंचा नीच कदमा  
 ऊपर, बुगला उड़ रे जाय जब सरवण मन में जाणियो रे  
 अब जल लाऊ मोरी माय ॥३॥ ले झारी सरवण चालियो  
 रे आयो सरजू के पास जाय नीर झिकोलियो रे तब दशरथ  
 जी छोड़ियो बाण ॥४॥ चक्कर खाय चरती पर पड़ियो  
 मुख से राम उचार तब दशरथजी मन में जाणियो रे है  
 कोई भगत सुजान ॥५॥ पड़ते सरवण यूँ कयो रे दे तूरे  
 हमारी बात प्यासा है म्हारा माता पिताजी दो जल



वाने पाय । ६॥ इतना कहकर सरवण का अव छुट गया  
 प्राण हाय २ दशरथजी बोलिया आछी करी रे भगवान  
 ॥७॥ ले झारी दशरथ चालियो रे आया कावड़ के पास  
 ऊबो सरवण अरज करे यो जल पीवोनी मारी मांय । ८॥  
 ना सरवण की बोली कहीजे ना सरवण की चाल यो  
 जल म्हे न्हें नहीं पीवा रे ० होगयो जंहर समान । ९॥  
 तुलसीदास भजी भगवान हरीसुं हेत लगाय बुझा बुझी  
 स्वर्ग सिधाविया दशरथ दियो हे सराय ॥१०॥

### ( राम को केवट की विनय )

मेरी छोटी सी नाव तेरे जादू भरे पाव । मोहे डर  
 लागे राम कैसे बिठाऊं तोहे नाव में । १॥ एक पत्थर की  
 बन गई नारी एतो काठ की नौका हमारी मेरा यही  
 रोजगार पालूँ सब परिवार सुनो मेरे दाता । १॥ एक अर्जी  
 तुमसे करलूँ तुम्हारे चरणों की रज में धोलूँ । अगर हो  
 आपको मंजूर सुनलो मेरे हजूर । २॥ बड़े प्रेम से पग धोये  
 पाप जनम २ के खोये तारो मेरे परिवार आओ मेरे सरकार  
 आओ बैठाऊँ तुम्हे नाव में । ३॥ चरण अमृत सबको  
 पिलाऊँ श्रद्धा के पुष्प चढाऊँ यूँ कहता रहे सूरज डूबे छन  
 बैठे रहे मोरे नाव में ॥४॥ धीरे २ नैया चलाता गीत खुशी  
 के गाता करके राम दर्शन संग में सीता लखन बैठे रहो  
 मेरी नाव में ॥५॥

( श्री जम्बुजी ) ( तर्ज मारवाड़ी )

मारा आलिजा भरतार मारा हिवड़ारो हार मारी  
 प्रितड़ली ने मती छिटकैयो हो जंबुजी हिलमिल संग चाला  
 ॥१॥ मारी गुणवंती नार आपा लेवा, संजमभार थने  
 मुगत्यारा मेला में ले चालूँ ए सज्जनी २ ॥२॥ माने  
 परणी लाया लार अबे छोड़ो निराधार मारा हतलेवारा  
 वचन निभैयो हो जंबुजी २ ॥३॥ चालो २ माकी लार-  
 में भी ले जावा ने तयार थाने एकलड़ि नहीं छोड़ुं वचन  
 पालु ए सज्जनी २ ॥४॥ नाजुक है जवानी थाकी बाला  
 उमर हमारी थोड़ी जवानी ढलवई दो संजम लिजो हो  
 जंबुजी २ ॥५॥ प्यारी जवानी दिवानी जैसो नदी पुर को  
 पाणी ढलता घड़ी दोई देर नहीं लागे ए सज्जनी २ ॥६॥  
 नहीं बालुड़ा खिलाया नहीं दुध मां पिलाया नहीं सावणी-  
 यांरा झुला में झुलाया हो जम्बुजी २ ॥७॥ प्यारी ये  
 मायाजाल जाणो सुपनारो ख्याल थने मुगत्यारे झुला  
 में झुलई दूँ ए सज्जनी २ ॥८॥ थाने कणी भरमाया  
 सांचा प्रेम ने तोड़ाया मारे बादलिया जुं नैना पाणी वरसे  
 हो जंबुजी २ ॥९॥ सामी सुधर्मा भरमाया ज्ञान अनमोल  
 बताया मारा हिवड़ा में गेरो रंग छाथो ए सज्जनी २  
 ॥१०॥ मारा साज्जन साजनिया बोले आठोई कामणियां  
 प्रीति जोड़ो रे बादलिया, काया कल्पे हो जंबुजी २ ॥११॥  
 बोले जंबुजी कुमार सुनो चंदावदनी नार, घन जोवन काया

में कही रीझीए सज्जनी २ ॥१२॥ मारा रसीला रा सीस,  
थाए भलि दिनी सीख, मैं भी संजम लेवा साथे चाला हो  
जंबुजी २ ॥ १३ ॥

### चंदन बाला

प्रभु प्राण के आधार आया २ मारे द्वार, बोले चंदन  
बाला पाछा कूँकर फिरग्याओ मारा अन्नदाता, छीजे मारी  
आंतड़ली ॥ टेर ॥ मैं तो घणी दुखियारी नाथ, मारी कुण  
सुनेला बात मांषे करुणा करी ने पाछा आईज्यो मारा  
अन्नदाता ॥१॥ म्हारे कणी जनमरा पाप, छुट्या मायड़ली  
ने बाप, आई पराया घरा में दिनड़ा काटु ओ मारा अन्न-  
दाता ॥२॥ भारी बन्धन में बंधाणी, तहीं मिलियो अन्न  
पाणी, मैं तो तीन दिनारी भुखी प्यासी बैठी ओ मारा  
अन्नदाता ॥३॥ जिनराज पाछा आवो, मुझे दर्शन दिलाओ  
मारा आंगणियां में, पगल्या वेगा करजो मारा अन्नदाता  
॥४॥ जिनराज पाछा फिरिया, मारा नेन भर आया, राणी  
त्रिशला रा जाया सुख लाया ओ मारा अन्नदाता ॥५॥ थे तो  
घणां जीवां ने तार्या भवजल से उबार्या, अबे तारवारी,  
वारी मारी आई ओ मारा अन्नदाता ॥६॥ भलो जोग मिलियो  
आज, मारे आई धरम की जहाज मनैं बैठाई ने मुगल्या ले  
चालो मारा अन्नदाता ॥७॥ पाछा आया भगवंत, चंदन बाला  
दान दियो, वां तो मनमें घणी हरसायी ओ मारा अन्नदाता  
॥८॥ हुई सोनैया की वर्षा, सुर नर हरसाया ईतो संजम

लेई ने मोक्ष सिधाया ओ मारा अन्नदाता ॥६॥

—: प्रेम :—

प्यारे प्रेम परस्पर बढ़ाते चलो, कुसंग को दूर हटाते  
चलो ॥८॥ प्रेम है दुनियां में जीवन जड़ी, प्रेम के अन्दर  
है शक्ति बड़ी । सब भाइयों को छाती लगाते चलो ॥९॥  
नमूना मुहब्बत का तुम देख लो, दूध और पानी से प्रेम  
सीख लो । भेद भाव सदा तुम मिटाते चलो ॥१०॥ भाइयों  
से मिलना न रहना जुदा, अशांति को भारत से करदो  
विदा । तुम झगड़ों को सब दिन घटाते चलो ॥११॥ एका ही  
सबको जीते सदा, नहीं जितेगा उसको कोई कदा ! जरा  
पत्तो पे ध्यान जमाते चलो ॥१२॥ धर्म की वृद्धि हों चहाते  
अगर, मिलना परस्पर सीखो मगर । निज भाइयों को धैर्य  
बंधाते चलो ॥१३॥ गुरु सौभाग्य निश दिन चहे, केवल मुनि  
यह हरदम कहे । सबको प्रेम का पाठ पढ़ाते चलो ॥१४॥

### ❀ सामायिक ❀

पांच सात मिल बाई माला निदा की फेराई । फिर  
तुमही कहदो मेरी बहनों कैसी हैं समाई ॥८॥ राजीबाई  
रतनीबाई साणी सुड़ीबाई, पेहर वूपेरे या संध्या को स्था-  
नक में सब आई, इससे उससे करी लड़ाई इसकी उसकी  
करी बुराई ॥ १ ॥ एक कहे ओ गुलाब भूवाजी कल  
पया हूई लड़ाई बड़ा मजा आया होवेगा मैं तो आ-  
नहीं पाई, कमला घरे आया जमाई, गाल्यो गावाँ :

बुलाई ॥ २ ॥ सासू-बहू का घर धहार का सब ही गाना  
गाया, साधु सतियो को भी नहीं छोड़ा, उनका भी नंबर  
आया, नमक-मिरची खूब मिलाई, बन गया पर्वत  
राई ॥ ३ ॥ बड़े २ अध्यायो से, पोथा ये बड़ता जाता  
इस पुराण का सुनलो बहनों, कभी अन्त नहीं आता,  
इससे उससे करी लड़ाई, इसकी-उसकी करी बुराई ॥ ४ ॥  
सामायिकों की तो ये बहनों खुब ही गिनती लगाती पर  
मैंने कि है कैसी समाई ये तो ध्यान नहीं लाती पुन्या  
श्रावक की समाई, जिसकी प्रभुने करी बड़ाई ॥ ५ ॥

### ( मीरा का भजन )

मीरा इतनी तो केणो म्हारो मानि । थने रेणो पड़ेसी  
सासरे ॥ टेक ॥ साधु म्हारो सासरो रे, सतगुरु म्हारो पियर ।  
श्री सांवलिया साहैबोरे, सत की संगत में म्हारो जीव ॥ १ ॥  
सासु म्हारी सुख वर्णी रे । सुसरो शील संतोष । जेठ  
जगत में जण्यो कोई नहीं रे । परण्या से लियो मुखमोड़ ॥ २ ॥  
राणोजी मन में कौपियो है, ले खांधे तलवार । खँच खड्ग  
मीरा मारन लाग्या, मेहला में हो गई मीरा चार ॥ ३ ॥  
सांप टीपारा राणाजी भेजा, दिजो मीरा के हाथ ।  
खोल टीपारा देखन लागी, हो गया नवसर हार ॥ टेक ॥ ४ ॥  
जहर का प्याला राणाजी भेजा, दो मीरा के हाथ ।  
कर चरणामृत पी गई रे, राखनवालो रघुनाथ ॥ ५ ॥

रमता मिलियो कांकरो रे, समर्या सालगराम । मीरा ने  
तो गिरधर मिल गया, मिल गया नन्द किशोर ॥ ६ ॥

( भजन )

रामजी को नाम नहीं लीनोरे, मन माया में बिल  
मायो टेरा ॥ एक मुट्ठी आठो बाबाजी को मेल्यो, वोभी  
कल्पना करके मेल्यो रे ॥ १ ॥ एक रोटी नित गवोंको  
देती वो भी पतली कर देती रे ॥ २ ॥ सो-सो गऊँ को  
दईड़ो जमायो, अंगुल भर नहीं चाख्यो रे ॥ ३ ॥ आड़ोसण-  
पाड़ोसण छाछ लेवा आई, कुतियाँ सी ललकारी रे ॥ ३ ॥ रामजी  
को घर को आयो बुलावो, काँई उठाऊँ काँई मेंलूँ रे ॥ ५ ॥  
इस जीवन को भूँख लगी है इस जीव को प्यास लगी  
है, कोड़ा मार उड़ाई रे ॥ ६ ॥ अबके तो राम मने पाछी  
मेलो, धर्म-पुण्य कर आऊँरे दान-पुण्य कर आऊँरे मन  
माया में बिलमायो रे ॥ ७ ॥

इन्सान बनो

यदि भला किसी का कर न सके तो बुरा किसी  
का मत करना । अमृत न पिलाने को घर में तो, जहर  
पिलाते भी डरना । यदि सत्य मधुर ना बोल सके तो,  
झूठ कठिन भी मत बोलो । यदि मौन रखो तो सब से  
अच्छा, कमसे कम विष तो मत घोलो बोलो तो पहले तुम  
तोलो, फिर मुख ताला खोला करना ॥ १ ॥ यदि घर ना  
किसी का बांध सको तो, झोपड़ियाँ न जला देना । यदि

मरहमपट्टी कर ना सके तो खार नमक न लगा देना ।  
 यदि दीपक बनकर जल न सको तो अंधकार भी मत करना  
 ॥२॥ यदि फूल नहीं बन सकते तो कांटे बन कर न बिखर  
 जाना । यदि मानव बन सहला न सके तो दिल भी किसी  
 का ना दुखाना । यदि देव नहीं बन सकते तो, दानव बनकर  
 भी मत मरना ॥३॥ मुनि पुष्प अगर भगवान नहीं तो,  
 कम से कम इन्सान बनो, किन्तु न कभी हैवान बनो, और  
 कभी ना तुम शैतान बनो । यदि सदाचार अपना न सको  
 तो पापों में पग मत धरना ॥४॥

## जैन-साधु

( तर्ज-होली का )

साधु जैन का मुखड़ा के ऊपर मुँहपति बाँधे रे ।  
 साधु जैन का ॥टेरा॥ पंचमहाव्रत पाले । मुनिवर टाले-  
 दोषण सारा रे । सब जीवां ने साताकारी । वे गुरु मारा  
 रे । साधु जैन का । वा वा साधु जैन का मुखड़ा के ऊपर  
 मुँहपति बाँधे रे ॥१॥ शियाला में सिया मरे पण धुणी  
 नहीं धुकावे रे । कारण अग्नि देवता ने नहीं सतावे रे ।  
 ॥२॥ ऊनाला में बीजणा सु वायरो नहीं खावे रे । वायु-  
 काया जीव मरे मच्छर मर जावे रे ॥३॥ नीचे तो आकाश  
 ऊपरे पवन ऊपरे पाणी रे । पाणी के ऊपर हैं पृथ्वी सांची  
 मानी रे ॥४॥ तुलसी के नहीं फेरा खावे पत्तों पिंड नहीं  
 तोड़े रे । गऊ बन्धन में पड्या पछे अन्न-जल छोड़े रे ॥५॥

रात पड़ियां अन्न-जल को, खेरो मुखड़ा में नहीं घाले रे ।  
 सुई जितनी धातु पिण रात न राखे रे ॥६॥ लीलोती  
 के भेला साधु । भुल कदी नहीं होवे रे । विषयों रे बस  
 होय नार सामो नहीं जोवें रे ॥७॥ भांग, धनुरा गाजा  
 रे तो नेड़ेवे नहीं जावे रे । तंदूरा परमुख बाजा ।  
 नहीं वजावे रे । ८॥ पहेर रात गया के पीछे ध्यान व  
 समय लगावे रे । पिण नहीं गाय वजाय ने । वे रात  
 जगावे रे । ९॥ पाँव उवराणें चाले किंचित् क्रीड़ा वन  
 नहीं करता रे । पर उपकार कारण । दुनिया में फिरता  
 रे ॥१०॥ हाथी, घोड़ा, रेल, मोटर की, नहीं करे अस्वारी  
 रे । दूर-दूर दिसावर, विचरे पाँव विहारी रे ॥११॥ गृहस्थी  
 के घर नौत्या तो जीमन ने नहीं जावे रे । लूखा-सूखा  
 लाय ने, थानक में खावे रे ॥१२॥ घोली तो नहीं बोले,  
 ऐसी खटकी जँती खारी रे । अमृत बोली बोले, वे तो  
 मोज मजाकी रे । होली चौमासो जालना में, दोय ठाणा  
 सु आया रे । नायु शिष्य चौथमल यह भजन बनाया रे ।  
 ॥१४॥ इति ॥

## स्तवन

( तर्ज—छोटा सा बलमां )

ऋषभ कन्हैया लाला आंगना में रुमझुम खेले । अंखि-  
 यन के तारा प्यारा आंगना में रुमझुम खेले ॥ देर ॥ इन्द्र  
 इन्द्राणी आई प्रेम घर गादी में लेवे, हँस रमावे करे प्यार



मरहसपट्टी कर ना सके तो खार नमक न लगा देना ।  
 यदि दीपक बनकर जल न सको तो अंधकार भी मत करना  
 ॥२॥ यदि फूल नहीं बन सकते तो कांटे बन कर न बिखर  
 जाना । यदि मानव बन सहला न सके तो दिल भी किसी  
 का ना दुखाना । यदि देव नहीं बन सकते तो, दानव बनकर  
 भी मत मरना ॥३॥ भुनि पुष्प अगर भगवान नहीं तो,  
 कम से कम इन्सान बनो, किन्तु न कभी हैवान बनो, और  
 कभी ना तुम शैतान बनो । यदि सदाचार अपना न सको  
 तो पापों में पग मत धरना ॥४॥

## जैन-साधु

( तर्ज-होली का )

साधु जैन का मुखड़ा के ऊपर सुँहपति बांधे रे ।  
 साधु जैन का ॥टेरा॥ पंचमहाव्रत पाले । सुनिवर टाले-  
 दोषण सारा रे । सब जीवां ने साताकारी । वे गुरु मारा  
 रे । साधु जैन का । वा वा साधु जैन का मुखड़ा के ऊपर  
 सुँहपति बांधे रे ॥१॥ शियाला में सिया मरे पण धुणी  
 नहीं धुकावे रे । कारण अग्नि देवता ने नहीं सतावे रे ।  
 ॥२॥ ऊनाला में बीजणा सु वायरो नहीं खावे रे । वायु-  
 काया जीव मरे मच्छर मर जावे रे ॥३॥ नीचे तो आकाश  
 ऊपरे पवन ऊपरे पाणी रे । पाणी के ऊपर हैं पृथ्वी सांची  
 मानी रे ॥४॥ तुलसी के नहीं फेरा खावे पत्तों पिंड नहीं  
 तोड़े रे । गऊ बन्धन में पडया पछे अन्न-जल छोड़े रे ॥५॥

रात पड़ियां अन्न-जल को, खेरो मुखड़ा में नहीं घाले रे ।  
 सुई जितनो धातु पिण रात न राखे रे ॥६॥ लीलोती  
 के भेला साधु । भुल कदी नहीं होवे रे । विषयों रे बस  
 होय नार सामो नहीं जोवे रे ॥७॥ भांग, धतुरा गाजा  
 रे तो नेड़ेवे नहीं जावे रे । तंदूरा परमुख बाजा ।  
 नहीं बजावे रे । ८॥ पहेर रात गया के पीछे ध्यान व  
 समय लगावे रे । पिण नहीं गाय वजाय ने । वे रात  
 जगावे रे । ९॥ पाँव उवराणें चाले किंचित् क्रीड़ा वन  
 नहीं करता रे । पर, उपकार कारण । दुनिया में फिरता  
 रे ॥१०॥ हाथी, घोड़ा, रेल, मोटर की, नहीं करे अस्वारी  
 रे । दूर-दूर दिसावर, विचरे पाँव विहारी रे ॥११॥ गृहस्थी  
 के घर नौत्या तो जीमन ने नहीं जावे रे । लूखा-सूखा  
 लाय ने, थानक में खावे रे ॥१२॥ बोली तो नहीं बोले,  
 ऐसी खटकी जैसी खारी रे । अमृत बोली बोले, वे तो  
 मोज मजाकी रे । होली चौमासो जालना में, दोय ठाणा  
 सु आया रे । नाथु शिष्य चौथमल यह भजन बनाया रे ।  
 ॥१४॥ इति ॥

## स्तवन

( तर्ज—छोटा सा बलमां )

ऋषभ कन्हैया लाला आंगना में रुमझुम खेले । अंखि-  
 यन के तोरा प्यारा आंगना में रुमझुम खेले ॥ टेरे ॥ इन्द्र  
 इन्द्राणी आई प्रेम घर गादी में लेवे, हँस रमावे करे प्यार

दिल की रलिया रेले ॥१॥ रतन पांलणिये माता लाल ने  
झुलावे झुले, करे लल्ला से अति प्यार नहीं वो दूरी मेले  
॥२॥ स्नान कराई माता लाल ने पहिनावे झेले गले मोती-  
यन का हार, मुकुट सिर पे मेले ॥३॥ गुरु प्रसादे मुनि  
चौथमल यों सबसे बोले नमन करो हरवार वो तीर्थङ्कर  
पहले ॥४॥

### श्री शांतिनाथ का जाप

तर्ज रसिया— कीजे शांतिनाथ का जाप पाप संताप  
मिटानेजी ॥ १ ॥ अश्वसेन अरु अचिरा के ये नंद कहावे  
जी । लिया जन्म प्रभु गर्भ में आकर मृगी हटावेजी ॥१॥  
शांति नाम से शांति बरते सब दुख जावेजी, भूत प्रेत  
डाकण और व्यंतर निकट न आवेजी ॥ २ ॥ शुद्ध भाव से  
शांति जिनेश्वर को जो कोई ध्यावेजी कल्पवृक्ष और चिता-  
मणि सम सो फल पावेजी ॥३॥ दुःख भय चिता रोग शोक  
ये सभी घटावेजी, मन वांछित तस फले भावना मान बधा-  
वेजी सोला रोग भरे जो तन में सब मिट जावेजी, सिद्ध  
काम हो प्रभु नाम से भजलो भावेजी ॥४॥ शांति नाम की  
प्रातकाल में माला फिरावेजी, ता घर में नित आनंद वर्त  
मुनि केवल गावेजी ॥५॥

### विषापहार

विश्वनाथ विमल गुणईश, त्रिहर मान बन्दु जिनवीस  
ब्रह्मा विष्णु गणपत सुन्दरी, वरदीजो मुझे वागेश्वरी ॥१॥

सत साधु सत गुरु आधार, कहूं कवित आत्म उपकार ।  
 विख्यापहार तवन उदार, सब औखद मैं अमृत सार  
 ॥२॥ मेरो मंत्र तुम्हारे नाम, तुम हो गोरवा गरुड़  
 समान । तुम सम देव न कोई संसार, तुम शरणा तीन लोक  
 मुझार ॥३॥ तुम विष हरण करण जगदीश, नमो नमो  
 अरिहन्त चौविस । तुम गुण सहिमा अगम अपार, सत गुरु  
 सीख लहे न पार ॥४॥ तुम परमात्म परमानन्द कल्प  
 वृक्ष शुभ सुख के कन्द । तुम मेरु सहि सडल धीर, विद्या  
 सागर गुण गंभीर । तुम दधि मथन महा बलवीर, संकट  
 विकट भय भंजन धीर । तुम जग तारण तुम जगदीश,  
 भवजल तारण विश्वावीस ॥५॥ रत्न चितासणी तुम गुण-  
 रास, चित्रावेली चित हरण विलास । उपसर्ग हरण तुम  
 नाम अमोल, जंत्र मंत्र नहीं तुम तोल ॥६॥ तुम जैसे वज्र  
 पर्वत पहाड़, तो तुम नामे मंत्र विषे अपार । नाग दसे तुम  
 नाम सुवाय, विष हरे विष दसे छिन सांय ॥७॥ तुम स्मरण  
 चितवे मन माय, बिष पियां अमृत हो जाय । नाम मुधारण  
 वरते तिहां, पाप पंक मेल रहे न जिहां ॥८॥ जो पारस को  
 स्पर्श लोह निज गुण तज कंचन सस होय । तुम स्मरण  
 साजे कोई सुंच नीज पदवी तज पामे ऊंच ॥९॥ तुम नामे  
 औषद अनुकल, महामंत्र संजीवन मूल । मूर्ख मरम न जाणे  
 भेद, कर्म कलंक दहे तुम देह ॥१०॥ तुम नामे गारुडी के  
 गये, काल, भुजगम कैसे रहे । तुम धन्वन्तर श्री जिनराज,

मरण न पांमे कोई तिण ठाम ॥१२॥ तुम सूरज उगे छिनमाय,  
 सांसो सीत न व्यापे तांय । जीवे दादुर वरखा होय, सुन  
 वाणी सरजीवन होय ॥१३॥ तुम बिन कौन करे मोय सार  
 तुम बिन कोन उतारे पार । दयावन्त तुम दीन दयाल, कर्ता  
 हर्ता के रखवाल । १४॥ शरणे आयो श्री जिनराज मेरा  
 काज सुधारो आज । मेरी पूंजी एक दिन पूत शहा के घर  
 राखो सूत ॥१५॥ मैं करूं बिनती बारम्बार, तुम बिना कोन  
 करे सोय सार । तुम पैगम्बर तुमही पीर, तुम बिन कौन  
 मिटावे पर पीड ॥१६॥ बिनगृह घर तुम वैर विजोग रोग  
 और जलंदर रोग । चरण कमल तुम चित लाय कुष्ट  
 व्याधि दुगंत मिट जाय ॥१७॥ मैं अनाथ तुम त्रिभुवन के  
 नाथ, मात पिता सज्जन संघात । तुम सम दाता कोई निदान,  
 और कहां जांचूं भगवान । १८॥ प्रभुजी पतित उद्धारण  
 हार, वायां गीया की लाज निवार । जहां देखूं जहां तुम ही  
 आय, घट घट जोत रही ठेराय । १९॥ बाट घाट विषम  
 भय जिहां, तुम बिना कौन करे सहाय तिहां । विषम  
 व्याधि व्यंतर जयवाय, नाम लियां छिनमे विरलाय ॥२०॥  
 आचारज मानतुंग आसी, संकट में समर्था नाम निधान ।  
 भक्तासर तुम भक्त सुहाय प्रण राख्या प्रगट तीण ठाम  
 ॥२१॥ चुगल एक पुनी विश्रह भयो, वांदीराजा नृत देखन  
 गयो । एक ण भावे कियो संदेह, कुष्ट गयो कंचन सम  
 देह ॥२२॥ कल्याण सन्दर को चन्द्र गयो, राजा विक्रम  
 विस्मय भयो । सेवक जाण करी मोय सहाय, श्री पार्श्व-

नाथजी प्रगटे तीण ठाम २३॥ भस्म व्याधि समताभद्र  
 भई, सम्भु स्त्रोत्र जिन स्तुती कई । गई सो व्याधि मती  
 विमल भई तिहां पर कृपा तुमारी भई ॥२४॥ भविसदत्त  
 श्रीपाल नरेश, सायर जल तुम संकट सुविशेष । तहां पर  
 तुमही भये सहाय, आनंद से घर पहुंचे आय ॥२५॥ सभा  
 दुशासन पकडयो चीर द्रोपदी घर, राखयो शील । सीता  
 लछमन दीनी साज, रावण जीत विभीषण-राज ॥२६॥  
 सेठ सुदर्शन दीनो साज, सूली को सिंहासन थयोअ षाढ  
 भूति मन धर्यो ध्यान, तत्क्षण उपन्यो केवल ज्ञान ॥२७॥ सिंह  
 सर्पादिक जीव अनेक, जहां समरं तिहां राखी टेक । ऐसी  
 कृति कहूं जिनराज, सहाय कहे शरणागत राख ॥२८॥ इण  
 अवसर जो जीवे बाल, मेरा संदेह मिटे तत्काल । वंदी छोड  
 तुम भरत महाराज, अपना वंद की लाज निवार ॥२९॥ और  
 अलम्बन मेरो नाम मैं निश्चय कीयो मन मांय । चरण  
 कमल छोड़ूं नहीं सेव तुम तो मेरे साचे गुरुदेव ॥३०॥ तुम  
 ही सूरज तुमही चन्द्र मिथ्यात मोहनि कन्दमकन्द । घर्म  
 चक्र तुम धारण धीर, और चक्र विधारण वीर ॥३१॥ चोर  
 अग्न जल भूत पिशाच, जल जंगल अटवी में जाय । बैरी  
 दुश्मन राजा वस होय, तुम प्रसादे गंजे नहीं कोई ॥३२॥  
 हये गये जु सबल सामंत, सिंगसारदुल महा भयवंत । दढ़  
 बंधन विग्रह विकराल, तुम नामे छुटे तत्काल ॥३३॥ पांयनमु  
 प्रणमुं मैं आज वखसो सुख सम्पती महाराज । एक उथाप

थाप्या सुनिराज, नाय तुम्हारों गरीब निवाज ॥३४॥ पानी  
 से पेदासी करे, खाली अडाणा पूर्ण भरे । कर्ता हर्ता तुम  
 कृपाल, कीडी कुंजर किरत निहाल । ३५॥ गुण अनंत अल्प  
 सोय ज्ञान, कहाँ लग प्रभुजी का करुं बखान । अगम पंथ  
 सूझे नहीं सोय, तुम्हारा चारित्र को आवे नहीं पार ॥३६॥  
 भये प्रसन्न तुम साज दियो, दयावंता तुम दर्शन दियो ।  
 सहाय पूत सचेतन भयो, हंसतो २ निज घर गयो ॥३७॥  
 धन दर्शन दीठा भगवान आज अंग मुख नैन पवित्र हुआ ।  
 प्रभुजी का चरण कमल हुं नमुं, जन्म कृतार्थ मेरो हुआ  
 । ३८॥ कर पंकज नमाऊं शीश, मेरो अपराध खमो जगदीश ।  
 सतरसे पंधरे सुभ स्थान, नालतोल शुद्ध चउदस ज्ञान  
 ॥३९॥ भणे गुणे सो परमानन्द, कल्प वृक्षसा शुभ के कंद ।  
 अष्ट सिद्ध नव निधी सोलहे, अचल कीरती आचारज कहे  
 ॥४०॥ दोहा-भय भंजन रंजन जगत, विख्या पारस अभिराम  
 संशय तज समरुं सदा, श्री शान्ति जिनेश्वर नाम ॥४१॥  
 नोट-इस छंद को एक बार अथवा तीन बार तथा सात  
 बार अथवा ग्यारे बार तथा इकीस बार तथा पैंसठ बार  
 पूर्व या उत्तरदिशी के सन्मुख बैठके पढ़ने व सुनने से ज्वरादि  
 विषम विषभी दूर हो सकते हैं ॥इति॥

स्तवन-महावीर जयन्ति

चंद्र सुदी तेरस जन्मे, जग में श्री वर्धमान । जय २

महावीर भगवान । केवल ज्ञानी धर्म धुरंधर, जैन के संत  
महान ॥८॥ काली घटा हिंसा की छाई, फूट कलह ने  
धाक जमाई, पाखंड छाया उस युग माई, हुआ जन्म तेरा  
सुखदाई, सिद्धार्थ राजा हरषाए; घर घर मंगल गान ॥१॥  
स्वयं इन्द्र-इन्द्राणी आके, मेरु शिखर तुमको ले जाके, नमते  
अचित सुमन वरसां के, देवी देव हरषे नवराके, छप्पन  
कवारियां मंगल गाके, किया जन्म कल्याण ॥२॥ त्रिसला  
मांका पुण्य सवाया, तीन लोक में सुयश छाया ऐसे पुत्र  
रत्न को जाया, तीर्थकरके पद को पाया, घर २ बटी  
बघाई दीना, भूपती ने दान । ३॥ यौवन वय में वैभव छोड़ा  
झूठे जग से सुख को मोड़ा कर करणी कर्मों को तोड़ा,  
शिव रमणी से नाता जोड़ा, हिंसा अधर्म मिटाया, जग को  
देकर सच्चा ज्ञान ॥४॥ जैन धर्म झंडा लहराया, सत्य  
अहिंसा बिगुल बजाया, आज जयन्ति का दिन आया जीत  
तेरे गुण गा हरषाया अहिंसा के हे सच्चे पुजारी, जैन जगत  
की शान ॥५॥

## श्री भक्तामर स्तोत्रम्

भक्तामरप्रणतमौलिमणि प्रभाणा, मुद्योतकं दलितपाप-  
तमोन्नितानम् । सम्यक्प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा, वालंबनं  
भवजले पततां जनानाम् ॥१॥ यः संस्तुतः सकलबाधमय-  
तत्त्वबोधा, दुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथं । स्तोत्रैर्जगत्त्रि



तयचित्तहरैरुदारैः, स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम्,  
 ॥२॥ बुद्ध्या विनापि विबुधाचित पादपीठ स्तोतुं समुद्यत-  
 मतिविगतत्रपोऽदम् । बालं विहाय जलसंस्थितमिदुर्विम्ब,  
 मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥३॥ वक्तु गुणान्  
 गुणसमुद्र शशांककातान्, कस्ते क्षमः सुरगुरु प्रतिमोऽपि  
 बुद्ध्या । कल्पान्तकालपवनोद्धतनक्रचक्रं, को वा तरीतुमुल-  
 मंबुनिधिं भुजाभ्याम् ॥४॥ सोऽहं तथापि तव भक्ति-  
 वशाः सुनीश, कतुं स्तवं विगतशवितरपि प्रवृत्तः । प्रीत्यात्म-  
 वीर्यसविचायं सृगो सृगेन्द्रं, नाऽभ्येति किं निजशिशोः परि-  
 पालनार्थम् ॥५॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधास, त्वद्भक्तिरेव  
 मुखरीकुरुते बलान्माम् । यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं  
 विरौति, तच्चारुचाञ्चलिकलिकानिकरैकहेतुः ॥६॥ त्वत्संस्तवेन  
 भवसंततिसन्निबद्धं, पापं क्षणात् क्षयमुपैति शरीरं भाजाम् ।  
 आन्त्रांतलोकमलिनीलमशेषमाशु, सूर्याशुभिन्नमिवशार्वरसंध-  
 कारम् ॥७॥ मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद, मारभ्यते  
 तनुधियापि तव प्रभावात् । चेतो हरिष्यति सतां नलिनी-  
 दलेषु मृदताफलद्युतिमुपैति ननूदविंदुः ॥८॥ आस्तां तव  
 स्तवनमस्तसमस्तदोष त्वत्संकथापि जगतां दुरतानि हन्ति ।  
 दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव, पद्माकरेषु जलजानि-  
 विकाशभांजि ॥९॥ नात्यद्भुतं भुवनभूषणभूतनाथ,  
 भूतैर्गुणैर्भुवि भवंतमभिष्टुवंतः । तुल्या भवंति भवतो ननु  
 तेन किं वा, भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥१०॥

दृष्ट्वा भवंतमनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य  
 चक्षुः । पीत्वा पयः शशिकर छुति दुग्धसिन्धोः, क्षारं जलं  
 जलनिधेरशितुं क इच्छेत् ॥११॥ यैः शांतरागरुचिभिः  
 परमाणुभिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत । तावन्त एव  
 खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ति  
 ॥१२॥ क्वत्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि, निःशेषनिर्जित-  
 जगत्त्रितयोपमानम् । बिम्बं कलंकमलिनं क्व निशाकरस्य,  
 यद्वासरे भवति पांडुपलाशकल्पम् ॥१३॥ संपूर्णमंडलशशांक-  
 कलाकलाप, शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयन्ति । ये संश्रिता-  
 स्त्रिजगदीश्वर नाथमेकं, कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम्  
 ॥१४॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभि, नीतं मनागपि  
 मनो न विकारमार्गम् । कल्पांतकालमरुता चलिताचलेन,  
 किं मंदराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥१५॥ निर्धूमवर्तिर-  
 पवर्जिततैलपूर, कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि । गम्यो  
 न जातु मरुतां चलिताचलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ  
 जगत्प्रकाशः ॥१६॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः,  
 स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगति । नांभोधरोदरनिरुद्ध-  
 महाप्रभावः, सूर्यातिशायिमहिमाऽसि मुनीन्द्र लोके ॥१७॥  
 नित्योदयं दलितलोहमहांधकारं, गम्यं न राहुवदनस्य न  
 वारिदानाम् । विभ्राजते तव सुखाब्जमनल्पकांति, विद्योत-  
 यज्जगदपूर्वशशांकबिम्बम् ॥१८॥ किं शर्वरीषु शशिनाऽन्हि-  
 विवस्वता वा, युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमस्सु नाथ । निष्पन्न-

शालिवनशालिनि जीवलोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः  
 ॥१६॥ ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं, नैवं तथा  
 हरिहरादिषु नायकेषु । तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं,  
 नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥२०॥ मन्ये वरं हरि-  
 हरादय एव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमति । किं  
 वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथ  
 भवांतरेपि ॥२१॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयति पुत्रान्  
 नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता । सर्वा दिशो दधति भाति  
 सहस्ररश्मि, प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥२२॥  
 त्वामासनति मुनयः परमं पुमांस, मादित्यवर्णममलं तमसः  
 परस्तात् त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं नान्यः शिवः  
 शिवपदस्य मुनीन्द्र पंथाः । २३ । त्वामव्ययं विभुमदित्यम-  
 संख्यमाद्यं, ब्रह्माणमेश्वरमनंतमनंगकेतुम् । योगीश्वरं  
 विदितयोगमनेकमेकं, ज्ञान स्वरूपममलं प्रवदन्ति संत । २४॥  
 बुद्धस्त्वमेव विबुधांचितबुद्धिबोधात्, त्वं शंकरोऽसि भुवन-  
 त्रयशंकरत्वात्, घातासि धीर शिवमार्गविधेर्विधानात् व्यक्तं  
 त्वमेव भगवन्पुरुषोत्तमोऽसि । २५ । तुभ्यं नमस्त्रिभुवनातिह-  
 राय नाथ, तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय । तुभ्यं नमस्त्रि-  
 जगतः परमेश्वराय, तुभ्यं नमो जिन भवोद धिशोषणाय  
 ॥२६॥ को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषैस्त्वं सश्रितो  
 निरवकाशतया मुनीश । दौर्बैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वं  
 स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि । २७ । उच्चैरशोक-

तरुसंश्रितमुन्मयूख माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् ।  
 स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितान, बिंबं रवेरिव पयोधर-  
 पार्श्ववर्ति ॥२८॥ सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे, विभ्रा-  
 जते तव वपुः कनकावदातम् । बिंबं वियद्विलसदंशुलता वितानं,  
 तुंगोदयाद्विशिरसीव सहस्त्ररश्मेः ॥२९॥ कुंदावदातचलचामर-  
 चारुशोभं, विभ्राजते तव वपुः कलधौतकांतम् उद्यच्छशांक-  
 शुचिनिर्जरवारिधारमुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकीम्भ  
 ॥३०॥ छत्रत्रयं तव विभाति शशांकांतं मुच्चैः स्थितं  
 स्थगितिभानुकरप्रतापम् । मुक्ताफलप्रकरं जालविवृद्धं शोभं,  
 प्रख्यापयत् त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥३१॥ गंभीरतारं रवे-  
 पूरितदिग्धिभागं स्त्रैलोक्यलोकशुभं संगमभूतिदक्षः । सद्धर्म-  
 राजजयघोषणघोषकः सन् खे दुःखं भिर्ध्वनति ते यशसः प्रवादी  
 ॥३२॥ मंदारं सुंदरनमेरुसुपारिजातं, संतानकादिकुसुमोत्कर-  
 वृष्टिचट्टा । गंधोर्द्विदुःशुभमंदमरुत्प्रपाता, दिव्या दिवः पतति  
 ते वचसां ततिर्वा ॥३३॥ शुभं भूतप्रभावलयभूरिविभा विभोस्ते,  
 लोकत्रयद्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ती । प्रोद्यद्दिवाकरं निरंतरं-  
 भूरिसंख्या, दीप्त्या जयत्यपि निशासपि सोमसौम्याम् ॥३४॥  
 स्वर्गपवर्गगममार्गविभागं जेष्टः सद्धर्मतत्त्वकथनैकपटुस्त्रि-  
 लोक्याः । दिव्यध्वनिर्भवति ते विशदार्थसर्व भाषास्वभाव-  
 परिणामगुणैः प्रयोज्यः ॥३५॥ उन्निद्रहेमनवपंकजपुंजकांती,  
 पयुल्लसन्नखमयूखशिखाभिरामौ । पादौ पदानि तव यत्र  
 जिनेन्द्र ! धत्तः, पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥३६॥



आपादकंठमुखं खलवेष्टितांगा, गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्ट-  
जंघाः । त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः, सद्यः स्वयं  
विगतबंधभया भवन्ति ॥४६॥ मत्तद्विप्रेद्रमृगराजदवानलाहि,  
संग्रामवारिधिमहोदर बंधनोत्थम् । तस्याशु नाशमुपयाति  
भयं भियेव, यस्तावकं स्तवमिमं सतिमानधीते । ४७॥  
स्त्रोत्रस्त्रजं तव जिनैद्र ! गुणैर्निबद्धां भवत्या मया रुचिरवर्ण-  
विचित्रपुष्पांस् । धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रं, तं मानतुंग-  
मवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥४८॥इति॥

## भक्तामर स्तोत्र की साधना का माहिती-पत्र

भक्तामर स्तोत्र दुपहर से पहिले ही पढ़ना चाहिये,  
सूर्योदय का समय सबसे उत्तम है । वर्षभर निरंतर पढ़ना  
शुरू करना हो तो श्रावण, भाद्रपद, कार्तिक, मृगशिर, पौष  
या माघ में करे । तिथी पूर्णा, नन्दा और जया हो रिक्ता  
न हो । शुक्ल पक्ष हो । उस दिन उपवास रखे, या एकासन  
करे । ब्रह्मचर्य से रहें ।

भक्तामर का दुसरा काव्य लक्ष्मी प्राप्ति और शत्रु  
विजय के लिये है । इसी प्रकार ६ बुद्धिविकास के लिये ।  
१० वचन-सिद्धि के लिये । ११ खोई वस्तु की पुनः  
प्राप्ति के लिये । १५ ब्रह्मचर्य, स्वप्नदोष की निवृत्ति, राज-  
दरबार में सम्मान, प्रतिष्ठा और लक्ष्मी की वृद्धि के १६  
दूसरों के द्वारा किये हुए जादू, भूत, प्रेत, का असर दूर हो,  
रोजगार अच्छा लगे, भाग्यहीन पुरुष भी भूखा न रहे ।

२० पुत्र की प्राप्ति हो २१ स्वजन और परजन सबका प्रेम प्राप्त हो । २८ सब प्रकार की मन की शुभ इच्छा पूर्ण हो । ३६ संपत्ति का लाभ हो । ४५ सब प्रकार का भय और उपसर्ग दूर हो, तेज प्रताप प्रकट हो सब प्रकार के रोगों की शांति हो । ४६ राजा का भय दूर हो । जेल खाने से छूटे ।

ऊपर के काव्यों का जाप एक माला प्रतिदिन प्रातःकाल के समय करना चाहिये । यह भक्तामर स्तोत्र सही प्रभाव-शाली है सब प्रकार से आनन्द मंगल करने वाला है । इसके कर्ता आचार्य मानतुंग हैं । पाठ पूर्व और उत्तर दिशा की तरफ मुख करके करना ठीक है ।

### पाप की आलोचना

हो नाथजी, 'पाप आलोऊं' पाछला, दिन रातना केइ जातना, किया पचेन्द्रि विनाश, मार्या गले देई फांस, खाया घणा सद मांस दीनानाथजी, जोड़ हाथजी मानो बातजी, तेमुजमिच्छामि दुक्कडं ॥१॥ हो नाथजी प्राण लूट्या छः कायना, केइ जानता केई अजानतां, सै नहीं जाणी पर पीडा, चांप्या कुथुवाने कीडा, चाब्या पान नाजी बीड़ा ॥२॥ हो नाथजी, वनस्पती तीन जातरी, केई सांतरी, छमकी, सांतरी, तोड्या पातर पान फूल, सेक्या गाजर कंद मूल, खाया भर २ लूण ॥३॥ हो नाथजी, आचार घाल्या हाथ से, चीर्या दांत से खाया खात से जामें पडिया

मसाला खाया भर २ प्याला, आया फूलणीया का जाला  
 ॥४॥ हो नायजी, अघर अकाशांरो झेलियो, भर भर मेलियो,  
 ऊना ठंडा मेलिया, दिया व्यं वनर्य ढोल, किया अण  
 छांण्या अंधोल, जाणे भेसा मांडी रोल । ५॥ हो नायजी,  
 पाणी उलेच्या तलावना. नदी नालाना, कुवावावना, फोडी  
 सरवरियानीपाल, तोडी तरवरियानीडाल, दरफ गड़ा दिया  
 गाल ॥६॥ हो नायजी माता से पुत्र विछोविया घणारोविया,  
 दूधांदोविया, कोत्या नानडियांसा बाल, परपेदा मेली झाल,  
 तोड्या २ पंखिडारामाल : ७॥ हो नायजी, जूं माकड़ने  
 मारिया रीकी राखिया, रस्ते नाखिया, तड़के माचा दिया  
 मेल, उनी पाणी दिया ढोल । आगे होसी घर्णी हेल ॥८॥  
 हो नायजी, सियाले सगड़ी करी, खीरा भरी, चोवठे धरी,  
 मांय पड़ पड़ मरिया जीव, कर्म बांधिया तिर बांधी  
 नर्क तणी नोव ॥९॥ हो नायजी उनाले जोविया, ढोलविया  
 फूल विछाविया, जल सिंचयाती, छीड़काविया कीनी बागां  
 मांय गोठ, खाया चूरभा ने रोठ, बांदी पाप तणी पोठ । १०॥  
 हो नायजी, चोमासे हल हांकिया, बेल झूखा राखिया,  
 चामका मारिया, फोड्या जमीकेरा पेट, आर्या सांपने  
 सपरेट, दया नहि आणी रेट । ११॥ हो नायजी, जूना नवा  
 करी ने बेचिया, सूर्यासंचिया नहि जोविया, दीया अणजोया  
 पीस, इल्या मारी दस बीस, आगे रोसी देई चीस ।  
 हो नायजी, दूध दही छांछ आंचनां, सरबत दा



पाकना, वली घीरत ने तेल, दिया उगाडाई मेल, कीड्या  
आई रेला ठेल ॥१३॥ हो नाथजी, परनारी धन चोरिया,  
खेली होलियां, गई गारियां, देख्या तमासा मे तीज, गालियां  
गई घणी हीज, ताल्या पीटी घणी रीझ ॥१४॥ हो नाथजी,  
कूड कपट छल ताकिया, छाने राखिया, नहिं भाखिया, मुख  
से बोली घणी झूठ, धाड़ा पडिलाया लूट, जंत्र मंत्र मारी सूठ  
॥१५॥ हो नाथजी, ओगणवाद गुरांतणा, बोल्यां घणां, अण  
सोचता मैं नहीं जाण्यो अज्ञानी, निंदा कीधी छानी छावी,  
नहीं धाम्यो आहारने पाणी, ॥१६॥ हो नाथजी, भोजन भली  
२ भांति का, केई जाति का, खाया रात का, पीया अण  
छाण्या पानी, मन में करुणा नहीं आनी, पर पीडा नहीं  
पीछाणी ॥१७॥ हो नाथजी, सासू ने शोक सवासणी  
पाड़ोसणी संताई घणी मुख से बोले सीठी गाल, केई दिया  
कूड़ा आल, तपसी बूढा रोगी बाल ज्यांरी नहीं करी संभाल  
॥१८॥ हो नाथजी, संशय किया मैं मोटका, केई छोटका,  
हुआ खोटका, करी छाने राख्या पाप सो तो देखीरया आप,  
म्हारे थेई सांयनेबाप ॥१९॥ हो नाथ जी, स्त्रीसुं भांत  
मारी जूने पडाविया गर्भ गलाविया, जीव जलाविया,  
गुरुजी फोड़ी लीक, बेठो पापी रे नजीक, नहीं मानी  
की सीख ॥२०॥ हो नाथजी थापण राखी पारकी,  
केई हजार की, साहुकार की देती कीनी सिटपिट, मांग्या  
॥२१॥ तुरतनट, लिया सेमुदाई गिट ॥२१॥ हो नाथजी,

संयम जपतप शीलरी, देतादानरी, भणतां ज्ञानरी, दीनी  
मोटी अंतराय, ते तो भुगत्यो नहीं जाय, पडियो करसी  
हायहाय ॥२२॥ हो नाथजी, माता पिता गुरुदेवतणा,  
अविनय पणा कियो घणो, फिरियो चौरासी के मांय जांसू  
कियो बैरभाव, खमो २ चितचाव ॥२३॥ हो नाथजी  
सारकरीने संभालजो, मति विसारजो, पार उतारजो, समत  
ओगणीसे बासट, ज्यांको मति करो हट दर्शन दीजो म्हांने  
झट ॥२४॥ हो नाथजी, आलोचनाइस कीजिये, कर्म छीजिये  
मिच्छामी दुकड़ा दिजीयो जैपुर मांय जडाव, आणी उज्ज्वल  
भाव, ढालकीनी घरचाव, ॥२५॥

## आरती श्री गौतमस्वामीजी की

गौतम नाम जपूजी प्रभाते, रंगरेली करंजी दिन राते  
एक एक अक्षर संकट चूरे, गौतम स्वामीजी मन वांछित  
पूरे, मन वांछित का फिरेजी तंबोरा, गौतम स्वामीजी  
मन वांछितपूरे । टेरा॥ सेवा मिष्टान्न मिलेजी अति भारी,  
पुत्र मिले सहू परिवारी ॥१॥ दूध पूत घर लछीमीजी आवे,  
धन लछमी अधीको मन भावे ॥२॥ गौतम स्वामी को  
चाप्यो अंगोठो, धनचटी ने अमी रस मीठो ॥३॥ उज्ज्वल  
मोती निर्मल पाणी वीरजी की वाणी अमिय समानी ॥४॥  
१ नामज लीधा धन कंचन हीरा, ज्यारा गुरु कहीजे श्री  
महावीरा ॥५॥ केवल ज्ञानी और निर्वाणी, गौतम स्वामीजी  
आद बखाणी ॥६॥ विजय तीर्थ जस बखाण्यों गौतम स्वामी  
जी की गाऊं प्रभाती ॥७॥

## स्तवन-भगवान रिषभदेव की वधाई

आज नगर में आदेसर जनम्या, माता मोरादेजी हरख  
वदेया, जी चलो नाभी घरां चालो क्योनि नाभी घरा  
जैन वदैया, जी चालोनाभी घरा ॥८॥ कुंभ कलश दुधा  
जल भरियो, म्हारां प्रभूजी ने स्नान कराया म्हारा जीन-  
जीने स्नान करैया ॥९॥ जी चालो । रत्नजडत सिंहासन  
सौहें म्हारा प्रभूजी ने पालणीये पोढ्या म्हारा जीनजाने  
पालणा पोढैया ॥१०॥ तीन छत्रऊपर छत्र विराजे मारा  
प्रभूजी पर चंवर दुलैया, म्हारा जिनजी पर चंवर दुलैया  
॥११॥ चौसठ इन्द्र मिलकर आया म्हारा प्रभूजी का मौच्छव  
करैया मारा जिनजी का मौच्छव करैया ॥१२॥ छपन कुंवारी  
मिलकर आवे म्हारा प्रभूजी का संगल गवैया मारा जिनजी  
का संगल गवैया । १३॥ माता मोरा देजी बांटे वधैया, भर  
भर सुठ विरैया ॥१४॥ जो म्हारा प्रभूजी की गावे वधैया,  
जाघर आनन्द वधैया ज्या घर हर्ष बधैया । १५॥ इति

### भजन

इस तन धन की कौन बड़ाई, देखत नैनो में मिट्टी  
मिलाई ॥८॥ आपके खातिर महल बनाया, आपही जा  
जंगल में सोया ॥९॥ हाड़ जले जैसे लकड़ की मूली, बाल जले  
जैसे घास की पूली । १०॥ कहत कबीरा सुन भई गुनिया,  
आप सुआ पीछे डूब गई दुनियां । ११॥

## भजन

अब थें पलक उघाडो दीनानाथ, चरण में दासी कब की  
खड़ी ॥टेर॥ सज्जन बनकर बनगया दुश्मन लाजुं खड़ी २  
आप बिना म्हारे कौन धणी, है अब बीच नैया म्हारी अटक  
पड़ी ॥१॥ दिल की लाय लगी म्हारे तन में दाजुं पड़ी २  
॥२॥ हार सिंगार सभी में त्यागया और मोतीयन की  
लड़ी २ ज्ञान ध्यान हिरदा बीच राख्यो प्रेम कटारी  
हिरदे उलज रही ३। दिन नही चैन रात नहीं निद्रा  
सूखू खड़ी, २ आप बिन आच्छो नहीं लागे, अन्न पानी  
लागे सांवरा विष की डली । ४। यो मन मस्त कयो नहीं  
माने बदले घड़ी २ बार २ बाई मीरा गावे प्रेम कटारी  
हिरदे अटक रही ॥५॥

## माखन चोर से

छुप छुप आते हो, माखन चुराते हो । अब कहां जाते  
हो जी अब कहां जाते हो ।टेर॥ पानी लेने को मैं नित्य  
जमनाजी जाती हूं । पीछी आके देखती हूं, माखन न पाती हूं  
दरवाजे बंद होते फिर कैसे आते हो ॥१॥ छोटे २ हाथों  
से कैसे खोली सांकली । छोके से उतारी कैसे माखन की  
मांटली बोलोजी जवाब दो कैसे मुस्काते हो ॥२॥ पकड़  
लिया है तुम्हें अब कहां जाओगे, बोले मेरे श्याम, अब  
किसको बुलाओगे खूब जानती हूं तुम बातों में भुलाते हो  
॥३॥ केवल, यशोदाजी के पास मैं ले जाऊंगी दो इधर

दो उधर चपत दिलाऊंगी, अच्छा लो माखन खालो आंसू  
क्यों बहाते हो ॥ ४ ॥

### श्री कल्याणमन्दिर स्तोत्रम्

कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि, भीताभयप्रदमनिन्दित-  
मंघ्रिपद्मम् । संसारसागरनिमज्जदशेषजंतुपोतायमानमभि-  
नम्य जिनेश्वरस्य ॥१॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गिरिमान्बुराशेः  
स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुविधातुम् । तीर्थेश्वरस्य  
कमठस्मयधूमकेतोस्तस्याहमेष्ट किल संस्तवनं करिष्ये ॥२॥  
सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूपमस्मादृशाः कथमधीश  
भवन्त्यधीशाः । धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवान्धो,  
रूपं प्ररूपयति किं किल घर्भरश्मेः ॥३॥ मोहक्षयादनुभवन्नपि  
नाथ ! अत्यो, नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत । कल्पांत-  
वांतपयसः प्रकटोऽपि यस्मान् मीयेत केन जलधेनूनु रत्न-  
राशिः ? ॥४॥ अम्युद्यतोऽस्मि तव नाथ ! जडाशयोऽपि,  
कर्तुं स्तवं लसदसंख्यगुणाकरस्य । बालोऽपि किं न निजबाहु-  
युगं वितत्य, विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाऽम्बुराशेः ? ॥५॥  
ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश, वक्तुं कथं भवति तेषु  
ममावकाशः । जाता तदेवमसमीक्षितकारितेयम् जल्पन्ति वा  
निज गिरा ननु पक्षिणोऽपि ६॥ आस्तामचिन्त्यमहिमा  
जिन ! संस्तवस्ते नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति ।  
तीव्रातपोपहतपान्थजनाग्निदाघे प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनि  
लोऽपि ॥७॥ हृद्वर्तिनि त्वयि विभो ! शिथिलीभवन्ति जन्तोः

क्षणेन निबिडा अपि कर्मबन्धाः । सद्यो भुजंगममया इव मध्य-  
भागमभ्यागते वनशिखण्डिनि चंदनस्य । ८॥ मुच्यंत एव  
मनुजा सहसा जिनेन्द्र ! रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि विक्षितेऽपि ।  
गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे, चोरैरिवाशु पशवः  
प्रपलायमानैः ॥ त्वं तारको जिन ! कथं भविनां त एव,  
त्वांमुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरंतः । यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष  
नूनमन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः । १० यस्मिन् हर-  
प्रभृतयोऽपि हतप्रभावाः सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः  
क्षणेन । विध्यापिताहु तभुजः पयसाथ येन, पीतं न किं तदपि  
दुद्धैरवाडवेन ॥ ११ स्वामिघ्ननल्पपरिमाणमपि प्रपन्नास्त्वां  
जंतवः कथमहो हृदये दधानाः । जन्मोर्दधि लघु तरन्त्य-  
तिलाघवेन, चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः ॥ १२॥  
क्रोधस्त्वया यदि विभो प्रथमं निरस्तो, ध्वस्तस्तदा बत कथं  
किल कर्म चौराः । प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिरोपि लोके  
नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानि ॥ १३॥ त्वां योगिनी  
जिन ! सदा परमात्मरूपमन्वेषयन्ति हृदयाभुजकोशदेशे ।  
पूतस्य निर्मलरुचेर्यदि वा किमन्यदक्षस्य संभवि पदं ननु  
कर्णिकायाः ॥ १४॥ ध्यानाज्जिनेश ! भवतो भविनः क्षणेन,  
देहं विहाय परमात्मदशां व्रजन्ति । तीव्रानलादुपलभावमपात्य  
लोके, चामीकरत्वमचिरादिव धातुभेदाः । १५॥ अन्तः सदैव  
जिन ! यस्य विभाव्यसे त्वं भव्यैः कथं तदपि नाशयसे  
शरीरम् । एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्तिनो हि, यद्विग्रहं प्रशम-

यन्ति महानुभावा ॥ १६ ॥ आत्मामनीषिभिरयं त्वदभेद-  
 बुद्ध्या ध्यातो जिनेन्द्र भवतीह भवत्प्रभावः । पानीयमप्य-  
 मृतमित्यनुचिन्त्यमानं, किं नाम नो विषविकारमपाकरोति  
 ॥१७॥ त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि, नूनं विभो !  
 हरिहरादिधिया प्रपन्नाः । किं काचकामलिभिरीश सितोऽपि  
 शङ्खो, नो गृह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥१८॥ धर्मोपदेश-  
 समये सविधानुभावादास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः ।  
 अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरहोपि, किंवा विबोधमुपयाति न  
 जीव लोकः ॥१९॥ चित्रं विभो ! कथमवाङ्मुखवृन्तमेव,  
 विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टिः । त्वद्गोचरे सुमनसां  
 यदि वा मुनीश ! गच्छन्ति नूनमथ एव हि बन्धनानि । २० ।  
 स्थाने गभीरहृदयोदधिसंभवायाः पीयूषतां तव गिरः  
 समुदीरयन्ति । पीत्वा यतः परमसंमदसङ्गभाजो, भव्या  
 व्रजन्ति तरसाप्यजरामरत्वम् ॥२१॥ स्वामिन् सुदूरमवनस्य  
 समुत्पतन्तो, मन्ये वदन्ति शुचयः सुरचामरौघाः । येऽस्मै नति  
 विदधते मुनिपुङ्गवाय ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः  
 ॥२२॥ श्यामं गभीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्न, सिंहासनस्थमिह  
 भयः शिखण्डिनस्त्वाम् । आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चैः  
 श्यामीकराग्निरसीव नवाम्बुवाहम् ॥२३॥ उद्गच्छता तव  
 शितिद्युतिमण्डलेन, सप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव । सान्नि-  
 ध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग ! नीरागतां व्रजति को न  
 सचेतनोऽपि ॥२४॥ भो भो प्रमादमवधूय भजध्वमेन आगत्य

निवृत्तिपुरीं प्रति सार्थवाहम् । एतन्निवेदयति देव ! जगत्त्रयाय,  
मन्ये नन्दन्नभिनमः सुरदुन्दुभिस्ते ॥२५॥ उद्योतितेषु भवता  
भुवनेषु नाथ ! तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः । मुक्ता-  
कलापकलितोल्लसितातपत्र व्याजात्त्रिधा धृततनु ध्रुवमभ्यु-  
पेतः ॥२६॥ स्वेन प्रपूरितजगत्त्रय पिण्डितेन, कान्ति प्रताप-  
यशसा मिव संचयेन माणिक्यहेमरजत प्रविनिर्मितेन, साल-  
त्रयेण भगवन्नभितो विभासि ॥२७॥ दिव्यसृजो जिन ! नम-  
त्त्रिदशाधिपानां मृतसृज्य रत्नरचितानपि मौलिबंधान् । पादौ  
श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र, त्वत्सङ्गमे सुमनसो न  
रमन्त एव ॥२८॥ त्वं नाथ ! जन्मजलधेविपराङ्मुखोपि,  
यत्तारयस्यसुप्ततो निजपृष्ठलग्नान् युक्तं हि पार्थिव निपस्य  
सतस्तवैव, चित्रं विभो ! यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥ २९ ॥  
विश्वेश्वरोऽपि जगपालक ! दुर्गतस्त्वं, किं वाऽक्षरप्रकृति-  
रप्यलिपिस्त्वमीश । अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव, ज्ञानं  
त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥३०॥ प्राग्भारसंभूतनभांसि  
रजांसि रोषादुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि । छायापि  
तैस्तव न नाथ ! हता हताशो, ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं  
दुरात्मा ॥ ३१ ॥ यद्गज्जङ्घाजितघनौघमदभ्रमिमं अश्रयत्त-  
डिन्सुसलमांसलघोरधारम् । दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि  
दध्रे, तेनैव तस्य जिन ! दुस्तरवारिकृत्यम् ॥३२॥  
ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुण्ड, प्रालम्बभृद्भयद्वक्त्रवि-  
निर्यदग्निः । प्रेतव्रजः प्रतिभवन्तमपीरितो यः सोऽस्याऽभवत्प्र-



निवृत्तिपुरीं प्रति सार्यवाहम् । एतन्निवेदयति देव ! जगत्त्रयाय,  
मन्ये नदन्नभिनभः सुरकुन्दुभिस्ते ॥२५॥ उद्योतितेषु भवता  
भुवनेषु नाथ ! तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः । मुक्ता-  
कलापकलितोल्लसितातपत्र व्याजात्त्रिधा धृततनु ध्रुवमभ्यु-  
पेतः ॥२६॥ स्वेन प्रपूरितजगत्त्रय विण्डितेन, कान्ति प्रताप-  
यशसा मिव संचयेन माणिक्यहेमरजत प्रविनिर्मितेन, साल-  
त्रयेण भगवन्नभितो विभासि ॥२७॥ दिव्यसृजो जिन ! नम-  
त्त्रिदशाधिपाना मृतसृज्य रत्नरचितानपि मौलिबंधान् । पादौ  
श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र, त्वत्सङ्गमे सुमनसो न  
रमन्त एव ॥२८॥ त्वं नाथ ! जन्मजलधेविपराङ्मुखोपि,  
यत्तारयस्यसुप्रतो निजपृष्ठलग्नान् युक्तं हि पार्थिव निपस्य  
सतस्तयैव, चित्रं विभो ! यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥ २९ ॥  
विश्वेश्वरोऽपि जगपालक ! दुर्गतस्त्वं, किं वाऽक्षरप्रकृति-  
रप्यलिपिस्त्वमीश । अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव, ज्ञानं  
त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥३०॥ प्राग्भारसंभूतनभांसि  
रजांसि रोषादुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि । छायापि  
तैस्तव न नाथ ! हता हताशो, ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं  
दुरात्मा ॥ ३१ ॥ यद्गर्ज्जद्वर्जितघनौघमदभ्रमिमं अश्रयत्त-  
डिन्मुसलमांसलघोरधारम् । दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि  
दध्रे, तेनैव तस्य जिन ! दुस्तरवारिकृत्यम् ॥३२॥  
ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुण्ड, प्रालम्बमृद्धमप्रदवक्त्रवि-  
निर्यदग्निः । प्रेतव्रजः प्रतिभवन्तमपीरितो यः सोऽस्याऽभवत्प्र-

यन्ति महानुभावा ॥ १६ ॥ आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेद-  
 बुद्ध्या ध्यातो जिनेन्द्र भवतीह भवत्प्रभावः । पानीयमप्य-  
 मृतमित्यनुचिन्त्यमानं, किं नाम नो विषविकारमपाकरोति  
 ॥ १७ ॥ त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि, नूनं विभो !  
 हरिहरादिधिया प्रपन्नाः । किं काचज्ञामलिभिरीश तितोऽपि  
 शङ्को, नो गृह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥ धर्मोपदेश-  
 समये सविधानुभावादास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः ।  
 अभ्युदगते दिनपतौ समहीहोपि, किंवा विबोधमुपयाति न  
 जीव लोकः ॥ १९ ॥ चित्रं विभो ! कथमवाङ्मुखवृन्तमेव,  
 विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टिः । त्वद्गोचरे सुमनसां  
 यदि वा मुनीश ! गच्छन्ति नूनमथ एव हि बन्धनानि । २० ।  
 स्थाने गभीरहृदयोदधिसंभवायाः पीयूषतां तव गिरः  
 समुदीरयन्ति । पीत्वा यतः परमसंमदसङ्गभाजो, भव्या  
 व्रजन्ति तरसाप्यजरामरत्वम् ॥ २१ ॥ स्वामिन् सुदूरमवनम्य  
 समुत्पतन्तो, मन्ये वदन्ति शुचयः सुरचामरौघाः । येऽस्मै नति  
 विदधते मुनिपुङ्गवाय ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः  
 ॥ २२ ॥ श्यामं गभीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्नं, सिंहासनस्थमिह  
 भयः शिखण्डिनस्त्वाम् । आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चैर्-  
 श्चामीकराद्रिशिरसीव नवाम्बुवाहम् ॥ २३ ॥ उदगच्छता तव  
 शितिच्छुतिमण्डलेन, सप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव । सान्नि-  
 ध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग ! नीरागतां व्रजति को न  
 सचेतनोऽपि ॥ २४ ॥ भो भो प्रमादमवधूय भजध्वमेन मागत्य

यन्ति महानुभावा ॥ १६ ॥ आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेद-  
 बुद्ध्या ध्यातो जिनेन्द्र भवतीह भवत्प्रभावः । पानीयमप्य-  
 स्मृतमित्यनुचिन्त्यमानं, किं नाम नो विषविकारमपाकरोति  
 ॥ १७ ॥ त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि, नूनं विभो !  
 हरिहराद्विधिया प्रपन्नाः । किं काचकामलिभिरीश सितोऽपि  
 शङ्को, नो गृह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥ धर्मोपदेश-  
 समये सविधानुभावादास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः ।  
 अभ्युद्गते दिनपतौ समहीहोपि, किंवा विबोधमुपयाति न  
 जीव लोकः ॥ १९ ॥ चित्रं विभो ! कथमवाङ्मुखवृन्तमेव,  
 विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टिः । त्वद्गोचरे सुमनसां  
 यदि वा मुनीश ! गच्छन्ति नूनमध एव हि बधनानि । २० ।  
 स्थाने गभीरहृदयोदधिसंभवायाः पीयूषतां तव गिरः  
 समुदीरयन्ति । पीत्वा यतः परससंमदसङ्गभाजो, भव्या  
 व्रजन्ति तरसाप्यजरामरत्वम् ॥ २१ ॥ स्वामिन् सुहृदमवनस्य  
 समुत्पतन्तो, मन्ये वदन्ति शुचयः सुरचामरौघाः । येऽस्मै नति  
 विदधते मुनिपुङ्गवाय ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः  
 ॥ २२ ॥ श्यामं गभीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्न, सिंहासनस्थमिह  
 भयः शिखण्डिनस्त्वाम् । आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चैः  
 श्यामीकराद्रिशिरसीव नवाम्बुवाहम् ॥ २३ ॥ उदगच्छता तव  
 शितिद्युतिमण्डलेन, सप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव । सान्नि-  
 ध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग ! नीरागतां व्रजति को न  
 सचेतनोऽपि ॥ २४ ॥ भो भो प्रमादमवधूय भजध्वमेन मागत्य

निवृत्तिपुरीं प्रति सार्यवाहम् । एतन्निवेदयति देव ! जगत्प्रयाय,  
मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते ॥२५॥ उद्योतितेषु भवता  
भुवनेषु नाथ ! तारान्वितो विद्युरयं विहताधिकारः । मुक्ता-  
कलापंकलितोल्लसितातपत्र व्याजात्त्रिधा धूततनु ध्रुवमन्ध्र-  
पेतः ॥२६॥ स्वेन प्रपूरितजगत्त्रय पिण्डितेन, फान्ति प्रताप-  
यशसा मिव संचयेन माणिक्यहेमरजत प्रविनिर्मितेन, साल-  
त्रयेण भगवन्नभितो विभासि ॥२७॥ दिव्यसृजो जिन ! नम-  
स्त्रिदशाधिपाना मृतसृज्य रत्नरचितानपि मौलिवंधान् । पादौ  
श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र, त्वत्सङ्गमे तुमनसो न  
रन्त एव ॥२८॥ त्वं नाथ ! जन्मजलधेविपराङ्मुखोपि,  
यत्तारयस्यसुयतो निजपृष्ठलग्नान् युक्तं हि पार्थिव निपस्य  
सतस्तवैव, चित्रं विभो ! यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥ २९ ॥  
विश्वेश्वरोऽपि जगपालक ! दुर्गतस्त्वं, किं वाऽक्षरप्रकृति-  
रप्यलिपित्वमीश । अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव, ज्ञानं  
त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥३०॥ प्राग्भारसंभृतनभांसि  
रजांसि रोषादुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि । छायापि  
तैस्तव न नाथ ! हता हताशो, ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं  
दुरात्मा ॥ ३१ ॥ यद्गज्जट्टजितघनौघमदभ्रमिमं श्रश्यत्त-  
डिन्मुसलमांसलघोरधारम् । दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि  
दध्रे, तेनैव तस्य जिन ! दुस्तरवारिकृत्यम् ॥३२॥  
ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुण्ड, प्रालम्बभृद्भयदवक्त्रवि-  
निर्यदग्निः । प्रेतव्रजः प्रतिभवन्तमपीरितो यः सोऽस्याऽभवत्प्र-

तिभवं भवदुःखहेतुः ॥३३॥ धन्यास्त एव भुवनाधिप ये  
 त्रिसान्ध्यमाराधयन्ति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः । भक्त्योल्ल-  
 सत्पुलकपद्मलदेहदेशाः पादद्वयं तव विभो ! भुवि जन्मभाजः  
 ॥३४॥ अस्मिन्नपारभवचारिनिधौ मुनीश ! मन्ये न मे  
 श्रवणगोचरतां गतोऽसि । आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रसंत्रे किं  
 वा विपद्विषधरी सविधं सप्तेति ॥३५॥ जन्मांतरेऽपि तव पादगुणं  
 न देव ! मन्ये मया सहितसीहितदानदक्षम् । तेनेह जन्मनि  
 मुनीश ! पराभवानां, जातो निकेतनमहं मयिताशयानाम्  
 ॥३६॥ नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन, पूर्वं विभो ! सकृदपि  
 प्रविलोकितोऽसि । मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः  
 प्रोद्यत्प्रबन्धगतयः कथमन्ययैते ॥३७॥ आकर्णितोऽपि  
 महितोऽपि निरोक्षितोऽपि नूनं न चेतसि मया  
 विधृतोसि भक्त्या । जातोस्मि तेन जनबान्धव !  
 दुःखपात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भावशून्याः ॥३८॥  
 त्वं नाथ ! दुःखजनवत्सल ! हे शरण्य ! कारुण्यपुण्यवसतेः  
 वशिनां वरेण्य । भक्त्या नते मयि महेश ! दयां विधाय,  
 दुःखाङ्कुरोदलनतत्परतां विधेहि ॥३९॥ निःसंख्यसारशरणं  
 शरणं शरण्यमासाद्य सादितरिपुप्रथितावदातम् । त्वत्पाद-  
 पङ्कजमपि प्रणिधानबन्धो, बध्योऽस्मि चेद्भुवनपावन ! हा  
 हतोस्मि ॥४०॥ देवेन्द्रबन्धविदिताखिलवस्तुसार ! संसार-  
 तारक ! विभो ! भुवनाधिनाथ । त्रायस्व देव ! करुणाहृद-  
 मां पुनीहि, सीदन्तमद्य भयदव्यसनाम्बुराशेः ॥४१॥ यद्यस्ति

नाथ ! भवदंघ्रिसरोरुहाणां, भक्षतेः फलं किमपि सन्त-  
तसञ्चिततायाः । तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य भूयान्स्वाभी-  
त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि ॥४२॥ इत्थं समाहितधियो  
विधिवज्जिनेन्द्र । सान्द्रोल्लसत्पुलककञ्चुकिताङ्गभागाः ।  
त्वद्विम्बनिर्मलमुखाम्बुजबद्धलक्ष्या, ये संस्तवं तव विभो !  
रचयन्ति भव्याः ॥४३॥ (आर्या वृत्त छंद) जननयनकुमुद-  
चन्द्रप्रभास्वरा स्वर्गसंपदो भुक्त्वा । ते विगलितमलनिचया,  
अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते ॥४४॥

### श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र

किं कर्पूरमयं सुधारसमयं किं चंद्ररोचिमयं । किं  
लावण्यमयं महामणिमयं कारुण्यकेलियमं ॥ विश्वानन्दमयं  
मेहोदयमयं शोभामयं चिन्मयं शुक्लध्यानमयं वपुर्जिनपते-  
भूयाद् भवालम्बनम् । १॥ पातालं कलयन् धरां धवलयन्ना-  
काशमापूरयन् । दिक्चक्रं क्रमयन् सुरासुरनरश्रेणि च विस्मा-  
पयन् ॥ ब्रह्माण्डं सुखयन् जलानि जलधेः फेनोच्छलालोलयन् ।  
श्री चिंतामणि पार्श्वसंभवयशोहंसश्चिरं राजते ॥२॥ पुण्यानां  
विपणिस्तमोदिनमणिः कामेभकुम्भेशृणिर्मोक्षेनिस्सरणिः  
सुरेन्द्रकरिणी ज्योतिः प्रकाशारणिः । दाने देवमणिर्नतोत्तम-  
जनश्रेणिः कृपासारिणी । विश्वानन्दसुधाघृणिर्भवभिदे श्री  
पार्श्वचिंतामणिः ॥ ३॥ श्री चिंतामणि पार्श्वविश्वजनता-  
संजीवनस्त्वं मया । दृष्टस्तात ततः श्रियः समभवन्नाश-  
क्रमाचक्रिणम् ॥ मुक्तिः क्रीडति हस्तयोर्वहुविधं सिद्धं मनो-

वाञ्छितं । दुर्दैवं दुरितं च दुर्दिनभयं कष्टं प्रणष्टं मम ॥४॥  
यस्य प्रौढतमप्रतापतपनः प्रोद्दामधामा जगत् । जंघालः  
कलिकालकेलिदलनो मोहान्धविध्वंसकः ॥ नित्योद्योतपदं  
समस्तकमलाकेलिगृहं राजते । स श्री पार्श्वजिनो जने हित-  
करश्चिन्तामणिः पातु माम् ॥५॥ दिश्वव्यापितमो हिनस्ति  
तरणिर्बालोपि कल्पांकुरो । दारिद्र्याणि गजावलीहरिशिशुः  
काष्ठानि वह्नेः कणः ॥ पीयूषस्य लवोऽपि रोग निवहं  
यद्वत्तथा ते विभो ! मूर्तिः स्फूर्तिमती सती त्रिजगती कष्टानि  
हर्तुं क्षमा ॥६॥ श्री चिन्तामणिसंज्ञ ॐ कृतियुतं हींकार-  
साराश्रितं । श्रीमर्हन्नमिऊणपासकलितं त्रैलोक्यवश्यावहम् ।  
द्वेधाभूतविषापहं विषहरं श्रेयः प्रभावाश्रयम् । सोल्लासं  
वसहांकितं जिन फुलिंगानंददं देहिनाम् ॥७॥ ह्रीं श्रीकारवरं  
नमोऽक्षरपरं ध्यायन्ति ये योगिनो । हृत्पद्मे विनिवेश्य पार्श्व-  
मधिपस् चिन्तामणिसंज्ञकम् ॥ भाले वसभुजे च नाभि-  
करयोर्भूयो भुजे दक्षिणे । पश्चादष्टदलेषु ते शिवपदं द्वित्रैर्भ-  
वैर्यान्त्यऽहो ॥८॥ नो रोगा नैव शोका न कलह कलना  
नारि मारिप्रचारो । नैवाधिर्नासमाधिर्न च दरदुरिते दुष्ट  
दारिद्र्यता नो । नो शाकिन्यो ग्रहा नो न हरिकरिगणा  
व्यालवैतालजालाः । जायते पार्श्वचिन्तामणि नतिवशतः  
प्राणिनां भक्तिभाजाम् ॥९॥ गोर्वाणद्रुमधेनुकुम्भमणयस्त-  
स्यांगणे रंगिणो । देवा दानवमानवाः सविनयं तस्मै हित-  
ध्यायिनः । लक्ष्मीस्तस्य वशाऽवशेव गुणिनां ब्रह्माण्ड

संस्थायिनी । श्री चिंतामणिपार्श्वनाथमनिशंसं स्तोति यो  
ध्यायते । १०॥ इति जिनपतिपार्श्वः पार्श्वपार्श्वखिययक्षः ।  
प्रदलितदुरितौघः प्रीणितप्राणिसार्थः ॥ त्रिमुच्यतजनवांच्छा-  
दानचिंतामणीकः । शिवपदतखीजं बोधिदीजं ददातु ॥ ११॥

## जैन-भण्डाभिवादन

झंडा ऊंचा रहे हमारा, जैन धर्म का बजे नंगारा ॥ १ ॥  
रिषभ देव ने इसके रोपा, भरत चक्रवर्ती को सोपा, उसने  
इसका किया पसारा ॥ २ ॥ महावीर ने उसे उठाया, भारत  
को संदेश सुनाया । धर्म अहिंसा जग हितकारा ॥ ३ ॥ गौतम  
गणधर ने अपनाया, अनेकांत जग को समझाया । स्याद  
वाद करके विस्तारा ॥ ४ ॥ हुआ कुमारपाल भूपाला, जैन  
धर्म को जिसने पाला । इस झंडे का लिया सहारा ॥ ५ ॥  
आज इसे मुनियों ने संभाला, भारत में कर दिया उजाला ।  
यही करेगा देश सुधारा ॥ ६ ॥ स्यादवाद और दया धर्म  
की, दुनियां प्यासी इसी मर्म की । इसमें तत्व भरा है सारा  
॥ ७ ॥ हम सब मिलकर के सेवेंगे, जरा नहीं नमने देवेंगे ।  
चाहे हो बलिदान हमारा ॥ ८ ॥ इति ।

## स्तवन जम्बू अणुगार (तर्ज भरतहरी)

बाणी तो सुणी सुधर्मा स्वामीकीजी २ चड्यो जोर को  
वैराग्य आज्ञा मांसे मांगीजी, आज्ञादीजो जतली आज, म्हांने  
संजम लेणीजी ॥ १ ॥ बेटाजी पहला तो परणी नी आठों पद-  
मिण्यांजी २ परण लगा दो मारे पांव या म्हारी केन सातोजी



वाला लालजी सपूत घूँथें काँई बोलोजी ॥२॥ माता का  
 केणासु परण पधारियाजी २ बैठा पलंग ऊपर जाय आत्म  
 ध्यान धरकेजी, नेमीनाथ के इतिहास अनुकरण करकेजी  
 ॥३॥ सोला तो सिणगार तन सज लियाजी २ आया पिवजी  
 के पास, ऊभी अरज करेजी, सुणीयो जम्बूजी सिरदार  
 छोड्या नहीं सरेगाजी ॥४॥ रत्न जड़त घर आंगणोजी २  
 फूला छाँई या सेज आप बिना सूनी लागेजी ॥५॥ ऊपर  
 तो आकाश नीचे जमीं झेलीजी २ आप बिना किसको  
 आधार अब म्हांको काँई होसीजी ॥६॥ चाँद तो बिना  
 सूनी रातड़ीजी २ तारा बिना कैसी रात, पिव बिना नार  
 सूनीजी ॥७॥ पीपल झुरे कलियां फूलनेजी २ फलने झुरे  
 नागर बेल, त्रिया वांश झुरेजी ॥८॥ दूधा नहीं भीजी  
 परणिया कांचलीजी २ गोद में नहीं खेल्या लाल, जलमा  
 नहीं पूजीजी ॥९॥ अकन कुंवारी ने घर घणांजी, तेने वर  
 घणाजी २ परणियारो लाग्यो दोष, अब म्हांको काँई  
 होसीजी ॥१०॥ पेला तो परणिनें लारे ले पधारियाजी २  
 अब क्यों करो बदली वाँव, नहीं लाज आवेजी ॥ ११ ॥  
 आशा तो होती परणिया आपसुं होंस रही मन मांय  
 अब म्हांको काँई होसीजी ॥१२॥ प्यारीजी यो तो संसार  
 सपना सोरखोजी २ जोवन बिज्जू को चमकार काल चलयो  
 जासीजी, गली सुंदर नार हिरदे ज्ञान धारीजी ॥१३॥  
 प्यारीजी काचकी सीसी कुंभ मिट्टी काचोजी २ फूटत नहीं

लागे वार यो तन काचो जाणोजी ॥ १४ ॥ प्यारीजी झूठी  
तो काया झूठी या मायाजी २ झूठी सकल परिवार इम थे  
काई राचोजी ॥ १५ ॥ पिवथी एक तो अरज म्हाकी  
सांभलोजी २ घर २ मांगोला भीख ममता नहीं मरेलाजी  
॥ १६ ॥ प्यारीजी छोटी तो लागे म्हारे बेनड़िजी, भिक्षा  
देवे जो मांय ममता मार लेसाजी ॥ १७ ॥ प्यारीजी ऐसा  
कलप्या गरज नहीं सरेजी २ छायो घट में वेंराग, गुरुमाने  
ज्ञान दियोजी ॥ १८ ॥ प्यारीजी पूर्ण निभाओ म्हांसुं  
प्रीतड़ीजी २ संगमें लेवो संजम भार, शिवपुरी सेल करसांजी  
॥ १९ ॥ आठुं तो नारियां सुनने संग हुईजी २ पांच सौ  
सतावीस परिवार जम्बूजी संजम लियोजी ॥ २० ॥ गुरु की  
गादी पर विराजियाजी २ केवल लई पास्यो मोक्ष, जांका  
गुण गावोजी ॥ २१ ॥ संमत उगणीसें सीतर सालमेंजी २ गढ़  
चित्तौड़ चौमास चौथमलजी गुण गायाजी ॥ २२ ॥ इति ॥

### सती गुणग्राम २००६ के चातुर्मास के

सती गुणवंत चले शिव पंथ, विदुषी प्यारी, सती केशर  
कुंवर उपकारी । जिनजी के धर्म को धारण कर, प्रभु वीर  
की आज्ञा पालन कर । धने पंच महाव्रत धारी ॥ १ ॥ प्रचार  
धर्म का करती हो, दुःखियों के दुःख को हरती हो । भली  
सुमती सती विचारी ॥ २ ॥ श्रीसंघ जालना की अरजी,  
सतियों ने उस पर की सरजी । सती करण चौमास पधारी  
॥ ३ ॥ सती सुन्दर वरी शिव सुन्दर, बल्लभ को प्यारे

प्रभुवर । प्रभु का ध्यान हृदय धारी । ४ । सती सम्पत  
समता धार, दुगुन ने दुर्गुण दिये टार । बनायो हृदय शुद्ध  
दारी ॥ ५ ॥ सतीजी सुगुन विनय की धार, दीप सती दीपे  
विश्व मंझार । धर्म का है शरणा भारी ॥ ६ ॥ सतियां  
सबही हैं गुणवान सदा ही भजती हैं भगवान । “देवीचन्द”  
जावे बलिहारी ॥

### जम्बूजी का स्तवन

जम्बू कह्यो मानलेरे जाया, सतले संजम भार ॥ १ ॥  
राजग्रहिना वासियाजी जम्बू नाम कुमार । ऋषभ दत्तना  
डीकराजी, भद्रा ज्यांकी माय ॥ २ ॥ सुधर्मास्वामी पधारियाजी  
राजग्रही के माय । कोणिक वन्दन चालियाजी जम्बू वंदन  
जाय ॥ ३ ॥ भगवन्त वाणी वागरिजी वरसे असृतधार वाणी  
सुणी वेरागीयाजी जाण्यो अथिर संसार । ३ ॥ घर आई  
माता कनेजी वदे बारम्बार । आज्ञा दो मोरी माताजीरे  
लेतुं संजम भार ॥ ४ ॥ ए आठोंही कामण्यां रे जम्बू अपछरारे  
उणिहार ॥ परणीने किम परिहरो, किण विध निकले  
जमार । ५ ॥ ए आठोंही कामणीरे जाया, तुम बिन बिलखी  
थाय । रमिया ठमिया सु नीसरे ज्यारो वदन कमल कुमलाय  
। ६ ॥ मति हिणो कोई गानवी ए माता मिथ्या मत भरपूर ॥  
रूप रमणी सूं राचता ए माता, होवे सुरगति द्वार, माता ॥  
मोरी सांभलो ए जननी लेसुं संजम भार । ७ ॥ पाल पोस  
मोटो कियो जम्बू, इमकिम दो छिटकाय ॥ माता पिता

मेलो झूरती रे जम्बू थाने दया नहि आय ॥८॥ लाख  
 चौरांसी नाए माता जीव कहचा छे अनेक सघलारी दया  
 पालसुंए माता आणि चित्त विवेक ॥९॥ ज्यूं आंधाने  
 लाकडीरे जाया, तू मुझ प्राण आधार ॥ तुझ विन म्हारो  
 कुल सूनो रे जाया, जननी रो जीतव राख ॥११॥ रत्न  
 जड़ितरो पीजरोए माता, सुवो तौ जाणे फंद ॥ काम भोग  
 संसार नाए माता, जानी बताया झूटा फन्द ॥११॥ पंच  
 महाव्रत पालनोरे जाया, पांचुही मेरु समान ॥ दोष बयालिस,  
 टालनोरे जाया, लेणो सूझतो आहार ॥१२॥ पंच महाव्रत  
 पालसुंए माता, चालसुं खांडानी धार ॥ दोष बयालिस  
 टालसुंए माता, लेसुं सूझतो आहार ॥१३॥ संयम मारग  
 दोहिलोरे जम्बू, करणो उग्र विहार ॥ विन अपराध  
 झुंजणोरे जम्बू, नहि है सुख लिगार ॥१४॥ चन्द्र विना  
 किसी चांदणीरे जम्बू तारा विन केसी रात ॥ कन्त विना  
 किसी कामणीरे जम्बू झूरे वारंवार ॥१५॥ मात पिता मेलो  
 मिल्योए माता, मिलियो अनंतिवार ॥ तारण समर्थ को  
 नहि ए माता ॥ पुत्र पोता परिवार ॥१६॥ दीपक विना  
 मन्दिर किसी रे जम्बू ॥ पुत्र विना परिवार ॥ वीर  
 विना किसी बेनडीरे जम्बू ॥ झूरे वार, तिवार ॥१७॥  
 मोह मती करो गीरी मातजी ए माता ॥ मोह किया  
 बन्धे कर्म, शोक सन्ताप इम क्यूं करोए माता ॥ करो  
 जिनजीरो धर्म ॥१८॥ ए आठौही कामणी रे जाया ॥ सुख

विलसो संसार । जोवन वय पाछी पड्यारे जाया । लीजो संजम भार ॥१६॥ ए आठोंही कामणीए माता । समझाई एकज रात । जिणजीरो धर्म ओलख्यो ए माता । संजम लेसी मोरे साथ ॥२०॥ मातपिता ने तारियारे जम्बू । तारी छे आठोंही नार सासु सुसराने तारियारे जम्बू तारिया प्रभव आवि परिवार ॥२१॥ जम्बू भला चैतियारे जाया । भले लीधो संजम भार ॥२६॥ पांचसो सताविस जणां सूं जम्बू लियो संजम भार । ग्यारह जीव मुगति गया जम्बू बरत्या जय जयकार ॥

### बारह व्रत आराधना

गणधर गौतम पाय नमीजे । तो सतगुरु वचन हिये धर लीजे । इण विधी श्रावक बारे व्रत कीजे ॥२६॥ पहले जीव दया पालीजे । तो त्रस स्थावर की रक्षा कीजे ॥ इण ॥१॥ दूजे सृषा झूठ न कीजे तो कणीरे माथे कूडो आल न दीजे ॥२॥ तीजे अदत्ता चोरी न कीजे, तो पराई वस्तु की वंचछा नहीं कीजे ॥ चौथे चोखी शील पालीजे, तो रतन पावडिया मुगत्यां फल लीजे ॥४॥ पांचमें परिग्रह की मर्यादा कीजे, तो मर्यादा उपर अधिकोन राखीजे ॥५॥ छट्ठे छही दिशी की मर्यादा कीजे, तो मर्यादा ऊपर पांव न दीजे ॥६॥ सातमें छवीस बोल की मर्यादा कीजे, तो सचीत मिश्र को आहार न कीजे ॥७॥ आठमें अनर्था बंड न कीजे तो हिंसा तणो उपदेश न दीजे ॥८॥ नवमें शुद्ध सामायिक कीजे, तो छुट्टाने

आवकारो न दीजे ॥६॥ दशमे दिशावगासी पोषध कीजे ।  
तो जिमः धारीजे तिम पारीजे ॥ १० ॥ ग्यारमें पडिपूर्ण  
पोषध कीजे तो एकांत निरमल ध्यान धरीजे ॥ ११ ॥  
बारमें शुद्ध भावना भावीजे तो, साधाने सुजतो अन्नजल  
दीजे ॥ १२ ॥ तेरमें सलेखना को पाठ भणीजे, तो पादो  
पगमन संथारो कीजे ॥ १३ ॥ दान शियल तप भावना  
भावीजे तो याने आराधी मुगत्यां फल लीजे ॥ इण ॥ १४ ॥

### सती अंजना की सभाय

एक दिवस रानी अंजना बैठी तरुतल जाय । वसन्त-  
माला ओ सखि साथमें, नैना नीर बहाय ॥१॥ रुदन करे ओ  
रानी अंजना ॥ टेर ॥ मैं छु ओ नाजुक सुन्वरी पिया पवन  
की नार । परणीने प्रीतम परहरी, बोल्या नहीं लिगार ।  
॥२॥ बारा वरस इम बोलिया क्षुरता दिन ने रात सूरत ना  
देखी नाथरी, मुख ना कीधी हो बात ॥३॥ रण दलमें पिव  
पधारिया, सासु दीधी हो कलंक । हाथ पकड़ काढ़ी बारणों,  
म्हारी सुणी नहीं रंच ॥४॥ पिहर गई पितु ना रखी माता  
नहीं दिधो धीर । भाई भावज भी बोल्या नहीं, नहीं पायो  
हो नीर ॥५॥ मेवा रे मोदक छूटिया, करती फल फूल  
आहार । सेजा पथरणा कहां रह्या, छूट गयो परिवार  
॥६॥ कर्म कमाया पहले भवे । देऊं किणने दोष । भुगत्या  
बिना छूटे नहीं धरती मन में संतोष ॥७॥ गर्भवती सती  
इण विधे फिरती वन वन मांय । जो दिन हनुमत जनमिया,

कष्ट गयो रे बिलाय । ८॥ कर्म कथा या विचित्र है पावे न  
कोई पार । कर्म थकी डरो प्राणियां, पावो भव जल पार ॥९॥

### प्रभु वन्दनः

बाईजी म्हारा प्रभुजी पधार्था उत्तर्या बाग में वंदवाने  
चालो । दरशन करशांजी होसी भाग में । टेरा॥ दरशन  
करलो प्रश्न पूछलो वाणी सुणलो प्यारी । भांत २ के मुनि  
देखलो । खुल रही केशरव्यारी । १॥ इन्द्र इन्द्राणी देवी देवता  
मिल मिल संगल गावे । एक चित निरखी नेणा नाथने ।  
हिये हर्ष नहीं माखे हो ॥२॥ तीन लोक में सोंगा म्हारा ।  
प्रभुजी प्यारा लागे । मिरगी मार रोग नहीं आवे ।  
सो, सो, कोस दूर भागे हो ॥३॥ गाड़ी छोड़ा रथ पालकी ।  
कोई गज उपर चढ़िया । वस्त्रा भूषण सोहे भारी । गेणा  
रत्नां जड़िया । ४॥ आप भी चालो करी वंदना । पूछो भव  
का निरणा । हीरालाल कहे हर्ष आवसुं भेटो जिनवर चरणां  
हो बाईजी म्हारा । ५॥

### विजयकंवर और विजयाकुंवारी की

श्री विजयकंवर और विजयाकुंवारी भारी भर जोवन  
में पाल्यो शील के समता मारी ॥टेरा॥ ये कच्छ देश और  
कौसंबी नामा नगरी । जहा बाग बगीचा शहर की शोभा  
सगरी ये धन्ना नामे सेठ रास है धनरी श्री विजयकंवर  
के धर्म करणरी लगरी । पुण्यवंत मिली है विजयाकुंवारी  
नारी ॥१॥ करके सोलह सिंगार पिऊ पे जाती । गहणा

पहर्या है खूब घूँघर घमकाती । बालम से सुन्दर प्रेम धरी  
 बतलाती । कामी की छाती थरर थरर थरती । हित करके  
 बोले विजयकंधर सुन प्यारी ॥२॥ ज्यों मदन दीपन हो  
 ऐसी वातां करती । मैं कृष्ण पक्ष का त्याग लिया मुनिवर  
 थी । यों सुनकर सुन्दर बोली नयना झरती मैं शुक्ल पक्ष  
 का त्याग लिया नहीं डरती, रहे बेन भाई ज्यों मित्र वातां  
 करती ॥३॥ श्री विमल केवली बखान इनका किधा ।  
 जिनदास सुश्रावक सुनकर आया सीधा ॥ कर भाव मुनिका  
 दर्शन हिरदा भीजा । अरु खूब हुवा मन खुश के अमृत  
 पीधा । तब मात पिता ने तुनी बात हुई जहारी ॥४॥ यो  
 जब जाण्यों सकल संसार कुंवर कुंवरी को । घर प्रच्छन्न पणे में  
 शील पाल रजनी को । जाने जगत धंढ सब फंद जान सब  
 फीको । ले करके आला पंथ लियो मुनिजीको । जाने शुद्ध  
 पाल के शील आत्म तारी ॥५॥

### चामड़ी का खेल

भजन करलेरे २, तू चामड़ा की पूतली प्रभुने रटलेरे  
 ॥टेर॥ चामड़ा की पूतली ने, चाबे बीड़ा पान । भांति भांति  
 का कपड़ा पहरे, करत गुमान ॥१॥ चामड़ा का हाथी घोड़ा  
 चामड़ा का ऊट । चामड़ा का बाजा बाजे, चारों ही खूंट  
 । २॥ चामड़ा का वाच्छरू ने चामड़ा की गाय । चामड़ा  
 का दोहनवाला, चामड़ा में जाय ॥३॥ चामड़ा का बादशाह ने  
 चामड़ा का वजीर, चामड़ा की सारी दुनियां, कहत कबीर ॥४॥



## लघु साधु वन्दना की सज्जाय

साधुजी ने वन्दना नित नित कीजे, प्रहउगन्ते सूर रे प्राणी नीच गतिमा ते नहीं जावे, पामे रिद्धि भरपूर रे प्राणी । १॥ मोटा ते पंच महाव्रत पाले, छकायरा प्रतिपाले प्राणी, अमर भिक्षा मुनि सूझती लेवे, दोष बयालिश टाले प्राणी ॥ २॥ रिद्धि संपदा मुनि कारमी जाणे, दीधी संसारने पूठरे प्राणी, एह पुरुषांरी बंदगी करतां आठों करम जावे टूटरे प्राणी ॥ ३॥ एक एक मुनिवर रसना त्यागी, एक एक ज्ञान भंडार रे प्राणी, एक एक मुनिवर व्यावच वैरागी एना गुणनो नावे पाररे प्राणी । ४॥ गुण सत्ताविस करीने दीपे, जीत्या परिषह बावीसरे प्राणी, बावण तो अनाचारज टाले तेने नसावूं म्हारो शीषरे प्राणी । ५॥ जहाज समान ते संत मुनिश्वर, भव्य जीव वेसे आयरे प्राणी, पर उपकारी सुनी दास न मांगे, देवे ते सुगती पोंचायरे प्राणी । ६॥ ए चरणे प्राणी शातारे पावे, पावे ते लील विलासरे प्राणी जन्म जरा अने मरण मिटावे, नावे फरी गर्भावासरे प्राणी ॥ ७॥ एक वचन जो सतगुरु केरो, जो बेटे दिल मायरे प्राणी, नरक गतीसां ते नहिं जावे, एम कहे जिनरायरे प्राणी । ८॥ प्रभाते उठी ने उत्तम प्राणी, सुणो साधांरो व्याख्या-नरे प्राणी, ए पुरुषांरी सेवा करता, पावे ते अमर विमान रे प्राणी ॥ ९॥ संवत अठारने वर्ष अडर्नीसे, बुसी ते गाम चोमासरे प्राणी, सुनी आसकरणजी एणीपरे जंये, हूं तो

उत्तम साधारो दासरे प्राणी, साधुजीने वन्दणा नित नित  
कीजे ॥१०॥

## देवानन्दाजी को स्तवन

दर्शन आवे हो देवानंदा द्वाहणीजी साथे लीधो पोता  
नो परिवार । एक रथ बेसी हो बेहुजणा संचरियाजी  
चाल्या मध्य बाजार ॥१॥ गेणाजो पेरिया हो रतन  
जड़ावराजी अपछरा के उणियार रुमझुम चाले हो पदमणी  
प्रेम सुं अठारा देशनी दासी जो लार । २॥ अतिसा  
देखि हो हेटा उतरियाजी । पावां आवे प्रभुजीरे पास, पंच  
अभिगम विध करी संचर्याजी, वंदना कीध हरष हुलास  
॥३॥ सामे तो रही ने हो जोवे सुन्दरीजी निरख्या  
नेणा न बंदाय तन मन हुलस्या हो देवानंदाजी तणा रे ।  
निजरनन पाछी खेंची जाय । ४॥ पुत्र सनेह हो पानो  
चढ्योजी भरिया बाजू ने समार । कस तुटी हो कंचुक  
तणीजी, छुटी दूधनी धार ॥५॥ गोतम पूछे हो श्री महावीर  
ने जी, देवानंदा जोवे मेखोनमेख । तुम उपरे प्रभु मोह  
धरेजी, जननी अधिक विशेष । ६॥ भगवंत भाखे सुणो  
गोतमजी, देवानंदा म्हारी जो माय । इण कारण छुठी धारा  
दूधनी जी हियड़े हरष न माय ॥७॥ इतनी सुणी ने हो  
गोतम राजी हुवाजी हृष्यो सब परिवार । संजम पाली  
पहोता मोक्ष में जी वरत्या जयजयकार ॥दर्शन॥८॥



## श्री महावीर स्वामी को स्तवन

दोहा—

तिण काले तीण समे० महान कुण्ड नगरसु द्वार भगवंत  
आया बाग में साध साधवी परिवार । रिषभदत्त ने देवानंदा  
जी सजीया रथ सिजगार । रथ बैठी ने संचर्या आया बाग  
सुझार । श्री जिनराज पधार्या सुन कर रोम रोम हुलसाया  
रिषभदत्त ने देवानंदाजी वंदन सन्मुख आया ओ गौतम या  
मोरी अम्मा, गुणधर या मोरी अम्मा ॥१॥

समोसरण में सन्मुख उभा, नेणा प्रभुजी ने निरख्या ।  
रोम राय तन हुवा हुलासी, दर्शन कर २ हरख्या ओ ॥२॥  
प्रभुजी को रूप देख मन हरख्या, आंचल दूध ज आयो ।  
जब गौतम मन भया अचंभे परसण पूछन लागो ओ ॥३॥  
इणशुं सगपण सुंछे प्रभुजी मारे मन यो सांसो । इण भव  
केरो इण के गौतम मात-तात स्नेहो ॥४॥ आप सरीखा  
उत्तम प्रभुजी संगत कुल किस आया । कर्मा आगे कोई य न  
जीते इनसे अचरज आया हो, कुल को गरब कियो में गौतम  
भरत रायजी बन्दु त्रिदंडी, पुत्र कलंकी कहीजे चौबीसमां  
जिनराया हो ॥५॥ बयासी रात रयां अणी कुंखे हरणगमे  
सी आया । मोटों कुल त्रशला देवी को जणी कुंखे जाई  
पधार्या हो ॥ ६ ॥ अणी कुंखे पेला क्योनी उपन्या कणी  
किया यो कासो करमा आगे कोईय न जीते जनस दिया  
जहां जाया हो ॥७॥ भरत रायजी परसण पूछे, प्रभुजी से

इणविध बोले । समोसरण में कोईयेक प्रभुजी आप सरीखा  
तुल्ले ॥८॥ श्री आदिनाथजी का समोसरण में बैठी पदिवद  
बारे । भरत रायजी परसण पूछे, सुरनर इन्द्र अपारे ॥९॥  
प्रभुजी कहे सुणो भरत रायजी चरम तीर्थ कर होसी ।  
वासुदेव तीर्थङ्कर चकरी, पदवी तीनों ही पासी हो ॥१०॥  
त्रशलादे देराणी होती देवानन्दा जेठानी, त्रशला देजी का  
रत्न दाबल्या बहूला रत्न चोराया ओ ॥११॥ सांझ पड़्या  
जब झगड़ो लाग्यो थें म्हारा रत्न चोराया । झगड़त २ रेण  
बीत गई हाथ कछु नहि आया हो ॥१२॥ ऐसा श्राप दिया  
देरानी तुज संतान न होजो कर्मा आगे कोईय न जीते सुर-  
नर इन्द्र अपारे हो ॥१३॥ रिषभ दत्तने देवानन्दाजी लेसी  
संयम भारो दोनों ही गोतम मुगत्या जासी भगवता में  
अधिकारी हो ॥१४॥ सिद्धारथ त्रशलादे राणी अच्युदेव लोके  
जासी । आचारंग बिजा श्रुत खड्ड में जिनवर किया  
वखाण ओ ॥१५॥ दोनोई गोतम मुगत्या जासी महाविदेह  
निरवाणो । सेव भंते २ गोतम हीय हुलासी हो ॥१६॥

### गोतम स्नेह

मारा वीर प्रभु का दर्शन की म्हारे मनमें रहगई रे-२  
म्हारे दिल में रहगई रे ॥८॥ देव समण को प्रति बोधवा  
अज्ञा दीनी आप । पिछे से गया मोक्ष आप या कैसी  
किनीरे ॥१॥ रात दिवस तो सेवा करतो मुझ पे थी अति-  
मेर तदपि सामी आप मुझे तो क्यों नी लेख्या लेर ॥२॥

गोयस २ कौन करेगा कौन लड़ावे लाड़ किसको गुरु कहुंगा  
 स्वामी आड़ा पड़ गया पाड़ ॥३॥ अद्भुत छटा आपकी  
 समर्पा उठे हृदय से लेर कहाँ गई वह मोहन सुरति लाऊं  
 कठासु हेर ॥४॥ जो-जो संशय मरे होतो तत्क्षण ले तो  
 पूछो कौन बतावे आगम की या भिन्न २ करके कुंची ॥५॥ मे  
 तो एसो नहीं जानतो छुटेला गुरु मेरा अब तो हुई सपना  
 की माया देखो दीनानाथ ॥६॥ वृथा मोह क्यों करे रे  
 चेतन प्रभु पोता निर्वाण चौथमल कहे इन्द्र भूतिजी पाया  
 केवल ज्ञान ॥ ७ ॥ समंत उन्नीसे साल चौरासी जोधपुर के  
 साय दीपमाल के दूजे दिन या जोड़ सभा में गाय । ८॥

### नवपद का स्तवन

सब दुख दूर होता नवपद के ध्यान से होता है मंगला-  
 चार जी नवपद के ध्यान से । ढेर ॥ श्रीपाल सेना सुन्दरी  
 ने ध्यान जब किया दालीदर दूर होता है ॥ १ ॥ असहाय  
 को भी साय देता मंत्र है बड़ा होता है विजैसारजी ॥२॥  
 परभव का साथी है इस भव में देता सायता भव २ का  
 फंदा कटता है ॥ ३ ॥ छोटेला ल जीन दास को शरणा है  
 नवपद का होता है संगल माल जी ॥४॥

### महावीरजी की वंदना

सुबह शाम प्रेमसे ध्यान लगाएजा, प्यारा नाम महावीर  
 महावीर गाए जा । आग्य जगाएजा ॥ढेर॥ जिंदगी की  
 को, चक्कर में फसाना मत । धीरे २ अपनी नाव

खेयेजा बढाएजा ॥ पार लगाएजा ॥१॥ स्वांस का ही खेल है, स्वांस का भरोसा क्या । खेल में तू अपना दांव, जीत का लगाए जा । बिगड़ी को बनाए जा ॥२॥ आशा के खिलेंगे फूल खुशियों की महक होगी, जीवन की बगिया में बसन्त बसाये जा । 'केवल' शान्ति पाए जा ॥३॥

## माता की शिक्षा

जाओ २ ए प्यारी बेटी रहो खुशी के साथ । टेक । चौदह वर्ष घर आंगन में खेली धूम मचाई । आज लाडली एक पलक में तू हो गई पराई ॥१॥ सभी तरह की सही मुसीबत पाली और पढ़ाई । दूर हृदय से होती है तू आज हृदय की जाई । २। लड़ी लूठ ली जिद्द भी करली, यहां तो खट गई मैना । वह है देश बिराना, वहां पर चतुराई से रहना ॥३॥ आज बिदा करने में तुझकों हृदय फटा जाता है । मत रोओ हे बेटी जगका ऐसा ही नाता है ॥४॥ भोली सूरत मीठी बातें, याद करी रो लूंगी । मुन्नी बिटिया राजा कहकर, अब किससे बोलूंगी ॥५॥ सास सुसर और पतिदेव की सेवा खूब बजाना । नणद देवरानी जेठानी से झगड़ा नहीं मचाना ॥६॥ गृह लक्ष्मी गृह चंद्रिका बन प्रकाश फैलाना । 'केवल मुनि' धर्म जिनवर का, भूल कभी ना जाना ॥७॥

## नं. २ माता की शिक्षा

तेरा मयका हो या सुसराल । सदा रखना धर्म का

खयाल देर॥ देवी शील है सच्चा श्रृंगार, सखि विद्या है  
 हीरों का हार । पति सेवा है मोती की माल ॥१॥ लक्ष्मी  
 राणी सदा बतके रहना, कड़वी मीठी सभी बातें सहना ।  
 देना उत्तर न आंखे निकाल । २॥ तू चन्दासी चमके जग  
 मग तू आशीर्ष पाये पग पग । ऐसी चलना तू उत्तम चाल  
 ॥३॥ जैसे राधा ने पाया हो गिरधर, जैसे सीता ने पाया  
 हो रघुवर । ऐसी जोड़ी मिली है कमाल । ४ । शोभा दोनों  
 कुलों की बढ़ाना, प्रेम से सबको अपने बनाना । कभी होना  
 न दिल में मलान । ५॥ बनी रहना बनि तू फूल, प्रभु भक्ति  
 न जाना तू भूल 'मुनि केवल' बनेगी निहाल ६॥

### बहू का सासु से कहना

लड़नो छोड़दो सासुजी थाने नित्य समझाऊं हो ॥टेरा॥  
 छती अच्छती सासुजी थें, चुगली म्हारी खाओ हो । जाया  
 ने भड़काय म्हाने थे, रोज पिटाओ हो ॥१॥ रुठ गया  
 प्रीतमजी म्हासू बोलें आंका बांका हो । जाण गई मैं बात  
 करम, सगलाई थांका हो ॥२॥ रोज २ लड़े सासुजी म्हासू  
 आदत थांकी खोटी हो । आप उडाओ माल म्हाने तो बासी  
 रोटी हो ॥३॥ थांका डरसू कोई न आवे, सखी सहेली छोटी  
 हो । कांदा जैसी आंख्यां काढो मोटी २ हो ॥४॥ काढो  
 दोष अच्छता थां तो, धारी खूब अनीति हो । सिरपर धरी  
 कलंक ओरांकी करो फजीती हो ॥५॥ चढियो राखो रोज  
 थोबड़ो, बोलू तो धमकाओ हो । डाकण रांड कहीने म्हासू,

थें बतलाओ हो ॥६॥ म्हानें तो खावाने देवी, सूखा लूखा  
रोटा हो । माल ससाला खाय २ ने बन गया सोटा हो  
॥७॥ पाणी रोज भराओ म्हासूं, घट्टी भी पिसवाओ हो ।  
भेलो करने गोबर छाणां, रोज थेपाओ हो ॥८॥ वार  
त्योहार कपडो पहिरूं, थांकी आंख्यां आवे हो । चोखो खाऊं  
तो थांसे नहीं, देख्यो जावे हो ॥९॥ लक्ष्मी ने नाराज करो  
तो लक्ष्मीजी फिर जावे हो । नाथूराम मुनि कहे बहिनों थें,  
प्रेम बढ़ाओ हो ॥१०॥

### सासू के बोल

लोगां देखलो ! बहूजी म्हानें खोटा मिलिया हो । टेका।  
घर को सारो कूडो कचरो म्हासूं रोज कढ़ावे हो । जरा देर  
करदूं तो झाड़ू ले धमकावे हो ॥१॥ किणरे आगे जाय पुकारूं  
मिल गई बहू या खोटी हो । खावा ने नहीं देवे म्हानें पूरी  
रोटी हो ॥२॥ भीड़ बहू की बोले जायो छोड़ी म्हारी भक्ति  
हो । लाडीजीरो मान करे, म्हारी कम्बखती हो ॥३॥ जरा  
जोर से कह देऊं तो, रोवे न चिल्लावे हो । भेला कर लोगां  
ने सांची, या बन जावे हो ॥४॥ करणो पड़े काम इण खातिर  
माथो पेट दुखावे हो । ढबलाकर सिर धूणे कहे भूतणियां  
आवे हो ॥५॥ दूध दही की थर खाजावे, माखन भी गटकावे  
हो । छाने २ सीरो करने रोज उड़ावे हो ॥६॥ तनिक  
ओलम्बी दूं तो, डर कुंवा को बतलावे हो । ज्यादा केऊं तो  
पीहर में या भग जावे हो ॥७॥ लाज शरम तो आगी खेली



म्हारी सामी बोले हो । पटके टांबर दूबर आटो घी ने ढोले हो ॥८॥ खार ने यां रांड करकसा बन रही जैसे पाड़ी हो ॥९॥ अब तो रांस सम्भालो ईने, काई हो गई सूं तो हो । बेटा ने केऊं तो घो बतलावे जुतो हो ॥१०॥ मरे बहु तो दूजी आवे कह प्रभू के ताई हो । फले भावना तो म्हे बांटुं सेर मिठाई हो ॥११॥ मन में समता धारो बहिनों मत बोलो तुम गाजी हो । नाथूराम कहे समता से सब होवे राजी हो ॥१२॥

### स्तवन

ओढ़ोरी सुहागन नारी 'शील' चुनरिया शील चुनरिया ज्ञान चुनरिया ॥८॥ लज्जा को लहेंगे पहिनो सखीरो पतिव्रत धर्म की ओढो चुनरिया ॥१॥ चोली 'चतुरता' की पहनो री बहनों । तपस्या तन पर धारो तगडिया ॥२॥ प्रेम की 'पायल' पहनो पायण में । तो बचती रहेगी बद की नजरियां ॥३॥ अपने ही कुल की चाल चलो तुम । शोभा करेणी सारी सुन्दरिया ॥४॥ ऐसा सिंगार करो तुम सजनी, राखो सदा तुम नीची नजरिया ॥५॥ नाथू सुनि की मानो री शिक्षा । तो पावोगी सुयश, और कदरिया ॥६॥

### स्तवन

पल२ बीते ऊमरिया मस्त जवानी जाये । प्रभु गीत गाले, गाले प्रभु गीत गाले ॥८॥ प्यारा २ बचपन पीछे खोगया २ । यौवन पाके तू मतवाला हो गया २ । बार २

नहिं पावेरे, गंगा बहती है प्यारे, मौका है न्हाते  
 कैसे २ बांके जग में हो गये २ । खेल खेलकर अन्त  
 सो गये २ । कोई अमर नहीं आया रे, पंछी ये फूल रगीले  
 मुझनि वाले ॥२॥ तेरे घर में माल मसाले होते हैं २ भूख  
 के सारे कई बिचारे रोते हैं २ । उनकी धीन खबर ले रे,  
 जिनके नहिं तन पर कपड़ा रोटियों के लाले ॥३॥ गोरा २  
 देख बदन क्यों फूला है २ चार दिनों की जिदगानी पर  
 भूला है २ । जीवन सफल बनाले रे, केवल मुनि समझाये  
 ओ जाने वाले ॥ ४ ॥

### स्तनव चन्दन बाला

चन्दन जोवे प्रभु दाट, माला फेरे दिनरात, प्रभु आबो  
 हमारे अंगना ॥टेरा॥ सती सुखमाला, चंदनबाला, तेला तप  
 करके, सती मन हरये ॥१॥ परिणाम शब्द हैं, डेहरी में बैठी  
 उड़द के बाकुले, सुपड़े में पेठी । डेहरी में बैठी । आशा पुरो  
 कृपा करो दया करो दीनानाथ ॥२॥ प्रभु को देख के हर्ष  
 मनावे, नैनो में नीर नहिं, प्रभु फिर जावे, रुदन मचावे,  
 प्रभु पीछे फिरके गये सती तारके ॥३॥ इन्द्रों ने रत्नों की  
 वृष्टि वर्षाई, देवदुन्दभी से आवाज आई ॥वृष्टि॥ धन्य २  
 सती आज सारे आत्मा के काज ॥४॥

### स्तवन

सुनोरी चतुर बहिणों जिन गुन गावोरी । जिन गुन  
 गावोरी ने खुशियां मनावोरी ॥ धू. २ ॥ प्रातःकाल नवकार

शहर चौमासा ठाये, गुरणी सा हमारे 'केशर कंवरजी'  
दिलसुख चरण सुझार ॥६॥

### गुणधरजी के स्तवन

बंदू ग्यारा ही गुणधर भावधरी ज्यांसुं जन्म सरण  
मिट जाय टली टेरा॥ पेला इन्द्र भूति दूजा अग्नि भूति तीजा  
वाय भूतिरा गुण गावो सही ॥१॥ चौथा व्यक्त भूति पांचवां  
सुधर्मासामी छटा मंडी पुत्रजी बंदू खरी ॥२॥ सातवां मौरी  
पुत्र आठवां शंकपीता नवमा अचल आतजीने ध्यावो सही  
॥३॥ दसवां सैत्तारज ग्यारवां श्री परभास इतो ग्याराही  
गुणधर बंदू सही चरणा में शीष नम्राऊं खरी ॥४॥ संमत  
दो हजार सोला में गुरणीसा परसाद से जोड़ करी दिलसुख  
कवर वंदे भावधरी मारी आवागमन मिटावो खरी म्हारा  
जन्म सरण फेरा टालो सही ॥५॥

### शांतिनाथ के स्तवन

साथब शांतिनाथ भगवान, शान्ति बरताने वाले, शान्ति  
बरताने वाले आनन्द बढ़ाने वाले ॥टेरा॥ पिता विश्वसेन  
भूपाल, प्रभु अचला लाल दयाल । तुम जगत जीव रखवाल,  
मिरगी रोग मिटाने वाले ॥१॥ प्रभु सहस्र पुरुष परिवार,  
तज दियो राज शंडार, फिर लीनो संजम भार जगत से समत  
हटाने वाले ॥२॥ लियो केवल कर्म खपाय, सुर सर पति  
लेवे पाय । जिन वचन सुधा बरसाय । सुगती पंथ बता  
वाले ॥३॥ प्रभु मैं छुं दीन अनाथ, अब गृहो कृपाकर हाथ

रिपु कर्म लगे हैं साथ, अरि को दूर भगाने वाले ॥४॥ तुम  
जगतपती जिनराज, मेरा सकल सुधारो काज । सेवक की  
राख्ये लाज सो भव फंद छुड़ाने वाले ॥५॥ दुःख चिंता  
विघन निवार प्रभु दीजे काज सुधार । रहे अविचल रिध  
भंडार सुख संपत्ति बरताने वाले ॥६॥ जपूँ भाव सहित नित  
मेव, शाता कारी सुखदेव रिषी असृत अविचल मेव, आत्म  
रिद्ध मिलाने वाले ॥७॥

### सिद्ध शिला का स्तवन

हाओ सिधशिला सगला सिरे जोजन पैतालीस लाख,  
ओ प्रभु उरजुण सोना से उजली विस्तार उवाई में भाख  
ओ प्रभु शिवपुर नगर सुहामणो माने जावनरो छे कोड ओ  
प्रभु पारशजीने सर विनऊं मारा कर्म बंधन थकी तोड ओ  
।टेर॥१॥ जठे थानक सदा काल सासता, जाई मिलिया  
छे, जोत में जोत ओ प्रभु तलालीन एक अनेक छे ज्याने,  
कदियनी आवे मौत ओ ॥२॥ जठे जन्म जरा मरणो नहीं  
नहीं चिताने बली, सोगओ प्रभु सासता सुख शांति घणी,  
जठे कदियनी विजोगओ ॥३॥ जठे भूख तृशा लागे  
नहीं, सदा तिर्पत रहे भरपूर ओ प्रभु उणायत कदियनी  
उपजे नहीं, मेले भव अंकूर ओ ॥४॥ जठे चाकर ने ठाकर  
नहीं, सगलाही सरीका होय ओ प्रभु केवल ज्ञानी दर्शन  
करे, चवदे राज रया छे जोय ओ ॥५॥ जठे सेठ सेण्यापति  
मंतरी, सुख भोगवे मंडलीकराय ओ प्रभु घणा सुख बलदेव

का, वासुदेव तुले नहीं होय ओ ॥६॥ जठे चौसठ सेस अते  
 वरीनाटक पड रया वृंद बतिस हो प्रभु मेल बयालिस भोमिया  
 सवराय नमावे शीष ॥७॥ जठे हयगयरथ चौरासी लाख  
 छे पैदल छण्यों क्लोडना वृंदहो प्रभु चवदे रतन नव नीध  
 धरा ऐंसानरपति केराइन्द्र हो ॥८॥ विस्तार चक्रव्रत को  
 छे घणो जंबुदीप पन्नती सुझार हो प्रभु जुगल्यातेपण जानजो  
 जोडले जन्मसी ते नरनार ॥९॥ हो ओ जीवा भगवती में  
 भाकियो बली प्रश्न व्याकरण सांय हो प्रभु ज्ञानी देवां इमे  
 भाखियो कल्पवृक्ष पुरे मनकी आस ॥१०॥ हा ओ चक्रव्रत  
 ने जुगल्या थकी अधीका छे देवारा सुख हो प्रभु इन्द्र तुले  
 लागे नहीं सगला ही देवारा सुख हो ॥११॥ हो ओ सुख इन्द्र से  
 आधिका कयां साधुजी मोठा अणगार हो प्रभु सदाई रेवे ।  
 संतोष में भोगजाणे वसन आहारहो ॥१२॥ हो ओ घणा  
 सुख अरिहन्तना इतो सिद्ध बड़ा सीरदार हो प्रभु तीनलोक  
 में ओपसा छे घणी ज्यारो केतानी आवे पार ॥१३॥ हो ओ  
 तीन कालका देवता रतनारां विमान वसंत हो प्रभु जोड  
 लगावे सिद्धांतणी ज्यारां नहीं आवे भाग अनन्त ॥१४॥ हो  
 ओ अन्तर जामी आप छो । पर दुखना काटणहार हो प्रभु  
 आस करीने आवीयो, संसार सागर थकी तार ॥१५॥ हो ओ  
 अंशसेनरायना नंदना भामाराणीरा अंग जात हो प्रभु पार्श्व-  
 जीनेसर वंदऊं मारा कर्म बंध थकी छूट हो ॥१६॥ हो ओ  
 संमत अठारा पचास में फलोदी कियो चौपास हो प्रभु पूज्य

जयमलजी रापरसाद से रोखलालचन्दजी करे गुणग्राम ॥१७॥

## पटराणी के स्तवन

होजी पटराणी गोविंद की कांई राधा रखमण खास  
जिनवरजी । वैराग्य तो जबरो चढ्यो कांई वाणी सुणीरिष्ट-  
नेसीपास, जिनवरजी धन्य २ वाणी प्रभु आपकी, आपकी वाणी  
में परम वैराग्य जिनवरजी ॥१॥ होजी या वाणी सुणवा भणीं  
कांही आवे सुरनर चाल जिनवरजी । भरीरे सभा में बोल्या  
रखमणी मैं संयम लेऊंगा दयाल ॥२॥ होजी निज घर आइ  
कहे कंथ से कांई शीष नमाई जोड़ी हाथ तीन खंडजी, चतुर-  
गतिका दुःख से डरी । म्हाने आज्ञा देवो प्राणनाथ जिनवरजी  
। ३ होजी कृष्ण कहे सुणो राधका, कांई जिम सुख होवे  
तिम कीजो पटराणीजी । आछा भावज उलटचा कांई अणी भव  
मुगत्यालिजो पटराणीजी । ४॥ होजी मोछव करावे श्री  
कृष्णजी । कांई तत्क्षण स्नान करावे जिनवरजी । गेणा आभू-  
षण पेराविया । कांई मणी सोती नवसर हार जिनवरजी  
॥५॥ होजी सेविका मांय बैठाविया, कांई बाजा बाजे बहु  
भांत जिनवरजी । फिरिया द्वारका बजार में, कांई आया  
जगन्नाथ पास, जिनवरजी ॥६॥ होजी गेणा आभूषण खोलिया  
कांई पेरयो सतियां को वेस, जिनवरजी श्रीमुख संयम  
आदरियो, जठे देखे केई नरेश, जिनवरजी । ७॥ होजी माधव  
कहे इष्ट कांत भणी, कांई उम्बर फूल समान, जिनवरजी  
शिष्यणी भिक्षा देऊं आपने, याने तारो श्रीजिनराज, जिनवरजी

॥८॥ होजी कृष्ण सरीखा जारे पति होता, कांई सुखम  
 सरीखी नार जिनवरजी, परणिया था कणी भाव से, कांई क  
 भाव लियो संजम भार, जिनवरजी ॥९॥ होजी जखणी स  
 की शिष्यणी हुआ, कांई विनय करी भण्या ग्यारा ॥  
 जिनवरजी, करम खपाई सुगत्या गया, जठे पाया अविचल सु  
 जिनवरजी ॥१०॥ होजी संवत उगणीसे गुणसाठ में, क  
 सोजत सेषेकाल जिनवरजी, चौथमल मुनि इम भणे, म्हा  
 गुरु हीरालाल जिनवरजी ॥११॥

### गुरणीजी गुण

मेरे गुरणीजी गुणवंत चले शिव पंथ बड़े उपकारी  
 बार २ बलिहारी । टेरा॥ घर बार से नाता तोड़ दि  
 पति तकको भी छोड़ दिया भरजोवन में दुनियां को ठोव  
 सारी ॥१॥ जिनजी के धरम को धारणकर गुरणीजी  
 अज्ञा पालन कर बने पंच महाव्रतधारी ॥२॥ प्रचार धर्म  
 करते हो दुखियों के दुःख को हरते हो भली सुमती आ  
 विचारी ॥३॥ देश विदेश में व्याख्यान सुनाते हो अहिंस  
 प्रेम सिखाते हो खट २ चलती रोकी तेज कटा  
 ॥४॥ श्री संघ जालना की अरजी गुरणीजी ने उसपर व  
 मरजी अब दिलसुखकंवर को दीजो तारी ॥५॥

### गुरणी गुणमाला

(तर्ज- छोटी मोटी संख्या से) श्री केसरकंवरजी महाराज  
 लागो तो आप सुहावना ॥टेरा॥ पिता आपका बिरदीचन्दन

हा २ तेजकंवर तस मांत काठेड़ वंस में उपण्या ॥१॥ मन-  
मोहन और प्रेम जडी हो हा २ वाणी मीठी सुखकार ।  
दर्शन से दुःख जावना ॥२॥ पुण्य रति आपकी दिन २ बढ़जो  
हां २ करजो आप धर्म प्रचार । जैन की ज्योति बढ़ावना  
॥३॥ शान्ति सरल और ज्ञान निधि हो हा २ गुण के हो  
भंडार । पार न कोई पावना ॥४॥ जालना शहर और  
हैद्राबाद आदि में, हा २ दीपाया चांतुर मास नर नारी  
गुण गावना ॥५॥ सात ठाणा से विचरत २ किया एवले  
चोमास । दिलसुख को पार लगावना ॥६॥

### कलियुग का भजन

रामा तुलसी उपाड़ तमाखु बाई जिसका मोटा पत्ता,  
बेटा बाप से लड़वा लाग्यो, आया जमाना खोटा, गाफिल  
मत रहना बेटा, सिरपर जम मारेगा सोटा ।टेरा॥१॥ साली  
के वास्ते शाल दुसाला बहनों के नाम पर टोटा, भाई के  
वास्ते नहीं गज भर कपड़ी, साला के वास्ते धोती जोड़ा  
॥२॥ पतिव्रता के फाटा कपड़ा, वैश्या के दुपट्टा, ऐर गैर  
ने नोट जिमावे साधु ने नाम पर टोटा ॥३॥ निर्धन के  
म्हारे धन नहीं है धनवंत कहे म्हारे टोटा कहत कबीरा  
सुन भई साधो आया जमाना खोटा ॥४॥

### मुक्ति रूपी लक्ष्मी का स्तवन

लक्ष्मी आई रे मुक्ती की दाता भजलो भाईरे, के लक्ष्मी  
आईरे ।टेरा॥१॥ धरम ध्यान की महा लक्ष्मी समकित रिद्ध



सिद्ध लाईरे । तीन लोक में फिरता गिरता मुश्किल पाई रे  
 ॥२॥ जय जय नंदा जय जय भद्रा, बोलो सभी बधाई रे । तप  
 संयम का खूब खजाना भरलो भाई रे ॥३॥ धर्म ध्यान  
 की महालक्ष्मी वीतराग बकसाईरे । श्रमण हजारीमल इस  
 गावे करो कमाईरे । ४॥

## एवंता मुनि को स्तवन

पोलासपुरी नगरी का राजा वीजैसेन भूपाल, श्री देवी  
 अंग उपना सो कांई एवंता कुंवार हो, एवंता मुनिवर नाव  
 तिराई बहता नीर में ॥टेर॥१॥ बेले २ करे पारणा, गुणधर  
 पदवी पाया । भगवंता की अज्ञा लेइने, गोतम गोचरी आया  
 हो । २॥ खेलरया था खेल कुंवरजी देख्या गोतम आता,  
 घर घर माहें फिरे हींडता । पूछे इसकी बातां हो ॥३॥  
 असणादीक लेवा के कारण निदोषण ने हेरां अंगुली पकड़ी  
 कुंवर एवंता, लाया गौतम नेडा हो ॥४॥ माता देखी आहो  
 पुनवंता भली जान घर लाया हरष घरी हाता से लइने  
 वेरायो अन्न पाणी हो ॥५॥ कुंवर कहे मुझ पातर आपो  
 भार घणो तुम पासे पातर तो में जीवे आपां दिक्षा ले मुज पासे  
 हो ॥६॥ दिक्षा लां प्रभु हम तुम पासे पातर मुझ ने आपो  
 अज्ञा कणीकी लेसो माय मुख आगे लेसु हो ॥७॥ लेरा २  
 चाल्या बालक भेट्या मोटा भगवंत भगवंता की वाणी सुणीने  
 मन आयो वैराग हो ॥८॥ घर आई माता से केवे अनुमत  
 की अरदास वचन सुण्या पुत्र तणासो कांई मनमें आई हांस

हो । ६॥ तूं काई समझे साधपणा में बाल अवस्था थारी  
उतर ऐसा दिया कुंवरजी माता कहे बलिहारी हो ॥ १०॥  
एक दिन को राज भोगवो मानों केहण म्हारी मौन करीने  
रया कुंवरजी बैठा सिंघासण तीनबारी हो ॥ ११ ॥ तीन लाख  
सोनैया लावो श्री भंडार माहे दोय लाख का ओघा पातरा  
एक लाख नाई हो ॥ १२॥ मोछब करने दिक्षा लीधी हुवा  
बाल अणगार भगवंता का चरण भेटीया धनजारी अवतार  
हो ॥ १३॥ वर्षाकाल वरसीयां पछे सुनिश्वर स्थाइल जावे  
पाल बांध पाणी में पातर नावा जाण तीरावे हो ॥ १४॥ नाव-  
तिरे म्हारी नाव तिरे यूं मुख से शब्द उचारें साधारे मन  
शंका उपजी किरिया लागी थाने हो ॥ १५॥ भगवंत भाखे  
सब साधाने भक्ति करो सब इनकी हीलणा निंदा कोइ मति  
करोसरे चरम शरीरी जीव हो ॥ १६॥ शासन पति का वचन  
सुणीने सबने शीष चढायो एवंताकी हुंडी सिकर गई आगम  
माई गायो हो ॥ १७॥

### श्री नेमनाथ भगवान का स्तवन

चांद बिना कैसी चांदणी, तारा बिना कैसी रात होजी ।  
मोत्यां बिना कैसी पेरणो पियु बिना कैसी सिणगार हो जी ।  
॥ १॥ देस प्यारी ए जादव मोयणी मूलक धूतारी ए जादव  
मोयणी । टेरा नेमजी तो तोरण आविया, पशुवारी सुणो  
पुकार हो जी ॥ नेमजी तो सारा ने पूछियो, तुम घर काई  
आचार हो जी ॥ २॥ राते तो राजल वाई परणसी, परबाते

दोदड भात हो जी : पहले जिमावां जादव लापसी, पछे  
 जीवांरा खेंगार हो जी ॥३॥ धिक पडोरे अणि मांढवे, धिक  
 धिक जीमणवार हो जी ॥ एक राजलजीरे कारणे, सेंस  
 जीवारा खेंगार हो जी । ४॥ खोल कटारी बंदण तोडियां,  
 पशुवांने मुकर द्वार हो जी । खर खाजोने पाणी पीवजो,  
 वनमांय करजो कीलोर हो जी । ५ तोरण से रथ फेरियो,  
 जाय चड्या गिरनार हो जी : तोड्या हे कांकण ढोडला,  
 लियो है संजम भार हो जी ॥६॥ राजल कहे सुणो साजना  
 अणि माय नहीं म्हारो दोष होजी ॥ पल्ला से पल्लो नहीं  
 बांदियो, नहीं जोडियो हतरेवे हाथ हो जी ॥७॥ सूसरे नहीं  
 निरख्यो म्हारो छेवड़ो, सासू नहीं निरख्यो म्हारो काम हो  
 जी ॥ देवर नहीं चाखी म्हारी सूंकड़ी नेमजी नहीं निरख्यो  
 म्हारो रूप हो जी ॥८॥ देराण्यां जेठाण्यारे झूमके, नहीं  
 खेल्यां होरी केरा फाग हो जी । चोंखा धोवंता बाई बोलिया,  
 मूंग बफंतीदार हो जी ॥९॥ घर से तो राजल बाई निसरिया,  
 जाय चडिया गिरनार हो जी ॥ तोडिया हे कांकण ढोडला,  
 लीनो है संयम भार हो जी ॥१०॥ चोपन दिन के पहली  
 होता, नेम पूर्ण केरी नार हो जी ॥ कर्म खपाइ मूगत्यां गया,  
 भावना, अणि जुग में तत्व सार हो जी ॥ पारो अरादो  
 नेमजी पूर्ण केरी नार हो जी ॥११॥ दान शीयल तप  
 भला भाव से, हो जासी खेवा पार हो जी ॥१२॥



## श्री क्षमा धर्म

खम्या धर्म पहलो कियो ने भांख्यो श्री जगदीसोरे जो  
 सुख चावो थारा जीव रो तो, मत करजो कोई रीसोरे ॥ भइ  
 खम्या किया सुख उपजे ॥८॥१॥ क्रोध कदी आछो नहीं  
 ने लड़ता लक्ष्मी न्हासे रे ॥ दुःख दरिद्र घर में घसे ने गुणे  
 रो पुरो विणासोरे ॥२॥ क्रोधी नरकारो करे ने सुधरी बात  
 वीगाडेरे आगो पाछो जोवे नहीं लाखेणी प्रीत गसावेरे ॥३॥  
 अथवा आगो ने पाछोरे खम्या किया खोटो नहीं आगे फल  
 आगे अच्छारे ॥४॥ तपताप पे रूषीसरोने आंख मरच कुण  
 आंजेरे तपसा वीणासे क्रोधसे ने दूध से कांजीरे ॥५॥ श्रावग  
 थोडा बोलसीने थें घणा लबाड़ी कीजरे अजीणा होवे काया  
 रीतो असडा काम न कीजेरे ॥६॥ जांका घर में एक क्रोधी  
 सगरा ने संतापे रे जांका घर में सगला क्रोधी जाका कांई  
 हवालो रे ॥७॥ कुंजड़ा जुं लड़वो करे ने नीच घरां का  
 वाजेरे, कैसा मनुष्य ने मानवी नो पेरियाई नागा दीसेरे ॥८॥  
 क्रोध कटारी ले मरे ने छुरियां फांसी खावेरे कुंवा बावड़ी  
 मांय पडेने, उड़ परदेसां जावेरे ॥९॥ क्रोध रोकावे राजमें  
 ने धन जावे कुल लाजरे मत करजो कोई ओडबीतो, ओछा  
 जीत बरेकाजेरे ॥१०॥ गज सुकुमाला मोटा मुनि ने सोमल  
 बंधी पारोरे खेर अंगिरा शीर धरीया तो मोक्ष पोता तत  
 कालीरे ॥११॥ दीपायन रूपी देखलोने किया द्वारकां पर  
 दावोरे जांरी तपसाएरी गई पछे रूलिया घणा संसारोरे ॥

## सीताजी को स्तवन

रईये महलां में महाराणी वन में बहु दुःख पावोगी  
 बहु दुःख पावोगी वनिता बहु दुःख पावोगी ॥८॥ वनमें  
 कष्ट बहुत हैं प्यारी तुम घबरावोगी वनके वनचर देख  
 वनिता तुम पछतावोगी ॥९॥ सुमनसेज महलों के अंदर तुम  
 सुख पावोगी वन में घांस बिछाकर कैसे रैन बितावोगी  
 ॥१०॥ कड़वा खारा खट्टा सीठा वन फल फूल खावोगी दूध  
 दही सेवा मन गमता वहां नहीं पावोगी ॥११॥ बिन म्याना  
 बिन कैसे प्यारी पंथ कटावोगी उसके कासे पांव फूटेंगे  
 रुदन सचावोगी ॥१२॥ रतन जड़त का गहना भूषण वहां  
 नहीं पावोगी । रहो यहां ही सखियों के संग में मौज मना-  
 वोगी ॥१३॥ विचरत २ इन्दौर शहर में सात ठाणा से आये  
 गुरणीसा चरण में चंचल कुंवरजी वंदन बारंबार ॥१४॥

## अठारा पाप का स्तवन

हारे मारी जीवड़ी चिकना करम तू कांई बांदि । डरे न  
 मनके सांहीरे प्राणिया चिकना करम तू कांई बांदि ॥८॥  
 हारे म्हारा जीवड़ा प्राण लुट्या पर जीवांका, हारे म्हारा  
 जीवड़ा झूठ बोल्यो अनगिनती को, चोरी में चित्त रयो  
 नीको रे प्राणिया ॥९॥ हारे म्हारा जीवड़ा रमणी रंगज  
 बहु निरख्यो, हारे म्हारा जीवड़ा विषय विकार में मन  
 हरख्यो परीग्रारो पाप नहीं परख्योरे ॥१०॥ हारे म्हारा  
 जीवड़ा क्रोध करीने अति तपियो, हारे म्हारा जीवड़ा मान

करीने भव २ भटक्यो ज्ञानी आगे नहीं छीप्योरे ॥३॥  
 हारे म्हारा जीवड़ा बोले जेसो चाले नहीं, हारे म्हारा जीवड़ा  
 अणी में दगाबाजी कहीं लोभ आगे थोबज नहीं रे ॥४॥  
 हारे म्हारा जीवड़ा राग को नामज है प्रीति, हारे म्हारा  
 जीवड़ा अणी को कहूं, थोड़ी रीति, घणा जीवां में बीतीरे  
 ॥५॥ हारे म्हारा जीवड़ा पदमोतर तेलो ठायो, हारे म्हारा  
 जीवड़ा प्रीति से देवता आया द्रोपती ने हर लाया रे ॥६॥  
 हारे म्हारा जीवड़ा प्रीति से इन्द्र आया, हारे म्हारा जीवड़ा  
 कोणीक का किया मन चाया हार हाथी हाथ, नी आया रे  
 ॥७॥ हारे म्हारा जीवड़ा प्रीति अनीति की मत करो हारे  
 म्हारे जीवड़ा नीति की प्रीति से मति डरौ राग द्वेष परी  
 हरोरे ॥८॥ हारे म्हारा जीवड़ा पक्षपात में मत फसो, हारे  
 म्हारा जीवड़ा ज्ञानी गुरु भाख्यो ऐसो पाप करीने कांई  
 हासोरे ॥९॥ हारे म्हारा जीवड़ा राग द्वेष है दोई बीज्यां  
 हारे म्हारा जीवड़ा अणी माय मती भिजो करमां का दो ही  
 बीज्यांरे ॥१०॥ हारे म्हारा जीवड़ा क्लेश में रातो रेवे-।  
 हारे म्हारा जीवड़ा घणा जीवां ने दुख देवे प्रेम से पाप ने  
 सेवेरे ॥११॥ हारे म्हारा जीवड़ा अभ्याख्यान भाख्यो ऐसो  
 हारे म्हारा जीवड़ा आलचढ़ावे मन जैसो भुगतेगा फिल.  
 कैसोरे ॥१२॥ हारे म्हारा जीवड़ा चोरी चुगली में बहू  
 राजी हारे म्हारा जीवड़ा डरे नहीं मन में पाजी आत्मा  
 जरा नहीं लाजीरे ॥१३॥ हारे म्हारा जीवड़ा जस कीरति

अपनी चावे हारे म्हारा जीवड़ा ओरां का अवगुण गावे ।  
 पराई बात मन भावेरे ॥१४॥ हारे म्हारा जीवड़ा माल  
 ठगण में चित चोखो हारे म्हारा जीवड़ा माया सेती बोले  
 सूखी कितनीक देऊं थने सिखोरे ॥१५॥ हारे म्हारा जीवड़ा  
 धर्म ध्यान मन नहीं भावे हारे म्हारा जीवड़ा आर्त ध्यान  
 में चित जावे रती आरती मन ठावेरे ॥१६॥ हारे म्हारा  
 जीवड़ा मिथ्या दर्शन शल खोटो हारे म्हारा जीवड़ा सर्व  
 पाप में यो मोटो सेव्या से पडे टोटोरे ॥१७॥ हारे म्हारा  
 जीवड़ा पाप अठारा इण विध गाया हारे म्हारा जीवड़ा  
 करो मती मन का चाया ज्ञानी गुरु फरमायारे ॥१८॥ हारे  
 म्हारा जीवड़ा घणा भवां में दुःख पायो हारे म्हारा जीवड़ा  
 अबके धर्म हाथ आयो, थोड़ा में दर्शायो रे ॥१९॥ हारे  
 म्हारा जीवड़ा देव गुरु धर्म आराधो हारे म्हारा जीवड़ा  
 शुद्ध मनसे प्रीति साधो मनुष्य भव थने लाधो रे ॥२०॥  
 हारे म्हारा जीवड़ा बात कहूं थाने सूरी हारे म्हारा जीवड़ा  
 कर्म कटक करदो चूरी चौथी ढाल हुई पूरी रे ॥२१॥

### भजन

म्हाने रोटलो आपो राम जदी लेउं तुम्हारो नाम  
 छाछड़ो तीरथ राबड़ो तीरथ, तीरथ गुगली बाकरा वसले २  
 रोटलो तीरथ मोटो, तीरथ अंगार ॥१॥ चार अवेरां  
 चार सवेरां चार दफेरी वेरां, इतरां में तो चूक पडें तो ए लो  
 थारी मालरे ॥२॥ भूखां से तो भजन नहीं होवे नहीं

निकले मुख वाणीरे, भूखां से तो भमरेटी आवे कुण पिलावे  
पाणी रे ॥३॥ घड़ी २ पल २ सुमरूं, सुमरूं सांझ सवेरे,  
नरसिंग ने सांवरियो मिलियो, दूध में शकर घोरोरे । ४॥

## भजन काया का

हंसा निकल गया काया से, खाली पड़ी रही तस्वीर  
॥टेर॥ यमका दूत लेवण को आया, घड़िय न पकड़े धीर  
मार २ के खाल उड़ावे, तैना ढलके नीर । १॥ कोई यक  
रोवे कोई यक धोवे, कोई यक ओढ़े मलमल चीर चार  
जणा मिल खाट उठाई ले गया गंगा तीर ॥२॥ घर की रे  
त्रिया रुदन मचावे या काई करी रघुवीर, भाई बंध सब  
ऊबा देखे कौन बंधावे धीर । ३ । इस काया का क्या भरोसा  
संग चले न शरीर, पांच पचीस मिल भीत चुनाई कह गये  
दास कबीर ॥४॥

## तीर्थंकर स्तुति

भज ले तीर्थंकर अरिहन्त देव निर्गन्ध कहाते हैं ॥टेर॥  
ऋषभ अजित संभव अभिनंदन सुमती पदम सुपास । चन्दा  
प्रभु और सुविधिनाथजी मोक्ष दिखाते हैं ॥१॥ शीतल प्रभुं  
श्रेयांस जिनेश्वर वासुपूज्य विमलेश । श्री अनन्त अरु धर्म-  
नाथजी दुःख मिटाते हैं । २॥ शांतिनाथ प्रभु जग के रक्षक  
सदा शांति करी । कुंथुनाथ प्रभु अरहनाथ सन्मार्ग दिखाते  
हैं ॥३॥ मल्लिनाथ मुनि सुव्रत स्वामी नमो नेम जगदीश  
पार्श्वनाथ सुख संपति दाता, वाञ्छित पाते हैं ॥४॥ वर्धमान



शासन के स्वामी जग के तारण हार । बाल वृन्द सब चरण  
कमल में शीघ्र नमाते हैं । ५॥

## सत्य उपदेश

धन माया तेरी यह काया । सब झूठा है संसार रे ॥  
क्यों फंम बैठा है बावरिया ॥ टेढ़ ॥ महल अटारी कोठी  
बंगले । सुन्दर हाट हवेली । नाशवान हैं सब रंगरलियां ।  
जान जायगी अकेली । मतवाले प्रभु गुण गा ले । कर प्रभु  
चरणों में प्यार रे ॥ १ ॥ माता पिता और प्यारी नारी ।  
संगी साथी भ्राता समय पड़े पर इस जीवन में, कोई काम  
नहीं आता । गुरु वाणी, तू सुन प्राणी कुछ करले पर  
उपकार रे ॥ २ ॥ जब तक तन में श्वास पंखेरू, तब तक है  
सब आशा । चार दिनों के लिये देखले । जग का खेल  
तमाशा । अणमोला, यह नर चोला मत विषयों में तू हार रे  
॥ ३ ॥ निंदा चुगली कर ओरों की क्यों सिर बोझा ढोता ।  
सत संगति से अमृत अपनी । क्यों नहीं कालिख धोता ।  
ले पी प्याले, सत्संग वाले कर अपनी काय सुधार रे ॥ ४ ॥

## सतियां स्तवन

भगवान् मुझे, सुशीला विद्यावती बनाना ॥ दोनों  
कुलों की शोभा, लज्जावती बनाना ॥ टेढ़ ॥ बनवास में पति  
का, जिसने न साथ छोड़ा । सत शील की विधाता, सीता  
सती बनाना ॥ १ ॥ छोड़ा न शील हरगिज, संकट सहे

हजारों ॥ अंजना सुभद्रा अथवा तारावती बनाना ॥२॥  
कुण्टी पति को पाकर, सेवा से मुंह न मोड़ा ॥ वह धर्म  
कर्म ज्ञाता, मैना सती बनाना ॥३॥ शिव राम वेष धरके  
जिसकी करी परिक्षा । सम्यक्त्व से डिगी ना, वह रेवती  
बनाना ॥४॥

## दया का स्तवन

दया को पाले है बुद्धिमान, दया में क्या समझे हैवान  
॥८॥ प्रथम तो जैन धर्म मांही चौबीस जिनराज हुए  
भाई । मुख्य जिन दया ही बतलाई, दया बिन धर्म क्यों  
नाई ॥१॥ धर्म रुचि करणा करी, नेमनाथ महाराज  
मेघरथ राजा परेबो शरणे, रखकर सार्या काज ॥ हुए  
श्री शान्तिनाथ भगवान ॥१॥ दूसरा विष्णु मत मझार हुए श्री  
कृष्णादिक अवतार । गीता और भागवत कीनी और वेदों  
में दया लीनी ॥२॥ दया सरीखो पुण्य नहि, अहिंसा  
परमो धर्म । सर्व मत और सर्व संघ में यही धर्म का मर्म ॥  
देख लो निज शास्त्र धर ध्यान ॥ तीसरा मत है  
मुसलमान । खोजके देखो उनकी कुरान, रहम नहीं हो  
जिसके दिल दरम्यान उसीको बेरहीम लो ज्ञान ॥३॥  
कहते मुहम्मद मुस्तफा । सुन लेना इंसान । दुःख देवेगा  
किसी जीव को वों ही दोजख की खान । मार जहां मुगदल  
को पहिचान ॥४॥



## भजन चुंदड़ी को

श्याम पिपा मेरी रंग दो चुंदड़िया, कृष्ण पिपा मेरी  
रंगदो चुंदड़िया ॥टेरा॥ बिना रंगिया सांवरा घर नहीं जाऊं  
बीत जावे चाहे सारी उमरिया २ ॥१॥ ऐसी रंगजो सांवरा  
रंग नहीं जावे २ धोबी धोवे चाहे सारी उमरिया ॥२॥  
गोकुल ढूँढी वृन्दावन भी ढूँढी, ढूँढ लई सारी मथुरा  
नगरिया ॥३॥ कहत कबीरा सुन भई साधो २ मोअनगर  
मांय खुली है गठड़िया ॥४॥

## भावना

भावना दिन रात मेरी सब सुखी संसार हो । सत्य  
शील का प्रचार, घर २ द्वार हो ॥ शांति अह आनन्द  
का, हर एक घर में वास हो । वीर वाणी पर सभी  
संसार का विश्वास हो ॥ रोग अह भय शोक होवे,  
दूर सब परमात्मा । कर सके कल्याण ज्योति, सब जगत की  
आत्मा ॥

## शांतिनाथ प्रार्थना

देश नगर समाज की शांति करो । ॐ शांति का सबके  
दिल भाव भरो ॥टेरा॥ नहीं शांति २ कहने से हो पर सच्चे  
हृदय से शांति करो ॥ शांति सम कोई तप जप और नहीं  
शांति सबको ही शांति दे शांति करो ॥ शांति से प्रेम होय  
सुबुद्धि बढे । शांति अमृत रंग २ सबके भरो ॥ शांति कीर्ति  
करे बदनामी टरे । शांति सय जीवन बनाके तेरा शांति द्वेष

मिटा अनन्दित करे । शांति से लब संकट दूर हरे ॥ शांति धारण कर लो ए मित्रों साथी । शांति निर्मल करे धीरज धार धरो ॥

## शांति प्रार्थना

सब मिल शान्ति कहो, ॐ शान्ति ३ सब मिल ॥८॥  
विश्वसेन अचिरा के नन्दन, सुमिरन हे सब दुःख  
निकन्दन अहोरात्रि वंदन हो, सब मिल ॥१॥ भीतर शान्ति  
बाहर शान्ति, तुझमें शान्ति मुझमें शान्ति सब में शान्ति  
बसी हो ॥२॥ विषय कषाय को दूर निवारो काम  
क्रोध से करो किनारो शान्ति साधना यों हो ३ शान्ति  
नाम जो जपते भाई मन विशुद्ध धीरजता लाई शान्ति  
उसे हो ॥४॥ शान्ति प्रभु सम समदर्शी हो करे विश्व  
हित जो शक्ति हो गज मुनि सदा विजय हो सब ॥५॥  
इति ॐ गुरु ॐ गुरु ॐ गुरुदेव जय गुरु जय गुरु जय  
गुरुदेव । देव हमारे श्री अरिहन्त गुरु हमारे गुणी जन संत ।  
सूत्र हमारा सत्य निधान धर्म हमारा दया प्रधान । श्रमण  
भगवंत श्री महावीर त्रिशला नंदन हरिये पीर । अधम  
उद्धारण श्री अरिहंत पतित पावन भज भगवंत । गुरु  
गौतम मुमरो हरबार घर २ वरते मंगलाचार । बोलो सब  
मिल जय २ कार होवे अपना भी उद्धार ।

## भजन

सुनो लाल संयम पाल वेगा मोक्ष में जाजो विनय करी

ने खूब गुरुदेव रिझाजो होवे तो अपराध बारंबार खमाजो ॥२॥ सीखजो बहु ज्ञान प्रमाद घटाजो सेध ज्यों तपस्या की झड़ी खूब लगाजो । २। आज ज्यों दिन रात थे वैराग वधाजो सारदया धमंता में चित्त रमाजो ३॥ फेर दूजी मात की कूँख में मती आजो, जन्म जरा मरण का सब दुःख मिटाजो ॥४॥ एतली तुम सीख ऊपर ध्यान लगाजो महामुनि नंदलालजी सुख सम्पति पाजो ५

### भजन

करिये प्रतिकमगो धर प्रेम तीबर रस टालिये रे जीव,  
जां से बांध्या वैर विरोध के सबने खमाविये रे जीव, देखा  
दिलड़ा केरा दोष मतिने सुधारिये जीव, दिल का दागा  
करदो दूर जीवने सुधारिये रे जीव, तजिये अंतर तो  
अभिमान के जीवन सुधारिये रे जीव ब्रशला देवी केरा नंद  
सहावीर स्वामी धिन बुरे जीव, आपरे शरणे आया नर नार  
के भव २ तारजो रे जीव, दीजो उत्तम कुल अवतार भव २  
जैन धर्म रे जीव, रहिजो तपस्या में म्हारो तन के होयजो  
मोक्षपुरी रे जीव

### आवश्यक

जिनमें आत्म जोड़ी संचित करम तोड़ी अनन्ती को मूल  
घटाओरे भवी, भवे आवश्यक अति सुखदाई रे १॥  
जन्म मरण जरा, खोटा खरा रूप धराया, अब तो संसार  
छटावोरे २॥ श्रावक को कुल पाया, पुण्य को खजानो लाया

कोड़ी साटे हीरो गमायो रे । ३॥ हीरा की तो किमत  
भाई, कुंजड़ी तो जाने कई जवेरी से परीक्षा करावो रे । ४॥  
अनंतानुबंधी, माठी चोरुड़ि तो लागे खोटी, पापणी से  
पिंड छुड़ावो रे ५ कितना उधार लिया भला बुरा काम  
कियां, कर्मां को करज चुकावो रे ६॥ दरब आवश्यक बहु,  
क्रिया करते २ हैं सह अनुयोग द्वार देख्यां जावो रे ॥७॥ शुद्ध  
भावे आवश्यक, राई जतरो रह्यो अघ मेरु जितना अव्रत उड़ा-  
वो रे ८॥ संसार में उलझ रयो अन्त समय वैराग्य रयो, सोई  
भावे आगम पुरावो रे ॥९॥ स्वर्ग का सुख चाहो स्थानक  
मांही वेगा आवो, दोई काले आवश्यक ठावो रे ॥१०॥  
करत २ कबु रसायन आवे, प्रभु, तीर्थङ्कर पदवी पावो रे  
॥११॥ सामायिक ने चोवीसंतो, वंदना ने काउसग थव  
थुई मंगल मनावो रे ॥१२॥ अतिक्रम व्यतिक्रम अतिचार,  
अनाचार आत्मा से दूर हटावो रे ॥१३॥ कहत है मेवाड़ी  
मुनि, जानी गुरु पासे सुणी, आदश्यक में रम जावो रे ॥

### शांतिनाथ का भजन

खमा ३ माता अचलारा जाया में तो थारी ही गुण  
गाऊं जीयो । चरणा में लेलो मने पार लगादो म्हारी हुन्डी  
बेग सिकारी जीयो ॥टेर १ सर्वाथ सिध थकी चर्विया हो  
प्रभुजी अचलारे उदर आयाजीयो । गर्भवास में अति ही  
प्रभुजी मृगी रोग नशाया ॥२॥ शांति ही शांति जग में  
बरताई सर्व कहे शिरनामी जियो । तुम प्रसाद

पाया भूले सूढ़ हरामी ॥३॥ जो कोई शुद्ध मन जाप जपे  
थारो रिद्धि सिद्धि सुख पावे जीयो । ताव तेजारी टामण  
टुमण सब दुख दूग जावे ॥४॥ एक चित जो कोई ध्यान  
धरे थारो मन चित्या फल पावे जीयो । ज्यां घर में नित  
आनन्द बरते दिलसुख कंवर गुण गावे ॥

## शांतिनाथ

जय अचलासन शांति सिंहासन, द्वेष विनासन शासन  
स्पंदन । सन्मति कारण कुमति निवारण, भव २ हारण  
शीतल चन्दन । जय करुणा वरुणा लय जय २, जीव सभी  
करते अभिनन्दन, जय सुख कन्दन दुरित निकंदन, जय जग  
वन्दन त्रिशला नन्दन ।

## दीवाली का स्तवन

विचरत २ श्री वीरजी पदार्या २ पांवा ने पुरी ओ  
सेर पदारियाजी ॥१॥ टेक । राजा ने राणीओ सायबा अरज  
करे छे २ अवके चोमासो प्रभुजी यां ही करोजी ॥१॥ सुख  
भर रईया ओ स्वामी अन्तरयामी २ वाणी परकासीओ  
घतर चोमासा कीजी ॥२॥ नवलछी ने नवमलजी ओ राजा २  
वीर सभी पर पोसा ठावीयाजी । ३॥ दोय दिनारो स्वामी  
आयो संथारो २ काति अम्मावस मोक्ष पधारियाजी । ४॥  
काति के मासे ओ स्वामी अवसर पाया २ जोग आउखो  
पूरण पामीयाजी ॥५॥ इन्द्रभूतिजी ओ स्वामी अरज करे  
छे । माने मुक्ति में क्यों नहीं लेगयाजी ॥६॥ तीण हीज

राते ओ स्वामी प्रकट जो हुवा २ गौतम स्वामी ओ केवली  
 केवावीया जी ॥७॥ इन्द्र आया ओ स्वामी मोछब कीनो २  
 दीप नन्दीसर सगला आवियाजी ॥८॥ बारे वर्षा लग  
 स्वामी गौतम रईया २ पछे मुगती में जाय विराजियाजी  
 । ६॥ धरम दिपायो स्वामी सूत्र सुनायो २ वाणी प्रकासीयो  
 अमृत सारखोजी ॥१०॥ कहे हीरालाल ओ स्वामी बन्दु  
 सिर नामी २ हरष वदाई ओ वरते हम घराजी २ आनन्द  
 वदाई ओ० ॥

### काया का स्तवन

महारी काया कमेड़ी ये नार, यो कोई नखरोए । महारी  
 सूरत सुहागण नार, मत कर नखोरे ए ए । थने कहुं ए ज्ञान  
 की बात मरोड़े कई मुखड़ोए, थारे फिरे असंगों काल सिर  
 पर खतरो ॥८॥ १ ॥ तूं ओडण सालुडो जाय पुरन गुरु  
 गमरोए । तु ज्ञान घूंगटो काढ़ लुगड़ों भजनारोए ॥२॥  
 थारे हाड़ २ में रोग भर्यो छे जबरुए । थारे अन्त २  
 में पाप, झूठको झगड़ोए ॥३॥ थारे चाम चाम में लोभ  
 भर्यो छे जबरुए । थारे केश २ में काल आनिने कोई  
 पकड़ोए ॥४॥ थने मिलियाए नाथ गुलाब संत कोई  
 सुथरोए । गुण गावे भवानी नाथ स्मरण कोई पकड़ोए ॥

### श्री मंदिरजी का स्तवन

त्रिभुवन साहिब अरज सुजीजे । दर्शन दीजे राज ।  
 दर्शन दीजे मया करीजे महारी अरज सुजीजे महाराज महारी



वीनतड़ी अवधारो साहिब श्री मंदर जिनराज ॥ टेर ॥१॥  
 आय बसो महाविदेह क्षेत्र में । हूं इण भरत मुझार । यो  
 मिलणो किमविध होसी हो साहिब योछे सबल विचार ॥२॥  
 भरत विचाले पर्वत आडो नामे छे वेताड़ । पच्चीस जोजन  
 ऊंचो प्रभुजी पवास जोजन विस्तार ॥३॥ गंगा सिंधु  
 दोनू नदियां आड़ी छे किरतार सेंस अट्ठावीस बीजी नदियां  
 ये बिहुंनो परिवार ॥४॥ तिग आगे एक पर्वत आड़ो चूज  
 हेम वली नाम । एक सेंस ने बावन जोजन बारा कला  
 अभिराम ॥५॥ क्षेत्र हेमवय आड़ो छे प्रभु जुगल्या केरो वास ।  
 इकीस-सो ने पांच जोजन, पांच कला अभिराम ॥६॥ रोईकता  
 और रोइतंसा नामे, नदियां महा असराल । छप्पन सेंस वली  
 नदियां शामिल लागे केम उपाय ॥७॥ महा हेम एक पर्वत  
 आड़ो मोटो अति विस्तार चार सेंस दो सो दस जोजन  
 बस कला अभिराम ॥८॥ आठ सेंसने चार सो बलि  
 एकवीस जोजन थाय । कला एक उपर छे अधकी क्षेत्र छे  
 हरिवास ॥९॥ हरिकंता ने हरिसलिला नामे नदियां महा  
 असराल । बीजी नदियां शामिल छे प्रभु सेंस बारा एक  
 लाख ॥१०॥ निषध पर्वत आड़ो छे प्रभु जोजन बहु विस्तार ।  
 सोले सेंस ने आठ बयालिस दोय कला अभिराम ॥११॥  
 क्षेत्र छे प्रभु जुगल्या केरो देवकुए वली नाम तेह निषध  
 पर्वत परमाने पोली छे सुन स्वाम ॥१२॥ सीता नामा  
 नदियां बंडेरी सब नदियां में सिरदार पांच लाख बलि

नदियां शामिल उपर बत्तीस हजार ॥१३॥ कंचनगिरी  
 बखारा पर्वत केम उलंघ्या जाय । भद्रसाल वन मार्ग बीच  
 में लागे केम उपाय ॥१४॥ वनगिरी पर्वत बहुलाविच में  
 नदियां ऊपट घाट किस विध आऊं ओ सुगगा साहब मारग  
 विखमी वाट ॥१५॥ लाख जोजन को मेरु पर्वत नाम  
 सुदर्शन थाय गजदंता वली मारग बीच में लागे केम उपाय  
 ॥१६॥ क्यां मुझ दक्षिण भरत कहां तुझ विजय  
 पुखलावति नाम, यो मिलणो किम होसी हो सायब योछे सबल  
 विचार ॥१७॥ निसदिन म्हारे तुम अवलेसर वसिया हृदय  
 मुझार भव दुःख भंजन नाथ निरंजन करुणा रस भंडार ॥१८॥  
 संमत अठारे वरष इक्कासी पौष विदी शुद्ध मास । बीज ने  
 बुधवार अनोपम श्री जिन ववन विलास ॥१९॥ खरतर  
 गच्छे गुह गुण सागर सरूपचंद सुद्धसाद । हरखचंद कहे  
 श्री जिनवर को तारो गरीब निवाज ॥२०॥

## उत्पत्ति का स्तवन

श्री जिनवर दे असड़ो उपदेश । जो कोई राखे धर्म पर  
 रेश । दया भाव दील आणजो । मस्तक आया थारे धोलाजी  
 केश । बुड़ापो कियो परवेश । आठ कर्मा ने दो परा ठेल ।  
 साधपणो सुद्ध आदरो । पांचो ही महाव्रत मेरु समान ।  
 सुत्र सिद्धान्त में चाली छे बात मार्ग लीजो थे पादरो ।  
 मीठाजी बोली अमृत बेन । सुन चेतन पोता निरवान थे  
 चेतो रे चेतो रे मानवी । १॥ पुन जोगे थाने मि

साध, वाणी सुणीवे मतीं करो परमाद ॥ तेत करीने तुम  
सरदजो । उत्तम कुल नर भव पाय साधुजी सीख  
देवे तंत सार । भिन्न २ भावज भाकियो ॥ सगला ही  
किया क्रोड़ भवजीव, ज्यारी समहित सेटी जो नीव, कांई  
एक हिरदा में राखजो । समता सरोवर लीजोनी धार  
धारोरे २ दया धर्म सार ॥२॥ साधुजी करे पर उपकार  
वस्तु वताई सगली तंतसार, प्रतक्ष जोवो पटावली । शामल  
नेण उगाड़ी ने देख ॥ लारेली उत्पति अणीविध होय, ज्ञानी  
देवा इम भाकियो, अणी माय मति जाणो तिलभर झूठ ।  
प्राण परायारा तूं मति लूट, जो सुख चावो थारा जीवको ॥  
खीण २ आउखो जावेलो खूट, जम आगे किम जाहोला छुट  
। ३॥ सूक्ष्म भाव बतावेजी संत आद अनंता में रलिया  
घणा अन्त । भव २ मांय तू भटकियो ॥ नवघाटी उलांघी  
ने आय दुर्लभ भव मनुष्य को जी पाय । ऊंच नीच कुल  
उपन्यो । या घणी चाली सूत्र माही बात, ई थारा माय  
ई थारा बाप, मोह माया मांही फस रयो । लाग रयो थारे  
आरत ध्यान, धारो रे २ दया धर्म सार । ४॥ नरनार्या  
का मिलिया जी संजोग, भोग भोगंती संसार्या का भोग  
गर्भवास मांय उपन्यो । भिष्टाकी कोथरी पेट मुझार जणीरे  
जगा तू उपन्यो आय, साकड़े शरीरज तू रयो । नीचोजी  
मस्तक ऊंचाजी पांव, छाती आगे दोय गोड़ाजी राख, नेत्र  
आगे योग पट्टिया । रुद्र शुक्र को तू करतोजी आहार, मांड-

मेल्या घणा बाद संसार ॥५॥ माताने दुःखने बेटा ने  
 भूख निसदिन भोगवतो घणो दुःख, सूत्र अचारंग में चालियो ।  
 उस बेटा तणो उपन्यारे जीव, झाझेरा नो महिना सतमीरी  
 नीव ॥ चाम चेड़ी जीम चेटी रयो । सत बेड़ी लेई आयोजी  
 घोर ॥ सूइ सावंती साड़ा तीन क्रोड, अग्नि बरण करी  
 आकरी ॥ चाप रयोरे थारो सगली शरीर, सूत्र में भाक  
 गया महावीर ॥६॥ सेज पोड़ाइने चोवटहाट, चोवट २  
 राली घणी गांठ आठ गुणी वेदणा गर्भ माई । जनमती  
 वेला थारे कोड़ाजी कोड़ मरती वेला कोड़ा कोड़ प्रमाण  
 जैसो निकले जंत्री में से तार, जनम लेइने मोटो हुआ । नव  
 जोबन थारो बलवंतो जाय, जणीरे जगा थारो मन जो जाय  
 धरक पड़ो संसार में । राच रयोरे रूप रमणी के माय, घणी  
 करतो चतराईने चौप ॥७॥ काला भंवर थारा होताजी  
 केश । निसदिन पेरतो नवा २ वेस, सेलायां करतो घणो ।  
 बात नी करतो माइता ने पूछ, ताव देइने मरोड़तो सूँछ ।  
 मगज माये नहीं मावतो । चालतो निरखतो पार की नार ।  
 तीज तमाशा ने देखतो वाग, नाटक विध २ प्रकार का ।  
 चाबतो बीड़ला ने सूंगतो फूल । धर्म बिना थारो कांई  
 होसी सूल ॥८॥ हाता में कड़ा ने काना में मोती, लाग  
 रही थारे जग मग जोत । ऊंचा लपेटारे बांधतो । उपर  
 देतो काठाजी बंध । बांकी सी गरदन आंख्या जी अन्ध ।  
 अन्तर गांठ हिये घणी । चालतो देखतो अपनी देह । भव

मांही तू होसी खराब । जन्म जरा पजो अति घणो । नाना  
 केता नरका में जाय परमाधामी थाणे देसी रे मार  
 ॥६॥ उजली राखतों अपनी देह, किंचित मात्र नहीं लगावतो  
 सेव । झटके सुं झाटक नाखतो ॥ मैल तणी नहीं राखतो  
 रेश । जगीरे मांही थारो घणोरे सदेश । पाट बैठ पीठी  
 करे, अनगण नीर सुं करेरें स्नान । लाग रगो थारे आरत  
 ध्यान । चुवारे चंदन चरचतो । खावतो खारक खोपरा  
 दाग । देही तो जल बज हो जासी खाक, ॥१०॥ पर  
 नारी से लगावतो प्रेम । खोटा किया रे थारा चशु ने नेण  
 परणी रे दाय आवे नही । ऐसी थारी खोटीरे द्विष्ट । कांच  
 लपेटी ने हो जासी भ्रष्ट । सेलानी अजी लोह में । परभारी  
 जावे थारी पंचा मे साख । दंडन भंडन काटे छे नाक ।  
 नोका में फीट २ हो रयो । ऐसी कणी थाने दीनीरे सीख ।  
 भव २ मांही तू मांगमी भीख ॥११॥ पापतणी तू बांधतो  
 पोद, लेनी कमाई थारी नरका में कोस, तृष्णा पामे अति  
 घणो । नहीं मुने भगवंतजी रा वेण । साधुजी ऊपर दुष्ट  
 परिणाम, मारण में तपतो घणो । कुड़ा आल देही बोलतो  
 गुट । मारण काज उठावतो मूट । चार बोल इम चानिया  
 तीननो ने बसट चानिया जी मन । हूं अपराधी भय्यो चारु  
 मन ॥१२॥ जनक की बेटी ने ले गयो लंक । रावण राजा  
 होयो बरतो बंक ॥ नक्षत्र हाने मार्यो गयो ॥ तेना होता  
 समसी गीव ॥ बंके भुजा बनावतो वीम । पदमोनर द्रोपदा

ने ले गयो । कहे भरत लक्षमण राम रावण ने सीता अपहरी ॥  
 तेना बांध्या साचाजी करम । कृष्ण गमाई तेयनी शर्म  
 ॥१३॥ मेणरयाजी को मोयोजी रूप । मणीरथ राजा  
 पड़यो अन्ध कूप ॥ बैर बसाया दोई जणा ॥ चार जणा ने  
 नाख्या पेई के माय ॥ श्रीमती कर दिया चारा ने बंद ॥ शील  
 बचायो सनी आपनो ॥ बंधुमति नामा होतीजी नार अर्जुन-  
 माली तेनो भरतार । जक्ष का देवरा में ले गयो नजर देखता  
 भोगवी नार ॥ छेई पुरुषां ने नाख्याजी मार दुर्गति गया  
 ने घणा जावसी । परनारी को मोठोजी पाप । श्री मुख  
 भाख गया महावीर ॥१४॥ जो कोई करे साधां का गुण  
 ग्राम कोई कहे दर्शन से काम, कोई बखाण सुने सदा ।  
 कदाचित आय सके नहीं कोय । भावना भावे मन के जी  
 मांय । तो पण गरज सरसी घणी चउदे प्रकार को देवे  
 जी दान । सो ही पुरुष्यो श्री भगवान । शालभद्र तुम  
 सांभलो ॥ सूत्र विपाक में चाल्यो छे पाठ । कुंवर सुबाहु का  
 पुण्य का ठाट ॥१५॥ दासी उभी बेकर जोड़ । एक बुलावे  
 ने दस आवे दौड़ ॥ हुक्म घणा ही उठावसी । बेटा पोता  
 सोही परवार । कोईयनी लोपतो तेयनी कार । पूर्वला  
 पुण्य संच्या घणा । रतनारा डाबा ने गेणा मंजूस । लाग  
 रही रे थारे जग-मग जोत । मेलां बैठी श्याम सुन्दरी । समें  
 प्रमाने नहीं गिनती जो मांस । जणीरे बाई को निकल गयो  
 सांस । जाय कियो मशाना में वास ॥ जल गई मिट्टी ऊपर

उग्यो घास । इस जाणीने धर्म करजो हुलास । साधुजी थाने  
 देसी साबास, ॥१६॥ रत्नारा प्याला ने सोवन थाल ।  
 मूंग मिठाई ने चावल दाल, भोजन भली २ भांत का,  
 गंगाजल नीर दीजोजी ठार । वस्तु बताई सगली तंत सार,  
 कमी नहीं कणी बात की । बड़ा २ होता राजा ने राव,  
 सेठ सेन्यापति ने उमराव, खातर में नहि मावता, तेना  
 सुख भोगव्या भरपुर, देखंता २ हो गई धूल देखोरे गत  
 संसार की । कंचन वरणी होती जो काय बादल जूं जांसी  
 विरलाय । १७॥ चौसठ मण को एरुज मोती लाग  
 रहीरे थारे जगमग ज्योति, आवागमन अलगी करो ।  
 ऐसी बताऊं थाने हेत ने जुगत, ज्यांने मिलेगा वाई मोइनी  
 मुगत, सासता सुख साता घणी । चवीने विराजा देव विमान  
 फेर नहीं तियां आवणरो काम । १८ जो कोई करे  
 साधारा गुण ग्राम, जो कोई चेतें चतुर सुजान परनारी  
 जाय परहरो, जो कोई लेवे संजम भार ज्यांरी करनी पेलेजी  
 पार, मुगत गया ने घणा जावसी श्रावक का व्रत लीजोजी  
 धार । ज्यांरी समकित सेठी जो नींव । प्रतिकमणो पोसा  
 करे, जो कोई पाले जिनवरजी की आण जाने मिलेगा भाई  
 देव विमान । १९॥ उपदेशरा हियेजी वेण सामलजो  
 वात ने राखजो प्रेम, गुण उपजेलो अति घणो, परनारी  
 सु मति लगावजो प्रेम । जो सुख चाहो थांका जीव फो केण  
 सीख सत गुदजी की तुम सरदजो । संवत अठारा ने बीस

ने आठ, वैसाख सुदी चांदनी छट । पूज्य जेमलजी का परसाद  
सु । तीवरी माय रिखरायचन्द, छोड़ो २ संसार्या राफंद ॥२०॥

## लावनी भरत प्रेम

भरत ननिहाल से आये अवध में मंगल नहीं पाये  
। टेरा॥ बंद कचहरी क्यों पड़ी, क्यों नहीं पहरेदार झंडा है  
नीचे गिरा, आपका गुण है अपार भरतजी मन में घबराये  
। १॥ अवधपुरी के नर और नारी क्यों हैं हाल बेहाल घंटे  
की ध्वनि नहीं सुनी और नहीं बाजत घड़ियाल ॥ सोच में  
नर नारी पाये । २ चऊ मुख दिवला जलाकर आई कैकई  
मात किया प्रणाम सरा रही अब करो अवध का राज  
इसीलिये तुमको बुलवाये । ३ भरत कहे बता मुझे, कहां  
पिता और मात । कहां भाभी मेरी जानकी कहां हैं  
श्री रघुनाथ ॥ दर्शन नहीं लक्षमण के पाये ॥४॥ राम  
लक्षमण वन को गये तजे दशरथ ने प्राण दो वर मेरे चाहिये,  
सो किये स्वीकार इसीलिये वन को भिजवाये ॥५॥ वचन  
सुनी निज मात के, पड़ें भरत गस्त खाय कैकई माता निज  
नन्द को खूब रही समझाय तुझे अब राजा बनवाये ॥६॥  
भरत कहे धिक्कार है करना मेरा राज पशुपेच में माता  
पड़ गई अब क्या करना काज राम को अब कैसे लाए । ७॥  
हाथी घोड़ा साथ में माता और परिवार मिले राम को वन  
में जाकर करने लगे पुकार नयन से आंसू बरसाये ॥८॥  
घलो अयोध्यानाथजी भरत कहे शिरनाथ चौदह वर्ष रहूंगा



वन में, यों बोले रघुनाथ भरतजी मन में घबराये । ९॥  
 चरण पादुका राम की लीनी, भरत उठाय हाथी के हौदे  
 धर बोले, ये हैं हम महाराज उसीके बाजे बजवाये ॥१०॥  
 हाथ जोड़कर भरत ने लीनी प्रतिज्ञा एक, चौदह वर्ष रहूं  
 ब्रह्मचारी, यही अचल है टेक सभी आभूषण छिटकाये ॥११॥  
 सादा भोजन मैं करूं रहूं जमीं पर सोय, नहीं हजामत  
 करवाऊंगा दर्श न जब तक होय भ्रात के प्रेम रंग गाए ॥१२॥  
 पहले ऐसे भ्रात थे, वे पृथ्वी शृंगार । आजकल के भ्राताओं  
 में रोज पड़े तकरार । ऋषि मुनि सब यों फरमाये ॥१३॥

### भजन 'उपदेशी'

चाहे जितना दो उपदेश मूर्ख को कैसे आवे ज्ञान । टेक॥  
 सूखी लकड़ी सींचत २ कभी न फूटे पान कौवा को तो कौन  
 पढ़ावे कौन फुड़ावे कान । मंगत से तो मंगत मांगे वो  
 क्या देवे दान बेरा ने तो हेला पाड़े सुने किसी का कान  
 गली २ में फिरे कुतरा वो क्या जाने मान आपस  
 में सब भेला थई ने खूब उड़ावे तान । सत संगत की  
 सेवा करता कबुयक आवे ज्ञान कहत कबीरा सुन भई साधु  
 रटता घसे जबान ।

### लावणी कृष्णचन्द्र महाराज की

पुरुषोत्तम प्रगट्या अवतारी जगत में महिमा वीसतारी  
 । टेरा । देवकी को नन्दन है नीको हुवो जादव कुल में टीको,  
 भादवा बदी दिन अष्टमी को । जन्म जद हुवो हरिजी को

॥दोहा तिण अवसर वासुदेवजी मनका सोच मिटाय कोमल  
 करमें लेई लाल को जावे गोकल मांही तुरत फुरती से हुवा  
 तैयारी भवन से आया उतर हेटा द्वार के ताला जडया सेंठा  
 कंस का पहरा बाहर बैठा निकल जाणे का नहीं रास्ता  
 ॥दोहा चरण अंगुष्ठ लगाविया गोविंद को तीन बार  
 खट २ ताला टूट पड़या कांई सरड़ खुल्या द्वार अखंडित  
 निकल गया बाहरी ॥दोहा॥ अंधेरी रात घटा छाई  
 जोर से गाजे गगन मांही चमकती बीजल्यां दरसाई वायरो  
 वाजे जोश खाई ॥दोहा अति उमंग आकाश थी पड़ रही  
 जल की धार सेस नाग छायां कर दीनी पड़े न बूंद लगार  
 ज़िणो का पुण्य बड़ा भारी ॥३॥ निकल मथुरा से गोकुल  
 जावे उपट जमनाजी पूर आवे निकलवा मारग नहीं पावे  
 विविध मिसलत मन में ठावे ॥दोहा पग परस्यो गोपाल को  
 जमना हुई दो भाग वसुदेवजी तुरत निकल गये हुलसे हीयो  
 अपार गोकल में पहुंचे गिरधारी ४ यशोदा के जाय हात  
 दीनों प्रेम से गिरधर को लीनो नन्दजी मोहछब खूब कीनो  
 दान बहु जाचक ने दीनो ॥दोहा आया मथुरा निज घरे  
 वसुदेवजी चाल दिन २ बीजकला ज्यूं बढ़ता आनन्द में  
 नन्दलाल कोई नहीं जाणे नरनारी ॥५॥ कृष्ण दिनो २  
 होवे मोटा हाथ में दंड लिये छोटा ग्वाल संग खेले  
 दड़ी दोटा ॥ शत्रु के हुए जेम सोटा ॥दोहा॥ सोलह वर्ष गोकुल  
 विशेष लीला करी अनेक ॥ तीन खंड का नाथ हुवा तो

पुण्य तो देख, जगत वल्लभ कहे नर नारी ॥६॥ दलाल्यां  
धर्म तणी कीनी शास्त्र में साख देख लीनी सज्जन पर  
सुदृष्टी कीनी भलायी जगत बीच खुब लीनी ॥दोहा॥ महामुनि  
नन्दलालजी । तस्य शिष्य कहे सेम पुण्य प्रताप वांछित फल  
पावे रखो धर्म का नेम । मांडल गड़ जोड़ करी तयारी ७ ।

### प्रद्युम्न कुँवर चरित्र

**तर्जि द्रोण** - यह प्रजन कुँवर की प्रगट सुनो पुन्याई ।  
महाराज मात रुखमणि का जायाजी । ज्याने भोग छोड़  
लिया जोग रोग कर्मों का मिटायाजी ॥टेका॥

एक सौरठ नामा देश द्वारिका नगरी; । महा० राज  
पाले हरिरायाजी । था तीन खंड का नाथ जिन्हों का पुन्य  
सवायाजी० । रुखमणी आपकी प्रेमवती पट राणी; महा०  
जिन्हों का नन्दन नीकाजी । तसु प्रजन कुँवरजी नाम हुआ  
जादव कुल टीकाजी । निज माता बात सगपण की दिल  
में धारी, महा० दूत को तुरत बुलायाजी १ तूँ जा  
कुन्दनपुर राय रुकमियाँ पासे; महा० युगल कर जोड़  
बधानाजी अरु कुशल क्षेम है सर्व यहां का हाल सुनानाजी ।  
फिर कहिजे वल्लभ बेदरवी तुझ कुंवरी; महा० तुम्हे इतनो  
यशलीजोजी । यों कहा आपकी बहिन प्रजनकुँवर को  
बीजोजी ले समाचार कुन्दनपुर दूत सिधाया । महा० भूप  
को आय बधायाजी २॥ दिया पत्र नरप के हाथ प्रेम से  
खोला; महा० वांचता रीश भराईजी । रे दुष्टन तुझको,

यत्र भेजता लाज न आईजी । जब चंदेरी का शिशुपाल नृप  
 मोटो; महा० जिन्हों से करी सगाईजी, वो आया परणवा  
 काज युक्ति से वरात सजाईजी, मैं किया बहुत भगिनी  
 का हर्ष वधावा; मा० जिन्होंने कपट कमायाजी ३॥  
 मिल भुवा भतिजी गुप्त पणे गोविंद को; महा० बाग में  
 लिया बुलाई जी । वहां पुजा के मिस जाय आप हरिसंग  
 सिधाईजी कर । गई फजीती दुर्जन लोग हँसाया; महा०  
 वंश में छाप लगाईजी । केई शूरवीर सरदार जिन्हों की  
 बात गमाईजी । वो मेरी तरफ से मरगई बहिन रुखमणी,  
 महा० रोश कर शब्द सुनायाजी जाने ॥४॥ मुझ इष्ट कान्न  
 वल्लभ वेदरवी कुँवरी; महा० डूम को दूँ परणाईजी ।  
 पिण भूल चूक में कमी न दूँ यादव कुल मांहीजी । यूँ कही  
 दूत को तुरत विदा करदीना, महा० द्वारिका नगरी आयाजी ।  
 रुखमणी पूछे धर प्रेम दूत सब हाल सुनायाजी । वो सुणी  
 पिहर की बात हरि पटराणी, महा० केई मन धड़ा उठायाजी  
 ॥५॥ या बात सुण्या बिन किम रहे भामा राणी, महा०  
 और जादव की नारी जी । जो जाणेंगा तो आज, हँसी  
 करसी गिरधारीजी । यों बैठा करत विचार महल के मांही  
 महा० कुँवर इतने चल आया जी । दो हाथ जोड़ धर प्रेम  
 मात को शीश नमाया जी क्यों फिकर करो मुझ मात बात  
 फरमावो; महा० करुँ सब मनका चाया जी ॥६॥  
 तब माता रुखमणी कही हकीकत सारी; महा० कुँवर यूँ

कहे मैं जाउंजी । जो है मामा को वचन वो ही मैं पार  
 लगाउंजी मुझ मामा की जो है बेदरवी कुंवरी; महा०  
 परण कर निज घर लाऊंजी । सुण मात आप के लाय  
 बिदणी पाय लगाऊंजी । कर विनय सर्व ही मन का सोच  
 मिटाया महा० कुंवर अब करत चढ़ायाजी ॥७॥ एक शाम्भ  
 कुवर श्री जाम्बवती का जाया; महा० जिन्हों से राह मिलाइ  
 जी । है खीर नीर सम वीर दोउन के प्रीत सवाई जी मिल  
 सलाह करी यूँ युगल वीर की जोड़ी महा० तुरत कुन्दनपुर  
 आयाजी । विद्याके जोर से आप डूम का रूप बनायाजी केई  
 घोडा ऊंट और साथे पाडा बकरी; महा० बाग में डेरा  
 लगायाजी ॥८॥ तहां दोनों भाई ऊठे आप मध्यराते; महा०  
 वंशी और वीणा बजावेजी । छः राग और छत्तीस रागणी  
 मिल कर गावेजी । सुनराग कई जङ्गल का जीव लुभाना  
 महा० राग पसरयो पुर मांही जी, सब राजादिक नर नार  
 सुने एक धुन्न लगाईजी । परभात हुआ तो मुख २ शब्द  
 उचारे; महा० राग में खूब रिझायाजी ६ यों चारों  
 दिशि में फिरता राग अलापे; महा० कौन यह कहां पर  
 गावेजी । बनमाय ढूंढता फिरे लोग पणभेद न पावेजी । इम-  
 करता एक दिन कुन्दनपुर में आया; महा० फिरे संग लोग लुगाई  
 जी । या सुनी बात नर नाथ डूम को लिया बुलाईजी ।  
 तिहां बैठा जाजम डाल भूप के आगे; महा० मनुष्य नहीं  
 जाय गिनायजी ॥१०॥ वो बेदरवी कुंवरी पिण देखन आई ।

महा० तात लै गोद बिठाई जी । हरि नन्द देखकर रूप  
मगन होय मन माई जी तब प्रजन कुंवर जी तान मिलाकर  
गावे; महा० राग में राग सुनावेजो । एक समझे कुंवरी  
सुने लोक पण भेद न पावेजी ॥

**तर्ज पणिहारी:-** प्रजन कुंवर कह तानमें; सुन  
कुंवरीए २ हूं नहीं ढोली दमाम कुंवरीए देवपुरी सम द्वारिकां  
सुन कुंवरीए २ तिहां राजकरे घनश्याम कुं० । १॥ माता  
रुकमणी माहरी सुन कुं० २ उनको नन्दन जाण, कुंवरीए  
यादव वंश बड़ो घणो सुन कुंवरीए २ तिहूं खंडमें आण  
कुं० । २॥ जो मन होवे ताहरो सु० २ तो मुझे करो भरतार  
कुं० तुम हमजोड़ी सारखी सुन कुंवरी २ तुष्ट हुआ करतार  
कु० ॥३॥ मेरे जैसा बर नहीं मिले सुन कुंवरीए २ सर्व  
विद्या परवीण कुंवरीए । जो चूकि इण अवसरे सुन कुंवरीए  
२ तो झूरेगा दिन रैण कुंवरीए । ४ । डाला डोली मनक्यों  
करे सुन० २ तूं मनको भर्म मिटाय कुंवरीए डूम बना तुझ  
कारणे सुन कुंवरीए २ आया रूप छिपाय कुंवरीए । ५॥

**तर्ज द्रोण:-** विद्यासे आपने रूप लिया पलटाई;  
महा० देख कुंवरी मन भायाजी ॥११॥ जितने आलिम  
वहां राज सभा में आये; महा० सभी को डूम दिखावेजी ।  
पण असली राज कुंवार नजर कुंवरी के आवे जी तन  
मन से गाय बजाय लिया विश्रामा, महा० डूम से पूछे  
रायाजी । तुम कौन देश में वसो कहो तुम कहां से ॥

जी है सौरठ नामा देश द्वारिका नगरी—महा । वहां से हम  
 चल आयाजी ॥१२॥ तब राय रखमियो कहे डूम तुम मांगों,  
 महा० सोही तुम को मिल जावेजी । तब कुंवर कहे धन  
 माल हमारे कुछ नहीं चहावे जी ॥ मैं दोउ जणे हाथों से  
 करां रसोई, महा० हमें या कुंवरी दीजेजी ॥ तो खट पट  
 सब मिट जाय आप इतनो यश लीजेजी ॥ सुन बात भुप के  
 रोश जोस चढ आया, महा० धक्का दे बहार कढायाजी  
 ॥१३॥ महलां में सूती कुंवरी आप अकेली महा० सजी शृङ्गार  
 सवाया जी । याहै रजनी की वक्त हुवे—सब मन का चहा-  
 याजी ॥ विद्या के जोर से कुंवर तिहां चल आया महा०  
 बीन्द कावेश बनाईजी । कुंवरी को पकड कर हाथ नीन्द से  
 तुरत जगाईजी ॥ हथलेवा जोड़कर विधी व्याह की सारी;  
 महा० कुंवर फेरा फिर आयाजी ॥१४॥ कुंवरी के पास  
 दिन ऊगत दासी आई; महा० अति मन अचरज पाईजी ।  
 परणे तुं वेश लख तुरत रायको बात जणाईजी सुनते ही  
 दौड़ राजा राणी मिल आया; महा० मौन कुंवरी  
 करलीनीजी । रे ! वंश लजावणहार तें भी चोखी गति  
 कीनीजी तुझ कारण दुष्टन वचन डूम से हारा; महा०  
 बहिन से वैर वसायाजी ॥१५॥ कर कोप दूत को भेजा  
 उपवन मांही; महा० डूम को लिया बुलाईजी । निज पुत्री  
 दीनी सोंप नहीं सोची दिलमांईजी कुंवरी को लेकर डूम  
 बागमें आया; महा० मोहनी पीछी जागीजी । मैं दी डूम

को सोंप बात आछी नहीं लागीजी ॥ पीछी लेवन को भूप  
वाग में आया; महा० डुम का पता न पायाजी ॥१६॥  
बैठा गम खाई भूपति बात विसारी महा० कुंवर तब फौज  
बनाईजी । दिया बनके बीच पड़ाव राय को बात जणाईजी  
सुन मामाजी मैं प्रजन कुंवर चढ़ आया; महा० मुझे कुंवरी  
परनावोजी । या करो युद्ध तो आओ सामने जोर जनावोजी ।  
नरपति घबरायो या कैसी बनि आई; महा० कहुं अब  
कौन उपायाजी ॥१७॥ जो कहुं युद्धतो वेर वसेगा दुगुणों,  
महा० जोर जादव को पूरोजी । है कौन अधिक बलवान  
इन्हों से सूर सनूरोजी मैं प्रजन कुंवर से जाय कहुं नर  
माई; महा० बातजब रहे हमारीजी । यों करके खूब विचार  
आप झट हुआ तैयारीजी ॥ जब मामाजी को आता देख  
कुंवर के; महा० हिये अति हर्ष भरायाजी ॥१८॥ मारग  
में कियो मिलाप हेतकर लीन्हो; महा० तुरत तम्बू में  
पेठाजी । मामाजी और भाणेज दोऊ आसन पर बैठाजी  
इतनेतो ऊठ बेदरबी कुंवरी आई; महाराज; । तात को  
शीश नवायाजी । मिटगयो सकल जंजाल प्रेम से बटे बधाई  
जी । पुनि करी व्याह की रीति डायजो दीन्यो; महा०;  
सीख ले कुंवर सिधाजी ॥१९॥ श्री प्रजन कुंवर कर फतह  
द्वारिका आया; महा० कामाण्यां कलश बधावेजी । घर २  
में मंगला चार लोक मुख २ यश गावेजी निज मात तात को  
नमे कुंवर करजोड़ी; महा० कीर्ति पसरी पुर माई जी ।



इन वोही बेदरवी परण मात के पांव लगाई जी ॥ तबमात  
 रुखमखि मगन हुई मन माही; महा० खुशी का पारन  
 पायाजी । २० ॥ निज भामणि संगमें राज कुंवर सुख भोगे;  
 महा० करी मौजां मनमानीजी, फिर लीन्हा संयम भार  
 सुणी जिनवर की बानी जी ॥ कर विनय अंग द्वादश  
 कंठें करलीना, महा० तपस्या खूब कमाई जी । था राज  
 कुंवर सुखमाल जिन्हों की यह अधिकाईजी ॥ जिन सोलह  
 वर्ष का पूरण संयम पाला, महा० वास मुक्तिका पायाजी

### श्री शांभकुंवर की ढाल

**तर्ज द्रोण-** यह प्रजन कुंवर का शाम्भ कुंवर लघु  
 भाई; महाराज० । दोहु की माता न्यारीजी । है तीन  
 खंड का नाथ, तात जिनका गिरिधारीजी ॥ टेक ॥ या युगल  
 वीर की जोड दीपती भारी; महा० प्रेम आपस में पूराजी ।  
 चले निज कुल की मर्याद घड़ीएक रहे न दूराजी ॥ खुश  
 होय एक दिन प्रजन कुंवरजी बोले; महा० भाई तुम शंक  
 न राखोजी । जोमन की इच्छा होय वोही मुज आगे  
 भाखोजी । कर अरज तातसे वोही चीज दिलवाऊं; महा०  
 मांग जो मरजी थारीजी ॥ १ ॥ कहे शाम्भ कुंवर कर जोड़  
 बात सुन भाई; महा० और मुझ कुछ नही चहावे जी ॥  
 दिया वचन लगावें पार आप फिर नहीं पलटावेंजी सुर  
 लोक सारखी है यह द्वारिका नगरी महा० चित्त में खूब  
 उमावोजी । करूं छे महिना तक राज तात से आप

दिलावोजी ॥ लीजे इतनो यश आश सुफल कर दीजे; महा०  
यही बस अरज हमारीजी ॥२॥ तब प्रजन कुंवर ले साथ  
शाम्भ कुंवर को; महा० सभा में दोउ मिल आयाजी ॥  
अति हर्ष सहित करजोड़ तात को शीश नवायाजी दीन्हो  
आदर हरिराय प्रेम से पूछे; महा० कहो जो भाव तुम्हारा  
जी । करूं सफल मनोरथ आज वचन नहीं फिरे हमाराजी ॥  
सुनतात आपसे और कछू नहीं मांगूं महा० कुंवर यों कहे  
विचारीजी ॥३॥ मैं सोलह वर्ष से आय आपसे मिलियी;  
महा० आज तक कभीन जाचाजी । अब मांगूं सो बकसाय  
संभालें आपकी जाचाजी ॥ इस द्वारा मति का राज मास  
षट् ताई ॥ महाराज; शाम्भ कुंवर को दीजोजी ज्यों बनी  
रहे सब बात जगत में यो यश लीजेजी सुन बात द्वारिका  
नाथ वचनका बन्ध्या; महा० तुरत दीन्ही मुख्तयारीजी  
४॥ अब शाम्भ कुंवरजी राज मोज से पाले; महा० खूब  
धन २ कह लावेजी । पिण तजी लाज मय्यादि आप  
कुव्यसन कमावेजी जो उत्तम कुल की नार नजर में आवे;  
महा० जिन्हों से करत अनीति जी । ऐसे पुरुषों की क्यों न  
होय जग बीच फजीतीजी नगरी का लोक मिल सब यों  
सलाह विचारी; महा० मुकुंद से अर्जगुजारीजी ५॥ सुन  
बात कृष्ण लोकों को दिया दिलासा; महा० आप महलां  
में आयाजी । सब जाम्ब वंती को माण्ड नन्द का हाल  
सुनायाजी ॥ तब तड़क फड़क कर महाराणी जी बोले;

महा० विनय इतनी सुन लीजेजी । ये लोग उड़ावे बात आपतो चित्त न दीजेजी यदि झूठ होयतो प्रत्यक्ष आज दिखाऊं; महा० ऊठ चल संग हमारे जी ॥६॥ तब जाम्बवती जी ऊठ पति संग चाली; महा० हरिजी हो गया आगे जी । खुद बहुत वर्ष का बुढ़ा बाबा बनगया सागेजी उस जांबवति को गूजरी आप बनाई; महा० वरस सोलह पर माणेजी । इस किया वैक्रिय रूप लोग कोई भेद न जाणेजी दोउ फिरता २ राज द्वार पे आया; महा० जावण्यां नीचे उतारीजी ॥७॥ लो दूध दही लो दूध दही यों बोले; महा० कुंवर सुन बाहिर आयाजी लख गूजरनी का रूप तुरत मन में मुरझाया जी कहे कुंवर सुन तू गूजरनी बात हमारी; महाराज । नहीं हम लूट मचावाँजी तू चाल सहल में दूध दही का भाव जचावाँजी ॥ बुढ़ा बालम यों कहे यही पर लेलो; महा० नहीं तो मरजी तुम्हारीजी ८ मैं हूं बुढ़ो या बालक बधु हमारी; महा० अवस्था यौवन थाँरीजी ॥ को जाने मन की बात नहीं पर तीत तुम्हारीजी दोउ हाथ पकड़ कर खेंचा खेंच मचावे महा० झपट ले चाल्योमांही जी, तब कृष्ण आप निज रूप प्रगट कर लीना; महा० पुत्र से कहे ललकारीजी । ९ रे लाज हीन तू देख मात या तेरी; महा० कहां लेजाता आगीजी ॥ झट छोड़ मात को हाथ गयो महला में भागीजी तब कृष्ण और महाराणी जी मिल दोनों; महा० आये निज भवन मुझारीजी देखी तुझ

नन्दन एव, बोल यूँ कहे गिरधारी जी ॥ तब, जाम्बवती कर  
 • जोड़ कंठ से बोली: महा० अभी बालक बुध ज्यांरीजी  
 ॥१०॥ फिर दुजे दिन गोपाल सिंहासन बैठा; महा० भरी  
 थी सभा रसीलीजी । तिहां आया शाम्भकुमार, हाथ से  
 घड़ता खिलीजी क्या चीज बनाओ तात बात यूँ पूछे; महा०  
 कुंवर कहे रोशभराईजी । जो करे काल की बात, ठोकुं  
 उनके मुख मांहीजी । कोपित हो गोविन्द देश निकाला दीन्हा,  
 महा० कर्म गति टरे न टारी जी ॥११॥ सुन प्रजन कुंवर  
 यह बात तात पै आया । महा० बहुत कीन्ही नरमाईजी ।  
 • है मुझ बन्धव नादान, हाल कुछ समझे नाहीं जी, मैं जानूँ  
 जबर अपराध आप का कीना, महा० राज तो बड़ा कहावो  
 जी । यह गुन्हा मुझे बक्षाय, वचन पीछा पलटावो जी ।

**तर्ज जागजीकी:-** तातजी; प्रजन कुंवर इस  
 वीनवेरे कांई कर जोड़ी पावां पड़ी, हो तातजी । तातजी;  
 राजन पति प्रभु आप की रे कांई-महिमा जगमें है बड़ी,  
 हो तातजी ॥ १ ॥ तातजी; पुत्र कुपूत होवे सहीरे कांई-  
 मावित अलग करे नहीं, हो । तातजी; छेदन भेदन जो  
 करेरे कांई चन्दण गुण छोड़े कहीं, हो तातजी ॥२॥ तातजी,  
 • यंत्र में पीले शेलडीरे कांई, दुश्मन को तृप्ति करे, हो  
 तातजी, लकड़ जल ऊपर फिरेरे कांई पानी अवगुण नहीं  
 भरे, हो । ३ । तातजी खुशबु से खुश होकररे फुलड़ीरे कांई  
 मर्दक पै नहीं ध्यान दे हो तातजी, बन्धन तर्जन सबी सहेरे

काई, गऊ मधुर पय दान दे हो ता० ॥४॥ तातजी, बडपन  
विरद विचार नेरे काई पुत्र पे कोप न कीजिये हो तात जी  
शीघ्र मुदृष्टि निहारनेरे काई प्रीति आस्वासनी दीजिये ॥  
हो तात जी ॥५॥

**तर्ज द्रोणः**— निज नन्दन की हरि एक बात नहीं  
मानी, महा० तर्क इतनीक निकारीजी ॥१२॥ है सत्य  
भामाजी जो तुझ मोटी माता, महा० हस्ति ऊपर बैठावेजी.  
और चमर उड़ाती आप द्वारिका मांही, लावेजी तो है मुझ  
आज्ञा रहो राज के मांही, महा० कुंवर सुन वहां से चलि-  
योजी । अति हर्ष सहित झट आय शाम्भ कुंवर से मिलियो  
जी मैं सुख दायक उपाय करी आया हूं, महा० फिरती  
तकदीर तुम्हारीजी ॥१३॥ कहे शाम्भ कुंवर तुम बन्धव  
बात विचारो, महा० मात देखी नहीं चहावेजी । तो ऐसी  
अदब के साथ कहो कैसे लइ जावेजी । बैताढ्य गिरी बिद्या-  
धर उत्तर श्रेणी, महा० 'मेघकुट' नगर तुम्हारोजी । तिहां  
दीजे जल्दी मेल खुशी चित्त होय हमारो जी लीजे  
यश यह भी वक्त निकल जावेगी, महा० आप हो पर उप  
गारी जी । १४॥ जरा धीरज धर तू क्यों इतनो घबरावे,  
महा० जोर विद्या को भारी जी झट पलट दिया तसरूप  
करी जिम देवकुमारी जी भामाजी का रमणीक वाग के  
मांही । महा० वृक्ष की शीतल छायाजी । शिल्ला पट पर  
बैठाय कपट का वचन सिखायाजी । यों खेल रचा कर गया

द्वारिका मांही महा० बात तो खूब सुधारी जी ॥१५॥ ले  
 सखियां लार तिण अवसर भामा राणी, महा० बाग में  
 खेलन आईजी । अति दिव्य रूप कुंवरी को देख मन अवरज  
 पाई जी ॥ भामाजी भोली भेद कछु नहीं पाई, महा० पास  
 कुंवरी के आई जी । बहु दे आदर सन्मान बात पूछे हुलसाई  
 जी तुम कुन हो बाई राज बात फरमावो, महा० सूति तुझ  
 मोहन गारी जी ॥१६॥ तब शाम्भ कुंवर कहे नयना जल  
 वरसाई महा० मात सुन बात हमारी जी । इस मृत्युलोक के  
 मांय, मैं हूं इक दुखनी नारी जी मैं विद्या धर राजा की  
 वल्लभ कुंवरी महा० यहां मामो लेई आयो जी । सूती तरु  
 तल भर नीन्द दुष्ट मुझे छोड़ सिधायो जी । कहे सत्य  
 भामाजी बाई वदन मत कर तूं, महा० खुली तकदीर तुम्हारी  
 जी ॥१७॥ सुभानू कुंवर मुझ युत्र दीपतो भारी, महा०  
 कहावे नन्द हरिकोजी । नन्याणव कुंवरी साथ व्याह अंव  
 होसी नीकोजी । यदि मन होवे तो यह अवसर मत चूको,  
 महा० मोज करजे मन मानी जी । सब कुंवारियों के मांय  
 तुझे करसूं पट रानीजी सुन मात बात पर मान करूं मैं  
 थारी, महा० अरज इतनीक हमारी जी ॥१८॥ मैं भूचर  
 तो सुपना में कभी न वंचूं; महा० आजकी वक्त बिचारूं  
 जी मुझे हर्ष सहित ले चलो तो दिलमें निश्चय धारूंजी  
 फिर गज होदे तुम हाथे चमर डुराऊं, महा० हुई खुश ले  
 भामा रानीजी मोटे मंडान वधाय तुरत नगरी में आनीजी

अब बटे बधायां खूब शहर के माही; महा० करे महिमा  
 नर नारी जी १९॥ अब सतभामाजी विवाह कुंवर को  
 रचियो, महा० द्रव्य खरचे दिल चायोजी । घुर रहे  
 वाजिन्तर नाद लगन दिन नेडों आयोजी । तब गुप्तपणे  
 कुंवरी ब्राह्मण से बोले; महा० रीति कुलको नहीं छोड़ूँगी  
 मैं ऊपर रखूँ हाथ तभी हथलेवो जोड़ूँगी सुण भामाजी  
 यूँ कहे तुरत कुंवरी से; महा० रीति होय सोकर थारीजी  
 ॥२०॥ तब कुंवरी अपना हाथ रखा ऊपर हीं; महा० फिरे  
 फेरा अब सागेजी । नन्याणव कुंवरीयां माय आप हुई सब के  
 आगेजी अति हर्ष सहित किया ब्याह मात नन्दन का; महा०  
 भवन दीना बक्सईजी सुभानू कुंवर की नार सभी मिल  
 भीतर आईजी । तब प्रजन कुंवर तत्क्षण विद्या को सुमरी,  
 महा० किया निज रूप तैयारी जी ॥२१॥ अब शाम्भ  
 कुंवरजी देव कुंवर जिम दीपे; महा० सेज पर बैठा  
 आईजी ॥ सब राण्यां देखी रूप तुरंत मनमें मुरझाईजी ।  
 घोटफं सेज के सर्व प्रमदा वैठी; महा० खूली जिम केशर  
 ब्यारीजी । कर अलंकार सुभानू कुंवर आया उस बारीजी  
 तिहां शाम्भ कुंवर को बैठा देख पलंग पै; महा० कोप  
 छढियो अति भारीजी ॥२२॥ रे लाज हीन मुझ सेजामें किम  
 आयो; महा० तुझे कुमती भरमायोजी । तब शाम्भ कुंवर  
 कर नेत्र लाल उनको घुरकायो जी । सुभानू कुंवर अट  
 शेष मात पां आयो, महा० हकीकत माण्ड सुनाईजी । सुन

सतभामाजी शीघ्र गति तिहां चल कर आईजी अति  
 शोध करीने करड़ा वचन सुनाया, महा० दुष्ट तूं निकल  
 बहारीजी ॥२३॥ जब देश निकाला तात तुझे दीना था;  
 महा० यहीं कैसे विलमायोजी । माधवकी आज्ञा भंग करी  
 पीछो किम आयोजी । छिप के कब तक इस आंगन में, महा०  
 नाम जिनकी गिरवारीजी । यदि लगी खबर फिर बोल  
 कौन गति करसी थारीजी तब शाम्भ कुंवर कर जोड़ मात  
 से बोला, महा० अरज इक सुनो हमारी जी ॥२४॥ मैं किया  
 वचन परमाण आण नहीं लोवी, महा० जोर हो जहां  
 पुकारोजी । मैं हूं निरदोषी आज तात क्या करे हमारी जी  
 मैं पुढवी सिल्ला पट ऊपर बैठो थो, महा० बाग में शीतल  
 छाया जी, मुझे गज होदे बैठाया, आप यहां लेकर आयाजी  
 सुन माता तुझ उपकार कभी न भूलूं; महा० रोष की हद  
 विस्तारीजी । २५॥ फिर शाम्भकुंवर निज स्थान गया निकल  
 के; महा० मोज में रहे सदाईजी । जब भामा राणी तुरत  
 कंथ के सनमुख आई जी, दो हाथ जोड़ सब बीतक हाल  
 सुनाया, महा० हरीजी यूँ हूँस बोलाजी उसे गज होदे बैठाया  
 चमर कहो किस ने ढोलाजी मैं सांच कहूं राणी जी रोष  
 नहीं किजे; महा० कुबुद्ध या है सब थारीजी ॥२६॥ तब  
 सत्भामाजी रोष अत्यन्त चढ़ाया, महा० करी तुम झूठी  
 मुझनेजी । तेरो पलटयो नहीं स्वभाव गवाल्या जाणूं तुझ-  
 नेजी यो वड़वड़ करती गई महल के माहीं; महा० बड़ी



समता दिल धारीजी, यह कपट भरा संसार, खूब रहना  
 होशियारीजी फिर शाम्भ कुंवर पच्चास अंतेउर परनी;  
 महा० सेजमुख विलसे भारीजी ॥२७॥ फिर नेमि जिनन्द  
 की सुणी आपने दाणी; महा० धर्म का मर्म पिछानाजी है  
 झूठा सब संसार, सार एत संग्रम जानाजी हरिकी आज्ञा  
 ले तुरत भोग छिटकाया; महा० सूत्रमें वर्णव चाल्योजी।  
 श्रीपरजन कुंवर की तरह आप शुद्ध संयम पाल्योजी कर  
 अष्ट कर्म का अंत सिद्ध पद पाया, महा० काज सब लिया  
 सुधारीजी ।

### बुढ़ापे का स्तवन

बुढ़ापा बैरी किस विध होसी थारो छुटको ॥१॥ रामो  
 हाथ न हले, पांव न चाले हाथ में लीनो गेड़ी, हालतड़ाने  
 चालतड़ाने कमर हो गई टेढ़ी ॥१॥ मैं तो माके खूब  
 कमावाँ, टाबरियां परणावां थाने भावे चक चूरमां मैं कठा  
 से लावाँ । २ घर सूं आवे ठंडा टुकड़ा मन मीठा पर जावे,  
 राब छाछ मने भावे नहीं मीठा पे मन जावेरे ॥३॥ बाल-  
 पणो हूँ खेल गमायो जोवन तिरिया बस को, बुढ़ापा में  
 जरा सतावे खातां पीतां टसको ॥४॥ जोत भई आंखों की  
 खंडी दाँत पड़या सब ढीला, नाक झरे सुणवा को घाटो केश  
 भया सब पीला रे ॥५॥ बहुवां छोड़्यो कांण कायदो कद  
 सरसी यो डांकी, खाय सकां नहीं पेर सकां नहीं हीड़ा कर २  
 माकी रे ॥६॥ बूढ़ा गावे गंगा नावे सुणीया सदा मुख

पावे, तुलसीदास की याई विनती मन चित्या फल पावे ॥७॥

## रोकड़ का स्तवन

थें रोकड़ रोज मिलावो भव जीवां, थें रोकड़ रोज  
मिलावो भव जीवां । टेर कितनी आज में करी समायक  
कितनी फेरी माला, कितनी आज में करी ठगायां कितनी  
धोली गाल्यां ॥१॥ कितनी आज दया में पाली कितनी  
हिंसा ढाली, कितनी आज सांच में बोली कितनी गप्पा  
मारी ॥२॥ कितनी आज तीजो व्रत पाल्यों, कितनी खोरी  
कीनी, कितनी आज शील में धारयो कितनी बुद्धि विषय  
में दौड़ी ॥३॥ कितनी आज करी सत संगत कितनी पर  
हित दोड़ी, कितना व्रत पचखाण बंधाया, कितना मूल में  
तोड़या ॥४॥ जमा की कलमा लिखो जमा में, नामा की  
नामा में गड़बड़ गोठो मूल न राखो तो दुःख पड़े न थाने  
॥५॥ दिनों दिन नामा की कलमां हलकी करता जावो,  
खूब बधावो जमा बाजू तो अविचल सुव थे पावो ॥६॥  
द्रव्य रोकड़ में गड़बड़ हो तो हथकड़ियां पड़ जावे, जो  
कदाचित ना पड़े तो पोल चलन नहीं पावे ७ लेखो  
राई राई की भई पर भव में पूछेला, धन्या मुनि ढाक रचि  
मन रंगी आत्म सुख पावे ८॥

## श्री मंदिरजी का स्तवन

श्री मंदिर पेलान नमूं जुग मंदर दूसरा ज  
सुवाहुजी ने बंधना म्हारा कद ह

बंदु विहरमान जिनवीस ॥१॥ सुजात संयम प्रभुजी नमं रीष-  
 भानन्दन अनन्त वीर, सुरविशाल वजरा वेरमान बन्दु अणी  
 मनलील २॥ चन्दणानन्दन बारमा चन्द्रबाहुजी तेरमा  
 जाण, भुजंग इसवरजी नमं पण नमं श्री नेमजी नन्द । ३॥  
 वीरसेण सामी सतरमा अठारमा महाभद्रदेव, देवी जस अनत  
 वीर ज्यांरी सेवा करे चोसट इन्द्र ॥४॥ जंबुदीप में चार  
 जणा और धातरी खंड माय आप. इम हीज अध पुखला-  
 वति जठे सींचा सांचा पुन रा ठाट ॥५॥ पान से धनुस  
 ऊंची काया कंचन वरणो शरीर, लाख चौंरासी पुरब  
 आउखो प्रभु सायर जैसा गंभीर । ६॥ चोतीस अतिसा सु  
 पर वर्या ज्यांरी वाणीरा गुण पेतीस, अनंतो ज्ञान अरिहंत  
 को प्रभु जीत्यां छो राग नरीस ॥७॥ सेवा कराओ सायब  
 तणी में तो सुख पाया भरपूर, नाम सुन वनंद संपजे म्हारा  
 दूख टलियां सब दूर । ८॥ सेवा कराओ सायब तणी पण  
 अलगा घणा वसो आप, लबद पण हाते लागे नहीं म्हारे  
 कई छे पुरबला पाप । ९॥ करोड़ कोसारी आंतरो पड़  
 गयो में तो किस विध आऊं हजूर, पड़मा लीजो म्हारी  
 बंदणा या तो पो उगंता सूर ॥१०॥ पुज रोखपत जी दीपता  
 जीवण जी स्वामी ओ बड़ा शीशा, ततखीण करी अणी  
 जोड़ने इतो धन उरजण जी भीम ॥११॥ समत अठारे  
 चोतीस में सके काक ओ चरित्र रसाल, सुकल पक्ष पूरो  
 ओ अणी जेतारण में हुलास ॥

## नेमजी की घोड़ी

जादू पतरी सुरत सवाई सांचा नेमजी थें आगा आवोजी  
 आगा आओ फिर पाछा कांई जावोजी ढिरा। म्हारा दया  
 हपी गजरा संतोष की छड़ी जाणु मोतियन की लड़ी, राजुल  
 मेला में खड़ी श्री नेमजी पधारिया म्हारे शुभ की घड़ी ॥१॥  
 तावन महिनो भलो आयो नेमजी रो व्याव मांड्यो, राजुलजी  
 तो मांडो छायो सबके तो मन भायो । २। माथें तो मुकट  
 सोहिये काना में कुंडल सोहिये हिय हार नव सरियो गेणा  
 तो रत्ना से जड़िया खांत करी सोनी बड़िया ॥३॥ हाथी  
 होदे वींद सीहे नगारा नोबत बाजे, बाजा तो छत्तीस बाजे  
 अकासा इंदर गाजे ॥४॥ बांयां बाजूबन्द चूड़ी, पालखी तो  
 आगे दौड़ी, नाचे हैं जादवरी घोड़ी । ५। घोड़ी माती  
 रंगराती लारा है जादवरा साथी, पाछे सइया गीत गाती  
 ॥६॥ पैदल कोड़ी अड़तालीस गोखा चढ़ी जोवे नारी, जान  
 तो बनारी भारी ॥७॥ आया कहीजे समुद्र विजेजी रा  
 नन्द, सुरत पूनमहन्द देख्या होवे आनन्द ॥८॥ सुतराजी  
 समेरे आया, खरचवाने धन लाया, छप्पन क्रोड़ जादव आया  
 वींद देखी राजी हुवा । ९॥ सासू ओड़े सालू साड़ी आरती  
 की खुली क्यारी, तोरण की हुई तैयारी, मंगल गावे नरनारी  
 ॥१०॥ नारी सोला सेशकहीजे कृष्ण बलभद्र जैया गोखा  
 चढ़ी जोवे नारी, जान तो बनारी भारी ॥११॥ राजल  
 बंठा गेणा पेरे, उभो सइया अंग निरखे, राजलजी रो हियो

हरके जीमणो तो अंग फरके ॥१२॥ जांचक बोल्या उगते  
 सूर दान देशी भरपूर ऊबो दुनियां देखे दूर जाणे है गंगा  
 को पूर ॥१३॥ जादव का सारा है जल गारा, हिया का  
 हगामी सारा, लारे है जादव का सारा ॥१४॥ नेमजी  
 साला ने पूछे करला जीवारी घात, जीमावा जादव रा  
 साथी; अचरज केरी हुई बात ॥१५॥ पाप पंथी दूरा रया  
 वरसी दान नेम दिया, चारित्र चित्त लया, मन तो मुगत  
 गया ॥१६॥ दया धर्म दिल धारी, तेल चढ़ी तजी नारी  
 जीवारी तो खुली बारी, संजम की तो हुई तैयारी ॥१७॥  
 आड़ा तो कृष्णजी फिरिया, मोहथकी हिया भरिया, काँई  
 लोपो कुल की किरिया, लोक परणे जादव की प्रिया ॥१८॥  
 सगा ने देसा सनमानो जीवां ने देसा अभयदानो, थाने  
 जीमावा पकवानो, नेम म्हारो कयो मानो ॥१९॥ नेम  
 निसरिया तणी वारो, जाइ चड़िया गिरनारी सहस्त्र मुनि  
 हुवा लारो, लेणो तो संजम भारो करणो तो खेवा पारो  
 ॥२०॥ राजुल ऊबो हाथ जोड़ी, माताजी से मान मोड़ी,  
 आज्ञा तो दोनी म्हाने, संजम री होस घणी ॥२१॥ राजुल  
 ऊबा कोड़ा कोड़ी, राजुल जैसी सतियां थोड़ी, शरम तो राखी  
 घणी, कृष्ण महाराज ने होस घणी ॥२२॥ राजल निसयां  
 तणी वारो, जाई चड़ियां गिरनारो सहेल्कां तो हुई लारो,  
 लेणो तो संजम भारो, करणो तो खेवा पारो, वर्षा हुई तणी  
 वारो ॥२३॥ चीर भीजी गुफा में रइया, रहे नेमी ध्यान

घरिया, रूप देखी राजी हुवा, राजलजी समझावा लागा  
 ॥२४॥ वाणी तो गुरा की झेली चोपन दिन पेली, आठू  
 कर्म ने दिया ठेली, सती ने मुगत मेली ॥२५॥ प्रतिबोध्या  
 रह नेमी शीयल पाल्यो कुशल खेमी, बरत्या सुराखी प्रेमी,  
 सवाया जाइ वंदिया श्री नेमी ॥२६॥ धनवंता बेटो जायो,  
 तीन लोक रो राज पायो, राजलजी सवाया जाया, सबके  
 तो मन भाया ॥२७॥ आठू भव तो भेरा रइया नवमें भव  
 छटकाया, भवी जीव ने समझाया दोनों ने मुगत मल्या  
 ॥२८॥ धनवंता ढाल जोड़ी, आगे से थोड़ी जोड़ी, पाछे से  
 फेर जोड़ी, खेमराजजी पूरी कीदी ॥२९॥

## शरणा

दान दीजे धर्म कीजिये धर्म जीव को आधार, अणी  
 जुग माई जस घणो, सुख अनंती जी वार, मुझे शरणो अरि-  
 हंत को । शान्तिनाथ की साख मुझ शरणो भगवंत को ॥१॥  
 शील रतन सुहावणो शील रतना की खान, खंम्या केवलीया ने  
 वीनवुं मुझने पार उतार ॥२॥ तप करणो अति दोयलो  
 तपस्या खांडारी धार, काया से युद्ध मांडणों करणो खेन्नाजी  
 पार ॥३॥ ऊंचा चुणाया मंदिर मालिया, चोखी सेज बिछाय,  
 जठे धन्नाजी शालभद्रजी पोड़िया, पालखडारे सांय ॥४॥  
 परदेशी परदेश में, नहीं आया सुख संदेश, आया कांगज उठ  
 चालिया, नहीं गिणे आंधी ने मेह ॥५॥ वाला तुझ व  
 एक घड़ी, सरतो नहींरे लगार, वाने तो सो वरस हुवा,

मित्या पाछाजी आय ॥६॥ कीना छोराने कीना वाछरु  
 कीना माय ने बाप, यो जीव जासी एकलो, लारे पुन्य ने  
 पाप ॥७॥ कोड़ी २ माया जोड़ी, लाखां ऊपर क्रोड, मरती  
 वेला मानवी, लियो कंदोरो जी खोल ॥८॥ तरस थावर जीव  
 गोप्यां घणा सेव्या पाप अठार, तप तप्पा मुनिवर आकरा,  
 जाने गज सुखमाल ॥९॥ काची जी काया कारमी, मरणो  
 पगल्यारे हेट, धन जोबन माया पामणी, जाता नहीं लागे  
 वार ॥१०॥ ऊंचा चुणाया मंदर सालिया दे दे ऊंडीजी नीम,  
 मरती वेला मानवी छोड़ चलयो अधबीच ॥११॥ मोह  
 माया ममता घणी, लिपट रयो दिनगत, अनंत पछवाड़ो  
 छोड़ने, जाता नहीं लागे वार ॥१२॥ उपट नदी मारग  
 चालणो, जाणो पेलेजी पार. आगे नहीं हाट वाणियों, खरची  
 लीजो जी लार ॥१३॥ तू काई सूतोरे मानवी सूतो सुख  
 भर नींद, काल सिराणें आई खड़यो जुं तोरण पर वींद  
 ॥१४॥ तू काई सूतोरे मानवी सूतो पो भर नींद, केई  
 गया ने केई जावसी केई जावण हार ॥१५॥ पर नारी संग  
 राचणो जाणो नरक द्वार, नरक तणा दुख दोयला कुण छोड़ा-  
 वणहार ॥१६॥ वाला सारुं कर्म बांधिया पड़सी मुगदल  
 की मार, छेदन भेदन वेदना मायों करे रे पुकार ॥१७॥  
 गोरी ऊभी गोखड़े बल जल हो जासी खाक, मिट्टी में मिट्टी  
 मिल गई ऊपर ऊगोजी घास ॥१८॥ ऊना तो पानी  
 बलबलतो सेल्यो मूरख गंवार, कठोर हिया का मानवी अजु

कछू लीजो जी साथ ॥१६॥ आफल वीफल फल २ नित की  
करती जी छांच, सगला ही करम उदे आया, अबे काई कह  
जिनराज ॥२०॥ जहां नगरा नोवत बाजता होता राग  
छतीस, ते मंदिर खाली पड़या बेठण लागया जी काग ॥२१॥  
लखपती छत्रपती सब गया, गया लाख बे लाख, गर्व करीने  
गोखां बैठता जल बल हो गया राख ॥२२॥ मूरख कहे  
धन म्हारो ते धन खरचे न खाय, वस्तर बिना जाय पड़यो  
लखपती लकड़ारे माय २३ सोवन गढ़ लंकापती तेमा  
रावण नाथ, अन्त समय उठ चाल्यो नहीं काई ले गया साथ  
॥२४॥ मोमन सेठ धन जोड़ियो जोड़ियो छप्पन करोड़,  
खायो पीयो खरच्यो नहीं गयो माथोजी फोड़ ॥२५॥ खावे  
पीवे खर्वे घणो जपे श्री नवकार, दान शीयल तप भावना,  
अणी जग मांही ए तत्वसार ॥२६॥

### भजन

थारी अल्प उमर है थोड़ी, मूरख नर किस विध माया  
जोड़ी । टेर । गायां ने भेस्यां गाड़ी ने घोड़ी, माया पड़ीरे  
ज्यां ये रोड़ी । लाखां ऊपर लेखन चाले, तो ही कहेरे माया  
थोड़ी ॥ घर में जो सूतो खूंदी जो ताणी, अब रे माया  
से तोड़ी । चार जनारे खांदेजी चड़ियो, तो चड़ियो रे काष्ठ  
केरी घोड़ी ॥ फूटी जी हांडी लारां दिनी, ज्यांरी कोरज  
तोड़ी । जाय ऊतार्यो नदीरे किनारे तो बल जल हो गई  
टेरी ॥ घर की जो त्रिया रोवन वैठी या जोड़ी क्यों



तोड़ी । कहत कत्रीरा चुन भाई साधु ज्यां जोड़ी त्यां  
तोड़ी ॥

## चन्दन वाला को भजन

बोली चन्दना पुकार हिरदे हर्ष अपार । मेरे आंगन में  
आए हैं प्रभु महावीर ॥८॥ भवि भाग्य के हो, चमके  
सितारे । अहो भाग्य मेरे, भले ही पधारे । आए प्रभु मेरे  
द्वार, छाई खुशियां अपार ॥९॥ हाथों हथकड़ी पैरो में वेड़ी ।  
तेले का तप है सुनो नाथ मेरी । लीजे उड़वों का आहार  
दीजे अबला को तार ॥१०॥ ज्ञान लगाके सभी बात जानी ।  
मिले बोल सारे न नैनों में पानी । उल्टे पैरों उस वार  
फिरे जिसलाकुमार ॥११॥ किये कर्म कोई मैंने जो मोटे ।  
मेरे द्वार आके प्रभु पीछे लौटे । हृदय दुःख है अपार बहे  
आंसुओं की धार ॥१२॥ आए प्रभु पीछे करी है न देरी ।  
लिया आहार कट गई हथकड़ी वेड़ी । वर्षे सौनैया अपार  
किया देवों ने जय २ कार ॥१३॥ प्रभु इतने तारे नभ में  
न तारे । प्रतिज्ञा पूरी हुई मुझको उबारे । सती लीनो  
संयम भार, गुण गावे नर नार नाथू करे नमस्कार ॥१४॥

## बिदाई का गीत

प्यारी बेटी सुखमाल, जाओ २ सुसराल । नई नगरी  
ले आया है लेने तेरा वर । टेरा बदलो ए बेटी, दुनियां ये  
बदली । रोना खलना छोड़ दे पगली ॥ यश लेना सुखमाल,  
आज्ञा साजन की पाल ॥१॥ सज्जा का लहंगा हो प्रेम की

पायल । संतोष साड़ी हो ज्ञान की वायल । ऐसा करो  
 सिणगार गुण गावे नर नार । २॥ कभी किसी से कड़वी  
 न बोलो । बोलो तो पहिले हृदय में तोलो । चालो उत्तम  
 की चाल, रखना धर्म का ख्याल ॥३॥ जेठ सुसर का हुकुम  
 उठाना । नंदल से नेह तू हरदम बढ़ाना, रखना प्रेम व्यवहार,  
 आदर और सत्कार ॥४॥ सासू को समझो धर्म की माता ।  
 देवरानी जेठानी से बहन का नाता ॥ गृहस्थ धर्म की पाल  
 शिक्षा देता नाथूलाल ॥५॥

### वीरा म्हारा गज

वीरा म्हारा गज थकी उतरो, गज चड़ियां केवल नहीं  
 होमीरे, बंधव म्हारा ढेर ॥ राज तगा अनि लोभिया,  
 भरत बाहुबली जूझरे । मूठ उपाड़ी मारवा बाहुबली प्रति  
 बूझरे । १॥ ब्राह्मी सुन्दरी इम भावेरे, ऋषभ जिनेश्वर  
 मोकली बाहुबली तुम पासेरे ॥२॥ लोच करी संजम लियो,  
 आयो बली अभिमानोरे । लघु बंधव बन्दू नहीं, काउसग  
 रह्या शुभ ध्यानोरे ॥३॥ वरस दिवस काउसग रह्या,  
 बेलड़ियां लिपटानीरे । पंखी माला मांडियां, शीत ताप  
 सुकाणारे ॥४॥ साध्वी वचन सुनि करी, समवया चित्त  
 मुझारोरे । हय गय पैदल रथ तज्यां, पण चड़ियो अहंकारोरे  
 ॥५॥ वैराग्य मन वालियो, तूं क्यों निज अभिमानोरे ।  
 घरण उठायो वंदवा, पाम्या केवल जानोरे ॥६॥ पोचांहे  
 फेवली परिषदा, बाहुबली ऋषिरायोरे । अजर अमर

पदवी लही, समय सुन्दर वंदे पायोरे । ७॥

### भजन

क्या तन सांजतारे, एक दिन मिट्टी में मिल जाना ।  
माटी ओढ़े साटी पेरे, माटी का सिराना । माटी का  
तो महल बनाया, जिसमें भमर लुभाना । १॥ माटी  
साही जीव लुभाया, जुं दीवा में बाती । बसती नगरी छोड़  
चलेगा, कोइय न होगा साथी ॥२॥ धन भी जायगा तन  
भी जाएगा, जावे सुल २ खासा । लाख मोहर की सूरत  
जाएगा, जंगल होगा वासा ॥३॥ दस भी जीना बीस भी  
जीना जीना वरख पचासा । अंत काल का क्या विश्वासा  
पण मरने की आशा ॥४॥ दस भी जोड़िया बीस भी  
जोड़ियां, जोड़िया लाख पचासा । अरब खरब बहुतेरा  
जोड़िया, संग चले नहीं मासा ॥५॥ दमड़ी से तो महल  
बनाया, तू जाने घर मेरा । पकड़ काल जब झपट लेयगा,  
होगा घन में डेरा । कंठी डोरा मोती पेरे, या पेर्या  
रेशम चोली । कंदोरो सोना को पेर्यो, लेगा अन्त में खोली ।

### प्रभु गुण भजन

गाए जा गुण जिनवर के, तू उस ईश्वर के अगर सुख  
पाना है ॥टेरा स्वपन सृष्टि का वैभव देख तु न फूल,  
आँख खुलते ही मिटेगा । ज्यों पवन से धूल, विश्वास पूर्ण  
कर ले तू वीर सुमर ले ॥१॥ तन कुसुम की देख लाली,  
भंवर ना भूल । मोत वायु से गिरेगा यह सुगंधित फूल

नेकी का सौरभ भरके जाना कुछ करके ॥२॥ झूठी है काया  
 ५ झूठी है माया झूठा है सारा चलन, झूठे हैं न्याती झूठे गोती ।  
 झूठा है इनका मिलन, साथी हैं इस घर के नहीं उस घर  
 के ॥३॥ मान या मत मान, तुझको करना है सो कर ।  
 वक्त हैं मानव जन्म में तिरना हो तो तिर, भाग्य जगे ॥४॥

### काया का स्तवन

सजी घरवार सारो, मिथ्या केसी म्हारो २ किम रेसी  
 नथी थारो रे, पामर प्राणी चेतो तो चेताऊं थनेरे, सुने तो  
 सुनाऊं थनेरे ॥टेक॥ देव ने रतन दीधो, नाकी थे तो मद  
 ३ कीधो, जणि साठें काच लीधोरे । कोड्यां से रतन खोयो,  
 धूल से कपाल धोयो, जांण पणो थारो जोयोरे । चारू  
 गती माय फिरियो, जनम २ करी मरियो, तारो कारज  
 नथी सरीयोरे । हैजी थारे हाथ बाजी, करले प्रभु ने राजी  
 थारी हुंडी सिकर जासीरे । मांखीए तो मद्य कीधो; न  
 खायो न दान दीधो, लूटन वाला लूटी लीधोरे । निकलसी  
 शरीर माथी, पछे तू मालक नथी सुरपति दलपतिरे । कपट  
 अपट दीधो, हंसा ने उपदेश दीधो, थारो कारज नथी  
 सरीरे ।

### भजन

शरण ईश्वर की जाने से जगत छूटे तो छूटन दे, दान  
 दुखियों को देने से द्रव्य खूटे तो खूटन दे ॥१॥ कठिन  
 की फांसी में, बंधा है सर्व संसारी । भले ही मोह की

अगर टूटे तो टूटन दे ॥२॥ हमेशा जाय कर बैठो, जहां सत्संग होता हो । सुनो नित ज्ञान की चरचा, जगत रूठे तो रूठन दे ॥३॥ मजा दुनियां का जो भारी, लगे सबको ही प्यारा है । किं कर त्याग तू झटपट, और लूटे तो लूटन दे ॥४॥

## भजन सीताजी का

श्याम सियाजी का भवर पालणियां तो सेजा सूनी पड़ीरे । लक्ष्मण सीता ने कौन हरीरे । छोटा सा भया जानकी ने कौन हरीरे ॥१॥ उड़ २ काग कुटिया पर बैठे तो कुटिया सूनी पड़ीरे ॥२॥ के कोई गढ़ लंका पति ले गयो । के कोई सिंह चरीरे ॥३॥ के कोई रतनागर में जोयो तो । के कोई जल में पड़ीरे ॥४॥ सियाजी का हरण पिताजी का मरणतो । वन मांहे विपत पड़ीरे ॥५॥ केत कबीरा सुनोरे भाई संतां तो । दोनों बात बुरीरे ॥६॥ रावण मार राम घर आया तो । घर २ बटत बधाईरे ॥७॥

## संवत्सरी का स्तवन

ओ विश्व के सभी जन, चौरासी लाख योनि २ हैं आज दिन क्षमा का, मुझको क्षमा करो नी २ ॥१॥ भव २ में संग भटके, नाते हुए अनंते २ सुत तात मात आता, नारी भी बन सलोनी २ । फस काम क्रोध मद में; बांधा जो बैर तुमसे २ छल छिद्र कीनो भारी, बोली कठोर बानी २ । उन सारी त्रुटियों का बदला चुकालो मुझसे,

झूठो पुराणी बातें, अब हो चुकी जो होनी २ । कर जोड़ के क्षमा मैं, चाहता हूं शुद्ध मन से २ कर दो क्षमा हृदय से, इतनी दया धरोनी २ । मैंने स्वरूप जाना गुरुदेव की कृपा से २ तुम भी तो जीत जागो, हिल मिल गले मिलो नी ॥

## स्तवन

मोठा बोलो वचन मेरे प्यारे सज्जन ओ सीयाना पावो पावोगे अमर ठिकाना ॥८॥ इस जीवन से कर लो भलाई हां करलो भलाई । सारी दुनियां झुके इस माई, टूटा मिल जावे दिल नहीं होवे मुश्किल हो सयाना ॥९॥ अपनी बोली में अमृत भर लो २ कड़वापन को दूर कर दो, पहले हिरदे तोलो, पीछे बाहर खोलो, भूल न जाना ॥१०॥ यही मंत्र वसीकरण पढ़कर, लो दुनियां को अपने वश कर, यही मंत्र खरा नहीं झूठ, जरा अपनांना ॥११॥ अपने दुश्मन भी आकर मिलेंगे मुरझा दिल तो उनसे खिलेंगे, गुरुचर के परसाद मुनिवर के परसाद, मुनि मदन गाया ओ मोठा गाना ॥१२॥

## मेघरथ राजा का स्तवन

श्री मेघरथ राजा राख्यो परेवो सरणें भावसूं ॥८॥  
 ७ जंबु द्वीप के भरत में तो कांई, जन पद देश रसाल, मृगावती राणी जनमियो तोकांई, धन मेघरथ दयाल हो ॥९॥ एक दिवस पोषा मांही तोकांई, राख गुणे नवकार । १-दड़ घरमी दड़ आत्मा तोकांई, हिरदे ज्ञान अपार ॥१०॥

इन्द्र प्रसंसा करी सोकाई, भरी सभा के माय । मेघरथ राजा  
 जाणियो सोकाई, हिरदे दया अपार ॥३॥ दोय मिथ्याती  
 देवता सोकाई, सरधयो नहीं लगार । राजा ने छलवा  
 भणी सोकाई, आया छे ततकाल ॥४॥ एक वण्यो परे-  
 वड़ो स काई, दूजो पारधी जाण । अति धूजे अति कांपतो  
 सोकाई, पड़ियो गोद में आय ॥५॥ लारे हुवो पारधी  
 सोकाई, आयो राजा पास । म्हारा खजमा म्हाने देवो सोकाई  
 ऐम करे अरदास ॥६॥ ले २ रे तू खांड खजूरा, ले २  
 डाड़म दाख । ले तू मेंदा सुखड़ि सोकाई, थारी दाय पड़े  
 सो चाख ॥७॥ नहीं लूं खारक खांड खजूरा, नहीं लूं  
 दाड़म दाख । म्हारो खजमा मोह देवो सोकाई, एम करे  
 अरदास ॥८॥ रे २ पारधी अछे सोकाई, बोलो, वचन  
 विचार । शरणागत आयो किम दीजे, बोले राय तिज वार  
 ॥९॥ अचित वस्तु देऊं थने सकाई, पोखो थारी काय ।  
 शरणागत आयो किम दीजिये सोकाई, म्हारो क्षत्री कुल  
 कहवाय ॥१०॥ अचित वस्तु नहीं लेऊं सोकाई, सुण तूं  
 मोरा राय । तोक तराजू तोल के सोकाई, आयो अपनी  
 काय ॥११॥ इतनी बात राजा सुणी सोकाई, शस्त्र  
 लिया मंगाय । तोक तराजू तोलता सोकाई, फाटण लाग्यो  
 काय ॥१२॥ तोक तराजू तोलतां सोकाई, चढ़ गयो  
 सकल शरीर । ढलती डांडी तोलतां सोकाई, राजा नहीं  
 - दिलगीर ॥१३॥ इतनी बात सुणी राजा की महलां

पड़ी पुकार । राजा की राण्यां घणी सोकाई, करे विलाप  
 अपार ॥१४॥ हाट बाट सूना पड्या सोकाई, सूना सरवर  
 आज । अतियो मोटी राजवी सोकाई, राय करे अकाज  
 ॥१५॥ राय मुसदी आवीया सोकाई, अरज करे कर जोड़ ।  
 सुन्दर काया केम छंडिये, सब दुनियां के मोड़ ॥१६॥  
 राय कहे सब लोक ने सोकाई, मत करो दूथा झोड़ । मांस  
 काट तन नहीं देऊं सोकाई, लागे मोटी खोड़ ॥१७॥ देव  
 अवधि का उपयोग तू काई, जाण्या शुद्ध परिणाम । देव रूप  
 प्रगट कियो सोकाई, अरज करे सिरनाम ॥१८॥ काने  
 कुण्डल रोभता सोकाई, साथे मुकुट विराज । घुघ्रियां  
 घमकावता सो काई, आय नय्या मिरताज ॥१९॥ देव  
 गया निज स्थान के सोकाई, राय दयारी खान । गोत  
 तीर्थकर दाधियो सोकाई, अभयदान परधान ॥२०॥  
 संयम ले करणी करी सोकाई, गये सर्वार्थ सिद्ध संसार ।  
 तिहां थी चवी श्री शान्तिनाथजी, हुवा छे पदवीधार  
 ॥२१॥ लाख वरसको आउखो तरे, चालीस धनुष काया  
 जान । तिलोत्तरिपीजी इम कहे, सोकाई, पाण्या पद  
 निरवाण ॥२२॥

### श्री शालभद्रजी की लावनी

दान सुपात्रदिया जिन्होंने लफल किया अदतार, धन  
 श्री शालभद्र कुमार टिरा॥ पूर्व भव गवाल्या के भव में,  
 ३-निरपन्न निर आधार निठकर करता पेट गुजार, साता



करे सज्जरी, लड़का, लेकर बाछरु जाय, चरावा जावे वन  
 सुझार, सांझ पड़यां पीछा घर आवे, इस करता केई दिन जावे  
 २ जिकर सुनो नरनार ॥१॥ लड़के को कोई खीर खिलाई,  
 तर्पत हुवा अपार, दौड़कर घर आया तत्काल, कहे मात सुझे  
 खीर खिलाओ, बोले बारंवार मात जब मनमें करे विचार २  
 उस लड़के ने जब हठ लीनी, चार जणी मिल वस्तु दीनी २  
 हो गई खीर तैयार ॥२॥ माता पुत्र को शीघ्र बुलाकर  
 थाल परूसी खीर आप तो गई भरने को नीर, उसी वक्त  
 पुण्य योग मुनिसर, शूरधीर ने धीर, तपसी मोटा गुण गेर  
 गंभीर २ घर आया लड़का हुलसाया, मुनिराज को खीर  
 बेराई २ पड़त किया संसार ॥३॥ मुनिराज तो गया  
 ठिकाने, माता आई उस वार, मात जब मन में करे विचार,  
 इतनी खीर खा गयो मेरो नंदन, काटे भूख अपार, मात  
 की लाग गई टोंकार २ उसी वक्त सर गया वो नन्दन,  
 राजगृही नगरी के अन्दर २ लिया जिन्होंने अवतार ॥४॥  
 जन्म लियो गोभद्र सेठ घर, होगया संगलाचार शहर में,  
 हुलसे बहु नरनार, जोबन वय में आया कुंवरजी, ब्याही  
 बत्तीसी नार, भोगवे पुण्य तणा फलसार २ गोभद्रसेठजी  
 संजम लीनो, अन्त समय में अनसन कीनो २ पांस्या सुर  
 अवतार ॥५॥ अवधि ज्ञान कर देख्यो, कुंवर पर जाग्यो  
 ओह अपार, जिन्हों की निसदिन करता सार, वस्त्र आभूषण  
 भोजन केरी, तैंतीस पेटी सार, देवता भेजे नित्य सवार २

देखो जिन्हों का पुन्य सवाया, श्रेणिक नृप जिनके घर आये  
२ देखन शाली कुमार ॥६॥ सवी रिद्धि को जाणी कारमी,  
तजी वतीसी नार, जिन्होंने लिया तो संजम भार, करणी  
कर सर्वार्थ सिद्ध पहुँता, चव लेती भव पार, जिन्हों का  
चौपाई में अधिकार २ खूबचन्द कहे मन्दसौर में, दान  
सुपातर दो मुनिवर को २ वेग होवे निस्तार धनश्री ॥७॥

### श्री ब्राम्ह मुन्दरीजां का स्तवन

श्री रिषभजी रे दोई राण्यारे भली, सेवा मगलाने  
सेवानंदारी जोड़वणी, दोई राण्यां दोई पुत्रियां जाई  
ब्राम्ह ने सुंदर दोई बाई डेर सतियां सर्वार्थ सोध से  
चवीने आई, इतो भरत बाहुवलरे जोड़े जाई-दोई बायारे  
हुवा तो भाई ॥१॥ ब्रामीरे हुवा नन्याणुं वीरा, इतो  
जामणरा जाया अमोलक हीरा, पछे भरत चक्रवती की  
पदवी पाई ॥२॥ सुंदर के एक जामण जायो इतो बाहु-  
वल, बल अधिको पाया, पछे सेवानंदारी कुंख खूली न  
काई ॥३॥ सतियां पुरव भव करणी जो कीधी, ज्यांरी  
कोमल काया कंचन वरणी, ज्यांरा रूप में कसर नहीं छे  
काई ॥४॥ दोई पुत्रियां वीनवे दादाजी आगे, माने सील  
संजम बल्लभ लागे, मारी सपना में मति करो लगई ॥५॥  
में तो बहूआं कणी की नहीं बाजां, मे तो सात्तरीयारी  
नाम लेताई लाजां, नाके प्रीतम की परवा नहीं छे काई ॥६॥  
में तो पौंद नेणासुं नहीं निरखां, मारा गुर गुराणी देह्या २

करे सजूरी, लड़का, लेकर बाछरु जाय, चरावा जावे वन  
 सुझार, सांझ पड़्यां पीछा घर आवे, इस करता केई दिन जावे  
 २ जिकर सुनो नरनार ॥१॥ लड़के को कोई खीर खिलाई,  
 तर्पत हुवा अपार, दौड़कर घर आया तत्काल, कहे मात मुझे  
 खीर खिलाओ, बोले बारंबार मात जब मनमें करे विचार २  
 उस लड़के ने जब हठ लीनी, चार जणी मिल वस्तु दीनी २  
 हो गई खीर तैयार ॥२॥ माता पुत्र को शीघ्र बुलाकर  
 थाल परूसी खीर आप तो गई भरने को नीर, उसी वक्त  
 पुण्य योग मुनिसर, शूरधीर ने धीर, तपसी मोटा गुण गेर  
 गंभीर २ घर आया लड़का हुलसाया, मुनिराज को खीर  
 बेराई २ पड़त किया संसार ॥३॥ मुनिराज तो गया  
 ठिकाने, माता आई उस वार, मात जब मन में करे विचार,  
 इतनी खीर खा गयो मेरो नंदन, काटे भूख अपार, मात  
 की लाग गई टोंकार २ उसी वक्त मर गया वो नन्दन,  
 राजगृही नगरी के अन्दर २ लिया जिन्होंने अवतार ॥४॥  
 जन्म लियो गोभद्र सेठ घर, होगया मंगलाचार शहर में,  
 हुलसे बहु नरनार, जोवन वय में आया कुंवरजी, ब्याही  
 बत्तीसी नार, भोगवे पुण्य तणा फलसार २ गोभद्रसेठजी  
 संजम लीनो, अन्त समय में अनसन कीनो २ पांस्या सुर  
 अवतार ॥५॥ अवधि ज्ञान कर देख्यो, कुंवर पर जाग्यो  
 ओह अपार, जिन्हों की निसदिन करता सार, वस्त्र आभूषण  
 भोजन केरी, तैंतीस पेटो सार, देवता भेजे नित्य सवार २

देखो जिन्हों का पुन्य सवाया, श्रेणिक नृप जिनके घर आये  
 २ देखन शाली कुमार ॥६॥ सबी रिद्धि को जाणी कारमी,  
 तजी बतीसी नार, जिन्होंने लिया तो संजम भार, करणी  
 कर सर्वार्थ सिद्ध पहुँता, चव लेसी भव पार, जिन्हों का  
 चौपाई में अधिकार २ खूबचन्द कहे मन्दसौर में, दान  
 सुपातर दो मुनिवर को २ वेग होवे निस्तार धनश्री ॥७॥

### श्री ब्राम्हा सुन्दरीजी का स्तवन

श्री रिषभजी रे दोई राण्यारे भली, सेवा मगलाने  
 सेवानंदारी जोड़वणी, दोई राण्यांए दोई पुत्रियां जाई  
 ब्राह्मी ने सुंदर दोई बाई टेर सतियां सर्वार्थ सोध से  
 चवीने आई, इतो भरत बाहुबलरे जोड़े जाई-दोई बायांरे  
 हुवा सो भाई ॥१॥ ब्रामीरे हुवा नन्याणुं वीरा, इतो  
 जामणरा जाया अमोलक हीरा, पछे भरत चक्रवती की  
 पदवी पाई ॥२॥ सुंदर के एक जामण जायो इतो बाहु-  
 बल, बल अधिको पाया, पछे सेवानंदारी कुंख खूली न  
 कांई ॥३॥ सतियां पुरब भव करणी जो कीधी, ज्यांरी  
 कोमल काया कंचन वरणी, ज्यांरा रूप में कसर नहीं छे  
 कांई ॥४॥ दोई पुत्रियां वीनवे बाबांजी आगे, माने सील  
 संजम वल्लभ लागे, सारी सपना में सति करो सगाई ॥५॥  
 मैं तो बहूआं कणी की नहीं वांजां, मे तो सात्तरीयारो  
 नाम लेताई लाजां, माके प्रीतम की परवा नहीं छे कांई ॥६॥  
 मैं तो वींद नेणासुं नहीं निरखां, मारा गुर गुराणी देख्या २

हरखां, सेतो दिन में दो वार सुणांजी वाणी । ७॥ बाबाजी  
 कहे सुणोए बेट्यां थे तो सील चिंतामणीरी पेट्यां,  
 थारी करणी में कसर नहीं छे कांई ॥८॥ माताजी कहे  
 सुणो पुत्रियां सारी, थारा वैरागरी सने बलिहारी, बारी  
 ये कृवरयां उत्तम प्राणी । ९॥ ब्राह्मी को रूप भरत देख्यो,  
 सतियां रो अंग उपांग सगलो निरख्यो, पछे भरत ने बुद्ध  
 ऐसी जो आई ॥१०॥ थे तो आदेसरजी का बेटा बाजो  
 एक वार जाई ने छे खंड साधो, से तो अठेई लादसां भरत  
 भाई ॥११॥ बठारु ई भरत चाल्या, जिण दिन सुई सतियां  
 तप आल्यो, बेले तो बेले पारणा जो किधा सतियां  
 आमल लुखो अहार पाणी कीधो, पछे फुलां सरीखी देही  
 कुमलाणी ॥१२॥ छे खंड साधी भरत आया, सतियांरो  
 शरीर देखी ने समता लाया, पछे दीपती दीक्षा दिलवाई  
 ॥१३॥ दोई वायांरे वैराग घणो, ईतो कुँवारी कन्याए  
 लियो साधपणो, पछे से २ ने साठ वरसां री गणती  
 आंई ॥१४॥ थी आदेसरजी री चेल्यां हुई, पछे बाहुल  
 जीने समजावा सेल्यो, अठारे लिपी भणीने आया, आदेसरजी  
 री सीखाणो, पछे मोक्षपुरी में सीधाणा ॥१५॥ सतियां  
 मोक्ष पोता ओ कर्म आठ तोड़ी, रीख रायचंदजी ढाल  
 जोड़ी ओ जुगती, चौरासी लाख पुरब आयु पाया ॥१६॥

### शान्ति नाथ का स्तवन

मम मेहर नजर कर तारो २ शान्तिनाथ भगवान

॥टेर॥ तारन कारन अरज कळुं में धर कर तेरा ध्यान ।  
 सान भान-ओसान ज्ञान मुझे प्रकटे प्रभुजी आन ॥१॥ दिव्य  
 देव दयाल दयानिधि करना जन्म प्रमान । इस कारण में शरण  
 आपकी दीजे दान महान ॥२॥ अनंत अनादि चतुर गति में  
 भटकी अनंती वार । अब तो शरणा तेरा स्वामी नैया लगा  
 दो पार ॥३॥ हाथ जोड़ कर कळुं विनती अर्जी लेना  
 मान । सरस संयोग सदा रहे, हिरदे आपका ध्यान ॥४॥  
 संवत दो हजार बीस में कीना बदनावर शहर चौमास ।  
 गुरणी साह है अति गुणवन्ता दिलसुख चरण सुझार ॥५॥

### श्री शान्तिनाथ का स्तवन

सदा सुख कारीरे २ श्री शान्ति जाप जपो नरनारीरे  
 ॥टेर॥ विश्वसेन अचला के नन्दन, पूरण पर उपकारीरे,  
 सृष्टी मार निवार जगत की विपता टालीरे ॥१॥ जन्म  
 हुबो प्रभुजी को, दुनियां पाई सातां सारीरे मंगल गावे  
 मिली सुरंगना हर्ष अपारीरे ॥२॥ शान्ति २ मुख से जपता,  
 जो चावे सो पावेरे ताव तेजारी रोग सोग सब दूरा जावेरे  
 ॥३॥ तुम ही तात मात परिवारो तुम ही बंधु भ्राता रे,  
 गुरणीजी परसादे दिलसुख है शरण तिहारी रे ॥४॥

### चेतनजी का स्तवन

चेतनजी थें यूँ मत जाजोजी, धरम धन लेता जाजोजी  
 ॥टेर॥ जोवो आगम की आरसी आँखो रूप वणाजोजी,  
 शिव रमणीरा सायबा, ज्यां सु प्रीत लगाजोजी ॥१॥ परभाते

तारो उगियो उठ कमरां बंधाजोजी, साथे लीजो धर्म सुखड़ी.  
आगे सुख पावोजी २। पांचों ही महाव्रत पालजो भली  
भावना भाजोजी, चोर लुटेरा छे घणा, ज्यांसुं माल  
बंदाजोजी ३॥ चारुं ही शरणा सरदजो. शिव सन्मुख  
जाजोजी, श्रमण हजारामल कहै ज्ञानी का गुण गाजोजी ४॥

### स्वप्न का स्तवन

माता ब्रशला ने देख्या रे वाला, चऊदे सपना राणी  
ब्रशला ने देख्यारे वाला चऊदे सपना ॥१॥ आधी २  
रात जिनंदजी ने देख्या । कछु जागे ने कछु सूता सपना  
॥१॥ गज गम चाल्या मधुर वचन से । फल पूछे ओ राणी  
अपना पति से ॥२॥ चैत सुदी तेरस दिन जनम्या । जनम  
कल्याण करोजी सपना ॥३॥ क्षत्रिय कुल में जनम लियो  
हे । राजा सिद्धारथ के अंगणे ॥४॥ श्री महावीरजी के  
चरण कमल में । रवि उगटे सुनि करुं वन्दना ॥५॥

### मोक्ष का स्तवन

मोक्ष मां क्यां थी जवाय, सीढीरे जोइये, ऐरे सीढी तो  
भक्ति नी बनावीसुं, सत्संग नी सांकल बंधाय पहेलुं पगथीयुं  
नवकार मंत्रनुं बीजु सामायिक होय त्रीजु पगथीयुं शियल  
नुं सोभे, चौथो चौविहार पांचमुं पगथीयुं गुरुदेव नुं सोभे,  
छठुं वंदन सोहाय । सातमें पगथीयुं भक्तपणु दाखवो,  
आठमो भक्ति नो सोहायनवमुं पगथीयुं पंच महाव्रत नुं  
दसमो संथारो सोहायरे सीढीए सिद्धो विराजे, भव जीवोने

पोसाय, मोक्षमा एम जवाय ॥

## भजन

रे तुम पढो रे तोता, क्या मुख सोता बोलो राम नाम  
॥टेर॥ पिंजरां में बैठ के रे, भूल गयो निज नाम । लालच  
के बस में पड्योरे, पड़ीयो आहुं ही याम ॥१॥ साथी तेरा  
छोड़ चल्यारे, कोईय न आवे साथ । जीव अकेलो रह गयो  
रे, छोड़ चल्यो घर बार ॥२॥ मोत बिल्ली ताक ने रे,  
बैठी है बीच मुकाम । अवसर थारो देखनेरे, करसी ताजम  
कामरे ॥३॥ बोली थारी रसभरीरे, रटो निरंजन नाम ।  
ब्रह्मानन्द कटे भव सागर, पाया पद निरवाणरे ॥४॥

## श्री मन्दिर

प्रात उठी ने सामीविनवुं जी मारो पेलो २ होजो  
नमस्कार हो सामी श्री मन्दिर सामी आपने विनवुंजी. युग  
मन्दिर सामी आपने भेट सांजी ॥१॥ दर्शन दोयलां सामी  
में रही जी. मेतो पांखां बिना रही नीराधार हो सामी ॥२॥  
आड़ा तो पर्वत सामी वन घणाजी. में तो रही २ मुख  
विलखाय हो सामी ॥३॥ माता पिता ने वंदव कार मोजी.  
मेतो लिपटी २ कुंटम परिवार हो सामी ॥४॥ राग द्वेष  
सामी में भरीजी. मे तो भरी २ क्रोध न मान हो सामी  
॥५॥ आशा वरुंदी सामी में रही जी. मारी होस रही मन  
माय हो सामी ॥६॥ हाथ जोड़ी ने सागर विनवेजी. मारी  
हो जो २ चरणारी सेव हो सामी ॥७॥



## गुणधरजी का स्तवन

सरसत सारद विनवूँ हुतो गुणधर लागूँ लिपाव । संयाए  
 गुण गोतमजीरा गावशां । टेक॥ पृथ्वी तो माता थाने  
 जनमिया । ज्यारा पिता श्री असुसेन भूप ॥१॥ पांचोई  
 महाव्रत आधर्या श्री वीरजीनंदजीरे पास ॥२॥ लबद  
 अठावीसना घणी ज्यांरी बुद्धि तणोरे विशेष ज्यांरी करणी  
 तणोरे विशेष ॥३॥ सार दाल घृत सारणा प्रभुजी सरस  
 नरसकोयो आहार ॥४॥ ग्यारा श्री गुणधर थापिया ज्यांमें  
 बड़ा श्री गौतम शांम ज्यांमें अगवान्नी गोतम सांम ॥५॥  
 ज्यां देखूँ ज्यां केवली प्रभुजी मारे तो दिखे अन्तराय ॥६॥  
 वलता श्री वीर जिनेश्वर इम कहे गोतम छोड़ोनी मांसु यो  
 हेत । गोतम मुकोनी मांसु यो राग थाने केवल उपजेलो  
 आय ॥७॥ वलता श्री गोतम स्वामी इम कहे प्रभुजी नहीं  
 छोड़ा थासु यो हेत जिनजी नहीं मुंका थांसु यो राग माने  
 सदाई केवलीयारी आस ॥८॥ वलता श्री गोतम स्वामी  
 इम कहे प्रभुजी सेवा करांगा दिनरात जिनजी पूछां करांगा  
 छोड़ी हाथ माने केवल उपजेलो आय ॥९॥ कातिक विदी  
 अमावस्या श्री वीरजी पोता निरवाण गोतम स्वामी ने  
 उपनो केवल ज्ञान ॥१०॥ पांडलपुर नगर सुहावणो । जठे  
 जोड़यो गोतमजी को रास यो तो गायो है मन हुलास ॥११॥

### गोतम रास

दोहा । गुण गाऊँ गोतम तणा लब्धि तणा मंडार । बड़ा

सीस भगवन्त को जाने, जागे जगत संसार ॥१॥ प्रति  
 बोध्या प्रभुजी कने गुणधर गोतम साम संयम लईने सीध  
 हुआ जांका लीजे नित प्रति नाम ॥ २ ॥ तीरथ नाथ  
 त्रिभुवन घणी प्रभु शासन ना सिंगार भक्ति करी भगवन्त  
 की जांका मन वांछित फल दातारजी समर्यां पीण होवे  
 सुखकारजी सदा वरते जय २ कार जी तीरथ थाप्या  
 प्रभुजी चारजी चारु संघ मांय सिरदारजी गोतम नामे  
 गुणधारजी जाने होजो मारी नसस्कारजी दीयाड़ा दिवस में  
 दस २ वारजी श्री गौतम स्वामी में गुण घणा ॥१॥  
 सोलमो सोनो सारखोजी सुन्दर रूप शरीर कनक  
 कंचोटी चड़ाइने भगवती में भांक्यो श्रीमहावीरजी,  
 दिठा हिवड़े हरकत हीरजी वली खम दम संजम धीर जी,  
 प्रभु सांगर जैसा गम्भीरजी, जांरी वाणी छे मीठा खीरजी  
 मीठा खीर समुद्र का नीरजी खटकाया जोवांरा पीरजी,  
 हुआ महावीर तणारे वजीरजी ॥२॥ गोरा मे घणा  
 पुठराजी कंचन कीमल गात, देही जारी दीपु २ करे  
 देवता पीण कतरीक वातजी रोग रहिइ काया सात  
 हाथजी, घणा रया गुरुजीरे पासजी, सेवा कीदी छे  
 दिन ने रातजी, पुछा कीदि जोड़ी दोनों हाथजी, वलो कयो  
 कठा लग जायजी, जारे वीर दियो माथे हातजी ॥३॥  
 प्रथम सींघेण संठाण छे प्रभु गोरा गुण भरपूर ब्रमचारज  
 मांय वसी रया वली तपसी गोर करजी कायर पुरुष कंपी

जावे दूर जी दीपती तपसा कीदि क्रम चकचूरजी जाने  
 वंदणा उगंत सूरजी रइया वीरजीरे हुकुम हजूर जी ज्यां  
 पुरसांरी जाऊं बलिहारजी ॥४॥ अभीगरो कीदो आकरोजी  
 सुत्र भगोती के मांय चार ज्ञान चवदे पुरब भण्या वली  
 तेजु लेसा पींड मांयजी दबती राखी खिम्या दिल मांयजी  
 दिनो ध्यान सु चित लगायजी उकडु बैठा ये शीष नमायजी  
 वीरजी सु अलगा ने नेड़ा थायजी जारी करमी में कमी  
 नहीं कायजी ॥५॥ पूछा ज्यां कीदि घणी जी आण्यो मन  
 आनन्द सरपा में सांसो उपन्यो २ कोतुहल ऊंचरंगजी  
 वांदवां सरी वीर जिनन्दजी पूछा देस प्रदेस रा खंदजी  
 अनन्त ज्ञानी त्रसला देरानन्दजी सूत्र मेल दिया संदो  
 संदजी जाने सेवे सुर नर बन्दजी तारा बीच विराज्या  
 घन्दजी ॥६॥ सुत्र भगोती में पूछियोजी प्रश्न अनेक  
 प्रकार अंग उपंग माय पूछिया पूछाकीदी छे पेलेपारजी  
 तीरथ नाथ काडी दिया तारजी गोतम लिया हिरदा मांय  
 धारजी, जारों बुद्धि रो नहीं आवे पारजी भव जीवांरा  
 तारण हारजी घणा जीवासु कियो उपगारजी, सामी केसों समण  
 कुंवारजी जारो सासो मेटण हारजी ॥७॥ इन्द्र भुती मन  
 चितवे, मुझने क्योंनी उपन्यो केवल ज्ञान खेद पाम्या प्रभु  
 देखी ने, बुलाया श्री वर्द्धमानजी, गोतम ऊ बा छे सनमुख  
 आयजी, वीर दियो आदर सनमानजी, मन वांछित दीनो  
 दानजी, चित्त निरमल कियो ध्यानजी, सुधी सरदा

ऊपर तानजी गोतम गुण रतनारो खानजी ॥८॥ थारे ने  
 म्हारे गौयमांजी, घणा रे काल की प्रीत आगे आपे भेरा  
 रया वली लोड़ बड़ाईरी रीतजी मोयणो क्रम लोजोजी  
 तजी केवल आड़ो आई छे भीतजी, राखो मोक्ष जावण रो  
 चित्तजी, वीर वचन मानो परतीतजी जासी जमारो जीतजी  
 रुड़ी छे थारी रीतजी, पूरी थारी परतीतजी, थे तो सीस  
 बड़ा छो वनीतजी ६॥ ज्ञान दर्शन चारित्र भणीजी, पाले  
 निर अतिचार । बेले २ पारणा प्रभु जीत्या रागने रीसजी ।  
 ज्यांरी करनी विश्वावीसजी ज्यांरा भजन किया निशदीस  
 जी । ज्यांरी पूरे मन जगीसजी ज्यांने हूं नमाऊं म्हारो  
 शीशजी । १०॥ अबके अणी भव आंतरो, आपे दोनों  
 बराबर होय वीर वचन श्रवणे सुणी तब हिवड़ो हरकित  
 होयजी गुरु मोटा मिलिया मोयजी म्हारे कमी नहि रही  
 कोयजी राग द्वेष खपाया दोयजी वीरजी सु बेकर जोड़ी  
 होयजो रईया वीरजी रे सामो जोयजी ॥११॥ श्रीमुख  
 वीर बखाणियाजी गोतम ने तणी वार थारा सरीखो  
 म्हारे कोई नहि पाखंड्या रा जीतण हारजी चरचा वादी  
 में तुरत तैयारजी हे तजुगत अनेक प्रकारा जी बीजसाधु  
 सगला थारी लारेजी थारी बुद्धि रो नरि आवे पारजी  
 थे तो चवदे पुरब ना धारजी नवअंग रचिया सारजी  
 इम सुणिया हरष अपारजी ॥१२॥ कार्तिक विदि अमावस  
 जी मोक्ष गया वर्द्धमान इन्द्र भुतीजी ने उपन्यो तब निरमन

कैवल ज्ञानजी धरम दोपायो नगर पुर गामजी सीध कीधा  
 छे आतम काजजी पछे पोंता सेवा पुरी ठामजी धन २  
 गोतम स्वामीजी ॥१३॥ सुत्र भगोती में छे घणोजी गोतम  
 नो अधिकार वली उवाई में जाणजो उपासंग दस प्रकार  
 बी जांरी गोचरी रो अधिकारजी जांरी वाणी रो विस्तार  
 जी कइयो सूत्र २ मुझारजी इम सुणिया सूत्र अपारजी  
 ॥१४॥ पूज्य जयमलजीरा प्रसादसेजी कियो ज्ञान तणो  
 उदयौत समत अठारे चोतीस में नमी सुदी भादवडारो  
 भासजी यो तो जोड़यो गोतम जीरो रास जी थे तो सुणजो  
 मन हुलास जी जीव पांमो अबोचल लील विलास जी रीख  
 रायचन्दजी रो याई अरदास जी सेर बीकानेर चोमासजी  
 हुं तो रहु चरणा रो दास जी म्हारा मेंट दीजो ग्रभावासजी  
 ॥१५॥

### भजन

म्हारो बालो भुको छे प्रेमनोरे, नथी देखे आचार  
 विचार ॥ प्रेम देखे जठैइजीमलेरे ॥टेर॥ नथी पाती  
 जाति घर खेलतोरे, खाया भीलणीरा झूठा बोर ॥१॥  
 काचा पाका मोटा २ रोटलारे, खायो कर्मा बाईरो लूखो  
 खीच ॥२॥ प्रभु दुर्योधन रा मेवा छोड़ियारे, साग खायो  
 विदुर घर जाय ॥३॥ इने खावा पीवारी परवा नहिरे,  
 ओतो पोतो त्रिलोकी को नाथ ॥४॥ काचा तांदुल म्हारा  
 ॥५॥, छोलिया बिना ही कर २ स्वाद ॥५॥ अचल

राम प्रभु अति प्रेम छे रे, प्रेमी भक्ता रो राखे छे मान ॥६॥

## पालना का तंवन

छुम २ बाजे पालनिया, सखिया झुलाने आई । झुले वीर प्यारा २, झुले वीर प्यारा । टेक । चहुंदिशा में आनंद मंगल छारहे छारहे सारे राज्य के मानव, निरखत आरहे २ सुन्दर मुखड़ा चमकेरे, मानो चंदा की शोभा । झुले वीर प्यारा २ झुले वीर प्यारा ॥१॥ साज बाज से यश गाने को गारहे २ हीन दीन बंदी भी, आनंद पारहे २ जगतीलाल येपाईरे, मानो प्रभात छाया ॥२॥ चौसठ सववा मिल के गिरीपे जारहे २ ब्रजभान की गौदी में, प्रभुजी भारहे २ पर्वत को कंपाइ के इन्द्र ज्ञान से जाना २ ॥३॥ राज्य सुखादि तजकर संयम लेरहे २ भव्य जनों की नैय्या सरसे खेरहे २ अविचल निधी पाईरे, वन्दन हमारा स्वामी ॥४॥

## भजन

अगर है ज्ञान को पाना गुरु की जा शरण भाई टेरा ॥

जटा शीष पर रखने से भस्म तन में रमाने से, सदा फल फूल खाने से, कभी नहीं मुक्ति को पाई । बने मूरत पुजारी हैं । तीरथ यात्रा तयारी है करे व्रत नेम भारी है भरम मन को मिटे नाई । कोटी सूरज सभी तारे करे प्रकाश मिल सारे । बिना गुरु घोर अंधारा न प्रभु का रूप दर्शाई । ईश सम जान गुरु देवा लगा तन मन करो सेवा । ब्रह्मानन्द न मन घबराई ।

## प्रभु से मांगणी का स्तवन

कृपानिधि दो मुझे केवलज्ञान, कृपा सिंधु दो मुझे  
केवलज्ञान, ज्यांसे पाऊं पदनिर्वाण । टेरा॥ हाथी घोड़ा  
रथ अरु पैदल नहीं चाहिये बलवाहन । शाल दुशाला  
तोसक तकिया, नहीं चाहिये जरी थान । लाडू पेड़ा  
और जलेबी, नहीं चाहिये पकवान । समण हजारीमल  
केवल मांगे वक्सो श्रीभगवान ।

## तीन मनोरथ

संभल हो श्रावक तीन मनोरथ शुद्ध मन चितवो ॥टेरा॥  
आरम्भ परिग्रह से, कब परिहरूँ दुर्गति को यो दातार ।  
विषय कषाय को, यो मूल है भमावे अनन्त संसार ॥१॥  
अतरण अशरण अनित्य अशाश्वतो, निर्ग्रथ के निदनीक  
स्थान । जिस दिन इसको मैं त्यागन करूँ, सो दिन म्हारे  
परम कल्याण ॥२॥ द्रव्य भावे कब मैं मुण्डन होऊँ, दश  
विधि यति धर्म धार । तप जप संयम मार्ग आदरूँ, करूँ  
अप्रतिबंध विहार ॥३॥ आज्ञा प्रमाणे श्री वीतराग की,  
चालूँ यथार्थ धर ध्यान । जिस दिन निर्ग्रथ पंथ में विचरूँ,  
वह दिन म्हारे परम कल्याण ॥४॥ कब सब पाप स्थानक  
छोड़ने, करी आलोचना जीव खमाय । जिस शरीर ने पाल्यो  
प्रेम से, उससे समता मिटाय ॥५॥ चारों ही आहार को  
त्यागन करूँ, मृत्यु पंडित परधान । चारो ही शरणा मैं  
आरण करूँ, वह दिन है परम कल्याण ॥६॥

## अरिहन्त स्तुति

नमो २ देव अरिहन्ता । प्रभु सिव रमणी के कंताजी  
 टेरा॥ घन घातिक करम सब हंता । सब जानत केवल  
 कंताजी ॥१॥ जे चोतिस अतिसय सोहंता । प्रभु तीन  
 भवन में महंता जी । २ एक जोजन वाणी वागरंता ।  
 वारों तीरथ स्थापन करंताजी । ३ । तीलोक रिख तन मन  
 ते नमंता । सेवा दीजो सदा भगवंताजी ॥४॥

## श्री गुरु गुणमाला

गुरुवर प्यारारे श्री कृष्ण मुनिजी मोहनगारारे  
 टेरा॥ पंडित पूरा संयम सूरा, सूत्र की सेली न्यारीरे ।  
 वाणी वरसे अमृत धारा, मंत्रीसर पद धारीरे । १॥ शिष्य  
 आपका सोभाग मुनिजी, जाणे दुनियां सारीरे । प्रतिद्व  
 वयता पंडित पूरा, शांति निकेतन छबि न्यारीरे । २॥  
 कवीश्वर सूर्यमुनिजी महाराज सूर्य सम है, जैसे चन्द्र  
 चकोरारे । नैना दीठा लागे मीठा क्षमा के भंडारारे । ३॥  
 शिष्या मंडली हे गुणीजन आपकी, दिन २ चढ़ती पुन-  
 वानीरे । अधिक तेज बड़े गुरु आपको, फले दिल आशारे  
 ॥४॥ गुरुवर के चरण सरण की, जाऊं हूं बलिहारीरे ।  
 गुलाब कुंवर अर्ज करे, गुरु दर्शन दो हर वारीरे ॥५॥

## राम का स्तवन

लीना राम यहां अवतार, हुआ घर २ मंगलाचार । टेरा॥  
 धन्य है मात पिता नगरी को, जन्मे चेत सुदी नवमी को ।



बोलो राम वी, जय नर नार । दशरथ कुल के हैं उजियारे,  
मात कौशल्या के प्यारे । कीना देवों ने जय २ कार ।  
छाया पाप तिमिर घर २ में, प्रगटे भानू सम भारत में ।  
करने सत्य धर्म परचार लगा है ठाठ नगर २ में भागी,  
मानो खिल रही केशर वयारी । कहता चौथमल हरबार ।

### स्तवन

चेतन चेतोरे प्राणी, थारो आयो के आयो थारो काल  
॥टेर । भोजन भात पकूसिया । कई धरी रयेगा थारी थाल  
॥१॥ लाखां को लेखो घणो । थारो धर्यो रहेगा धनमाल  
॥२॥ बाप दादा बैठा रया । कई उठ चल्या बाल जवान  
॥३॥ आगे पीछे जावणो, कई छोड़ जगत जंजाल । ४॥  
समण हजारीमल इस कहे । बांधो २ धरम की पार । ५॥

### सरसत का स्तवन

सरसत २ करूंजी प्रणाम, एक बीनतड़ी में करूं, मांगूं  
लाख पोसाख । सरसतरा गुण गावसा राईवर बेटी दोय, भणे  
गुणें सपना भणे एक बाई भणे सिद्धान्त दूजी, बाई नाटक  
करे राईवर एवो जाण, वर बेटी ना मिले गर्व हियो अणी-  
राय, सरखीवर में जोवसा चहुंदिसि बंठा ओ राज । बंठा  
उचरंग आपने सेणा बुलावे ओ तात, उठ बाई वर जोयले,  
थारो मन गमतो वर जोयजो, सहारी कुंवरी जुग करे ।  
माने नी लादे ओ तात, लादे करमज आपणे, बाप की दीदी  
नी जाय, जासी करम जो आपणे । भरया अंडोवर साय

मान गयो में लाजियो, बीड़ो फेरयो अणीराज सीव राजा  
 ने भेंटसा । मारी सुंदर देसाओराज, मेणादेस विरोधिया,  
 सास विरोधिया माय, उमर राणो थापियो बुरो कर्यो  
 अणीराय, नगरो में वीछवो पड़यो । थारा बाप दीदो रुसाय  
 तू वर जोयले रोयड़ो, सामी धरक हमारी देय में परकासां  
 काईकरां । मैं शीलवंती सुखमाल, वेण विचारी ने बोलसा,  
 मैं जपसा श्री नवकार सार सरीखी देई होसी धन २ थारी  
 जीभ, उतम कुल छे मायरो, निरधार्या को आधार असी  
 कहूं वधावणी । सामी चेत आसोजा माय नवपद २ जे  
 जपे, जारी पुरवो आस, बैठा नवनीद संपजे । सकल  
 बोजोरो हाथ, आज मनोरथ सउ फलया, मारी वउवड़  
 को भरतार, सीयल पाले निरमलो । बाळूठी पीयर जाय,  
 ज्यांरा भमर सुहावना, मारी कुखड़ली अवतार मारी  
 मेणारो मुख जोवसां, जदी मिल्या वेवाणांको साथ पुछंता  
 कुलआपणी, में जासा थानक माय जब कुल केसा आपणो !  
 जदी चम्पा नगर मझार, सेस राजा नो डीकरो, मारा  
 देवर लीधो राज, पुत्र लेइनी ने निसर्या । जणीं में मारो  
 पूत, वरस दियाड़ो मायरया, में जासा देस विदेस राज  
 लेसा पिता तणो । जदी नोबत रही गुंजार वेरी तो पाछा  
 फरया, जदी हुई अचम्बे बात उमर राणो परणीयो । जदी  
 परणीया आठोई नार आठारी पेरावनी, सामी दास दसोल्या  
 सात सुलसा कुंवरी सुन्दरी । थे सामलजो महाराज पीयर

जासा हमें भणो, आवो २ ए कोई कहे दल आवसी मोटा  
 मिलया । परधान किम कर राज उबालसी जदी खांदे कुषाड़ा  
 लेय, सभी मिलीने आवसी जदी वस्तर पेरया बहु चंग । सुसरे  
 जमाई नहीं ओरख्या जदी कुण ओलखावे ओ तात, तात  
 देखया मन मे गया में आप करनी ओ राज । बाप करनी या  
 युई रई सरीवाई भणे सिद्धान्त, आगे खम्या विनवे जु टूटा  
 श्रीपाल । जो सगरा ने टूटजो भणे गुणे नरनार, जांरा मन  
 वंछित फले गावे नर ने नार । आमल रो फल निपजे बाई  
 सुती बलड़ा हेट, सुतो ने सपनो लियो जदी जारी झरोखा  
 सांय । ईमन्दर ईमालिया आंगन खेले पूत, दड़ी खेलन्ता  
 डावड़ा । मारी मेणा रा गुण गावसा बाई आमल रो फल  
 पावसा । आया जैसा आवजो मनरा, मनोरथ पूरजो ।

## भजन

हरि नाम सुमर सुख धाम, जगत में जीवन दो दिनका  
 ।। १॥ पाप कपट कर माया रे जोड़ी, गर्व करे धनका ।  
 सभी छोड़ कर चला मुसाफिर, वास हुवा वन का ॥१॥  
 सुन्दर काया देख लुभाया, लाड़ करे तन का । छूटा श्वास  
 बिखर गई देही, ज्यूं माला मनका ॥२॥ जीवन नारी लगे  
 पियारी, मौज करे मनका । काल बली का लगे तमाचा,  
 भूल जाय ठणका ॥३॥ यह संसार स्वप्न की माया, मेला  
 पल भर का । ब्रह्मानन्द भज्म कर वन्दे, नाथ निरंजन का ।

## गुरु वन्दन

वन्दना २ वन्दना रे । ज्ञानी गुरुजीने हमारी वन्दना  
॥टेर वन्दन कर्षा सूं ज्ञानज आवे, ऊं व पद को ठावनारे ।  
गुरुजी बुलाया तहत उचारो । कर जोड़ी ने बोलनारे ।  
गुरुजी पधार्या उभोजी रहनो पधारो २ इम केवनारे ।  
विनय मूल जिन धर्म भाख्यो । सब अवगुण दूर निवारना रे ।

## गुरु दर्शन

भूल मत जावोजी गुरु म्हाने, विसर मत जावोजी  
गुरु । मैं अरज करूं तूं थाने ॥टेर॥ सतगुरु प्रेम हिया  
विच जड़िया, प्रकट कहूं के छाने । जो मुझसे अपराध हुवा  
तो, करम दोष गुरु माने । भव सगर यह जल से भरियो  
जीव तीरण नहीं जाने । जीरण नाव जोजरि डूबे, पार  
करो गुरु म्हाने । मैं चाकर चूक पड़ी तो, गुरु अवगुण नहीं  
माने । मैं बालक गुन्हा किया बहुतेरा, पिता विरुद इम  
जाने । भेरी दौड़ जिहां लग लागे, नमस्कार चरणों में ।  
मेरुदास कर जोड़ विनवे, धन २ हे संता ने ।

## स्तवन

धन २ भाग हमारे, यहां सद्गुरु पधारे ॥टेर॥ देखो  
मुनि की करणी मुख से न जाय वरनो । जिन नाम सदा  
उच्चारें । आवो तुम सांझ सवेरी मतना लगावो देरी ।  
अवसर को मत चूकना रे । दुर्गुण को दूर हटावो प्रभु च  
विच लगावो । सिद्ध होय काज तेरे यहां सतगुरु पध

## भीला रानी का स्तवन

ए खांदे खारी हाथे भारी खर खोदण ने चाली, चांदा  
 रे चांदणियां माई शिवजी पलक उघाड़िपे, भीला रानी २ सूता  
 हो नर जागो ॥१॥ चाले हे तो चाल भोलनी उदियापुर ले  
 चालूँ, उदियापुर का महल बताऊं तने करूँ पटरानी ॥२॥ थांके  
 महादेवजी दोई २ राणियां मने कठे ले चालो । वहां दोनों  
 के होसी लड़ाई थांकी मांकी होसी फजीती ॥३॥ पार्वती  
 ने पियर पहुंचई हूं गंगा भरे थारे पानी । चांद सूरज दोई  
 पोलिया रखाई हूं तने करूँ पटरानी ॥४॥ बिच्छू सरीखा  
 म्हारे बिछिया घड़ई दो बासक नाग की आंटी । सवा लाख  
 को नेवर घड़ई दो जणीरे ठमके चालूँ ॥५॥ बिच्छू सरीखा  
 थारे बिछिया घड़ई हूं बासक नाग की आंटी । सवा लाख  
 को नेवर घड़ई हूं जणीरे ठमके चालो भीला ॥६॥ गाड़ी  
 का म्हने चक्कर चड़त है घुड़ले बैठी डरपूँ । नांदियाको  
 माने दोष लगत है पाली पलक नहीं चालूँ ॥७॥ गाड़ी का  
 थने चक्कर चड़त है घुड़ले बैठी डरपो । नांदिया का थने  
 दोष लगत है गोदया कर ले चालूँ भीला ॥८॥ अब  
 महादेवजी गाम नेड़ो आयो मने परी उतारो । जाई थांकी  
 राणियां ने हूं जई कीजो लोड़ी सोक बधावो महादेवजी  
 ॥९॥ उठो पार्वतीजी बाहर आओ जल भर झारी लाओ ।  
 गज मोत्या को थाल भरों ने लोड़ी सोक बधाओ पार्वतीजी  
 ॥१०॥ उठ्या पार्वतीजी बायर आया जल भर झारी लाया ।

गज मोत्या को थाल भरीने लोड़ी सोक बताओ ॥१०॥  
 केथने भीलाराणी इन्द्र जायो के बासक घर आई । के  
 थहने धरती जन्म दिया तू कंसा-पुरुष घर नारी ए ॥११॥  
 नहीं महादेवजी मने इन्द्र जायो नहीं बासक घर आई ।  
 नहीं मने धरती जन्म दियो मैं भोला पुरुष घर नारी  
 महादेवजी ॥१२॥ थे मोची होय माने छलिया मैं भीलनी  
 होय थाने । दोनों दाव बराबर खेल्या अब क्यों पछताओ  
 महादेवजी सूता ॥१३॥

### सरुदेवी माता का स्तवन

नगर विनीता भले विराजा, झगमग २ सोवेजी ।  
 कंचन सांही कोट विराजे सुर नर का मन मोहेजी । अणी  
 क्रीड़ पुरुष लग पाभ्या, साता मोरा देवी माताजी ॥१॥  
 नगर वनीता बारे जोजन, पूरव पश्चिम जाणीजी । नव  
 जोजन की उत्तर दक्षिण, सूत्र में बखाणीजी ॥२॥ सोना  
 का तो कोट कांगरा, रूपा का दरवाजाजी । अधबीच  
 सोहे हीरा पन्ना, मोत्यां की लड़लूँ बाजी ॥३॥ श्री आदि-  
 नाथजी आय उपना, मोरादेवजी की कूँखेजी । जुग में  
 जामण हुवा चावे, जणी जाया रिषभजिनेसर बेटाजी ।  
 ॥४॥ सेजा ऊपर वेठा सोवे, तेवड़ गादी तकियाजी ।  
 पुरबला भव के पुन के जोगे, जद माजीसाब केवावेजी ।  
 ॥५॥ बेटा पोता पड़पोता ने, लड़पोतारी जोडयाजी ।  
 सगरी बडवां पांवे लागी, आसीस देई २ थांकी

अठ्ठाणु दली नाना पोता, लुर २ लागे पावोजी । रूप अनो-  
 पम अदक विराजा, मनमोहे मलकंताजी ॥७॥ सेज्यां ऊपर  
 बेठा सोत्रे, तेवड़ गादी तकियाजी । भरत बाहुबल सरीखां  
 पोता, जग में दीपे दादीजी ॥८॥ ब्राह्मी सुन्दरी दोनों  
 पोत्यां, दोई अखंड कुवारीजी । मोटी सतियां मुगते पोता  
 काट करम का जालाजी ॥९॥ पेसठ हजार पोड्यां नजरां  
 देखी, नाम जणी का धरियाजी । सोक संताप तो कदीय  
 नी कीधा, जांये पूरा पुंनज कीधाजी ॥१०॥ अंग में असाता  
 कदीय नी हुई, टसको एक न कीधोजी जीव्यां जां लग  
 मोरा देजी, ओखद एक न लीधीजी ११॥ श्री आदि-  
 नाथजी अठे पदारथा दी २ भरत वधाईजी हरक धरी ने  
 हस्ती होदे, पुत्र वंदन को चाल्याजी ॥१२॥ हाथी घोड़ा  
 रथ पालखी, मणी माणक ने मोतीजी । तीन वधायां साथे  
 आई जदी दीदारा फल देखोजी । १३॥ केसरियां कसुंमल  
 साड़ी, चुड़ले रतन जड़ायाजी । धोरा वस्तर कदीयनी  
 पेरथा, पेरथा सो पचरंग्याजी ॥१४॥ गेले जाता मोरा  
 देजी पूछे भरत ने बातांजी । मीठा शब्दा गेर गंभीरा,  
 ईवाजा कठे वाजेजी । १५॥ समोसरण में आय विराजा  
 पुछे भरत ने, वाताजी तीर्थकर का ओछव करता, ईवाजा  
 कठे वाजेजी । १६॥ इंद्र इंद्राणी देवी देवता नर नारियां  
 का वंदोजी । समोसरण में साहिब बैठा, जीम तारा बीच  
 चंदोजी । १७॥ दूढ़ापो तो आयज लागे, शक्ति मारी

घटगीजी । दरसन थारा कदीय न किधा जदी रषबो २  
करतीजी ॥१८॥ फटक सींगासण बेठा सोवे, मस्तक चंवर  
दुरावेजी । ऐसी सायबी पुत्र भोगवे, जदी माजी नौ कुण  
चित्तारेजी ॥१९॥ हुं तो मोय घणेरो करती, थाकी रिद्धज  
भारीजी । किस की माता किसका बेठा, मोय कर्म कर  
हारीजी ॥२०॥ जुग तारण ने जोती जामण, ध्यायो  
उज्जवल ध्यानोजी । मोय करम जीत्या मोरा देजी, पाम्या  
केवल ज्ञानोजी ॥२१॥ क्रोड़ पुरब को सरब आउखो,  
पान से धनुष की कायाजी । बूढ़ापो तो कदीय नी आयो,  
देखो पुन की वातांजी ॥२२॥ उपास एकासणा कदीय ना  
कीधा, आमल नेवली नेमीजी, खाता पीता मोरादेजी मुगत  
तणा सुख लीनाजी ॥२३॥ अणी चोबीसी में सघला  
पेला, शिव नगरी में पोताजी । मोरा-देवी मुगते पोता,  
हाथी ऊपर बैठाजी ॥२४॥ समत अठारे वरस इक्यासी,  
मेडते नगर चोमासोजी । कातिक विदी सातम ने गुण  
गाया जे नर पामे साताजी ॥२५॥

## श्री महावीर स्वामी का चोढालिया

ढाल १ सिद्धारथ कुले तू उपन्यो, त्रिशलादे थारी  
मातजी । वरशी दान देई करी, संयम लीधो जगन्नाथजी ॥  
थें मन मोह्युं महावीरजी ॥१॥ कंचन वरणी छे कायजी,  
नयन न धापे जी निरखंता । दिठड़े आवे छे दायजी ॥२॥  
आप अकेला संयम आदर्यो, उपन्यो चोथो रे ज्ञानजी ।



उत्कृष्ट तप में आदर्शों, धरता निर्मल ध्यानजी ॥३॥ उग्र  
 विहार में आदर्शों, केई वास रह्या वनवासजी । केई वासा  
 वस्ति में रह्या, न रह्या एक ठामे चोमासजी ॥४॥ प्रभु  
 पहिलो चोमासो थें कियो, अड्डी गाम मुझारजी । दूजो वाणीज  
 गाम में, पंच चम्पा सुखकारजी ॥५॥ पंच पृष्ठ चम्पा कर्या,  
 विशाला नगरी माँ तीनजी । राजगृही मां चवदे कर्या,  
 नालंदे पाड़े लयलीनजी ॥६॥ छे चोमासा मिथिला कर्या,  
 भद्रिका नगरी मां दोयजी । एक कर्यो रे आलंभिया, सावर्थी  
 नगरी एक होयजी ॥७॥ एक अनारज देश मां अपापा  
 नगरी एक जाणजी । एक कर्यो पावापुरी में, जठे पहीत्या  
 निरवाणजी ॥८॥ हस्तीपाल राजा इस वीनवे, हूं तुम चरणा-  
 रो दासजी, एत शाला म्हारे सूझती आप करोने चोमासजी  
 ॥९॥ चालीस चोमासा शहर मां, दाख्यां देश नगर नां  
 नामजी । एक अनारज देशमां, एक चोमासुंवली गामजी  
 ॥१०॥ प्रभु गाम नगर पुर विचर्या, भव्य जीवांरा भाग्यजी ।  
 मारग बताव्यो मोक्षनो, कियो उपगार अथागजी ॥११॥  
 साड़ा बार वरसां लगे, ऊपर आधोरे मासजी । छदमस्थ  
 रह्या प्रभु एटलुं, पछी कर्यो केवल ज्ञान प्रकाशजी ॥१२॥  
 वर्ष वयालित पालियो, संयम साहस धीरजी । त्रीस वरस  
 घरमां रह्या, मोक्ष दायक महावीरजी ॥१३॥ पावापुरी  
 मां पधारिया, नर नारी हुआ उल्लासजी । ऋषि राय-  
 चन्दजी इस वीनवे, हूं आयो प्रभुजी ने पास जी ॥१४॥

## ॥ ढाल दूसरी ॥

शासन नायक वीर जिणंद, तीरथ नाथ जाणे पूनमचन्द ।  
 चरणे लागे ज्यारे चोसठ इंद्र, सेवा करे ज्यारी सुर नर  
 वृंद थे अबको चोमासो स्वामीजी अठ्ठे करो पावापुरी  
 से पग आधो मत धरोजी, अठ्ठे करो अठ्ठे करो २ जी थें  
 चरम चोमासो स्वामीजी अठ्ठे करोजी ॥१॥ हस्तिपाल  
 राजा विनवे कर जोड़, पूरो प्रभुजी म्हारा मनडारो  
 कोड़ ॥ शीश नमाय ऊभो जोड़ी हाथ, कवणा सागर वाजो  
 कृपाजी नाथ ॥२॥ रायनी राणी विनवे राजलोक, पुण्य  
 जोगे मल्यो सेवानो संजोग ॥ मन वांछित सहू मलियां काज,  
 थें दया करो मुजसांमु जोवो जिनराज ॥३॥ श्रावक  
 श्राविका कई नर नार मली २ विनती करे बारम्बार ।  
 पावांपुरी मां पधारया वीतराग प्रगटी पुण्याई म्हारा  
 मोटाजी भाग्य ॥४॥ बलि हस्तिपाल राजा विनवे भूपाल,  
 प्रभुजी थें छो दीनदयाल । सूझती एक म्हारे म्होटी छे शाल,  
 हवे लागी गयो छे वरषाजी काल ॥५॥ मानी विनती प्रभु  
 रह्या चोमास, पावांपुरीमां हुओ हरष उल्लास । गोतम  
 गणधर गुरांजी ने पास निशदिन ज्ञान नो करेजी अभ्यास  
 ॥६॥ साधु अनेक रह्या कर जोड़, सेवा करे सदा होड़ाजी  
 होड़ । चवदे हजार चेला रत्नारी माल, दीक्षा लीधी छोड़ी  
 माया जंजाल ॥७॥ बड़ी चेली चन्दनवालाजी जाण, हई  
 कुमारी महासती चतुर सुजाण । मोतीनी माला छत्रीश

हजार, सघली में बड़ी साध्वी सिरदार ॥८॥ चारों ही  
 संध सेवा नित्य करे, प्रभुजी ने देखो २ अखिया ठरे । नव  
 मल्लि ने नव लच्छीजी राय, ज्यारा दर्शन केरी चित्त में  
 जाय ॥९॥ संध सघलारे हुई मन रंग रली, पुण्य योगे  
 प्रभुजी नी सेवा मली । ऋषि रायचन्दजी बिनवे जोड़ी  
 हाथ थें करुणासागर बाजो कृपाजी नाथ ॥१०॥ शहर  
 नागोर सां कियोजी चोमास, प्रभुजी देज्यो मने मुगतिनो  
 वास । हुं सेवक तुमे साहिब स्वाम म्हारे ऊपर देवाशुं  
 नहि कोई काम ॥ ढाल तीसरी ॥ शासन नायक श्री महावीर,  
 तीरथ नाथ त्रिभुवन धणी । पावापुरी में कियो चरम  
 चोमास, हुई मोक्षदायकरी सहिमा घणी । गीतम ने मेल  
 दियो म्हावीर, देवशर्मा ने प्रतिबोधया ॥१॥ उत्तराध्ययन  
 नां अध्ययन छत्रिश, कातिक बदी अमावस्या कह्यां । एक  
 सोने बली दश अध्ययन, सूत्र विपाक तणां लह्यां ॥२॥  
 पोसा किधा श्री वीरजी नी पास, देश अठारना राजीया ।  
 नव मल्लि ने नव लच्छीजी राय, वीरना भगता वाजिया  
 ॥३॥ प्रभु शासन ना सिरदार, सर्व संधने संतोष ने । शील  
 पहार लगे देशना दीध, पछी वीर विराज्या मोक्ष में ॥४॥  
 तीन वरस ने साड़ा आठ मास, चोथा आराना बाकी रह्या ।  
 दिन दोय तणो संसार, मौन रही मुगते गया ॥५॥ इन्द्र  
 आव्याजी चित्त उदास, देव देवी ना साथ सैं । जाणे जग-  
 मन लग रही ज्योत, अमावस्यानी रात में ॥ ६ ॥ मुगति

पहोत्या एकाएक मात से हुवा ज्यारे केवली । चवदे से  
 साध्वियां हुई सिद्ध, हुं सहुने वांदु मन रली ७॥ रह्या  
 त्रीस वरस घर मांय वर्ष वेंतालि संयम पालियो । प्रभु  
 जग तारण जगदीश, दया मार्ग अजुवालीयो ॥८॥ होजी  
 देव देवी ने बलि इन्द्र, निर्वाण तणो महोच्छव कियो ।  
 अरिहन्त नो पडियो विजोग, सुर नर नो भरयो हियो  
 ॥९॥ साधु साध्वी करता शोक श्रावक श्राविका पण घणा ।  
 भरत क्षेत्रमाँ पडियो विजोग, आज पछी अरिहंत तणो  
 ॥१०॥ पछी वेठा सुधर्मा स्वामी पाट, चारों ही संघ  
 चरण सेवता ॥ ज्यारी पालता अखंडित आण, सेवा करे  
 देवी ने देवता ॥११॥ मुगते पहोत्या श्रीमहावीर, प्रभु  
 सुख पाय्या छे शाश्वतां । ऋषि रायचन्द कहे एम, म्हारे  
 अरिहन्त वंचन नी आसता ॥ ढाल चौथी ॥ श्री महावीर  
 पहोत्या निर्वाण, गोतम स्वामीए वातजजाणी । गुरांजी थें  
 मने गोड़े न राख्यो ॥टेर १॥ मुगति जावण रो नाम न  
 दाख्यो ॥२॥ हुं सधला पहेला हुवो थारो चेलो, इण अवसर  
 आधो किम मेल्यो ॥३॥ प्रभु तुम चरणे म्हारो चित्त लाग्यो,  
 पण थें मने मेल दियो आगो ॥४॥ मने दरशन आपरो  
 लागतो प्यारा, आप पहोत्या निर्वाण मने मेल दियो न्यारो  
 ॥५॥ आपे तो मुजशुं अंतर राख्यो, पिण में म्हारा मनरो  
 दरद न दाख्यो ॥६॥ हुं आडो मांडीने न झालतो पल्लो,  
 पण साहिब काम कियो तुमे भल्लो ॥७॥ हुं तुमने अंतराय

न देतो, सुगति में जग्या वहेंची न लेतो ॥८॥ हुं सकड़ाई  
 न करता काई, आप साथे हुं मोक्ष में आई ८ अब हुं  
 पूछा करशुं किण आगे, प्रभु म्हारो मन एक थाशुंज लागे  
 १० म्हारो सांसो कहो कुण टाले, आप बिना पाखंडी ना  
 मद कुण गाले ॥११॥ हुं तो चवदे पूरब ने चौनाणी, पिण  
 मोहनी कर्म लपेट्यो आणी ॥१२॥ इसा गोतम स्वामीए  
 किया विलापात, एमोहनी कर्मनी अचरिज वातो ॥१३॥  
 हवे मोहनी कर्म दूरे टाली, गोतम स्वामीए सुरती संभाली ।  
 वीतराग राग द्वेषशुं जीत्या ॥१४॥ म्हारा चित्तमा आई गई  
 चित्ता ॥१५॥ तिणि वेला निर्मल ध्यानज ध्यायो, केवल  
 ज्ञान गोतम स्वामी पायो । १६॥ बारे बरस रह्या केवल  
 ज्ञानी, बात ज्याशुं काई न रही छानी । १६॥ गोतमे पण  
 कियो सुगति में वासो, संसार नो सर्व देखे तमासो ॥१७॥  
 जेणि राते सुगति गया वर्धमान, इन्द्र भति ने उपन्युं केवल  
 ज्ञान ॥१८॥ तिण दिन थीए बाजी दीवाली, महोटो दिन ए  
 संगल माली ॥२०॥ रात दिवाली नो शियल थें पालो बली  
 रात्रि भोजन करवा टालो ॥२१॥ ऋषि रायचन्द कहे सुणो  
 हो सुज्ञानी, दया रूप दिवाली थें लीज्यो मानी ॥२२॥

### अरिहन्त स्तुति

मनाऊं मैं तो श्री अरिहंत महंत ॥टेरा॥ तरु अशोक  
 जांको अवलोकत शोक समूह नशंत । सुरकृत बाण वरण  
 ने अचित सुमन वरषंत ॥१॥ अर्ध मागधी वाणी

जांकी योजन इक पर्यंत । सुनत अमर नर पशु हिल मिल  
 के समझ सुबोध लहंत । २। मुनिमन समसित चमर अमर  
 गण प्रमुदित हवैं डारंत । स्फटिक रत्न के सिंहासन पर  
 त्रिजग पति राजंत । ३॥ प्रभावलय तम प्रलय करन हित,  
 दिनकर सम दमकंत । पृष्ठ भाग रहि प्रभुजी केसो, प्रबल  
 प्रकाश करंत ॥४॥ गगन मांहि घन गर्जारव सम दुंदुभि  
 शब्द वजंत । तीन छत्र शिर सोहैं ताते तूं त्रिभुवन को  
 कंत । ५॥ तव सुमरे सुख संपति पावे, नर सुर पद प्रणमंत ।  
 अष्ट सिद्धि नव निधि घर प्रगटे तेरो जाप जपंत ॥६॥  
 माधव मुनि कर जोड़ वीनवे, विनय सुनो भगवंत । ऋद्धि  
 वृद्धि बुद्धि वैभव देवो अरु सुख सादि अनन्त । ७॥

## सिद्ध स्तुति

सेवो सिद्ध सदा जयकार । जांसे होवे मंगलाचार ॥८॥  
 अज अविनाशी अगम अगोचर, अमल अचल अविकार ।  
 अन्तर्यामी त्रिभुवन स्वामी, अमित शक्ति भंडार ॥९॥ कर  
 पण्डु कमंड अङ्गुण, युक्त मुक्त संसार । पायो पद परमिड तास  
 पद, वंदो वारंवार ॥१०॥ सिद्ध प्रभु को सुमरण जग में,  
 सकल सिद्ध दातार । मन वांछित पूरन सुर तरु सम चिता  
 चूरन हार ॥११॥ जपे जाप योगीश रात दिन, ध्यावे हृदय  
 मझार । तीर्थकर हूं प्रणमें उनको, जब होवे अणगार ॥१२॥  
 सूर्योदय के समय भक्तिधुत, थिर चित दृढ़ता धार । जपे  
 सिद्ध यह जाप तास घर, होवे ऋद्धि अपार ।

स्तुति ये पढ़े भाव से, प्रतिदिन जे नरनार । सो दिव शिव  
 सुख पावे निश्चय, बना रहे सरदार ॥६॥ 'माधव' मुनि  
 कहें सकल संघ में बड़े हमेशा प्यार । विद्या विनय विवेक  
 समन्वित, पावे प्रचुर प्रचार ॥७॥

### श्री ऋषभदेव स्तुति

भगवान् मरुदेवी के लाल मोक्ष की राह बताने वाले,  
 राह बताने वाले आनन्द बढ़ाने वाले । ढेर । लीना अवधपुरी  
 में अवतार, जग में छा गया आनंदकार । सुर नर बोले  
 जय २ कार, सारे जिन गुण गाने वाले ॥१॥ जग में था  
 अज्ञान महान, तुमने दिया सृष्टि को ज्ञान । करके मिथ्या-  
 मत का भान, केवल ज्ञान उपाते वाले ॥२॥ तुमने दिया  
 धर्म उपदेश, जिसमें राग द्वेष नहीं लेश । तुम हो ब्रह्मा  
 विष्णु महेश, शिव मारग दरशाने वाले । ३। जग जीवों पे  
 करुणा धार, तुमने दिया मंत्र नवकार । जिनसे हो गये  
 भवदधि पार, लाखों निश्चय लाने वाले ॥४॥ वैरी कर्म  
 बड़े बल वीर, देते सब जीवों को पीर । न्यामत हो रहा  
 अधम अधीर, तुम हो धीर बंधाने वाले ॥५॥

### ( श्री मन्दिर स्वामी का )

महाविदि क्षेत्र विराजिया ने श्री श्री मंदिर सामीजी  
 प्रभु दुखसा आरो पांचमो ने मैं दरसनरा कामीजी, श्री  
 मंदिरजी ने वांदस्या बेरमानजीन-वांदसा ॥१॥ काया धनुष्व  
 थाकी पांन सोने चवर छत्र दोय बीजेजी प्रभु चोसट इन्द्र

इन्द्राणियां देख २ ने रिझोजी ॥२॥ प्रभु जल विना तरसे  
मोरिया ने, चँदनिना चाँद चकोरोजी, प्रभु में तरसुं जिनराज  
विना मारो काँईयनी चाले जोरोजी ॥३॥ प्रभु में दर्शन की  
सावली, माने वणेरी होसोजी प्रभु अणी भवतो में आयसकुं  
नहीं रेऊं तुम्हारे पासोजी ॥४॥ साँची वाणी जिनराज कीने  
दुजी सरदा खोटीजी, प्रभु सेवा न पाई सत गरुतणी मारे  
यही उणायत मोटीजी ॥५॥ प्रभु विनतड़ी अब धारजो ने  
अर्ज करुं दोई हातोजी मारी आवागमन अलगी करो  
सोवांता की एक वातोजी ॥६॥ प्रभुदेव घणा ही धोकीयां ने  
सरग नरक पतालोजो प्रभु देव नहीं तुम सारखा ने तीन  
लोक उजवालोजी ॥७॥ संवत उगणी से बावना ने भुसी  
शहर चौमासजी पुज्य जेमलजी का प्रसादसु में जोड़या  
दोनों हाथोजी ॥८॥

### समकित-लावणी अष्टापदी

भूप श्रेणिक समकित राच्यो, विमल जिन मारग ने  
जाच्यो ॥६॥ टेर ॥ सम्यक्त्व के दूषण पण टाले, पंचलक्षणयुत  
नित चाले । यतन षट् समकित के झाले, जैन मग जग में  
उजियाले ॥६॥ दोहा ॥ एक दिन इन्द्र प्रशंसिया, सभा सुधर्मी  
मांय । क्षापिक समकित के धारक हैं, श्री श्रेणिक महाराय ।  
डिगातां पड़े नहीं पाछो ॥७॥ मिथ्याती सुर एक सुन करके  
डिगावा आयो हरष धरके । करी तब वन्दन जिनवर को,  
आवतां भूपति निज घर को ॥ दोहा ॥ मुनिवर वेष बनाय



के, खान्धे लीनी जाल । सन्मुख होकर भूपति आगे, चाले  
 'दव २ चाल । देखके नृपति मन लाज्यो । २॥ अरे तू' लिंग  
 यती धारी, बना क्यों शठ भ्रष्टाचारी ? सहस चउदश सब  
 अणगारी, मत्स्थ निशि लावे नित मारी ॥दोहा॥ खुद पोते  
 तू' दुर्गुणी, निन्दक है चण्डाल । गुणिजन गोतम आदिक  
 मुनि पे, कूड़ा देवे आल । फिरे नर कर्मा वस नाच्यो  
 ॥३॥ देव तब लाखे ज्ञान धरके, डिग्यो ना श्रेणिक तिल  
 भरके साधवी वेष पुनः करके, चली मतवाली मन हरके  
 । दोहा दृग कज्जल पट्ट सूक्ष्म है, जावे पूरा मास । उतरी  
 गज से कीजे वन्दन, मिल्यो जोग यह खास । कहे यों मंत्री  
 पद माच्यो ॥४॥ राय कहें फिरती किम आजे, प्रसूति द्रव्य  
 लेन काजे । घरोघर फिरती नहीं लाजे, भुवन मुज मिलसी  
 सब साजे ॥दोहा चन्दनबालादिक सभी, सतियां छत्तीस  
 हजार । किन २ को तू' साज देयगा, करती अत्याचार ।  
 वचन ये मत मानो काचो ॥५॥ राय कहे अवगुण मत  
 बोले, साधवी सबही अनमोल । विषय में दुष्टन तू' डोले,  
 त्याग मणि कांच लियो खोले ॥ दोहा डिग्यो नहिं त्रियोग  
 से, जाण्यो अनुपम धीर । मेरुगिरि सम अचल धर्म में,  
 डिगे नहीं वर वीर । धन्य तुम नियम लियो आछो ॥६॥  
 प्रसन्न सुर भूपति पे थाया, हृदय का संशय विनशाया ।  
 अमूल्य युग गोला पग ठाया, नमन कर सुर स्थाने धार्या  
 दोहा॥ नन्द सूरेश्वर गुरु भला, भव्य जीव हितकार ।

तास प्रसादे कृष्ण मुनि' कहे, समकित है सुखकार । लख्यो  
जिनवर को पथ सांचो ॥७॥

## आगम काल की चौवीसी

कहूं आगम काल माही जिनन्द चौवीसी सुखदाई । टेरा॥  
प्रथम श्री पद्मनाथ स्वामी, दूजा सुरदेव अन्तरयामी । तीजा  
सुपार्श्व शिवगामी, चौथा संभव है अभिनामी, श्रवण भुतीजी  
पांचमा, छट्ठा देवसुद्य जाण । उदयनाथ, पेंढाल नाथजी,  
तजसी विषय विकार । १॥ पोटीला मुनिवर को ध्याऊं,  
श्रीसंत कीर्ति चित लाऊं, मुनि सुव्रतजी को मन ठाऊं,  
अमंमाप्रभुजी को पहचानूं । विखेनाथ प्रह्लादजी जिनन्द  
थया दस चार, विमल मल्ल और चन्द्रगुप्तजी लेसी संयम  
भार । २॥ सतरमां सुमतिनाथ ध्याऊं, संवरप्रभुजी को  
पहचानूं, यशोधर जिन दुःख मिटवाया बीसवां विजयनाथ  
राया । निर्मल मन इकवीसमां, होसी देव पिपाड़, अनन्त-  
वीर्य और भद्रकिरतजी लेसी पद निर्वाण ॥३॥ प्रथम  
श्रीश्रेणिक राय ध्याऊं श्रीसुपार्श्व चित लाऊं, पोटीला  
मुनिवर को ध्याऊं । द्रड़ पईना जाणजी कार्तिक शेठ बख्ताण,  
शंख श्रावक होसी सातमां आठमां आनन्द जाण ॥४॥  
सुनन्दा श्रावक नवमा ध्याऊं, श्रीसंत कीर्ति चितलाऊं,  
देवकी मात कृष्ण जाया कृष्ण द्वादशमां जिनराया । बलभद्र  
और रोहिणी सुलसा सोवन जाण, रेवन्ती गाथा पतीजिकेई  
सोलेहि जिनन्द बख्ताण ॥५॥ इंगाली पिंगाली यासी दिपायण

जिनरख पद पासी, करण को जीव सुगत वासी, नारद मुनि  
 सुगत्यां में जासी । भ्रूँबड़ जिन बावीसमां दारू मुंड बखाण,  
 चर्म तीर्थकर होसी स्वाथ्या पुन्य तणे परसाद, ६ आवती  
 सर्पणी काल मांही जन्म जहां लेसी सुखदाई, देश यो दक्षिण  
 भरत मांही, जनम जहां लेसी सुखदाई । चार तीर्थों ने  
 थापसी कर कर्मों का नाश, अजर अमर पद पावसी, जी कई  
 लेसी सुख भगपूर ॥७॥ संवत् उगणीसा के मांही, सालत्रेपन  
 है सुखदाई । मास आसोज मिल्यो आई, कजोड़ीमल मिल  
 करके गाई । शुक्ल पक्ष तेरस तिथिवार बड़ी रविवार आगम  
 काल मांही होसी तीर्थकर जांरा किया बखाण । ८॥

### ... प्रभु स्तुति ...

कहो भ्राता जगतत्राता, प्रभु महावीर की जय हो । टेरा ।  
 धर्म दाता पिता माता, प्रभु महावीर की जय हो ॥टेरा॥  
 त्रिकालिक द्रव्य त्रैलोकी चराचर जो पदारथ है । सर्व  
 दर्शी सकल ज्ञाता ॥ १ ॥ गरीबों पे दया करके, दिया उपदेश  
 तिरने का । अराधे स्वर्ग शिवपाता ॥२॥ वीरद्वानी सुधा-  
 सानी करे मिथ्यात्व ग्रह हानी । निजातम बोध की दाता  
 ॥३॥ स्यादवादी अनेकान्ती, वचन अविरुद्ध श्रीजी के ।  
 सुने सब भ्रम मिट जाता ॥४॥ 'अमी' चरणों के चाकर  
 को दया करके दर्श दीजे । रहे आनंद सुखसाता । ५॥

### बड़ी मंगलिक

अष्ट चब्ध नव नीध भंडार गोतम समरया सुख संपत



अनजान । उनको कौन सुझावे । १॥ मोती से थाल भरकर  
 यों कहे प्रभुजी ले लीजो । वस्तर आभरण करें भेट । जिन  
 पीछे फिर जावे ॥२॥ हाथी रथ घौड़ा को सिंगार कहे  
 प्रभु आप विराजो । सुन्दर कन्या से कीजे व्याव जो चाहे  
 फरमावें ॥३॥ हंस कुंवर ने इक्षु रस का प्रभु को पान कराया  
 उस दिन से हुई अक्षय तीज सब जन हर्ष मनावे ४ गुह  
 प्रसादे मुनि चौथमल सब जन जय बोलो । हुई सोने की वर-  
 सात दुन्दुभी देव बजावे ॥५॥

### रखियां का स्तवन

रखियां मनाओ प्यारे, धर्म बचाना है तेरा ॥ राखी  
 के कच्चे धागे, दज्ज बंधन से आगे । पूरा समर्पण मांगे,  
 धर्म बचाना १ छाया ज्यों हरियाली, फूली क्या गुण  
 की डाली, आत्मा पवन के माली । २ । अन्याय नमूची  
 करता, मुनिगण पर ईर्षा धरता । घट पाप का भरता ॥३॥  
 मुनियों को हुक्म सुनाया, राज्य तजो फरमाता । अल्प  
 अवधि दर्शाता ॥४॥ संघ सभी घबराया, बहुविध नृप को  
 समझाया । कुछ नहीं नतीजा आया ॥५॥ शासन पर संकट  
 भारी, कौन करे निस्तारी । नैया पड़ी मज्जधारी ॥६॥  
 वैक्रिय लब्धि के धारी, विष्णुकुमार उवारी । नैया उन्होंने  
 तारी ॥७॥ वे नृप से मांगे यही, तीन चरण की मही । नृप  
 ने कह दी सही ॥८॥ उत्तर वैक्रिय के द्वारा, लीना भूमण्डल  
 ॥९॥ शासन उन्होंने तारा ॥१०॥ संकट दूर नसाया, राखी

की पर्व मनाया । आनन्द घर २ में छाया ॥१०॥ राखीका  
पर्व दिखाता, कर्तव्य मार्ग बताता । रखिये धरम हे आता ।

## देवकी राणी का भ्रूणा

इम झूरे देवकी राणी । या तो पुत्र बिना विलखाणीरे  
॥टेरा॥ मैं तो सातो नंदन जाया पण एक न गोद खिलायारे  
घर पालणो नहींरे वंधायो नहीं मधुर हालरियो गाओरे,  
नहीं गुधरा चुखणी वसाया, झूमर पीण नहींरे बंधाईरे ।  
नहीं गेणा कपड़ा पेंराया, नहीं झंगल्या टोपी सीवायारे,  
नहीं काजल आंखज आंजो, नहीं स्नान करीने जिमायो रे ।  
नहीं गाल दामणा दीधा वली चांद सूरज नहीं कीधा रे,  
नहीं स्तन पयपान करायो नहीं रुठा ने मनायोरे । मैं तो  
कड़िया नहीं रे उठायो, नहीं अंगुली पकड़ चलायो रे । मैं  
तो घंघुं कहीं ना डरायो, नहीं गुद गुल्या पाड़ हंसाया रे ।  
मुख कवा चवा नहीं दीना, नहीं हरष वारणा लीधा रे ।  
नहीं चकरी भमरा मंगाया, नहीं गुलिया गेंद वसाया रे ।  
मैं तो जन्म तणा दुख देख्या, गयो निस्फल जन्म अलेख्यो रे ।  
मैं अभागण पुण्य न कीधा, तीणथी सुत विछड़ा लीधा रे ।  
गले हाथ नजर है धरती, आंखे आंसू भर २ झरती रे ।  
वंदन किसन पघारे, माता ने उदास निहारे रे । कहे  
व किम दुख पावो, माताजी मुझे फरमावो रे ।

## पंच परमेष्ठि स्तुति

प्रेमथी करुं अरिहन्त देवनो ध्यान में

अनजान । उनको कौन सुझावे ॥१॥ मोती से थाल भरकर  
 यों कहे प्रभुजी ले लीजो । वस्तर आभरण करें भेट । जिन  
 पीछे फिर जावे ॥२॥ हाथी रथ घोड़ा को सिंगार कहे  
 प्रभु आप विराजो । सुन्दर कन्या से कीजे ब्याव जो चाहे  
 फरमावें ॥३॥ हुंस कुंवर ने इक्षु रस का प्रभु को पान कराया  
 उस दिन से हुई अक्षय तीज सब जन हर्ष मनावे ४ गुव  
 प्रसादे मुनि चौथमल सब जन जय बोलो । हुई सोने की वर-  
 सात दुन्दुभी देव बजावे ॥५॥

### रखियां का स्तवन

रखियां मनाओ प्यारे, धर्म बचाना है टेरा ॥ राखी  
 के कच्चे धागे, दृष्ट बंधन से आगे । पूरा समर्पण मांगे,  
 धर्म बचाना १ छापी ज्यों हरियाली, फूली क्या गुण  
 की डाली, आत्मा पवन के माली । २ । अन्याय नमूची  
 करता, मुनिगण पर ईर्षा धरता । घट पाप का भरता ॥३॥  
 मुनियों को हुक्म सुनाया, राज्य तजो फरमाता । अल्प  
 अवधि दर्शाता ॥४॥ संघ सभी घबराया, बहुविध नृप को  
 समझाया । कुछ नहीं नतीजा आया ॥५॥ शासन पर संकट  
 भारी, कौन करे निस्तारी । नैया पड़ी मझधारी ॥६॥  
 वैक्रिय लब्धि के धारी, विष्णुकुमार उवारी । नैया उन्होंने  
 तारी ॥७॥ वे नृप से मांगे यही, तीन चरण की मही । नृप  
 दी सही ॥८॥ उत्तर वैक्रिय के द्वारा, लीना भूमण्डल  
 । शासन उन्होंने तारा ॥९॥ संकट दूर नसाया, राखी

का पर्व मनाया । आनन्द घर २ में छाया ॥१०॥ राखीका  
पर्व दिखाता, कर्तव्य मार्ग बताता । रखिये धरम हे भ्राता ।

## देवकी राणी का भ्रूणा

इम झुरे देवकी राणी । या तो पुत्र बिना विलखाणीरे  
॥टेरा। मैं तो सातो नंदन जाया पण एक न गोद खिलायारे  
घर पालणो नहींरे बंधायो नहीं मधुर हालरियो गापोरे,  
नहीं गुघरा चुखणी वसाया, झूमर पीण नहींरे बंधाईरे ।  
नहीं गेणा कपड़ा पेंराया, नहीं झंगल्या टोपी सीवायारे,  
नहीं काजल आंखज आंजो, नहीं स्नान करीने जिमायो रे ।  
नहीं गाल दामणा दीधा वली चांद सूरज नहीं कीधा रे,  
नहीं स्तन पयपान करायो नहीं रुठा ने मनायोरे । मैं तो  
कड़िया नहीं रे उठायो, नहीं अंगुली पकड़ चलायो रे । मैं  
तो घंघुं कहीं ना डरायो, नहीं गुद गुल्या पाड़ हंसाया रे ।  
मुख कवा चबा नहीं दीना, नहीं हरष वारणा लीधा रे ।  
नहीं चकरी भमरा मंगाया, नहीं गुलिया गेंद वसाया रे ।  
मैं तो जन्म तणा दुख देख्या, गयो निस्फल जन्म अलेख्यो रे ।  
मैं अभागण पुण्य न कीधा, तीणथी सुत विछड़ा लीधा रे ।  
गले हाथ नजर है धरती, आंखे आंसू भर २ झरती रे ।  
पग बंदन किसन पघारे, माता ने उदास निहारे रे । कहे  
आमीरिख किम दुख पावो, माताजी मुझे फरमावो रे ।

## पंच परमेष्ठि स्तुति

प्रथम प्रार्थना प्रेमथी करुं अरिहन्त देवतो ध्यान में



घरुं । सकल जगतना सामी छो खरा अरर नाथजी आप  
ईश्वर ॥१॥ शरण राखजो सिद्ध साश्वता अधिक अन्तरे  
राखु आसता, कर्म पास को त्रास तोड़वा । अरर वैरी नो  
संग छोड़वा । २। अनूप ज्ञान आचार्य ओपता, धर्म ध्यान नो  
बीज चोपता । कर ग्रही करुं विनती सदा अरर नाथजी  
आपो संपदा दिल वस्या उपाध्यायजी खरे, लली २ नमुं हूं  
प्रतक्षरे । सकल धर्मना धोरी स्वामरे, अरर तोड़ियो क्रोध  
कामरे । ४। श्रमण सर्वानी सेव में सजूं सुध मने भला भाव  
थी भजूं गुणनिधि गुरु ज्ञानी आप छो अरर कर्मना कष्ट  
कापसो । ५। सरस्वती मया शुद्ध दो गीरा, दिल न आणस्यो  
दोष माहरा । चम्पालालनी गहन वीनती, शरण सत्य दो,  
निरमली मती ॥६॥

## चार शरणा

प्रह उठी ने समरिये हो भवियण मंगलिक शरणा चार ।  
आपदा मिटे संपदा हुवे हो भवियन दोलतनां दातार ॥८॥  
हृदय मां राखिये हो भवियन मंगलिक शरणां चार ॥१॥  
अरिहन्त सिद्ध साधु तणा हो भ० केवली भाषित धर्म । ए  
शरणां नित ध्यांवता हो भ० तुटे आठों कर्म ॥२॥ वाटेघाटे  
चालतां हो, भ० रात दिवस मझार । गाम नगरपुर विचरतां  
हो भ. विघ्न निवारण हार ॥३॥ ए चारों सुख कारिया हो  
भ. ए चारों जयकार ए चारों उत्तम कल्या हो भ., ए चारों  
कार ॥४॥ डायण सायण भूतड़ा हो भ., सिंह चित्रा ने

दूर । वैरी दुश्मन चोरटा हो भ. रहते सघला दूर ॥ ५ ॥  
 सखी शरणारी आसता हो भ. नेड़ी नहीं आवे रोग ।  
 आनंद वरते इण नामथी हो भ. वहाला तणो संयोग ॥ ६ ॥  
 सुख साता वरते घणी हो भ. जे ध्यावे नर नार । पर भव  
 जाता इण जीवने, हो, एह तणो आधार ॥ ७ ॥ मन चितित  
 मनोरथ फले, हो वरते क्रीड कल्याण । शुद्ध मन से  
 ध्यावतां, हो, निश्चय पद निरवाण ॥ ८ ॥ इण सरीखो  
 सरणो नहीं, हो भवियण, इण सरीखो नहीं नाम । इण  
 सरीखो मित्र नहीं, हो गाम नगर पुरठाम ॥ ९ ॥ दान शियल  
 तप भावना, हो भ. इणी जग में तत्व सार । पारो अराधो  
 भावसुं, हो भ. पामो मोक्ष दुवार ॥ १० ॥ जोड़ करी है  
 जुगत सुं, हो पाली सेखे काल । ऋषि चौथमलजी इस भणे,  
 हो भ. सुणजो बाल गोपाल ।

## वीर प्रभु का जन्माधिकार

हारे सुधर्मा पति निज मन चितवे, हरण गमेंषी  
 बुलाओ रे । सामीजी को जनम भयो है, जिन मुख जोवा  
 जावोरे सामीजी ॥ १ ॥ जाने विमाण बनाय मनोहर ।  
 घटसुं घोष बजावोरे हुकम करीने वेग मोकलावो । हो धन  
 सुखा भंडार भरावोरे । आई २ दिसा छपन कुंवारी । हरष  
 २ गुण गावोरे । चार आंगुल प्रभु को नालो जी छेदी ।  
 हो व्रज हीरा से खाड़ बुरावो रे । संपत सहित निरख मुख  
 माता । चरणे शीष नमावो रे । अपछरा सब लागी एक

ओले निरख हरष सुख पावोरे । इतने सुधर्मा पति इन्द्र  
पधार्या । आईने शोष नभावोरे । भय 'सत पावो साता रत्न  
कूँख धारणी । में सुर-पति थारा गुण गावोरे । एक इन्द्र  
हाथा लेई चाल्या । एक तो छत्र धरावेरे । एक इन्द्र वज्र  
लेई चाले । वेऊ पास चंवर दुरावेरे । मेरु शिखर पर  
महोछब कीधो इन्द्राण्या हर्ष बधावोरे ।

### श्री नवकार मंत्र का छंद

सुख कारण भवियण समरो नित नवकार । जिन  
शासन आगम चवदे पुरब नो सार ॥१॥ ए मंत्र नी नहिमा  
कहतां न लहे पार सुरतए जिस चितित वांछित फल  
दातार ॥२॥ सुर दानव सानव सेवा करे कर जोड़ । भूमंडल  
विचर तारे भवियन कोड़ ॥३॥ सुर छंदे विलसे अतिशय  
जास अनन्त । पद पहिले नमिये अरिगंजन अरिहंत ॥४॥  
जे पंदरे मेदे सिद्ध थया भगवंत । पंचमी गति पहुँचा अष्ट  
करम करी अंत ॥५॥ कल अकल सरूपी पंचानंतक देह ।  
जिनवर पाय प्रणमू बीजेपद बलि एह ॥६॥ गच्छ भार  
धुरंधर सुन्दर शशिहर शोभ । करे सारण वारण गुण  
छत्रीसे थोभ ॥७॥ श्रुत ज्ञान शिरोमणी सागर जिस गंभीर ।  
त्रीजे पद नमीये आचारज गुण धीर ॥८॥ श्रुत धर गुण  
आगर । सूत्र भणावे सार तप विधि संयोगे भांखे अर्थ  
विचार ॥९॥ मुनिवर गुण जुगत्ता कहिये ते उवज्ज्ञाय ।  
चौथे नमिये अह निशि तेहना पांय ॥१०॥ पंचा श्रव

टाले पाले पंच आचार । तपसी गुणधारी वारे विषय विकार  
॥११॥ तल थावर पियर लोक मांही जे साध । त्रीविधे ते  
प्रणमं परमारथ जिणे लाध ॥१२॥ अरी करी हरि सायणी  
डायणी भूत वेताल । सभी पाप पणा से बांधे संगल माल  
॥१३॥ इण तमरयां संकट दूर टले तत्काल । इम जपे  
जिण प्रभु सूरि शिष्य रसाल ॥१४॥

### भृगा पुत्र का

सुग्रीव नगर सुहामणोजी । बलभद्र राजाजी नाम, तस  
घर रानी सृगावती जी । तस नंदन गुण धाम ये माता  
खीण लाखेणी जाय । टेरा एक दिन बैठा गोखड़ेजी, राणियां  
तणो परिवार । शीश दाजे रवि तपेजी, दीठा एक लड़ा  
अणगार ॥१॥ मुनि देखिने भव संभालियोजी, मन बसिपोरे  
वैराग । हर्ष धरीने उठियाजी, लाग्या माताजीरे पांव ॥२॥  
तुं सुखमाल सुहावणोजी, भोगो संसार ना जी भोग योवन  
वय पीछे पडियाजी आदरजो तुम जोग रे जाया, तुम बिन  
बड़ीरे छे मात ॥३॥ पाव पलकरी खबर नहीं ये माता,  
करे काल की जी बात । काल अचानक आवसीजी, ज्यूं  
तीतर पर वाज ॥४॥ रतन जड़त घर आंगणोजी, सुन्दर  
अदलाजी नार । मोटा कुल नी ऊंपतीजी, किम छोड़ी  
निराधार ॥५॥ बाधीधर दाजीरचेजी, खिण में खेह जी  
थाय । जुं संसार नी संपदाजी, देखतड़ा विरलाय ॥६॥  
पलंग पथरणो, पोढतोजी तुं भोगीरे रसाल । कनक

कचोलेजी सतोजी, कांच लडयां में आहार ॥७॥ सायर  
जल पीधा घणाजी, चूखया माता रा थान । तीरपत नहीं  
हुआ जीवड़ोजी, अधिक आरोग्यो धान ॥८॥ चारित्र छे  
जाया दोहिलोजी, चारित्र खंडा कीरे धार । दिन आदे  
जुजणोजी, औखद नहीं है लंगार ॥९॥ चारित्र छे माता  
सोहिलोजी, चारित्र सुख कीरे खान । चौदेहई राजलोक नाजी  
फेरा, टालणहार ये माता ॥१०॥ सियालेसी लागसीजी  
उनाले लु बाय । चौमासे मेला वस्त्र २ ई दुःख सह्या न  
जायरे ॥११॥ वन में माता मृगलोरे कुण करे उणरीजी  
सार । मृगला की तरे विचरताजी एक लड़ा अणगार  
॥१२॥ सात वचन ले विवरयांजी मृगापुत्र कुमार । पंच  
महाव्रत आदरयाजी ने लीधो संजम भाररे ॥१३॥ एक  
मास की संलेषणाजी ऊपनोजी केवल ज्ञान । कर्म खपाई  
मुक्ति गयाजी जांको नित्य प्रति लीजे नाम ॥१४॥

### कडुंबा की चौवीसी

राजा राणीरे कडुंबो घणोजी, दीपती कंदरा री जोड़  
संसारी सगपण जाणने काचा सूतसुं दीना तोड़ जिनेसर  
मोहणी जीत्याजी के, धन २ होगया चित्याजी । जिनेसर  
लागो छो मीठाजी, जिनेसर नेणा सुं दीठाजी ॥ टेर ॥  
ऋषभदेवजीरे दोनों वेटियांजी, भरतादिक सो पूत । सग-  
लाई संजम आदरयो, प्रभु लीना सुगत का सुख ॥ १ ॥  
जितनाथजीरे वेटो नहीं जी, सेजेई टल गयो फंद । संसारी

पुत्र झूरे घणा, नहीं आण्यो सोग संताप । २॥ संभव अभि-  
 नन्दन सुमतजीरे, तीनारे तीन तीन पूत । पदम प्रभुजी के  
 तेरे बेटा, जांके भारी घरांरा सूत ॥ ३ ॥ सुपारस नाथजी  
 के सतरे बेटा, चन्दा प्रभुजी के दशआठ उगणीस सुविध-  
 नाथजी के, जाने करतां मेल्यां विलापात ॥ ४ ॥ शीतल दोय  
 वारा, श्रीयंसजी के निन्याणुं वासु पूज । विमलनाथजी के  
 बेटो नहीं, संजम लेई मांडयो करमांसुं जुद्ध ॥ ५ ॥ अनन्त-  
 नाथजी के अठयासी बेटा, श्री धरमनाथजी के ओगणीस ।  
 डेढ़ करोड़ शांतिनाथजी के, दीपती कंवरांरी जोड़ ॥ ६ ॥  
 डेढ़ करोड़ कुंथुनाथजी के, सवाये करोड़ अरनाथ । मल्लीजी  
 कुंवारा रया, बाल ब्रह्मचारी बालक वेस ॥ ७ ॥ सगलाई  
 संजम आदरयो ज्यां के दिपती कवरारी जोड़ । मुनि  
 सुव्रतजीरे ग्यारा बेटा, संजम लेई मांडयो कर्मांसुं जुद्धा  
 । ८ ॥ नेमीजी कुंवारा रया, बलिहारी ओ नेमकुंवारा । बाल  
 ब्रह्मचारी जुग में प्रगटिया, तोरण जाई छांडी राजुलनार  
 ॥ ९ ॥ पारसनाथजीरे बेटो नहीं, श्री वीरजी के बेटो एक ।  
 पिया दरसन साथे, संजम आदरयो जमाई जंमालीरी जोड़  
 ॥ १० ॥ अजीत विमल मल्लिनाथजी, नमियनेम पारसनाथ ।  
 वीर जिनेश्वर सातमां, ज्यां के नहीं छे बेटारो फंद ॥ ११ ॥  
 सगलाई मिल सवाचार करोड़ हुवाजी, चार से ने ऊपर  
 सात, सतरे जिनजीरे अतरा बेटा, तीन बेटचारी चाली  
 छे बात । १२ ॥ संतारी सगपण जाण ने, सेवा कीधी भ

भाव । तोषण मुगत गामी हुवा, समकित ना भारी बखाण  
 ॥१३॥ खरो नाम जैन धर्म को जी, अजुताई नित नवो  
 नाम । पाप को नाम कसा काम को, जांसु पामे साठी गत  
 ॥१४॥ पाली में पानो पायो, अनुसारे कीधी जोड़ । रोख  
 चौथमलजीरी बिनती, प्रभु इतरा बेटा ने दीधा छोड़ ॥१५॥

### ( ज्ञान पञ्चमी को )

पञ्चमी तप तुम करोरे प्राणी जिस पामो निर्मल  
 ज्ञानरे । पहिलो ज्ञान ने पछी किरिया नहीं कोई ज्ञान समानरे  
 ॥१॥ नदी सूत्र में ज्ञान बखाण्यो ज्ञानना पांच प्रकाररे ।  
 मति श्रुति अवधि ने मन पर्यव केवल ज्ञान श्रेकाररे ॥ २ ॥  
 मति अठावीस श्रुत चउदे वीस अवधि छे असंख्य प्रकाररे ।  
 दोय भेद मनपर्यव दाख्युं केवल एक प्रकाररे ॥३॥ चंद्र सूर्य  
 ग्रह नक्षत्र तारा तेसुं अधिक प्रकाश रे । केवल ज्ञान समुं  
 नहीं कोई लोकालोक प्रकाशरे ॥४॥ पार्श्वनाथ प्रसाद करी  
 ने म्हारी पूरी उम्मेदरे । समय सुन्दर कहे हूं पण पामुं ज्ञान  
 को पांचमो भेदरे ॥५॥

\* तर्ज—मोहन हमारे मधुवर \*

बहिनो मंगल गीत मुख से गाया ही करो । सामायिक  
 करवाने स्थानक आया ही करो जनम घणो अनमोल महा-  
 वीर फरमावे धर्म ध्यानरे । बिना जनमयो कचरा में जावे ।  
 बगल बैठको घड़ी हाथ में लाया ही करो ॥ १ ॥ कुटुम्ब  
 बीला कोई थांके संग नहीं आती परभव में यो जीव देख-

लो एकलो जासी, गहणो कपड़ा मायने रीझाया न करो  
॥२॥ ज्ञानी गुरु व्याख्यान वाचे बहिनो सुन लीजो शिक्षा  
की बातां पे पूरो ध्यान दे दीजो तिरणो वेणा जल्दी वाणी  
सुणियां ही करो ॥३॥ कचरो बुवारो रोटी पानी काम है  
घणो, वेणा उठने काम करो मत आलसी वणो सुत्तर  
सुणिया पेला भोजन खाया ना करो ॥४॥ दान शील तप  
भावना थे हिरदा में धारो. सतगुरु की हित शिक्षा मानो,  
जीवन सुधारलो रसिक बनो थे सखीयां जिनगुण गाया ही  
करो ॥५॥

## जिनवाणी

निर्मल है यह जिनवाणी कोई सुनेगा उत्तम प्राणी ।  
आवे शोंको दूर निवारा चेतन जिनने मांज संवारा उनकी  
सत्य ही वाणी, कोई सुनेगा उत्तम प्राणी ॥१॥ काल कुशल  
नट द्रव्य पै थिरके । चिद्दर्पण में सब कुछ झलके, उतरी  
वही कहानी पाप हुए हैं जिनके हलके प्रेम भरे दिल उनके  
छलके, अमृत घट सुखदानी ॥ ३ ॥ जिनवाणी में चित्त  
रमाये भव २ पातिक मार भगाये होते अणु विज्ञानी ॥४॥

## पहेला मांगलिक

पेलो मांगलिक कहूं एक छंद अरिहंत नाम जपो मनरंग  
जपता पातिक जावे दूर-सुख सँपति पावे भरपूर । दुजो  
मंगलिक सिद्धनो जाण, जनम मरण निवारे काम । दुःख  
दालिद्र इनसे कटे भव भव नातो पातिक टले । तीजो मंग-



लिक निर्ग्रन्थ यति, गांठे कोड़ी न राखे रति । कर्म भूमि में  
विचरे जेय वीर कहे सूत्र में तेय । चोथो संगलिक मोटो  
जाण, केदली भाख्यो धर्म-प्रमाण । आगारी अणगारी धर्म  
करो दानशील, तप-भावना भावो संगलिक कहे २ सब कोय,  
जीव दया धर्म संगलिक होय । भणता पातक जावे दूर,  
मुक्तिना सुखलो भरपूर ।

### प्रभाती स्तवन

उठो २ मन जागो २ अवसर आछो आयोरे । जगमग  
जोत जगी अपने घर, केसो आनंद छायोरे, अद्भुत आनंद  
छायोरे २ ॥ टेरे ॥ काया मेरु जिन नंदन वन, गुण सुर तरु  
की छाया रे । सिद्धसुखों की अनंत लहर जहां मोक्षपुरी  
सिधायारे । आत्म स्वरूपी मान सरोवर, गुण कमल विक-  
सायारे । चेतन हंसो करे किलोला, रोम रोम हुलसायारे ।  
मिठेपन में मिसरी मीठी तिणसुं अमृत सुहायारे । मिसरी  
अमृत दोनों से भी नाम जिणंद सुवायारे । शुभ घड़ी शुभ  
वेला शुभपल, जिन शुभ ध्यान लगायारे । शुभ भावना  
शुभ श्रेणी चढ़ शुभ केवल पद पायारे । लाख आनंद मेरे  
नरभव उत्तम कोड़ आनंद जिनधायारे । अनंत आनंद मेरे  
जिन स्वरूप लख तनमन मुझ हर्षायारे । लाख मंगल मेरे  
जिनलक्ष करके, कोड़ मंगल जिनधायारे । अनंत मंगल मेरे  
रोम २ में, जिन गुण सुख प्रगटायारे । अक्षय स्वरूपी मेरी  
आत्मा, अक्षय धर्म मन भायारे । अक्षय सुख घासीलाल  
दयपूर, अक्षय भवन में गायारे ।

## कर्मा को देणो

कर्मा को देणो दिजिये जी दिजे साहुकार आल पालके छूटे नहीं जदी दीदाई छुटको थाय खबरकर देणो दिजोजी माल विराणा लायनेजी गटका कर २ खाय देणा पड़े जदी दोयला जदी दीदाई छुटको थाय ॥२॥ तीर्थकर पेला हुआजी भगवन्त श्रीऋषभदेव जानेई कर्म छोडया नहींजी जदी भुखा रह्या बारा मास ॥३॥ तीर्थकर चौबीस माजी भगवन्त श्री महावीर जानेइ कर्म छोडयो नहीं जी जदी खीला ठोक्या काना माय ॥४॥ तीर्थकर चौबीसमाजी भगवन्त वर्धमान जानइ कर्म छोडया नहीजी जदी ग्वाला रांधी पगा खीर ॥५॥ गज-सुखमाल मुनि मोटकाजी श्री वासुदेवजी का नन्द जानेइ कर्म छोडया नही जी जदी सोमल बांधी मस्तक पाल ॥६॥ खन्दक मुनिश्वर मोटका जी छकाया रा प्रतिपाल जानेइ कर्म छोडया नहीं जदी वेनोई उतारी खाल ॥७॥ दधिवाहन राजा की डीकरी जी धन २ चन्दनबाल जानेइ कर्म छोडया नही जी हाटो हाट बेचाय ॥८॥ जनक राजा की डीकरीजी धन २ सीता नार जानेइ कर्म छोडया नही जी जदी जलती अगन माए जाय ॥९॥ दशरथ राजा का डीकरा राम लछमण दोनो वीर जानेइ कर्म छोडया नही जी जदी फिरता फिरया वन नाय । १० । कृष्ण नरेश्वर राजवी जी श्री वासुदेवजी का नन्द जानेइ कर्म छोडया नही जदी विल २ करे वन माय ॥११॥ सेठ सुदर्शन राजवी

श्री राणीजी याद करे जानेइ कर्म छोडया नहीं जदि शुली  
 न्हिया जाय ॥१२॥ मेतारज मुनि मोटका जी छकायारा  
 प्रतिपाल जानेइ कर्म छोडया नही जदी मस्तक बांधी  
 आली चाम ॥१३॥ बाहुबलजी में बल घणोजी उभा जंगल  
 ध्यान लगाय जानेइ कर्म छोडया नहीं जदी श्रंग बेला  
 लिपटाय ॥१४॥ रावण मोटो राजवीजी सोनारी लंका जलाय  
 जानेइ कर्म छोडया नहीं जदी दुख देख्यो अपार ॥१५॥  
 सघला जणासु करूँ विनती जी सुणजो ध्यान लगाय नवा  
 करम बांधो मति जदी जुनाने दिजो खपाय ॥१६॥ हाथ  
 जोड़ी ने करूँ विनती सुणजो चित लगाय कर्मा को देणो दे  
 दीजो नितर या गत सब में थाय खबर देणो दीजो ॥१७॥

### वर्ण की चौबीसी

सकल कंवर दल यारदसारी, धोराजी गंग तरंग रसाला  
 धोराजी खीर समंद जल धोरा धोराजी चन्द्रकरण वसुतारा ।  
 पुष्पदंत चंदा प्रभु सामी, दोई जणा वंदुरे मुगत्यांरा गामी ॥१॥  
 कल इंद्री जिम कोयल कारी, काराजी संच मृगावति नेणा  
 काराजी काजल घेवर कारा । काराजी वेणीरा दंड रसाला  
 मुनि सुव्रत नेमीसर कारा, दोई जणा वंदुरे सदा मतवाला  
 ॥२॥ राताजी कंकु ने सुरंग प्रवाला, राताजी हंस चरण  
 मुख माला । राताजी पीकम दाड़म ओल्या राताजी कइजे  
 लम सुल्या, वास पुज पदम प्रभु सामी, दोई जणा वंदुरे  
 त्यारा गामी । ३॥ लीली वनासपति अति सोवे, लीलाजी

मुरगट मारो मन भोवे, लीलाजी मोर सकल पसु राजा ।  
लीला कइजे पाट पीरोदया पारसनाथ श्री मल्ली जिनेसर,  
दोई जणा वंदूरे सदा मंगलीक ॥४॥ पीराजी परमल चंप  
की माला, पीरा पीतंबर पेरोरे वाला, पीराजी संव मृगावती  
नेणा, पीराजी पांचुई मेरु सोदारा, रीषभ अजित संभव  
अभिनंद सुमत सुपार्श्व शीतल श्रीयंशो विमल अनंत श्री धर्म  
जिनेसर शांत कुंथुं अरु रे नेमी वीर जिनेसर, इसो लेई जीन  
सोवन वर्णा, मायड़ीरा जाया ने वंदूरे नित २ जरणीरा  
जाया ने वंदूरे नित नित ॥५॥ पांच पद परमेश्वर ध्याऊं,  
पांच सुमत म्हारो मन घणो रे सुहावे, जय २ कार हुवा  
तस मंदिर, ससियारे सरु तरु फलियां रे हम घर, कर जोड़ी  
सेवग इम विनवे, चोविस तीर्थकर तुमरा ही शरणा ॥६॥

### धर्म रुचिजी का स्तवन

घम्पा नगरी अति अनोपम धर्म रुचि ऋषि आया, मास  
खमण तप अज्ञा लेई ने, गोचरियां सिधाया । मुनिश्वर धर्म  
रिषि २ वंदू. मारा भव २ पाप नोकंदो मुनि । डेर ॥ गोचरी  
कारण फिरता मुनिश्वर, नागसिरि घर आव्या । सेजे उकड़ी  
हम घर आयो, वारणीये कुण जाय १॥ कड़वो तुंदो जेर  
हलाहल, रिषिजी ने बहराव्यो । तव ते तरीया वेगा बलियां  
खबर कोई नहीं लावे । २॥ पूरण जाणी पाछा बलिया,  
गुरुजी ने आवी बताव्यो । एवां दातारी रिषि तमे कोण  
मन्नियो, पूरण पात्र भराव्यो ॥३॥ नाना केता मु

राव्यो, भाव उलट मन आणी । चाखी गुरु ऐ नीरणो कीधो,  
 झेर हलाहल जाणी ॥४॥ आकनीमने फुटथीखारो, जो  
 मुनिवर तम खासो । निरबद कोठो झरे हलाहल, अकाले  
 मरीजासो । ५॥ अज्ञा लेइने पठण चाल्या, निरबद स्थानक  
 आव्यां । एक विंदवो मेले त्यांतो, सेश्व कीडिया मरीजावे  
 ॥६॥ आपके कारण आवडी हिंसा, मुझथी अनर्थ थावे ।  
 खीर खांड सम जाणी मुनिश्वर, तुरत आहार करी जावे  
 ॥७॥ परबल पीडा शरीरे उपनी, चालण शक्ति नाठी,  
 पादोगमन तीहां कीधो संथारो, समता दृढ मन राखी । ८॥  
 स्वार्थ सिद्धमां पोचा सुत्र भाखे, मही रमणी वेमाने । चोसठ  
 मणनो मोती लटके, करणी तणा फल जाणो ॥९॥ खबर  
 काढी गुरुजी आव्या, रिषि जी काल जो किधो । धीक २  
 नाग सरीने, मुनि ने जेहरज दिधो ॥१०॥ हुई फजीती बहु  
 कर्म बांधी, पोची नरक मुझारो । धन २ रिषीश्वर ने, कर  
 दियो खेवा पारो । ११॥

### चौथा चक्रवर्ती का स्तवन

सोभागी सुन्दर, रूप बखाण्यो थारो देवता, शक्रेन्द्र  
 महाराज कहिजे, प्रथम स्वर्ग के स्वामी सुधरमी सभा सांहि  
 नेसरे । बैठा सो सरकार । ज्ञान करीने जोवीयो सरे,  
 जंबुदीप मुझार हो ॥१॥ हथनापुर अवास कहिजे, चक्ररी  
 ो जाण रूप अनुप सुहावणो सरे, मर्त्यलोक के माय ।  
 देवमित्र आविया सरे, जोवाने तिण वार हो ॥२॥

वाल पणाथी सांभल्यो सरे, रूप तणो अधिकार, चालत २  
 हो गयो सामो बुढ़ापो अवसान । नीठ कर दरशन पामियो  
 सरे, धन जांरो अवतार हो ॥३॥ वचन सुणी बामण तणां  
 सरे, मन में आण्यो गर्व हीवड़ा तो काई देखिया सरे ।  
 किधा नहीं सिणगार, छत्र धार सिधासण वेठू जब निरखी  
 दीदार हो ॥४॥ ब्रामण दोई मिली करी सरे, वेठा एकन्त  
 जाय, चक्रवर्त सिणगार सजी ने, वेठा परीसदा बार, ब्रामण  
 वेग बुलाविया सरे, तब निरखे नजर लगाय ॥५॥ मिर  
 धूणी ब्रामण कहे सरे, नहीं रयो वह रूप, कंचन वरणी  
 काया तुमरी पलटाणी सुण भूप काची काया कारमी सरे,  
 जाणो अंधे कूप ॥६॥ वचन सुणी ब्राह्मण तणा सरे, मन में  
 आण्यो सोग, तुरत तंबोल थुंन ने देख्यो उपना सोले रोग ।  
 धिग २ पड़ो संसार ने सरे, लेणो संजम योग हो ॥७॥ छे  
 खण्ड केरा सायदा सरे, सोले संस सुर सारे सेव, चौंसठ  
 संस अंतेवरो सरे, धन भरिया भंडार अतराने छटकाय  
 ने सरे, लेणो संजम जोग ॥८॥ हयगय रथ पायक तजा  
 सरे, गज गमणी परिवार, महल बयांलिस भोमिया  
 सरे, नाटक ना क्षणकार । इतरा ने छटकाय ने सरे, लियो  
 संजम जोग ॥९॥ खबर हुई रणवास में सरे, पिऊजी लिधो  
 संजम भार चक्रवर्त संजम लियो सरे, छोड़ चल्या निर-  
 वार । नेण झरे झरणा झरे सरे, वील २ करे तीण वार

अमिय लगाओ आपकी सरे, करो रोग को नास । देव रूप  
प्रगट कियो सरे, धन जांको अवतार ॥११॥ सात सो वरस  
लगे सरे, रोग रयो तन मांय, आपो आपी खे गयो सरे,  
उपनो केवल ज्ञान । लाख वरस संजम पालने सरे, पहुंचा  
मोक्ष मुझार हो सोभागी सुन्दर ॥१२॥

### तेरह कांठिया

रतन चिन्तामणी जे भणेजी, जोर पामे नर नार जी,  
अर भव सुख लयेजी । किम छूटे कर्माना बंधजी, दूर  
तजो जी तेरे कांठिया जी ॥१॥ आलस अंग माय अति  
घणो जी, किम करे धरम ने ध्यानजी । बखाण बाणी किम  
सांभलेजी, आलसी पशुय समानजी । २॥ आलसी किम  
पड़े ज्ञान में जी, किम करे विनों ने भक्तिजी । साधु  
श्रावक की क्रिया किम करे जी, आलसी ने दुरिया मोक्षजी  
॥३॥ मोह कर्म दूजो कांठियोजी, होय रयो अंध ने धुंध  
जी । भली रे बुरी तो सूझे नहीं जी, मोह गमावे थारी  
बुद्ध जी ॥४॥ मोय सु घर धंधा में फंसी रह्योजी कदीय  
नी सुण्यारे बखाण जी । आठुं ही पेर पची रयोजी, लग  
रही खेंचा ने ताण जी ॥५॥ मोय से इन्द्र परवस रयाजी,  
रया देव्यारे आधीन जी । सेठ सन्यापति ने राजवीजी मोय  
किया पराये आधीन जी ॥६॥ सामा राणी मोय कारणें  
जी, सूरसेण कियो रे अन्यायजी । चार सो नन्याणुं  
राणियां जी, बाली सूत्र विपाक के मांय जी ॥७॥ तीसरो

अवनित कांठियोजी, अवनित जेर समान थी । वचन  
 बोले रे अलखावणाजी किम देवे सतगुरु सीखजी ॥८॥  
 मनुष्य तिर्यंच ने देवताजी, अवनित दुखियो थायजी । भूख  
 तीरसा तो काटे घणी जी, जोवो दशवकालिक रे मायजी  
 । ९॥ चौथो यो खखा कर्म कांठियोजी, घणा करे कजी-  
 याने राड़जी । तप संजम का फल खोयनेजी, खीण २'  
 खेरयो थायजी ॥१०॥ पांचमो परमादी कांठियोजी, किम  
 करे धर्म ने ध्यानजी । ज्ञान ध्यान सिखयो घणोजी जासी  
 परमाद में भूलजी ॥११॥ छटो रोगियो कांठियोजी, रोगी  
 की काया नहीं वसजी । धर्म ध्यान नहीं कर सकेजी जप  
 तप देही में से नहीं नीकले कस्सजी ॥१२॥ सातमो अवजस  
 कांठियोजी, कीने नहीं दीजिये दोषजी । भली रे केतां तो  
 बुरी लगेजी देखो कर्मा तणी गतजी ॥ १३ ॥ मान पूजा  
 कर्म कांठियोजी, सेठी झालियो मदजी । कुलकी रे हड़  
 छोड़े नहींजी, रूलसी प्राणी चारु ही गतजी ॥१४॥ वरत  
 पचखाण करतो डरेजी, सावुर्जी ने नहीं आवे दायजी ।  
 भारीरे कर्म कठोरियाजी, आड़ी आई अन्तरायजी ॥१५॥  
 साधुजी दे उपदेशनाजी, लोकां रे नहीं आवे दायजी । मरम  
 प्रींजी तो भीजी नहींजी, देखो कर्मा तणी गतजी १६॥  
 रे जीव चचल मायगोत्री, चित्त नहीं रेवे यो ठामजी  
 मनड़ी तो झोला खाई रयोत्री, देखो कर्मा तणी गतजी  
 ॥१७॥ बारमो निज कर्म कांठियोजी, किन करे धरम



ध्यानजी । साधुजी दे उपदेशनाजी । सुण २ आंखियां घुट जायजी । सुण २ नेणा घुट जायजी ॥१८॥ तेरमो समदाणी कांठीयोजी, कुटुंबतणोरे जंजालजी धर्म ध्यान कर नहीं सकेजी, लांग्यो कुटम तणो रे जंजालजी ॥१९॥ ई तेरे ही कांठीया परहरोजी, धर्म किया सुख भरपूरजी । अर भव परभव सुख लयेजी, धर्मो ने मोक्ष नजीकजी ॥२०॥ संमत १८ से ६८ मेंजी भली रे भादवड़ारो मासजी, आसकरण मुनि इम भणेजी, यो जीव पामसी मोक्षजी ॥२१॥

### काली राणी का स्तवन

काली ओ राणी सफल कियो अवतार । थे तो पाम्या हो भवदधि पार ॥१॥ कोणीक राजा नी छोटी ओ माता, श्रेणिक नृप नी नार । वीर जिनंदजी की वाणी, सुणी ने लीनो है संजम भार ॥ १ ॥ चन्दण वाला जैसा मित्या हो गुराणी, नित २ नमु चरणार । विनय करी ने भणिया अंग इग्यारा, तेनी निर्मल बुद्ध अपार ॥२॥ सुमत गुप्त शुद्ध संजम पाल्यो, चढ़ी परणामा की धार । अज्ञा लेई ने सती निज गुरणी की, तपस्या मांडी अपार ॥३॥ शरीर सकत जाणी सती ने अराध्यो, रत्नावली तप नो हार । चार लड़ी संपूरण कीनी, आठमें अंग अधिकार ॥४॥ पांच घरस तीन मास में दो दिन कम लाग्यो इतनो काल । धन्न महासती जी ने तप अराध्यो, जाने वंदना होजो वार-वार ॥५॥ आठ वर्ष कुल संजम पाल्यो, कर्म किया सहृद्वार ।

धर्म ध्यान कर नहीं सके जी, लाग्यो कुटन तणो रे जंजालजी  
॥१६॥ ई तेरे ही कांठीयां परहरोजी, धर्म किया सुख  
भरपूर जी । अर भव पर भव सुख लयेजी, धर्मो ने मोक्ष  
नजीकजी । २०॥ संमत १६ से ६८ में जी, भलो रे  
भाववडारो मास जी । आसकरण मुनि इस भणेजी, यो  
जीव पामसी मोक्षजी ॥२१॥

### काली राणी का स्तवन

काली ओ राणी सफल कियो अवतार । थे तो पाम्या  
हो भवदधि पार ॥१॥ कोणीक राजा की छोटी ओ, माता,  
श्रेणिक तप नी नार । वीर जितन्दजी की वाणी, सुणी ने  
लीनो है संजम भार ॥२॥ चन्दण बाला जैसा मिल्यो हो  
गुराणी, नित २ तमु चरणार । विनयकरी ने भणिया अंग  
इग्यारा, तेनी निर्मल बुद्ध अपार ॥३॥ सुमत गुप्त शुद्ध  
संजम पाल्यो, चड़ियों परणामा की धार । अज्ञा लेईने सती  
निज गुराणी की, तपस्या मांडी अपार ॥४॥ शरीर सकत  
जाणी सती ने अराध्यो, रत्नावली तप नो हार । चार  
लड़ी संपूरण कीनी, आठमें अंग अधिकार ॥५॥ पांच  
परस तीन मास में दो दिन कम लाग्यो, इतनो काल ।  
घन महासती जी ने तप अराध्यो, जाने वंदना होजो  
वारंवार ॥६॥ आठ वर्ष कुल संजम पाल्यो, कर्म किया सहु छार  
जनम जरा और मरण मिटाया, पोचा है मोक्ष मुझार ॥७॥  
गुण नन्दलालजी तणा, शिष्य युं गाये निलाड़ा शहर मुझार ।  
ऐसी सतीजी का समरण सेती, वरत्या हो मंगलाचार ॥८॥

## होली का स्तवन

होली खेलो रे, हारे होली खेलो रे । सुमती सु हित  
 आणी होली खेलो रे ॥ टेरे ॥ सुमत गुप्त की करो पिचकारी ।  
 संवर शील भरो पाणी रे ॥ मन मृदंग, सुरत सारंगी ।  
 मधुर गावो जिन वाणी रे ॥ नेम धर्म का दोय मंजीरा ।  
 श्रद्धा डोर करो प्राणी रे ॥ ज्ञान गुलाल अबीर ध्यान को ।  
 आठ करम करो धुल धाणी रे । सत्य सितार किरत की भेरी ।  
 चरचा चंग बजाओ रे ज्ञानी रे ॥ ऐसो फागण खेलो भव  
 प्राणी । सुखे जावो निरवाणी रे ॥ जैपुर मांहे जड़ाव कहत  
 हैं । फागण वद चवदस जाणी रे ॥ स्तवन ॥ जल जमनालट  
 जावेरे सांवरियो २ ॥ टेरे ॥ माता जसोदा सहिरे विलोवे ।  
 माखण मांगी ने खावेरे कँवरीयो ॥ दही दूध बेचण जावेरे  
 गुवालन । मार्ग में रिडसाडे रे पातरियो ॥ धेनु चराई बंसरी  
 बजाई । गोरधन नामे गिरवर धारियो ॥ लेकर दंडा मिल-  
 कर संडा, कांन कंवर जब रमण निसरियो ॥ खेलत २ गेंद  
 गई जमना में, जाय पड़ी जहां काली देहे भरियो ॥ कोई  
 नहीं काड़े सबही ठाड़े कांन कुंवर झट जाय पड़ियो ॥  
 नाग नाथ गेंद लायो रे गोविन्दो । देखरया सब गाव  
 का नंवारियो ॥ वर्षज सोला करी रंग रोला । नाम जगत में  
 अहिर को धारियो ॥ कंस विधारी मयुराधारी । सबरा-  
 ७५ भामा जी वरियो ॥

## शान्तिनाथ का स्तवन

प्रभु तुम बिना हम भमे जगत में, अब तो सुख संपत  
 सामी । शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो, मोघ विघ्न हरण  
 अन्तरजामी ॥ पाल्यो परेवो मेघरथ नर भव, गोत्र तीर्थकर  
 बांध्यो तियां । स्वार्थ सिद्ध गये संजम लेइने, थति तैंतीस  
 सागर की तियां । हथनापुर पटराणी, अचला कूँखे जनम  
 लियो । छे पदवी अपराज पुन्य से, मरगी रोग सब दूर  
 कियो ॥ शान्ति वरताई तव सारा शहर में, परजा पण  
 साता करी । १ पचीस २ हजार वरष लग, कुंवर राय  
 चकर वरती एक हजार पुरुष संग प्रभुजी, संजन लीनो  
 सुभमती । एक मास छदमस्तपणा में, सह्या परिषा जिनराया ।  
 घन घातिक चक्र कनं काट के, श्री जिनवर केवल पाया ।  
 दियों उपदेश भविक जिन तारया । धन जगत वत्सल  
 शिवगामी ॥ २ ॥ पचीस हजार में एक उणो, केवल पदवी  
 दीपाई । छतिस गणधर भये नाथ के वांसठ सैंस भये  
 मुनिराया ॥ इकसठ हजार ने छे सो आरज्यां एक लाख  
 नेउ हजारों भये श्रावक इल्लवीस गुण पूरण, दारे  
 वरत धारणा हारा ॥ तीन लाख व्रण सैंस श्राविका, करणी  
 में फछु नहीं खानी ॥ ३ ॥ लाख वरष नो सँ  
 आउलो, जिन मारग हृद दिपाया । समेंद शिखर पर  
 पर प्रभुजी, जग तारण अनसण ठाया ॥ विदी तेरस ने न  
 रेवती, जेठ मास में मोक्ष लई अजर अनर अविकार निरं

गुप्त अनन्ता विह्वलित ॥ तिलोत्तम ऋषिजी कहे तारो  
मुक्तकों, अरज कहं छुं शिवनाभी ॥ शान्ति ॥४॥

## श्री शान्तिनाथ का स्तवन

श्री शान्ति जिनेश्वर भगतां सुख अपारो । हृदयनाथपुर  
नगरी अनुसेण भोपालो ॥१॥ तल घर पटराणी अचला रूप  
रत्नालो । सुख सेना ओ पोडया सपना लिया दश चारो ॥  
तिये हरक धरीने जान्या छे तणी बागो । गज चाल चलता  
पोंचा नृपती पालो । कर कपल जोड़ो ने हंस मुखी पूछे  
बानो । तामी चउदे ओ सपना राणीजी लावा रातो ॥  
फल तेनो कइजे सांभलजी महाराजी । जदी राजाजी बोल्या  
होती पुत्र उद्योतो ॥ बल पराक्रम गुरा कुल संडल आधारो ।  
नयना रो मेरो चक्री संत कुंवारी ॥ एही बात सुनी ने  
राणीजी निज घर जायो । जेठ विधी तेरस जनान्या शान्ति  
कुंवारी ॥ इन्द्रादिक मिलने कीनो जनम सोछ्यो । भर  
जीवन में आधा परगथा राज कुंदरो ॥ कथ रंभाओ सरीला  
समय सुभागी धान । यही लखत धरीने बढता अरथ  
भण्डारो । गड संडओ नय संड चउदे रत्न उद्योतो । एक  
दिन विनये ओ राजा यो संतार अनारो । गड आरम्भ  
नगी ने कीनो संजम नारी । रत्नना घर राणी जी गुण  
पुनरावा विनी बारी । पछे चो निहने बोने बचन रत्नाजी ।  
पछे पछे पछे कीनो मानम में नहीं धायी ॥ जो रिद्ध तुमारी

नहीं दीसे पुष्य अरारो सोनेसैंतपुगट बंद सेबा करेक/जोड़ो ॥  
 सोले सेस ओ सेंसठ देवा सेंस पचीलो । रथ पेदल छन्युं गामज  
 छन्युं प्रोड़ो । तेना ते नाथक काई उणायत लेयो । चोसठ  
 सेंस अंतेवर चालंता गज गेयो ॥ माउत्तमा ओ राणीजी  
 रूप न मोहन वेसो । खत्री राज रूखीसर नेत्र दीसे मृग  
 वाणो ॥ कंठ कोयल बोले बोल बचन रसारो । एवी नार न  
 छांडो कोनी कोण जिचारो ॥ जदो राजाजी बोलया सांभल-  
 ली पटराणी । अठे सुख भोगतां आगे नरक निसाणी ।  
 माता ने बंदव देन भागेतारी जोड़ो । स्थारथ रो मेलो  
 खीण में खेरु थायो ॥ सज्जन को मेरो वीणसे लाख नवे  
 सो । तीण कारण राणीजी आदरियो व्रत सारो ॥ अणी  
 संतार सरूप में अनन्त जीव रया राची । माउत्तमा ओ  
 राणीजी ने छे जाणी काची ॥ राज रीस नकीजो छटके ने  
 दीजो छेयो । एक घावनी मारो शोभा नहीं तणी वारो ॥  
 एक कयो, ती माने जण से तोड़यो नेयो । कटकी कीम  
 कीजो कीड़ी ऊपर रोसो ॥ गल गलता बोले प्रभुजी कयो  
 ती माने । बहु दरब खरचीने पूरण कियो संतारो ॥  
 श्री शांति जिनेश्वर जीनो संजस भारो । मुट करणी करीने  
 सारीया आत्म काजो ॥ श्री शांति जिनेश्वर जाय विराजा  
 मोक्ष । यो स्तवन ज संगलीक भणे गुने नर नारो । लुदे  
 मन से समरे बरते छोड़ कल्याणो कर जोड़ी ने बिह-  
 प्रभुजी पार उतारो ॥

## स्तवन

अरे भाइयो देखों दिल में, करके जरा विचार । कितना बिगड़ गया संसार । टेरा न्याया बिगड़ा नीति बिगड़ी बिगड़ गया व्यवहार हाथ २ को खाना चाहता नहीं भरोसा किस पर आता । प्यारा ही दुश्मन बन जाना । लालच में फंस दगा दिखाता । धर्म कर्म की लाज शर्म तो गई समुद्र पार ॥१॥ गुरुओं की परवाह नहीं करते चले खुद गुरु बनकर फिरते । पुत्र पिता से लड़ते भिड़ते भाई २ खूब झगड़ते, सास बहू की तकरारों के दर्शन घर २ द्वार ॥२॥ लिये न्याय के बनी कचेरी, किन्तु झूठ की हो रही पेड़ी । रिश्वत बिना न टिकती ऐड़ी, सच्चों को पड़ती है बेड़ी । जीत रहे हैं झूठे देकर चांदी के कलंदार ॥३॥ इस टाइम में यदि है तरना, तो कष्टों से होगा लड़ना । लिये धर्म के हीत चाहो मरना । पीछे कदम न होगा धरना । जानी जन कहे सदाचार से, होगा बेड़ा पार ॥४॥

## पक्षी की चौबीसी

पेला ऋषभनाथ वांदसा रे लाल, अजित २ चित चाय हो भविक जन ॥ तीजा संभवनाथ निर्मला रे लाल, अभिनन्दन वंदु भाव हो भविक जन करो पक्षीरा खमत्त खामगारे लाल ॥१॥ त्रीकरण शुद्ध खमाविये रे लाल शंका कंखा दो छोड़ हो भ । संसे दूर निवारने लाल, निश्चे व्यवहार रहे वार ॥२॥ मुमति सुमत दातार छे रे लाल,

मात ने, ध्यायो निर्मल ध्यान । गज होदे बँठा थका, पाम्या  
 है केवल ज्ञान ॥६॥ आदेश्वर जी का डीकरा, भरतादिक  
 सा पूत । अणी भव मोक्ष सिधाविया, कर करणी करतूत  
 ॥१०॥ आदेश्वरजी री डीकरया, ब्राह्मी ने सुन्दरी दोय ।  
 बेले तो बेले मांडयां पारणा मोक्ष गयाजी सिद्ध होय ॥११॥  
 आदेश्वरजी का पोता होता, श्री श्रीहंन कुंवार । ईदखु रस  
 बेरावियो बांध्यो तीशंकर गोंत्र १२ ॥ खाजा लाडु ने  
 चुंकड़ी पांची विगे ना त्याग । बेले तो बेले मांडया पारणा  
 धन धन्याजी अणगार ॥१३॥ धन्यारी रीते तेऊजणा तपकर  
 सुंसी देह । धर्म तणा परसाद सुं, पोता है स्वार्थ सिद्ध  
 ॥१४॥ परदेशी पापी होता, मिथ्या मत भरपूर । केशी गुह  
 समझाई ने, हुवा सुरयाभ नामा देव ॥१५॥ अर्जुन माली  
 बहु किया, देवतारे जोग से पाप । धर्म तणा प्रसाद से पोता  
 है मोक्ष मुझार ॥१६॥ नन्दन को जीव डेड़नो, आयो समकित  
 ॥१७॥ धर्म तणा प्रसाद सुं हुबो लडुंर नामा देव ॥१७॥  
 सख्य कारा होता, हकेशी अणगार । धर्म तणा प्रसाद  
 पोता है मोक्ष मुझार ॥१८॥ कीडयां की करणा कीनी,  
 अणगार । धर्म तणा परसाद सुं पोता है स्वार्थ  
 ॥१९॥ शंभुजी का शिष्य सात सो किया पानी को  
 या की रेण में तज दी अपनी देह ॥२०॥ खलल  
 ॥२१॥ बाजे नदियां का नीर । सुरातो संथा ने  
 पांचमें देवलोका ॥२१॥ ईर्या सोवी ने चालनो



गुरुदेव हो भ ॥ १३ ॥ नव कोड़ी केवलीयां ने वंदस्यारे लाल, गिर्वीं गोतम स्वामी देव हो भ । गुणवंता गुरुसां ने वंदस्यारे लाल, गुरुणी जी गुणारा अंडार ॥१४॥ पूज्य सोभागमलजी रा प्रताप से रे लाल. कुन्दनमलजी जोड़ी जोड़ हो भ. । बायां तो भायां सीखजोरे लाल, गाई है पवली हुलास ॥१५॥

### दशवैकालिक की ढाल

ढाल पहली । धम्मो संगल महिमानिलो, धर्म समो नहीं कोय । धर्म सु नसे देवी देवता, धर्म सुं शिवसुख होय ॥ धम्मो संगल महिमानिलो ॥१॥ जीव दया नित पालणी संजम सतरे प्रकार । बारा भेदे तप करे, यो ही धर्म को सार ॥२॥ जिम तरहवर ना फुलड़ा भमरो रस लेवा जाय । एम सन्तोषी सुनि आत्मा, फूल ने पीड़ा नहीं थाय ॥३॥ अणी परे विचरे गोचरी, लेवे सुजतो आहार । ऊंच नीच मध्यम कुले, धन २ ते अणगार ॥४॥ सुनिवर मधुकर सम कया, नहीं तृष्णा नहीं लोभ । लादो तो भाड़ो देवे आत्मा अणलादा रो संतोष ॥५॥ पांचों ही महाव्रत पालणा दोषण सघला ही ढाल । निश्चय तो जासी देवलोक में, सुगत लगी जी जारी मोक्ष ॥६॥ घरा घरारी गोचरी, थोड़ो २ आहार । पांचों इंद्रियां वश करे, धन २ ते अणगार ॥७॥ धन को कैसो गारवो, रूपरो कैसो अभिमान । भरत अरीसा भवन में पास्यो है केवल ज्ञान । ८॥ धन मोरादेवी

मात ने, ध्यायो निर्मल ध्यान । गज होदे बैठा थका, पाम्या  
 है केवल ज्ञान । ६॥ आदेश्वर जी का डीकरा, भरतादिक  
 सा पूत । अणी भव मोक्ष सिधाविया, कर करणी करतूत  
 ॥१०॥ आदेश्वरजी री डीकरया, ब्राह्मी ने सुन्दरी दोय ।  
 वेले तो वेले मांडयां पारणा मोक्ष गयाजी सिद्ध होय ॥११॥  
 आदेश्वरजी का पोता होता, श्री श्रीहंन कुंवार । ईक्षु रत्न  
 बेरावियो बांध्यो तीथंकर गोंत्र १२ ॥ खाजा लाडु ने  
 चुंकड़ी पांची विगे ना त्याग । वेले तो वेले मांडया पारणा  
 धन धन्नाजी अणगार । १३ । धन्नारी रीते नेऊजणा तपकर  
 झुंसी देह । धर्म तणा परसाद चुं, पोता है स्वार्थ सिद्ध  
 ॥१४॥ परदेशी पापी होता, मिथ्या मत भरपूर । केशी गुरु  
 समजाई ने, हुवा सुरयाभ नामा देव ॥१५॥ अर्जुन माली  
 बहु किया, देवतारे जोग से पाप । धर्म तणा प्रसाद से पोता  
 है मोक्ष मुझार ॥१६॥ नन्दन को जीव डेड़को, आयो समकित  
 ठेल । धर्म तणा प्रसाद चुं हुवो खडुर नामा देव ॥१७॥  
 रूप सख्य कारा होता, हरकेशी अणगार । धर्म तणा प्रसाद  
 से, पोता है मोक्ष मुझार ॥१८॥ कीडयां की करुणा कीनी,  
 धर्मरुची अणगार । धर्म तणा परसाद चुं पोता है स्वार्थ  
 सिद्ध ॥१९॥ धंभड़जी का शिष्य सात सो किया पानी को  
 नेम । उनारा को रेण में तज दी अपनी देह । २० । खलल  
 खलल नदियां बहे, बाजे नदियां का नीर । सुरातो संथा  
 कियो, गया है पांचमें देवलोका ॥ २१॥ ईर्या सोधी ने चालनी

गुरुदेव हो भ ॥ १३ ॥ नव कोड़ी केवलीयां ने बंदस्यारे  
लाल, गिर्वीं गोतम स्वामी देव हो भ । गुणवंता गुरुसां ने  
बंदस्यारे लाल, गुरुणी जी गुजारा झंडार ॥१४॥ पूज्य  
सोभागमलजी रा प्रताप से रे लाल. कुन्दनमलजी जोड़ी  
जोड़ हो भ. । बायां तो भायां सीखजोरे लाल, गाई है  
पवखी हुलास । १५॥

### दशवैकालिक की ढाल

ढाल पहली । धम्मो संगल सहिमान्नीलो, धर्म समो नहीं  
कोय । धर्म सु नसे देवी देवता, धर्म सुं शिवसुख होय ॥  
धम्मो संगल सहिमान्नीलो ॥१॥ जीव दया नित पालणी  
संजम सतरे प्रकार । बारा भेदे तप करे, यो ही धर्म को  
सार ॥२॥ जिम तरहवर ना फुलड़ा भमरो रस लेवा जाय ।  
एम सन्तोषी सुनि आत्मा, फूल ने पीड़ा नहीं थाय ॥३॥  
अणी परे विचरे गोचरी, लेवे सुजतो आहार । ऊंच नीच  
मध्यम कुले, धन २ ते अणगार ॥४॥ जुनिवर मधुकर सम  
कया, नहीं तृष्णा नहीं लोभ । लादो तो भाड़ो देवे आत्मा  
अणलादा रो संतोष ॥५॥ पांचों ही महाज्ञत पालणा दोषण  
सघला ही ढाल । निश्चय तो जासी देवलोक में, सुगत  
लगी जी जारी मोक्ष ॥६॥ घरा घरारी गोचरी, थोड़ो २  
आहार । पांचों इंद्रियां वश करे, धन २ ते अणगार  
॥७॥ धन को कैसो गारवो, रूपरो कैसो अभिमान । भरत  
अरीसा भवन में पास्यो है केवल ज्ञान । ८॥ धन मोरादेवी

मात ने, ध्यायो निर्मल ध्यान । गज होदे बैठा थका, पाम्या  
 है केवल ज्ञान ॥ ९॥ आदेश्वर जी का डीकरा, भरतादिक  
 सा पूत । अणी भव मोक्ष सिधाविया, कर करणी करतूत  
 ॥ १०॥ आदेश्वरजी री डीकरया, ब्राह्मी ने सुन्दरी दोय ।  
 बेले तो बेले मांडयां पारणा मोक्ष गयाजी सिद्ध होय ॥ ११॥  
 आदेश्वरजी का पोता होता, श्री श्रीहंज कुंवार । ईदखु रस  
 वेरावियो बांध्यो तीशंकर गोत्र ॥ १२॥ खाजा लाडु ने  
 खुंकड़ी पांची विगे ना त्याग । बेले तो बेले मांडया पारणा  
 धन धन्याजी अणगार ॥ १३॥ धन्यारी रीते नेऊजणा तपकर  
 झुंसी देह । धर्म तणा परसाद सुं, पोता है स्वार्थ सिद्ध  
 ॥ १४॥ परदेशी पापी होता, मिथ्या मत भरपूर । केशी गुह  
 समझाई ने, हुवा सुरयाभ नामा देव ॥ १५॥ अर्जुन माली  
 बहु किया, देवतारे जोग से पाप । धर्म तणा प्रसाद से पोता  
 है मोक्ष सुझार ॥ १६॥ नन्दन को जीव डेड़को, आयो समकित  
 ठेल । धर्म तणा प्रसाद सुं हुवो बडुंर नामा देव ॥ १७॥  
 रूप सरूप कारा होता, हरकेशी अणगार । धर्म तणा प्रसाद  
 से, पोता है मोक्ष सुझार ॥ १८॥ कीडयां की करणा कीनी,  
 धर्मरुची अणगार । धर्म तणा परसाद सुं पोता है स्वार्थ  
 सिद्ध ॥ १९॥ अंबड़जी का शिष्य सात सो किया पानी को  
 नेम । उनारा की रेण में तज दी अपनी देह ॥ २०॥ खलल  
 खलल नदियां बहे, वाजे नदियां का नीर । सुरातो संथाओ  
 क्रियो, गया है पांचमें देवलोक ॥ २१॥ ईर्या सोधी ने चालनो

भाषा विचारी ने बोल । बावीसपरीसा जीतणा संजम  
खांडी री धार । २२॥ अदीन पेलो दुम फूफिया, सकल अर्थ  
विचार । पुन्य कलश गुणजेतसी धर्म सुं जय २ कार  
। ढाल दूसरी दीक्षा दोयली आंदरी जी काम भोग घर  
छोड़ । संकलप व्यापे दुःख पग पगे जी वेरागी मनवार  
मुनिसर । धन २ ते अणगार ॥ घर छोड़ी ने निसरया जी.  
लोनो है संजम भार । भोग छोड़ी ने जोग आदरयोजी, हुं  
जारी जाऊं बलिहार । सु मन वाड़ी भूलचूक ने जी मतकर  
ढील लिगार । यो जुग जाणों कारमोजी कुण कथा कुण  
नार सु. करो अतापना आकरी जी, कोमल मति राखो  
काय । राग द्वेष तजो पांडवाजी, जो सुख चावो अचल सु.  
अगन कुण्ड जल तड़फड़ेजी, अगन्धन कुलनो सर्प । वमियो  
नहीं वंछे विष भणीजी, जो कुल आपणो जंप ॥ धिक २ रे  
जीव तुजभणीजी, वमियो वंछे आहार । जीतव से मरणो  
भलोजी, निरलज लाजनि लीगार सु. नारी सारी पारकीजी,  
देख भरम मति भूल । वाय झकोरे तीण परेजी, अस्थिर  
होसी डांवाडोल सु. घर २ करसो गोचरीजी देखोला सुंदर  
नार । हडू वृक्ष तणी पेरेजी, मोटो उठायो भार ॥  
हडू वृक्ष हेटे पड़ेजी, वाय तणेरे संजोग । अस्थिर होसी थारी  
आतमाजी, रूलसो, घणा संसार सु. जीमहाथी अंकुशवसेजी,  
थिर मन राखो आय । राजमती सती बुजवेजी ठाम आण्या  
एहेम सु. अदीन सामण पुर्वियाजी दुजेये अधिकार ।

पुन्य कलश गुण जेतसीजी, प्रणमूं सूत्र श्रीकाल मु. ॥११॥  
 ॥ढाल ३ री॥ सुध साधुनीग्रंथ साधे मुगत को पंथ ।  
 आत्मा संमरीये समर आदर्यो ए ॥१॥ दोषण टाली ने दीक  
 जानेयाइज सीख । श्री जिनेवर कियोये, मुनिवर सरदी  
 योये ॥२॥ उदेसिक आददेय एवो पीण्ड नी लेय, कृत घण  
 जाणियो ये । सामो नहीं आणियो ये ॥ ३ ॥ नहीं लेवे राय  
 भात नहीं जीमेंगिरीयन पाक राय पिंड नहीं लेवेये । गृहस्थी  
 संग परिहरोये, गन्द सन्द नहीं राखे रात । दानशाला नहीं  
 जाय, वाये ने बीजणो ये रंग न बीजणोये ॥५॥ चुवा चंदन  
 चम्पेल, तन लगावे नहीं तेल, जोवे नहीं आरसो ये, वे गुरु  
 तारसीये ॥६॥ खेले नहीं पासा ने सार, ते किम बोले मर्म ।  
 सिर छत्र नहीं धरे ये, सिजन्तर परिहरोये ॥७॥ आदर्यो  
 तीन रतन, जांरा करलो जतन । तीनु बाना परिहरोये,  
 अग्नि जल श्रंगनाये ॥८॥ ढोल्या खाट पिलंग तजे, तीगि  
 छारंग जूतिन पाय धरोये, जीव दया पालिये ॥९॥ मुला—  
 आद कन्द भूल, तजो सचित फल फूल, तजो रस सेलडीये ।  
 लूण धुपायणोए ॥१०॥ पेरे नहीं हीर ने चीर, सोभा न करे  
 शरीर । पीठी न भंजणाये, आंख्यां न अंजनाये ॥ ११ ॥  
 वसियो नहीं करे विरचंग, कर न गमावे धर्म । दांतण २  
 नहीं करे ये, मीसी नहीं लगावसीये ॥१२॥ सुतर मांही  
 बावन बोल, ते वर्ज साधु अमोल । तप किरिया करे ये,  
 शिवपुर माहि वरे ये ॥१३॥ बासे य खुड़ियांग, तीजे ये

अधिकार । अथ अनेक छे ये, जेतली गुण रुचि ये १४॥  
 ॥ढाल जीथी॥ महावीर जी भाये पुन स्वामी सुधर्मा उप-  
 देशिया । जीवो मुनिराज स्वामी सुधर्मा उपदेशिया ॥१॥  
 सुन २॥ जम्बू स्वामी जीथो अदिन छे जीवणी जीथो मुनिराज  
 ॥२॥ पृथ्वी अप तेव दाव दत्तात्रेयनि ब्रह्म ज्ञानजोजी २ ॥३॥  
 ये छे जीवनी काय हिंसा टाकी ने दया पातजो २ ॥४॥ पांचोई  
 महाव्रत दीक बलि छडे व्रत पालजो २ ॥५॥ त्रिविध २  
 जावो जीव गिरी निंदी ने प्रति कमण्या २ ॥६॥ रीख राय  
 पूछे सोस कीम चाला ने बोलया कीम रेवा ॥७॥ फरमा  
 दे सत गुरु शिख जयणा चालो ने जयणा बोलजो २ ॥८॥ ये  
 जिन शासन स्याम परथम ज्ञानदया पछे २ ॥९॥ जीवा योनी  
 दिचार जाणुं के अनुक्रमे ज्ञान से २ ॥१०॥ केवल दर्शन ज्ञान  
 उपजे कर्म खपावियां २ ॥११॥ ये छे जीवनीकाय सुजतां ही  
 तनमन हुलसे २ ॥१२॥ छेड़े लेई सिद्ध ठान अजर अमर सुख  
 शास्ती २ ॥१३॥ सरदो सुध परणाम पुन्य कलश गुण जे  
 थली २ ॥१४॥ ढाल पांचमी पांचमा पिण्ड दोषणीयां उप-  
 देशिया बेसायरे दिधे लावे भात पानी करो तरी संसार रे  
 ॥१५॥ दीक्षा पाले दोषण टाले धरो ध्यान समादरे, सुतर  
 सांचो अर्थ आछो भणो वाचो साधरे ॥१६॥ संचरया मुनि  
 गोचरी सरे गामा नगर सुझार रे । जोई चाले शुद्ध पाले  
 हंसे बोले नी लीगाररे ॥१७॥ असणं पाणं खावं सावं सुजतो  
 ले खब कोई रे । असुजतो मुनि दोष जाणेकबुन लेवे तेथरे

॥४॥ छे काया सरदे साध अरथे करे भोजन तैयार रे ।  
 ॥जणी घरे जती वरजे सुदावड़ अद देयरे ॥५॥ कुल निखे  
 दया पिण्ड निखेछ तजो भजो नीर दोषरे । मुवा दाई मुवा  
 जीवी दोनों जासी मोक्षरे ॥६॥ काले आवे काले जावे  
 दिचरेनी अकालरे । काले २ समाचरे ते साधु वंदे त्रिकालरे  
 । ७॥ विदे लावे विदे आलवे विद सुं करे आहाररे ।  
 सरस निरस लखो सूखो हिले नन्दे नहीं लीगाररे ॥ ८ ॥  
 वस्त्र पातर शेष आसण छता न देवे कोयरे । जती रती  
 पण रोष न आणे वन्दे नंदे सब कोयरे ॥ ९॥ तप चोरायां  
 वय चोराया हआ किलामिसि देवरे । दुर्लभ दुर्गति  
 बोद जाणो धर्म मार्ग से रे । १० ॥ सीख शिक्षा गरौ  
 भिक्षा जे लेवे सिद्ध होयरे । जैन सरीखा सूत्र मांहि बोल  
 बहु छे जोयरे ॥११॥ ढाल छठी वैरागी निरागी हो  
 सुदा सादजी नाण दर्शन सम्पन्न, वन वाड़ी महि ओ आई  
 समोसयां सुमति गुपती प्रतिपाल वे ॥१२॥ हिल मिल राजा  
 ओ राणा ने मेता ब्राह्मण ने क्षत्री बहु लोग साधा ने पूछे  
 हो कुण छे थायरो आचार गोचारज जोयवी ॥१३॥ भगवत  
 भाखे ओ मारग सावतो, कठिन आचार गोचार हुवो  
 नहीं होसी हो, अणो धर्म सारखो मोक्ष तणो दातार  
 ॥१४॥ छे व्रत पाले हो छे काया राखवा, नहीं नावण  
 शिणगार । पलंग निखे देहो गिरी आजन तजे आखिर  
 ठामो उठाय ॥१५॥ वस्त्र पातर राखे ओ खंजम पाखवा



नहीं राख्ये समतां ने प्रेम । विभुषाया करता कर्म बन्धे  
 चिकणाजी आखिर में कलपे केम ॥ ५ ॥ तेल गुड़ घृत  
 संवय जे करेजी ते गृहस्थी नहीं अणगार । नित प्रति  
 भाखे ओ एक बेला भोजन करे, वरजे विषय विकार  
 ॥ ६ ॥ जीव दया पाले ओ पग २ दीन समे वरजे रात्रि  
 विहार । एकु काया हणताओ व्रत थावर हणे लये दुर्गति  
 अवतार ॥ ७ ॥ जप तप करणीओ दुःख हरणी कही निर्मम  
 निर अहंकार । समण सोभागीओ चंदा जैसा निर्मला मोक्ष  
 तणा दातार । ८ ॥ छठो अति मीठो ओ लागे वाचता  
 भलो धर्मांतिकाय । नाम सुख पावे ओ जेतसी आत्मा  
 हुलसे बहु परिणाम ॥ ९ ॥ ढाल ७ मी ॥ साधु वुजोरे भाषा  
 सुमति विचार, भाषा चहुं भेदे कहीं ॥ १ ॥ साधु वुजोरे २  
 सत असत मिसर असत मोसद चौथी सही ॥ २ ॥ साध  
 वुजोरे २ भाषा वरजी है दोय दुजी ने तीजी कही ॥ ३ ॥  
 साध वुजोरे निर्वध भाषा बोल पहली ने चौथी सही ॥ ४ ॥  
 साध वुजोरे २ तीणसुं लागे पाप एवी भाषा नहीं बोलिये  
 ॥ ५ ॥ साध वुजोरे २ मत करो पारकी बात थैं मती पड़ो  
 अणी बात में ॥ ६ ॥ साध वुजोरे २ चोर ने मति केवो चोर,  
 काना ने कानो नहीं ॥ ७ ॥ साध वुजोरे २ होला ने मति केवो  
 होल, गोला ने गोलो नहीं ॥ ८ ॥ साध वुजो रे २ असधु ने  
 मति केवो साधु, साधु ने साध बोलावजो ॥ ९ ॥ साध वुजोरे २  
 मत करो पारकी बात निन्दा परहुरो पारकी ॥ १० ॥ साध

बुजोरे, सुर नर तिर्यंच जीव केई २ दोष लगाविया ॥११॥  
 साध बुजोरे ने छे ही कटिण कठोर संकज सावज छे सही  
 ॥१२॥ साध बुजोरे २ तस विध बोलिये बोल अरिहन्त आज्ञा  
 छे सही । १३ । साध बुजोरे २ मोभाग्य सुदी अदीन बोज  
 घणा छे सातमें । १४॥ साध बुजोरे २ स/दो सुद परणाम  
 पुण्य कलश गुण जे थसी ॥१५॥ ढाल दमों ॥ श्री जिनवर  
 गुणधर मुनिवर ने कहे जो, हिंसा टाली न दया पाल रे ।  
 जुवा २ जीव कहया छे कायना रे । पग २ जयणा करने  
 चाल रे ॥१॥ टाले मुनि सूक्ष्म आठ विराधना रे, छांडे बलि  
 मद मच्छर प्रसाद रे । तप जप खप कर काया सोसवे  
 रे, जीत्या इन्द्रियां ना विषय संवाद रे ॥२॥ जरा जाणी  
 ने देही करे जोजरी रे, नहीं बदे रोग पीड़ा घट मांथ रे ।  
 इन्द्रियां तो हीणीं नहीं पड़े जां लगे रे, तां लगकर २ धर्म  
 प्रचार रे । ३ क्रोध से बैर वसे घटे प्रीतड़ी रे, मान सु  
 विनसे विनय आचार रे । माया वाला वाले सर नहीं  
 गण रे, लोभ सुं विणसे सब संसार रे ॥४॥ जोतिस निमित्त  
 सपना फल कहे रे, जंतर मंतर झाड़ू देय रे । ओखद वेखद  
 कामण केरंवे रे, वे गुरु तरे न तारे केम रे ॥५॥ भीते चितरा  
 नारी नहीं देखे चीतर रे, वाला लोंचण रवी जिम तेज रे ।  
 हीणी तो खीणी सो वरसातणी रे, नहीं करे ब्रह्मचारी  
 नारी से नेय रे । ६॥ पक्षी का बच्चा डरे विलाय सु रे,  
 डरे ब्रह्मचारी नारी सुं नेय रे । सौले सिंगार षटरस

खावणो रे, टाल पुण्ड जेर करी जिम जेयरे । ७ । वस्त्रर  
 सेण अन्न पाय पुजणारे, विलंपग लेवा लेवी जोय रे । धन  
 धन सुनिवर चंदा जैसा निर्मलारे, जस नियो अरलोक  
 परलोक रे । ८ । आसण पायण नामा अदीन मेरे, आठवे  
 सकल विचार रे । सुतर की साखे भाखे जेयसी रे, सुतर से  
 होजो मोय निस्तार रे । ९ ॥ ढाल हमी ॥ उचंगणी न किजे  
 ओ गीतारज गुह तगी क्रोध मान सद छोड़ । अमावती  
 टाली ने हो नमी ने पुड़िये बंदे बे कर जोड़ । १० ॥ सुतर  
 सुणावे ओ सवला वांचने पूछे अर्थ अनेत इन्द्र चन्द्र सूरज  
 जी में सतगुह सेविने, विनय करीजे बारम्बार ॥ ११ ॥ नमे  
 विनय समाधि आदिन में नवार अर्थ विचार, उद्देशे २  
 हो चौथे थेवर वर्णव्या समाधि का थानक चार ॥ १२ ॥ पेली  
 विनय समाधि विदे कहीजी दूजी सुतर समाधि तीजी तप  
 चौथी समाधि आचार की चार २ अर्थ विचार ॥ १३ ॥  
 समाधि आराधे ओ ते शिवसुख लये अजर अमर पद ठेट ।  
 बेकर जोड़ी ने बंदे जेयसी जी गुणवंत श्री गुरुदेव ॥ १४ ॥  
 ॥ ढाल १० वीं ॥ अरिहन्त वचन दीक्षा आदरी रे लाल  
 नारी वसन सम जाण हो सुनिवर दशमा भिक्षु नामा अदिन  
 मेरे लाल वायो तीव्र छे सुजाण हो सुनिवर अरिहन्त वचन  
 दीक्षा आदरी रे लाल । १५ ॥ खगे न खगावे पृथ्वी कायने  
 रे लाल पीवे ने पितावे संचित नीर हो सु । जले ने  
 जलावे तेउकाय ने रे लाल बीजे न विजावे समीर ॥ १६ ॥

छेदे ने छेदावे तरवर काय ने रे लाल वरजे बीज सचित  
 हो मु. । पचे न पचावे भोजन रसवंती रे लाल, त्रस थावर  
 वीध जाण । ३॥ क्रोध मान साया, लोभ परहरीरे लाल  
 नहीं करे वणज वेपार हो मु. । तजे तमाशा हंसी मसकरी  
 रे लाल, वंछे नहीं सत्कार ॥ ४ ॥ राग द्वेष मद मच्छर  
 माया परिहरी रे लाल, नहीं देवे सावद्य उपदेश हो मु. ।  
 आप तिरे ने और ने तारसी रे लाल, वे गुरु जहाज समान  
 ॥ ५ ॥ जहाज समान गुरु जो मिला रे लाल, तो मारी  
 अटकी नाव हो मु. । डूबी ने पार लगावजोरे लाल, भव  
 सागर सेती तारहो ॥ ६ ॥ पांच महाव्रत पाले पांच इन्द्रियां  
 दमेरे लाल, गाम कन्टक समधीर हो मु. । रहे समसाण  
 पड़िमा पड़िवजे रे लाल, तजे प्रतिबन्ध शरीर हो ॥ ७ ॥  
 मर्म नहीं भाखे, धर्म भाखे भलोरे लाल, वांचे सूत्र सिद्धान्त  
 हो मु. । आत्म ध्यान आत्म उधरे रे लाल, पावे परम  
 पद अंत ॥ ८ ॥ जीम भाखे तिम पालजो रे लाल, तो सुधरे  
 बेऊ लोक हो मु. । अर लोक जस शोभा घणीरे लाल, परलोके  
 सुखी थाय ॥ ९ ॥ तेनी गाथा हुई सातसोरे लाल, मुनिवर  
 नो आचार हो मु. । धारे सो ही आराधसीरे लाल, तो पामे  
 भवनो पार ॥ १० ॥ तेनो अर्थ अनेक छे रे लाल, केता नी  
 आवे पार हो मु. । साधु सब सुखिया हुवारे लाल, चाले  
 पर वचन जोय ॥ ११ ॥ श्री श्री संभव गुणधरे ए रच्योरे  
 लाल, दशवैकालिक सूत्र हो मु. । सगलो आचार परुष्यो

साधनो रे लाल, मनक तारयो निज पुत्र ॥१२॥ संमत सतरे  
से ७७ तरे लाल, बीकानेर मुझार हो मु. । पुन्य कलश  
गुण जेतसी रे लाल, सुतर से होजो मोय निस्तार ॥१३॥

### श्री रुक्मणी की लावणी

पुरी द्वारका वासुदेव की आण अखंड वरताई है । सब  
तीन खंड में जोत दुरजन को दूर हटाया है ॥टेरा॥ कंचन में  
गड़ कोट कांगरा मणी रतनों में बनाया है । इन्द्रपुरी की  
ओपमा शास्त्र में बतलाया है । गगन पंथ से आया नारदजी  
हरी हलधर शीष नमावे है । लेकर आज्ञा भामा के मेलके  
अन्दर आवे है । उसी वक्त भामा राणीजी सब सिनगार  
बनाया है आरिसा में आप सुख देख रया मन चाया हैं ।  
दोहा—नारद को प्रतिवंब पड़ियो पूठ सेती आयजी ।  
भामा राणी भय पास्या बोले ऐसी बातजी । रूप म्हारो चंद्र  
जैसो आयो राहु समान जी, नारद ने अति क्रोध चढ़ियो  
जाणे अगन घृत पानजी ॥शेरा॥ या नारायण की नार गरब  
में बोले मने कहे राउ आप चन्द्र के तोले । परणां सुं दूजी  
नार रूप में भारी । नहिं ले भामा का नाम फेर गिरधारी  
॥दोड़॥ ऐसा करके विचार, जोया घणा नर नार, भामा  
राणी के उणीयार किहा नहीं पाया । कुंदन पुरी के मुझार  
भीकम राजा के दरबार, रुक्मैया के उणीयार तीया चल  
आया ॥शेरा॥ राजसुता को देखण काजे राज भवन में आवे  
है ॥१॥ नारद ऋषी को देख भुवा रुक्मणी को पावां

डाली है । जब कहे नारदजी हो जा तु माधव के घर नारी  
 है । शिशुपाल से करी सगाई व्यावन की लग रही तैयारी  
 है, नहीं जानूँ उनको आप मत कहो ऐसी अविचारी है ।  
 द्वारकापुरी नगरी जादव वंशी, वासुदेव घर अवतारी है ।  
 हुवा दोनों भाई सुणाहुं वासुदेव की रिद्ध सारी है ॥ दोहा ॥  
 रुक्मणी मन के विसे निश्चे तो लीनो धारजी परणुं तो  
 वोई श्याम ने नितर दूजो अवतारजी । चित्र पट पर लेख  
 लिखिया नारद रुक्मण रूपजी, जाई वतायो द्वारा पुरी  
 हरख्या तो जादव भूपजी ॥ शेर । नारद से पूछे कियां  
 नजर आई थारे, मानो इन्द्राणी रूप तणे अनुसारे । नारदजी  
 कहे बयान विसे विस्तारी, हरीजी को लागे मन परणवा  
 नारी । दोड़ ॥ कहे भुवाजी से बात किहां जादवा का नाथ  
 वीत्या जाय दिनरात कोई काम करो २, लेख लिखी ने  
 हवाल कागज भेजो तत्काल, जाई सोप्यो है गोपाल बांचो  
 पत्र खरो २ ॥ मि. ॥ मुख वचन सब कया दूत यूँ सबह की  
 गत सुणवाई है ॥ २ ॥ कुंदणपुर भीकमराजा की पुत्री  
 रूपवंती कहलावे है । करी सगाई राय शिशुपाल परणवा  
 आवे है । माघ मास सुदी अष्टमी दिन को लगन पत्र जो  
 ठहरावे है उनका मन में नहीं कोई और पुरुष इच्छा चावे ।  
 प्राण दान दातार जो तुम हो तुम ही से मन चित्त चावे है ।  
 हरी का मन में हुआ अफसोस भाई से बतलावे है ॥ शेर ॥  
 नारी का प्राण वचायना पुरुषां तणी या बातजी । लघु

भई मन राखवा कहे तो बलभद्र भ्रात जी । मिलण तणी  
 सेलाणी का पूछी तो लियो तीया ठामजी । प्रमंदा नामा  
 उद्यान मे असोक वृक्ष तीया ठाम जी । शेर । तब दान  
 मान देई हूत विदा कश दीनो, हरि हलधर जी महाराज  
 रथ सज कीनो । भामा को भय हरी का मन में भीनो तब  
 लेकर शस्तर खाल कुंदणपुर लीनो । दोड़ ॥ तब नारद जी  
 आय शिशुपाल पास जाय । कहे बात को बणाय व्याव सुणी  
 आयो । शिशुपाल तत्काल बोले अति हुलसाय सुज व्याव  
 को विचार होसी हुलसाई ॥ मी ॥ कोण लग्न कोण गांम  
 नाम है सो तुम हमको दरसावो ॥३॥ राजा बात सब कही  
 मांडने नारद सीस दिया हिलाई । कोई दीसे दुश्मण  
 और कोई परणोगा दूजो आई । भगत जाण मैं केता तुझको  
 पेस्तरपे दिया चेताई । राजा का रंग में किया भंग, उत्पात  
 सुभाव मिटे नांही । सज बल बादल शिशुपाल चड़ आयो  
 कुंदणपुर मांई । नगरी को घेरी मेरु जीमे, राउ चन्द्र  
 आयो लपटाई ॥ दोहा ॥ भुवा भतीजी सला करी पूजा तणो  
 प्रपंचजी । कषट छल बल केलवीयो आया नगर के बार  
 जी । एका एकी गजा वन में हरि हलधर तिया ठाम जी ।  
 निरख नेणा बोले वेणा वेठाया रथ में श्याम जी ॥ शेर ॥  
 आयो जणावा काज शंख बजायो । सुण शिशुपाल थारी  
 मांग लारा आदे । भीकमराजा रुखमईयो कुंवर थर रायो ।  
 तब ले दल दादल हरि के पीछे धायो । दोड़ । वाजा वाजता

रण तुर, सेल चमकती दूर । एक २ से सनुर आगे पांव धरे । अबद छत्तीस हजार सुभट पेरियो पखाल जमीं धूजती थर २ सींग नाद करे ॥मी॥ देवी देवता चोंमठ जोगणियां नारद हर्ष उमावे है । ४॥ देख दल को जोर शोर जब रुखमणी चिता हुई दिल मुझार । जब दोनों भाई मेढी चिता रण भूमि आया तत्काल । धनुष चढ़ाई टंकार बजाई भागे वैरी का लागे बाण । रुखमणी को बांध कर लाया जैसे पकड़े शियार । करी बिनती आप रुखमणी बंधन छोड़ो कृष्ण मुरार । जीत का बाजा बजाई ले चालया घर आपनी नार ॥शेर॥ गिरनार ऊपर आविया व्याव तणी करी बिद्धजी । रुखमणी बन नाम दीधो लोक में प्रसिद्ध जी, खबर हुई द्वारामति सामो आया सब साथजी । सासु के बऊ पगे लागी उगते प्रभात जी ॥ शेर ॥ अन्न धन भरिया भंडार महल में सेली । सदावरते परमानंद कमाई करी पेली । भामा से नारद यूं चेतावे । मन राहु किया का फल कहो कुण पावे ॥ होड़ ॥ बरत्या जय २ कार यश जगत मुझार । जवाहिरलालजी अणगार, ज्यां का गुण गाऊं । संमत उगणीसे के माय । बड़ी सादड़ी में आय । दिया चौमासा दो ठाय नाम सुताऊं ॥मी॥ वर्ष पंचावन और छप्पन में हीरालाल गुण गावे है ॥५॥

श्री सुभद्राजी का स्तवन

सुभद्राजी ने देख्या आवता आजरो दीन मेला मायजी



राजाजी आड़ा फिर पूछिया बात करोनी सुख थायजी ।  
 तुं कसा गाम की वसीए कामणी । टेरा। कीसा पुरुष की  
 गौरड़ी कौन तुमारा तातजी, कहो नी कीसा गाम में रेवती  
 बात करोनी विस्तार जी ॥ १ ॥ राजगरी नगरी होती  
 गऊभद्र सेठ की धीय जी । धन्नोजी पोते परणीया परणी  
 ने गया परदेस जी ॥ २ ॥ सालभद्रजी री बेनड़ी सुभदरां  
 मारो नाम जी । भदरानी कुंखे ऊपनी अजुयनी आया  
 मारा कंथ जी ॥ ३ ॥ सुवा गया के सरिया धी गया परदेस  
 जी । थं आवो नी मारा राज से परोनी नवा नवा वेस  
 जी ॥ ४ ॥ राजाजी थाका बोलणा इ वचन परारे नीवेड़जी  
 एक छांडी ने दूजो आदरे वा सती नहीं रे केवाय जी  
 ॥ ५ ॥ कनक फुल ए रो तज्यो खीण २ खेर थाय जी ।  
 एक छांडी ने दुजो आदरे ज्यांरी वात करे छे मेला माय  
 जी ॥ ६ ॥ ताराजी मंडल झड़ पडयां धरती धान न होय  
 जी । पाणी से दीपक जले सज्जन दूजा नहीं होय जी ॥ ७ ॥  
 राजाजी मन माय चितवे, जो होती घर की नारजी । कूच्यां  
 तो सोपूं भंडार की सोपूं घरको ये भार जी ॥ ८ ॥ कंथ तुमारा  
 कैसा जी होता कहो नी कसड़ो उणिहारजी । गोरा तो  
 होता थाय सरीखा, जाण पणा के मायजी । ९ ॥ तुम नामे  
 नामज होतो यो हीज सगरो सरूप जी । बी छे बेटा सहुकार  
 का थे छे मोटा भूपजी ॥ १० ॥ शरीर सुलक्षण जी हो तो  
 पावां पदम जड़ाय जी । पांय पूछी ने ऊंचो जी कीधो

पदम बतायो वारा कंथ जी ॥११॥ सुकीजी वाड़ी पांगरी  
जदी परण्यां था नारजी । सुभदरा जी मन माय चितवे  
इ वाता में मीन न मेखजी ॥१२॥ संकट टलियों ने सुखज  
मलियो दुख गया सब दूर जी । कंथा ने तो कामण मिली  
दुःख गया सब दूर जी ॥१३॥ बायां तो बाजू बंद बेरखा  
हिवड़े नव सरियो हार जी । काना तो कुंडए झलकता  
मोतियां तपेरे लिलाड़ जी ॥१४॥ पीरो पीतांबर पेरवा,  
ओड़न दखणीरा चीर जी । लीलो तो कमके कांचवौ योड़  
सगलो रूप जी ॥ १५ ॥ चरवे नीरसमो बोयां वाटक तेल  
फुलेलजी धन्नाजी माथो संवारिया, लगायो तेल फुलेल जी  
॥१६॥ मेंदी जी माथो गूथियो, मोत्या सु मांग भराय जी ।  
ऊंची गुंथाई राखड़ी, निरखंता चाल्या चालजी ॥१७॥ सुमंगला  
जी पीयुंसे पूछियो, को कंथा कणी की नारजी । सोकसहेली  
थारी बेनड़ी, तेड़ी ने लावो मेला माय जी ॥१८॥ चालीनी  
बेनड़ मायरी, थासुं नहीं बीखनी वातजी । आदा तो सुख  
वांटलो दोनों बराबर होय जी । १९ । वडवड़ने बेरा हुई  
अजुयन आई कांय जी । सासु सुसरा ने जेठजी लज्जा गमाई  
तणीवारजी ॥ २० ॥ वाप ने बेटा मतो मथ्यो, माजी ने  
मेलो मेलामायजी । हाथ पकड़ ने लावती, रावरीये किम  
जायजी ॥२१॥ सासुजी चाल्या उतावरा बड़ २ करता  
जायजी । पीला पीतांबर पेरवा लागा सासुजी रे पांयजी  
॥२२॥ वडवड़ वेस केसो कयों, तू छे शीलवन्ती नार जी ।

सासुजी थारा बोलणा वचन परारे नीवेड़जी ॥ २३ ॥  
 सासुजी थारा डीकरा वी गया परदेश जी । भली सासुजी  
 थारी कूँख ने धन २ मारो भागजी ॥ २४ ॥ रतनारी कूँखे  
 उपन्या जाया सोत्या वारा कंथजी । धन २ माता देवकी  
 कीधा कानुड़ारा कोड़जी कीधा बालूड़ारा कोड़जी ॥ २५ ॥

### श्री भग्नु पुराहित की ढाल

गुण सागर अणगार, करता उय बिहार मोटा मुनिराज  
 निरमल संजम पालता ऐ ॥ १ ॥ आयो गरमी रो काल, बाजे  
 लुवाने झार, मोटा मुनिराज दफेरारी आयो तावड़ोए ॥ २ ॥  
 पड़ रड़ तावड़ारी धूप, सूक गया जीभ ने होट, मोटा मुनि-  
 राज ॥ पगले पांव उठे नहीं ए, वेदना थई भगपूर मस्तक  
 आयो सुर ॥ मोटा ॥ मुरछा खाई धरणी धरयाए ॥ ३ ॥ गाय  
 चरंता गुवार दीठा मुनिवर तीण काल ॥ मोटा ॥ ततखीण  
 नेड़ा आवियाजी, छाट्यो शीतल नीर, शीतल थयो शरीर  
 ॥ मोटा ॥ चेत लइने रुसी बोलिया जी ॥ ४ ॥ यो किम कीधो  
 काम गुवालिया बोल्यो तीणवार ॥ मोटा ॥ छाच पाणी भेलो  
 आपीयो जी उलट भाव चित लाय, प्रतिलाभे रुसी राय  
 ॥ मोटा ॥ चारुई जीव तीहां चोपसु जी ॥ ५ ॥ मुनिवर लीधो  
 आर पड़त कियोरे संसार ॥ मोटा ॥ सन साय हरक पाम्या  
 घणोजी पीठती आया दोय, बलि थोड़ो कीम होय ॥ मोटा ॥  
 मछर भाव दिल आणिया जी ॥ ६ ॥ आपा जीमां नित मेव  
 आज रुषी कीं करां सेव ॥ मोटा ॥ रुसी पासे छे उजणाए ।

रुषि दियो उपदेश वेराग भाग विसैस ॥ मोटा ॥ तन धन  
 जोबन कारसोए ॥ ७ ॥ जाण्यो अथीर संसार लीधो संजम  
 भार ॥ मोटा ॥ समकित से सुधरया घणाए, तपसा विविध  
 प्रकार, पाले नीरअतिचार । मोटा ॥ अन्त ससे अणसण  
 कीधो ए ॥ ८ ॥ नलिलीगुल्ल विमाण पाम्या देव वेमाण  
 ॥ मोटा ॥ आगली वांता सामलोए । रतनचंदजी बोल्या एम,  
 पाले शुद्ध नेम ॥ मोटा ॥ आतम गुण उजदारियाए ॥ ९ ॥  
 पहली ढाल—दोहा—ते देवा देवलोक थी जाण्यो चवण  
 विचार, पेली आया प्रतिबोधवाने भगो प्रोत जसा भारज्या  
 ॥ १ ॥ ते नगरी अति दीपती देवलोक सय जाण । भगो प्रोत  
 जसा भारज्या जांके घणी पुत्र की चाय ॥ २ ॥ ढाल ॥ रंग  
 रूप धारी ओ अंबरधारी ओ मुनिवर । मुनिवर अंबरधारी  
 ओ तीज पछेवड़ीजी ॥ १ ॥ पातर रंगियाओ लोटवा चंगीया  
 ओ ॥ मु. ॥ इरज्या जोइने ओ पग पूजी धरेजी मस्तक लोचा  
 ओ बैधा ओघा ओ ॥ मु. ॥ ॥ २ ॥ मुनिवर उंचो नी जोवे  
 ओ मुख जीणा बोलियाजी ॥ ३ ॥ राय आंगण आया  
 ओ मारे मन भाया ओ ॥ मु. ॥ मुनिवर पावन कीधा ओ  
 मुझ घर आंगणोजी ॥ ४ ॥ पातर पूरिया ओ वे कस्त्रडिया  
 ओ ॥ मु. ॥ मुनिवर दान सुपातर मन हलस्यो घणोजी ॥ ५ ॥  
 खट रस जोड़ाओ देलस जोड़या ओ ॥ मुनि. ॥ मुनिवर सात  
 पीड़ी लग धन छे घर माईजी ॥ ६ ॥ माणक जड़िया ओ  
 राजाजी दीदाओ ॥ मु. ॥ मुनिवर रतन जड़त का मारे घर

आंगणाजी पुत्र नहीं कोई खोर्याओ, नहीं कोई झोरयां ओ। मु  
 मुनिवर सात पीड़ी लग धन छे भोरया में जी ॥७॥ पूछे  
 पाड़-पड़ोसी ओ, ब्राह्मण जोशी ओ । मुनि । मुनिवर अवध  
 ज्ञानी ओ मुजने थे केवोजी ॥८॥ पुत्र थारे होसी ए, बाई  
 थारे उत्तम प्राणी, बाई थारे दीक्षा जो लेसी ओ लघु वेस  
 में ॥९॥ असी मति भांको ओ निश्चय जाणी ओ । मुनि ।  
 मुनिवर अतरो कइने देवलोकां पधारियाजी ॥१०॥ दोहा॥  
 वरता रुसी इम के गया जनम्यां दोनों बाल । भगु प्रोत  
 घर वदावणा धन दियाड़ो आज ॥ १ ॥ जनम मोछव  
 मांडीयो लावो लीधो हाथ । पांच धाव कर पालिया सुख  
 पाम्या सुखमाल ॥२॥ निसदिन रनियां खेलियां लछनी लिधी  
 लार । सात पिता इम चितवे आया भीलपुरी में चाल ॥३॥  
 डाल ३—सात पिता इम चितवे आया भीलपुरी साय चाल ।  
 जैन धर्म करसा नहीं आपां रेसां मिथ्याती रे माय, बालुड़ा  
 संग न जाजोरे । १॥ मारे घरे वेगा आजोरे, कयो मारी  
 मानी लीजोरे । जाया मारा सोय सुख दीजोरे ॥ टेर ॥  
 रंग रंगीला पातरारे हांता में पचरंगियो लोट । मुंडे तो  
 बांधे सुपति वारे मन सांघ मोटी खोट ॥ १ ॥ पांच अरवाणे  
 पंचरयारे मस्तक लोचा केस । ओघोतो राखे खांक में भई  
 मुनिवर सेलां तोवेस ॥२॥ वारे तो बालक भोलवेरे गेणा  
 नेवे उतार । तीखा कतरणी पाछणां रुषी राखे झोरी के  
 नाथ ॥ ३ ॥ माथे तो नाखे भुरकी रे तेड़या २ जाय ।

जो थें तेड़या जावसो भई ने छेई गेल्या थाय ॥४॥ धरम  
 कथा करे धूम सुं रे विध सु करे रे वखाण । चन्द्र तणा  
 मन मोविया भई चपक्या लोय पखाण । ५॥ प्रेम लगावे  
 प्रीत सुरे मति करजो विसवास । साधु रूप देखने भई वेगा  
 आजो भाग ॥६॥ इम सीखाई ने मोकल्यारे खेलो चंदण  
 चोक । बागवाड़ी चोगान में जठे खेले बहुला लोक ॥७॥  
 घरर करता गोचरीरे लेवे नीरदोसण आर । मारग भूल्या  
 साधजी भाई आया अटविरे माय ॥८॥ थर हर लागा  
 घुजवारे कंपण लागो सरीर, तात कये जे आविया भाई अब  
 किम करसा एमोरे । बंदव इकुण आयारे । बंदव घर किम  
 जावारे ॥९॥ कायर नर नासी गयारे सूर राया निज  
 ठाम । तात कइजे आविया भाई अब किम करसा ए मोर  
 ॥११॥ दोड़ चड़या वृक्ष ऊपरे हिये नहीं सावे सास । केड़े  
 तो आया आपणे भाई कैसे जीवण की आसारे बंदव ॥१२॥  
 जगातो जोवे साधजीरे आया तरवर हेट । इरियावई पडी  
 कमीरे भई मिच्छामि दुकडो देयरे ॥१३॥ झोरी तो मेंली  
 पूंज नेरे मेल्यो नीरदोसण आर । सरस नरस की गोचरी  
 भई देखे दोनो कुंवारे ॥१४॥ रुप वरण एवो नहीं रे  
 सवाद नहीं तिण माय । पारस जुं पची रया भई ज्ञान घणो  
 अणी पासोरे ॥१५॥ कीड़ी ने दुवे नहींरे बालक ने मारेकेम ।  
 मोय थकी रुलावियो भग्गु बोले एवा वेणोरे ॥जाती समरण  
 उपनोरे आया तरवर हेट । मात पिता ने पूछ ने सामी

लेसां संजम भारो साधजी । भलाई पधारिया ओ सतगुरु  
भलाई पदारया ओ ॥ १७ ॥ जिमसुख होवे तिमकरोरे  
भगवंत दिया फरमाय । थोड़ा में नफोघणो भई देसी  
उत्तम दानोरे ॥ १८ ॥

## कमलावती

महलां में बैठी ओ रानी कमलावती, मारग में उड़ रही  
झीणी खेय । देखे तमालो इसुकार नगर नो कौतुक उपनो  
अन सांय । सांभलए दासी आज नगर में हलचल अति घणी  
॥१॥ के तो प्रधानाए दासी दंड लियो, के कोई राजाजी  
लूटयो ग्राम । के कणी को गाड़यो धन निसर्यो गाड़ा री  
हेला ठामो ठाम सां ॥२॥ नहीं तो प्रधान ओ बाइजी दंड  
लीनो, नहीं कोई राजाजी लूटयो ग्राम । भृगु पुरोहित  
ऋद्धि तज नीसर्यो राजा रे धन लावण को चात्र । सांभल  
हो बाईसा हुकम करो तो गाड़ा यहीं ढोरा ॥३॥ अतरो  
सुणी ने राणी साथो धुणियो राजा रे कमी नहीं काय ।  
भृगु पुरोहित ऋद्धि तज नीसर्यो राजारे धन लावण की हाय  
सांभलए दासी ई वाता राजाजी ने जुगती नहीं । महलां से  
उतर्यो ओ राणी कमलावती आया है ठेठ हुजूर । वचन  
सुनाया ओ राजाजी ने आकरा जाणे पुरुष चढ़यो सूर ।  
सांभल महाराजा ब्राह्मण छांडी ऋद्धि मत आदरो ॥४॥  
उत्पत्ती घणी ओ राजा थाका राजसें आपका मोटा भाग ।  
वसिया आहार की इच्छा कुण करे के कुत्ता के काग ॥५॥

काग कुत्ता सरीखा थें राजवी नहीं परसंसवा जोग । भृगु  
 पुरोहित ऋद्धि तज नीसर्या थें जाणो आसीसारे भोग सां॥७॥  
 दान दियो धन किस लीजिये सांभल जो. महाराजा । दान  
 दियो पहला हाथ से अब लेता नहीं आवे थाने लाज ॥८॥  
 सगला जगत को धन भेरो कयों, वाल्यो थारा राजके मांय  
 तो पण तृष्णा राजाजी पापणी, कदीयन तृप्ति थाय सां.  
 ॥९॥ सांभल ने इक्षुकार राजा बोलिया थें बोलोनी वचन  
 विचार । के तो राणीजी थाने झोलो वाजियो के थाएं  
 पीधी मतवार । सांभल महाराणी राजाजी ने कड़वा वचन  
 न बोलिये ॥१०॥ नहीं तो राजाजी म्हाने झोलो वाजियो  
 नहीं साहे पीधी मतवार । भृगु पुरोहित ऋद्धि तज नीसर्या  
 में वरजण आई भूपाल सां. ॥ ११ ॥ सांभल ने इक्षुकार  
 राजा बोलिया जो थे असड़ा वैरागण होय । आज तलक  
 कोई दीसे नहीं थे बेठा म्हारा राज के मांय सां. ॥ १२ ॥  
 रतन जड़त को राजाजी पींजरो, सुओ जाणे तो ही फंद ।  
 हुं पण राजाजी आपका राज में कदीय न पाऊं आनंद ।  
 सांभल महाराजा आज्ञा देओ तो संजम आदरं ॥१३॥ स्नेह  
 रुपियो तांतो तोड़ने आरंभ धन से रहू दूर । हुं पण राज  
 छोड़ी ने नीसरं थे पण चेतो भूपाल ॥ सां १४ ॥ दव तो  
 लागो राजाजी वन मांहि, हरण सुसलिया बरे माय । ऊंचा  
 माला का पक्षी देखने मनमांहि हर्षित थाय ॥ सां १५ ॥  
 अणी दृष्टान्त राय मूरख थया, आप मुरझ रह्या मनमांय ।



पेला को दुख देखी चेत्या नहीं, रागद्वेष की लग रही जग  
 में लाय ॥ सां. १६ ॥ भोगव्या काम भोग छांडी ने द्रवे  
 भावे हलंका थाय । वायु सरीखा पंखीनी पेरे विचरसां  
 आपणी दाय ॥ सां. १७ ॥ सांसरी बूटी ओ पक्षी की चोंच  
 में, नरवंसी पंक्षी पडे आय । अमिय समान भोग छोड़ ने  
 चारित्र लेसां चित लाय ॥ सां. १८ ॥ गृध पंखी जिम जाणिये  
 काम वधारे संसार । गरुड़ से साँप डरतो रहे ज्यों पाप से  
 आत्मा शंकाय ॥ १९ ॥ हस्ती जिम सांकल तोड़ ने आपणा  
 मन में सुखी थाय । अणी पेरे बंधन तोड़ने चारित्र लेसां  
 महाराय । सां. २० ॥ केई चाल्या ने केई चालसी केई  
 चालण हार । रात दिवस वहे बाटड़ी चेतो क्यों  
 नी महाराज । साँमल महाराजा राणी समजावे ओ राय  
 ने ॥ २१ ॥ कुटुम्ब काजे कर्म बांध ने पड़ियो नरक मुझार ।  
 एकड़लो दुःख भोगवे कुण छुड़ावे महाराज ॥ सां. ॥ २२ ॥  
 परदेसी तो परदेस में किणसे करे रे सनेह । आया कागद ने  
 उठ चालिया, नहीं गिणे आंधी ने सेह ॥ २३ ॥ वहाला तो  
 दुखिया थया मिलिया बहुला लोक । देखता ही उठ चालिया  
 नहीं कोई राखणहार ॥ २४ ॥ वाला बिना तो एक घड़ी सरतो  
 नहीं रे लिगार । जाने मुदा ने बहु वर्ष हुआ पाछा नहीं  
 आया समाचार ॥ २५ ॥ काची काया को कैसी गारबो, जतन  
 करंता ही जाय । उणियारो तो भूली गया नहीं मिलिया  
 पाछा आय ॥ २६ ॥ काई सूतों रे तू मानवी, सूतो मोह भर

निंद । काल खड़ी थारे बारणे ज्युं तोरण पर विंद ॥२७॥  
 बड़ा तो बल गया तू भी बलणहार । काँई बूझे रे तू  
 मानवी काँई करे रे देंगार ॥२८॥ सांभल ने इखुकार राजा  
 चेतिया, छोड़या है मोह-जंजाल । कायर ने तजता दोहिलो  
 शूरा नर सारिया आत्म काज । सांभल महाराजा छे हुं  
 जण संयम आदरियो ॥२९॥ छे ही अनुक्रमे प्रतिबोधिया  
 सांचो धर्म तपसार । डरिया जन्म मरण थकी दुःखरो अंत-  
 कराय ॥ ३० ॥ मोह निवारण जिनशासन मध्ये पूरव शुभ  
 कर्म थाय । छेइ जणा थोड़ा काल में मुक्ति गया दुख थी  
 मुकाय । ३१॥ राजा सहित राणी कमलावती भृगु पुरोहित  
 जस्सा नार । ब्राह्मण का दोनों बालका शिवसुख पामसी  
 सिद्ध सार ॥ ३२ ॥ धनर प्राणीओ छति रिद्ध छट काय ने,  
 ढाल में संक्षेप वरणन जाण अधिको ओछो  
 रिखजेमलजी कहे मिच्छामी दुक्कड़ो होय ।

### शांतिनाथ का स्तवन

शांतिनाथजी संतिके दाता, विघ्न हरणअंतरजामी, सुख  
 संपतलीला लछमी मनदंछित पूरणसामी । गजपुरी नगरी  
 नगर अनुपम विश्वसेन राय गुणवंता, गज-गमणी ओ  
 रमणी अचलादेजी, रूपकला गुण सोवंता । सुख सेजा में  
 पोड़या ओ सुन्दर उत्तम सपना चवदे लिया, कर जोड़ी  
 राजाजी से वीनवे राजा मन में आनन्द भया । सर्वार्य सिद्ध  
 विमान थकी प्रभु चविने माता कुंखे जन्म लिया, सकल

देश में शांति करी प्रभु रोग सोग सब दूर किया । जेठवही तेरस की राते हुवा तीनलोक में उजवाला, जनम मोछब करे देवता जै २ गुण मुख भाकंता । चोसठ इन्दर मिल कर प्रभु को मेरु शिखर जई नवराया, इन्द्राणिया मिल नरत करत है, जिनगुण सधुरे सुर गावे । रुमझुम २ बाजे घुंघरियां रुणझुण तौ पाथर रणके, तत्ता तैयक तान न चुके, झनन २ झालर झलके । ताल मरदंग विणादिक वाजा देव दुंदभी अकासो, लेत वारणा जिनवर केरो, इन्द्राण्यां घर हुलासो । इण विध जनम मोछब किधो, भाव भवित करे उतकण्ठी, फिर मुक्यां माताजी के पासो, कुसम तणी करता वृष्टि । राजाजी ने मोछब मांडयो, दाने दालिद्र कांये, साताकारी सन्त जिनैसर गुण निष्पन्न नामज थाम्यो । धनुष जालिस परमाणे देही मृग लक्षण सोवन वरणा, रूप अनुपम अचल विराजे, देखंता का, चित्त हरणा । सैंस पचीस वर्षा लग प्रभुजी, कवरपदे रया आनन्द घरा, सैंस पचीस मंडलीक राजा, सैंस पचीस चक्रव्रत पणे । छेखंडमाई हुकम चलायो चउदे रतन नवनिध घरा, सोलासैंस तो हुकमी चाकर बत्तीस सैंस राय घर सेवा सारे । हेवर घेवर रथ दीपता, लक्ष किया जाये चोरासी, छन्यो क्रीड़ तो पैदल सौहे सेवा करे घर हुलासो । एक लाख बाणु सैंस अन्तेवर रूप जोवन में अविकाई, या रिद्ध सबजाणी कारसी छीन में दीनी छिटकाई । वरसी दान देइ प्रभु संजम लीनो, सैंसजणा के

परवारो, दीक्षा मोछव करे देवता जिनजी से अधिको  
 प्यारो । एकमास प्रभु रया छदमस्त पीछे ध्यायो सुकल  
 ध्यानो, पोष सुदी नवमी के वारो प्रभु पाया केवल जानो ।  
 इन्द्र इन्द्राणी देवी देवता नरनारी का वन्दो जी, दे उपदेश  
 श्री शान्ति जिनेश्वर भव जीवां मन आनंदो । चतुर  
 विधि प्रभु संघज थाप्यो जीवदया धर्म हितकारी, घणा  
 जीवां का कारज सारया सूरत की जाऊं बलिहारी । सैंस  
 पचीस वर्षालग प्रभुजी उत्तम केवल पदपाया, कर्म खपाई  
 नैं, मोक्ष सिधाया जिन शासन ने उजवाले, शान्तिनाथजी  
 का स्मरण करता मनबंधित आशा फले । मुगत मेल में जाय  
 विराजा शान्तिनाथजी जेय रटे । डायण सायण भूत पिशाच  
 वली जग जोटिंग ने विकरालो, विकट घाट सब संकट चूरे  
 टले नाम से ततकालो । चित चोखे मन सुमरण करता  
 मन बंधित आशा फले, सिंह संपादि चोर अग्नि रोग सोग  
 सब दूर हरे । पूज्य २ श्री सुकानंदजी का शिष्य, हीरानंदजी  
 कहे, नितस्मरण कर जिनवर का, रामकृष्ण कर जोड़ विनवे  
 पाप हरो प्रभु भव २ का । । संमत ओगणीसे साल सणसठ  
 के पोस सुधी दसमी गुरुवारो, शान्तिनाथजी का गुण गाया  
 सेर नीमच के मुझारो ।

### श्री सोले सतियों का स्तवन

सरसत सारद विनवूरे लाल गणपत लागु पांय हो  
 भविकजन, गुण गाऊं सतियां तणा रे लाल । जनम भरण

पुख जाय हो सोले सतियां ने विनवुं रे लाल । टेर ॥ पेली  
 ब्राह्मी सुन्दरी रे लाल, रिषभदेवजी की धीय हो । चंदण-  
 बाला चेलणारे लाल, वीरजी वखाण्यो रूप हो ॥१॥ राज-  
 मती अंजना सतीरे लाल, पीयु पेला मोक्ष सिधाय हो ।  
 धीज करी सीता सतीरे लाल, अगनी को हो गयो नीर हो  
 ॥२॥ कोसल्या मोटी सती रे लाल, दमयंती नल की नार  
 हो । कुंती द्रौपदी सुमरियेरे लाल, भव २ ना दुःख जाय  
 हो ॥३॥ सुलसां सुभद्रा वंदियेरे लाल, प्रभावती चतुर  
 सुजाण हो । मृगावती निर्मल सतीरे लाल, पद्मावती रतना  
 की खान हो ॥४॥ संमत दो हजार सोला मे रे लाल, इन्दौर  
 शहर सुझार हो । गुरणीसारे परताप से रे लाल, दिलमुख  
 कंवर जोड़ी जोड़ हो ।

## स्तवन

जो भगवती त्रिशला तनय सिद्धार्थ कुल के भान हैं,  
 लिया जन्म क्षत्रिय कुंड में प्रियनाम श्री वर्द्धमान हैं । जो  
 स्वर्ण वर्ण प्रलंब भुज सरसिज नयन अभिराम है, करुणा  
 सदन सदन सदन आनंदमय गुणधाम है । जो अनंत ज्ञानी  
 हैं प्रभु और अनंत शक्तिमान है । किस मुख से गुण वर्णन  
 करूं मेरी तो एक जवान है । योगीन्द्र मुनि चितन निरत  
 जितको कि आठों याम हैं, उन वर्द्धमान जिनेश को मेरे  
 अनेक प्रणाम है ।

## स्तवन

समय सौना सरीको जाय, सुकरत सुं कयुरे । आयुष्य  
पल २ ओछु थाय ॥ ८६ ॥ माता जार्णें मोटो थाय, जमणा  
दिवस गणतो जाय : तुटी तेनी ना संधाय ॥ ८७ ॥ बे घड़ी  
सामायिक न थाय, वातमां रातो चली जाय । तेनो परभव  
मां शुं थाय ॥ ८८ ॥ दानमां पैसौ न अपाय, कौर्ट कोथलियो  
ठलवाय । रोकड़ गणी २ देवाय ॥ ८९ ॥ घरना काजे घेलो  
थाय, उपाश्रय कदी न जवाय, तेनो परभव में सुं थाय ॥ ९० ॥  
जगत मां भगत २ कहवाय, रात्रे चीवड़ो ने भजिया लाय ।  
चन्द्र कहे तो कई गति जाय ॥ ९१ ॥

## श्री धर्मदासजी महाराज की लावनी

पूज्य धर्मदासजी धर्म दिपायो आरे पांचमे । गुजरात  
देश के मायने सरे शहर अमदावाद, भावसार कुल उपन्या  
सरे, करे सिंह जिमनाद ॥ १ ॥ कालीदासजी पिता आपका,  
जीवांबाई मात, संवत सतरा सौ दो का साल में जनम लियो  
शुभरात हो ॥ २ ॥ बीज कला जुं बड़े कुंवरजी, चवदे वरस  
में आया । निरावली का वर्ग दूसरा, वांच ज्ञान प्रगटाया  
॥ ३ ॥ जाण्यो अथोर संसार, आपने सात जणा समझाया ।  
स्वयमेव जब संजम लियो, जैन धर्म दिपाया ॥ ४ ॥ कर २  
उग्र विहार पूज्यजी, शिष्य निन्याणु कीधा : जप तप संजम  
खूब अराध्यो, जगत बीच जस लीनो ॥ ५ ॥ गावां नगरा

विचरत २ नगर उज्जैणी आया । तीण अवसर एक शिव  
 धार में, दिया संथारो ठाया ॥६॥ उतर गई परिणामा की  
 धारा, आहार पाणी मनचाया । खबर हुई पुजराज ने सरे,  
 तुरत व्यार कर आया । ७॥ समझाया समझे नहीं सरे पाट  
 से दिया उतार । उसी पाट पुजराज विराजा, अरज करे  
 सर नार । ८॥ चार तीरथ की साख से सरे अणसण लीधो  
 ठाय । आठ दिना को आयो संथारो, धन २ तुम अवतार  
 ॥९॥ आउखो पूरण हुवो सरे, पैलो स्वर्ग मुझार । एका  
 भवतारी हुआ सरे, सिद्ध पाहुड़ा माय ॥१०॥ पुज्य श्री  
 का प्रथम पाट पर, श्री रामचंदजी महाराज । धारा नगर  
 के राजगुरु थे, बांधो धरम की पाल ॥११॥ माणकचंदजी  
 माणक लैसा, जसराज जयकारी । सयाचंदजी सया करी ने  
 समर मुनिसर भारी ॥१२॥ केसवजी पुज मोखमसिंगजी,  
 सिंग सरीका गाजे दिद्वान । पूज्य नन्दलालजी, प्रगट गुणा  
 की खान ॥१३॥ पंडित पूरा संजम सूरों, माधव मुनि महा-  
 राज । माधव मुनि महाराज सरीखा, बिरुला दीसे संत  
 ॥१४॥ उसी पाट पर आप विराज्या, श्री ताराचन्दजी  
 महाराज । दोय दीना की आई तपस्या, धन २ तुम अवतार  
 ॥१५॥ उसी पाट पर महाराष्ट्र संत्री श्री किशनलालजी  
 महाराज । बहुत वर्ष लग संजम पाल्यो, महागुणों की खान  
 ॥ १७॥ हेम मुनि गुण गावे, जनम मरण मिट जावे । एक  
 चित्त से ध्यान धरे तो रोग सोग नहीं आवे ॥१८॥

## श्री महावीर स्वामी का स्तवन

सिद्धारथ कुल माय उपन्या, ब्रशला देवीजी साय ।  
 तीन ज्ञान लई प्रभु जनमिया, देवलोकयो आय बन २ शासन  
 ना धणीजी ॥ १ ॥ तीस वरस प्रभु घर रह्या, लुखा  
 परिणाम । वरसी दान दई करो लोयो संजम भार ॥ २ ॥  
 संजम लेई प्रभु चितवे, पोते करम विसेस । दिन भुगत्या  
 छूटे नहीं, इनमें मीन न सेख ॥ ३ ॥ सिद्धारथ देवता इम  
 कहे, सुणो त्रिभुवन का नाथ । कष्ट तुमारे छे घणो, कहो  
 तो ओळ आपरी साय ॥ ४ ॥ भगवंत कहे ऐसी हुई नहीं,  
 नहीं होवणहार । नीकाचित्त कर्म बांधिया, भुगते आपोइ  
 भाप ॥ ५ ॥ अनारज देश प्रभु आप गया, तिया अनाड़ीजी  
 लोक । मारे भाटा ने कांकरा परीसा देवे विसेस ॥ ६ ॥  
 कुतरा लगाया प्रभु कटकणा, इतो बड़ा विकराल । मास  
 तणा बटका भरया, कठणा नी आणी लिंगार ॥ ७ ॥ कानां  
 में लीला ठपकीया, पगा दीचे रांधीजी खीर इत ीस  
 प्रभु आप सया, धन २ मोटा महावीर ॥ ८ ॥  
 प्रभु बस करो काया लोधी संकोच । चोरा  
 इतो ठग भरपूर ॥ ९ ॥ भगवंत कहे मैं तो भि  
 दूसरी बात, मूरख नर समझे नहीं परी  
 ॥ १० ॥ मास खमणरे पारणे नहीं मिल्यो  
 बोरांरो कुटो बेरावीयो, जणीरो कीध  
 बारा वरस प्रभु तप तप्या, ऊपर ते



मोरत नींदरा लीधी, ज्यांरी सुतर में साख । १२॥

### भजन

पारस प्रभु वीनतड़ी अबधारो, तीन लोक के नायक छो । प्रभु तुम बिना कौन आधारो औ देव मारे दाय नी आवे, विरुद विचारी ने तारो ॥१॥ छिन में कर्म कटे सुमरण से ऐसो जाप तुमारो । नाम लिया मारे नवनिध वरते धन दियाड़ो आज ॥२॥ उमेद कहे कर जोड़ी ने विनऊं, भवदधि पार उतारो । करनी हमारी कोई मती देखो, विरद विचारी ने तारो ॥३॥

### रतन कामल

राजगरी सी नगरीजी ई वणझारा देसावरी, कोई वण-जोजी रतन कामर लेई आवियाजी पूछो गामरा चौधरी. ई वणझारा देसावरी कोई लीजोजी, थाकी राण्यां के कारण लोवड़ी जी ॥ १ ॥ लाख लखेणी मारी लाखेणी, अमोलख ताजा मोलजी । में लेसांजी पर अंडल ने परगणोजी, वां से तो वणझारा संचरया आया सरवर पारोजी, कांई साल भदरजी की दास्यांजी, सरवर पाणी संचरीजी ॥ २ ॥ वणझारा पूछे दोय २ वाताजी कणी घरा की दास्यां ए, सुण छोर्या ए सरवर पाणी संचरीजी । सालभदरजी की दास्यांजी ने, गऊ भदर सेठ की छोर्यांजी वणझाराजी, थैंई कठासुं आवियाजी ॥३॥ दूर देसावर से आयाजी, रतन

कामल हम लायाजी, राजा श्रेणिकजी एक न लीधी मारी  
लोवड़ीजी । चालो मारा साथेजी, सालभदरजी की माताजी  
वणझाराजी । सगली लेसी थाकी लोवड़ीजी ॥४॥ वांसु तो  
वणझारा संचार्या, आया नगरी मायजी, वणझाराजी साल-  
भदरजी की पटसालाजी, कवरे पोर्या ऊबाजी, हमने  
भीतर जावा दो, वतावा दो, सेठ सुभद्रा की लेवड़ीजी  
॥५॥ सेठ सुभद्रा मन में हरख्याजी ने रतन कामल लेई  
परख्याजी, कांई मलक्याजी अणी को मोलज झट करोजी ।  
तेड़ो राज भंडारी ने बीस लाख गणाई दीजो, परखाई दीजो  
घर बैठा पोंचाई दीजोजी ॥६॥ साल भदरजी की माताजी,  
सोले कामल लीधीजी बत्तीस बटका कीधाजी, वांकी वउ-  
त्रांने एक २ बटको आपियोजी, रात की राते ओढ़याजी ।  
सुवे कियो संपाड़ाजी वांका वउवांजी पांय पूछी ने डारिया  
जी । ७॥ मैत्राणी आई झाड़वा, भर टोपलो लेई चालीजी  
राजा श्रेणिक के झाड़ू देवा वागईजी । राणीजी बैठा गोखड़े  
एक-अचस्वो देख्योए सुण भंगणए रतन कामल कांसे ला-  
वियाजी । ८॥ सालभदरजी की माताजी, सोले कामल  
लीधीजी, वांकी वऊत्रां ने एक २ बटको आपियोजी रात  
की राते वांए ओढ़याजी, परभाते किया संपाड़ाजी, वांकी  
वउवांजी पाय पूछी ने डारीयाजी ॥ ९ ॥ राणीजी  
कहे सुण राजाजी, थाको राज कसांकोजी मारे कारणजी  
सामी, एकनी लीधी मारे लोवड़ीजी । सुणो चेलणा राणीजी

इवातां नहीं जाणीजी, पिछाणीजी ईवातां अचंभा की  
 जी ॥१०॥ दातण तो में जदी मोड़ा, श्री शालभदर मुख  
 देखींजो, सणगारोजी गज घोड़ा रथ पालखीजी । भोजन  
 तो में जद-जीमा, श्री शालभदर मुख निरखांजी । लेई  
 आवीजी गज घोड़ा रथ पालखीजी ॥ ११ ॥ आगे कोतल  
 हंसता, पाछे पातर नाचतां, राजा श्रेणिकजी शालभदर घर  
 आविया जी । पेला भवन में पग दियो, राजा श्रेणिक  
 मन में हरक्याजी, कई मलक्याजी ई घर तो चाकर तणा  
 जी ॥ १२ ॥ दूजा भवन में पग दियो, राजा श्रेणिक  
 मन में हरक्याजी, कई मलक्याजी ई घर तो दास्यां तणा  
 ली, तीजा भवन में पग दियो राजा श्रेणिक मन में हरक्या  
 ली, कई मलक्याजी ई घर तो कामदार तणाजी ॥ १३ ॥  
 चौथा भवन में पग दियो, राजा श्रेणिक मन में हरक्याजी  
 कई मलक्याजी ई घर तो कोतवाल तणाजी पाचसा भवन  
 में पग दियो, राजा श्रेणिक मन में हरक्याजी, कई मलक्या  
 ली ई घर तो राजा तणाजी ॥ १४ ॥ छट्टा भवन में पग  
 दियो, राजा श्रेणिक मन में हरक्याजी कई मलक्याजी  
 ई घर तो देवा तणाजी । सातसा भवन में पग दियो,  
 राजा श्रेणिक मन में हरक्याजी कई मलक्याजी ई  
 घर तो सेठा तणाजी ॥ १५ ॥ राजा श्रेणिक की मूंदड़ी, राय  
 आंगण विचरारीजी, माता भदरांजी पस भर मूंदड़ी आपि-  
 याजी । भदर सिंगासण लायाजी राय आंगण विचरायोजी,

माता भद्राजी देई आदर बैठविद्याजी ॥१६॥ माताजी कहे  
 सुण नंदनजी थे कांई सुता नचिताजी थाके मंदिरजी,  
 श्रेणिक राय पधारियाजी । मैं नहीं जाणुं माता मोल में,  
 मैं नहीं जाणुं माता तोल में, मोलाई ने माल भंडारा में  
 डारदोजी ॥१७॥ माल कणासा लीजोजी, मुख मांग्या  
 दाम दीजोजी, मोलाई ने माल भंडारा में डारदोजी ।  
 कदीयन पूछी वातांजी, अब क्यों पूछो मारी माताजी, सुण  
 माताजी मैं नहीं जाणुं अणी वात में जी ॥१८॥ माताजी  
 कहे सुण नंदनजी, थाके माथे नाथ पधार्याजी, उनकी छाया  
 जी बैठो नंदन वाय केजी सुकरत करणी नहीं कीधी ।  
 सुपातर दानज नहीं दीधो, मारे माथे ओ नाथ केवावियाजी  
 ॥१९॥ अबके करणी ऐसी कहं, मारे माथे न राखुं नाथोजी  
 सुण माताजी सगला को नाथज मैं वणुजी । कुंवर मेल से  
 उतर्याजी, राय आंगण विचे ऊब्राजी, राजा श्रेणिकजी  
 शालभद्र गोदया लियाजी । २० ॥ सूरज सरीको तेजोजी,  
 लूणी सरीको अंगोजी बांको अंगोजी, अंग २ तो दीपे घणोजी  
 मुंगफली सी आंगल्यां । काना कुण्डल झलकेजी, राजा  
 श्रेणिकजी, शालभद्र मुख निरखियोजी ॥ २१ ॥ भद्र मेल  
 में आयाजी, नर नार्या का मुख देखाजी, माता भद्राजी,  
 या चिन्ता पाम्या घणीजी । राजाजी कहे सुण माताजी,  
 बारो नन्दन सुख दाताजी, थारा नन्दन ने पाछा मंदर  
 मोकलोजी ॥२२॥ श्री आदिनाथजी को ध्यान धरं, घन

माया अथिर जाणुं सैं छांडुजी, गज घोड़ा रथ पालखीजी ।  
 आउखो जाता ढील न होय, जुं अंजली को पाणीजी, दो  
 आज्ञा संजम आदहंजी ॥२३॥ जल बिना सूनो सरवरियो,  
 पियु बिना सूनो मंदरियो, सुण सामीजी, यूं कई संजम  
 आदरोजी । स्वार्थ जग में सांचोजी, बिना स्वार्थ झूठोजी,  
 कई शरणो तो एक धरम कोजी ॥२४॥ चरवे नीर समो-  
 वियो, वाटक तेल फुलैलोजी, सा. धन्नाजी बंठा ओ सीस  
 सवारताजी । गऊ भद्र सेठ की डीकरी ने, भदरासरीकी  
 माताजी, सुण सुन्दर ए थे क्यों उणो भांकियोजी ॥२५॥  
 साल भदर की बेन्याजी, बत्तीस भोजायां की नणदोली थे  
 क्यूं उणो भांकीयोजी । धन्ना सेठ घर सुन्दरी आठ नायां  
 बिचे पट नारिए, सुण सुन्दर ए थे क्युं आंसु रारीयाजी  
 ॥ २६ ॥ जग में छे एक बंधवो, वे लेसी संजम भारोजी,  
 सुण सामीजी । एक२ नारी परहरेजी । वो छे मंत्री कायरजी  
 नहीं लेवे संजम भारोजी, नीबड़लीमाया ने, ऊंडी गाड़दोजी  
 ॥२७॥ केणो घणो सोयेलोजी, करणो घणो दोयेलोजी, सुण  
 या रिद्धि कुण २ छांडसीजी । केणो घणो दोयेलोजी करणो  
 घणो सोयेलोजी, सुण सुन्दर ए मोरा हातज झणकरोजी २८।  
 में तो कियो हांसोजी, थाए कियो तमासोजी, सुण सामीजी  
 यूं कई संजम आदरोजी, चोटी अबोड़ो वारियो, आया मेला  
 के वारोजी, साधन्नाजी शाल भदर घर आवियाजी ॥२९॥  
 ऊरे मंत्री कायरजी में धन्नो तुं अगवानीजी, आपा दोई

मिलजी, दोई मिल संजम आदराजी । हेत करीने नीसर्पा  
लीधो संजम भारोजी, सा धन्नाजी मोक्ष तणा सुख पामि-  
याजी, दान शियल तप भावना अणी जुग में तन्त सारोजी.  
सा शालभदरजी देवतणा सुख भोगवेजी ॥३०॥

### बड़ी चंदनवाला का स्तवन

बोहा—श्री सिधारथ कुल तणा भगवंत श्री महावीर ।  
कर्म शत्रु ने जीतवा विचरत आया महावीर ॥१॥ कसुबी  
नगरी पधारिया जदी भगवंत श्री महावीर । अभिगरो लेई  
तेरे बोल को, इतो उपसम खम्यारा धीर, जिनेसर बोल  
कड़लो अभिगरो छे मास को ॥२॥ नित प्रति उटे गोचरो  
जदी घर २ भमे भगवान । अहार बहुविध घामियो पण लेवे  
नहीं बुधमान जिनेशर ॥३॥ दाल सार घृत सारणा जदी  
भांत २ पकवान । वेरावे भला भावसुं पण लेवे नहीं वृध-  
मान ॥४॥ तीण अवसर चंपा धणी जदी दधिवान मांडयो  
पुद्ध से थानक छोड़ी आविया इ तो रथ पायकरा वृन्द  
जिनेसर, पछे चम्पाओ नगरी घेरोदियो । ५॥ दधीवाण तो  
नासी गया जदी, लूटी है चंपा पोल पायकरे पाने पंडी  
चदी मांयने बेटी दोय ॥६॥ पायक रथ चलावियो, जदी  
एकान्त जगा लेई जाय, रूपलक्षण गुण देखने । पायक  
बोले छे विषनी बात सतीने । थेतो सुख विलसो संसारना,  
भुं २ करम उदेवेला पड़े ॥७॥ वचन मुणी जीभ खंडी ने,  
बदी धारणी कीधो काल । हेटे नाखी रथ चलावियो, जदी

विलख रया चंदन बाल सतीने जुं २ ॥८॥ पायक कहे  
 वणी कुंवरीसे, बाई तूंमति कर अपघात । तूछे बेटी  
 मांयरी बाई थासुं नहीं विष की बात, ये बाई थेंतो प्रीत  
 छपजाओ मांयसुं ॥९॥ दे विश्वास घर लावियो, यारां धर  
 मांय केता नार । केता द्वेष धर्यो रूप देख सतीको, याने  
 मोल लाया कणी कारणे ॥ १० ॥ तनक भणक कर कंथ  
 पेयांर, घर मांय केता नार । जावो परी याने बेचदो नीतर  
 रावल करंला पुकार, कंथाजी पछे केवोके मुझ ने कयो नहीं  
 ॥११॥ पायक डर्यो वणी धरणी से, जदी ले चाल्यो  
 वजार । रूप लक्षण गुण देखने, जदी वेश्या बुलाई तत्काल  
 सतीने जुं ॥१२॥ पायक मोल कर्या पछे, जदी वेश्या करे  
 दाम तयार । पाछे रही कुंवरी इम कहे, बाई थांघर कांई  
 भाचार येबाई, माने मोल लेवो कणी कारणे । १३ ॥  
 मांस खाणो मद पीवणाये बाई, सजना सोला सिणगार ।  
 रंग हिंडोले होंडणोये बाई, नित नवा भरतार येबाई,  
 असडो आचारज हम घरे ॥१४॥ वचन सुणी विलख्या  
 वणा, जदी विलख्याओ चंदन बाल । अणी घरे मत बेचो  
 तातजी. मारे माथे चड़े मतबाल पिताजी, माने मोल न  
 देचो या घरां ॥१५॥ दाम दिया किम मुकिये, जदी वेश्या  
 पकड़यो हाथ । जिन शासन रूपी देवता यांरे माथे राख्यो  
 हाथ सतीके देकरे ओ चांदरा दोरु करयां ॥१६॥ हात  
 पांव लवूरिया जदी नाटीहै वेश्या नार । पाछे रही कुंवरी

हम कहे मारो शील फल्यो तत्काल पिताजी मारा शील  
तणा फल जाणजो ॥१७॥ इतना में तो आविया, जदी  
घना सुवारथ सेठ । देखी सुलक्षणी डावड़ी यांरे, घर बेटी  
की चाय सतीने जुं २ । १८ । पायक मोल कर्या पछे, जदी  
सेठ करे दाम त्यार, पाछे रही कुंवरी यूं कहे, साजी थां  
घरां कांई आचार । होसाजी मने मोल लेवो कणी कारणे  
॥१९॥ अरिहंत सिद्ध साधा तणो, ये बाई केवलीरी भाख्यो  
धर्म सामाइक पोषा करो येबाई, करणी करीने काटो  
कर्म । येबाई, असड़ो आचारज हम घरां ॥२०॥ वचन सुणी  
हरक्या घणा, जदी हरक्या ओ चन्दन बाल । धरम करम  
सामो मिल्यो, जदी वित्यो है कितनोक काल सतीने जुं २  
॥२१॥ दे विश्वास घर लाविया, वांरा घर माय मूला नार ।  
मूला द्वेष धर्यो रूप देख सती को, याने मोल लाया कणी  
कारणे ॥२२॥ देखी सुलक्षणी डावड़ी, यांको जोवन रूप  
रसाल । बेटी जुंयाने राखजो, यांसु गाड़ो राखोनी हैत,  
बेटीसु सेठ सीख भोलावन देरयां ॥ २३ ॥ मुला तो भोजन  
करे, जदी कुंवरी पखाले पांव । वेणीरा केश हेटे पड़या,  
जदी सेठ लुया तणीवार वेणीरा, पल्ला सु पूछी ने खोले  
लिया ॥२४॥ मुला तो मनमांयें चिन्तवे यहाँरे, भीतर ओर  
विचार । कंथ भला नहीं मायरा, ईतो मापर लाया सोक  
परणीने, मे तो परी रे कड़ावा विषकी वेलड़ी ॥२५॥ दोहा-  
स्थार्थी निज बायर गया, ने पकड़या ओ चंदन बाल ।



सिर मुड़ीने माथे गज दिया, वेणीरा उतार्या बाल ॥ १ ॥  
 हातां पगां में बेड़ी नाक ने, लाकी है भोयरारे मांय ।  
 झाड़ो लई तालो दियो, सती तेलो दियो ठाय ॥ २ ॥ स्वार्थी  
 निज घर आविया, जोवे छे चन्दन बाल । मुला कहे घर २  
 भटकती नहीं रेवे घर के माय ॥ ३ ॥ बार २ पूछे सेठजी,  
 मुला चमकाणी मन माय । उठ पियर जाती बनी, बैठी है  
 पियर मांय ॥ ४ ॥ पाड़ोसण कहे सुणो सेठजी, जोवो थे  
 चंदन बाल । जो थांकी या स्त्री नाखी है भोयरारे मांय  
 ॥ ५ ॥ वचन सुणी बिलख्या घणा, जोवे खोल किवाड़ । कष्ट  
 देख्यो कुंवरी तणो, स्वार्थी पूछे बात । ६ । कणी जगाने  
 कणी थाय, सु कणी थापर कीधी रीष । कुंवरी कहे सुणो  
 तातजी मारे, कर्म तणोयो दोष ॥ ७ ॥ भोयरारसुं बायर करी  
 मत कर फिकर लगार । बेड़ी कटाउं बाई थायरी, तेड़ीने  
 लाऊं लुहार ॥ ८ ॥ कंवरी कहे सुणो तातजी, चौथो दिन मुझे  
 आज । पेली करावो मुझ ने पारणो करड़ी लागी भूख  
 ॥ ९ ॥ ढाल ॥ भुंडीरे भूख अभागणी वाला खांणी थारो  
 नाम लालरे । आपो जणावाने अपने नहीं गिणे ठाम  
 कुठाम लालरे कीधारे कर्म छूटे नहीं ॥ १५ ॥ आहार  
 ताला मांय दे गई, कुंची मूलारे हाथ लालरे । थाल  
 कचीला दिखे नहीं सेठजी जोवे वाम्बार ॥ २६ ॥ दीठा  
 षड़दारा बाकला, घाल्या है छाजला मुझार लालरे । लाई  
 चंदन बाला ने सुपीने, तेड़ण चाल्या लुवार ॥ २७ ॥ कुंवरी

तो भावे भावना, जो कोई आवे अणगार लालरे । व्रत  
निपजाऊं बारमो, देऊं सुपातर दान ॥२८॥ हिरता तो  
फिरता वीरजी आविया, पांच उणाने छे मास लालरे ।  
आय आंगणीये उभा रया, कुंवरी हुई हुलास ॥२९॥ बारा  
तो बोल पूरा मिल्या, नहीं देख्यो नेणा में नीर लालरे ।  
बिन वेर्या पाछा फिर्या, कुंवरी हुई दिलगीर ॥३०॥ मुझ  
पापणीरा हाथसुं वीर नी लियो मारो आहार लाल रे ।  
अरुबरु देख्यां रोवता आंसूड़ा देख्या महावीर लाल रे ।  
पातरा श्री वृधमान का दातार चंदन बाल ॥३१॥ आप्या  
उड़दा का बाकला, प्रतिलाभ्या अणगार लालरे । हातां  
पगा की बेड़ी झड़ पड़ी, मस्तक आया बाल ॥३२॥ अचितां  
फूलांरी वर्षा हुई, रत्न वर्षायां अनमोल लालरे । देव बजावे  
हुंदभी जय २ करे निरघोस ॥३३॥ वस्त्र वर्षाया रेशमी,  
सौनया साड़ी बारा क्रोड़ लालरे । कणी जाई मूला ने के  
दियो, तूं काई वैठी अणी ठोड़ । ३४॥ थांरी तो बेटी  
तीरथ भेटिया, रत्न वर्षाया अनमोल लालरे । मुला तो  
बाली उतावली लोक लेजासी मारो माल ॥३५॥ मूला तो  
मन माय चितवे, जाय खमावे चंदन बाल लालरे । कुंवरी  
कहे सुणो मातजी । आप तणो उपगार लालरे, थे मांसु  
असड़ी करता नहीं, वीरनी लेता मारो आहार ॥३६॥  
इतरा में मृगावती राणी सांभल्यो, सेठरे घरे चंदन बाल  
लालरे । वातो भाणेजी मांयरी, तेड़ी ने लावो अणी वार ।

॥३७॥ कणीरी मासी ने कणीरी भाणजी सुवारथियो  
 संसार लालरे । संजम लेसां अणी अवसरे, मारे शील  
 तणो उपकार ॥ ३८ ॥ छत्तीस हजार आरज्यां बीचे गुरणी  
 जी चंदन बाल लालरे । कर्म खपाई मुगत्या गया वरत्या  
 कय २ कार ॥ ३९ ॥

## रावण की ढाल

मेघनाथ माता कर आवे हाथ जोड़ फरमावे । तीन  
 लोक में करता हरता, उनकी जानकी पिता हर लाया २  
 मेघ ॥१॥ केत मंडोदर सुणरे जाया, बहुत बुरी कर आया  
 उस पापी का कछुयन बिगड़े । अपना कुल मांय दाग  
 लगाया, हरी कलंक लगाया ॥२॥ इतनी बात सुणी रावण  
 वे, रंग राग सब लाया । राम लछ्मण को पकड़ मगाऊं,  
 मेघनाथ बेटा क्यों घबराया, हरी क्यों घबराया ३॥ सोना  
 केरा कोट कांगरा, समुन्दर सरीकी खाई । मेघनाथ सरीकी  
 पुत्र हमारे, कुम्भकरण बिभीक्षण भाई २ । ४॥ इतनी बात  
 सुणी सीता ने, नेंण नीर ढलकाया, तुलसीदास भजो भग-  
 वाना । लुट तेरी लंका ने काल तेरा आया, हरी काल  
 तेरा आया ॥५॥ ढाल २ सियाजी को मिलण मंदोदरी  
 राणी आवे, राजा की राणी आवे । रावण की राणी आवे,  
 सियाजी को मिलण ॥६॥ सियाजी को मिलण मंदोदर  
 भाई, संग सहेल्यां लाई । नवलख तारा जड़या चीरके, रम-  
 म करती वागन मांय आई ॥ १ ॥ सियाजी को मिलण

मंदोदर आवे, कड़ला वचन सुणावे । वया तूँ कठिण हिरदे  
 हो गई. नवलख तारां की जोत छियावे, हरि करण छिपावे  
 । २॥ किया के घर जाय ऊपनी किया के परणार्ई । के थारा  
 प्रीतम हुवा बावरा, मेरे पिया संग भोरी तू चल आई २  
 । ३॥ जनकराय घर जाय ऊपनी, दशरथ के परणार्ई ।  
 नहीं मारा प्रीतम हुवा बावला, सरव सोना की लंका  
 देखन आई २ । ४ । तूँ तो कइजे सत की सीतां, यां कैसे  
 चल आई । राम लक्ष्मण को वन में छोड़या, मेरे पिया  
 संग भोली तू चल आई, हरो तूँ । ५॥ में तो केई जुं सत  
 की सीता यां, ऐसे चल आई । राम लक्ष्मण को वन में  
 छोड़यां, तुजे रंडापो भोली देवण आई, हरी ॥ ६ । जुग  
 तारण ने पेर पीतांबर, चन्द्र रूप धर आई । सीता ध्यान  
 धर्यो सूरज को, रूप बदन उसका भाग में छियावे, हरी  
 ॥ ७ । सीता बेटी जनक राय की, चन्दा में छिय जावे ।  
 तुलसीदास भजो भगवाना, रमझम करती अपना मेल में  
 सिधावे । ८ । डाल ३ । बालन थाने वरज्या था मारा कंथा  
 प्रीतम थाने वरज्या था मारा कंथा । ९ । थाने उलटी  
 लगाई म्हारे विन्ता, बालम थाने वरज्या था मारा कंथा ।  
 जोगी को वेश करो मती प्रीतम, मत पेरो गले कंठा ।  
 तीन लोक का नाय विसंबर लूट लेवेगा थारी लंका ॥ १॥  
 उड़त निसान बाज रया बाजा, सिन्धु का राग चुनाया ।  
 उनका बाण चलत है गगन में, वे लक्ष्मण चलवता ॥

बन्दर आई कंगूर लूम्यां, बाज रया घड़ी घंटा । तुलसीदास  
 भजो भगवाना, मेठ देवेगा थारी चिन्ता ॥३॥ ढाल ४ ॥  
 दुवात कलम हरी ने स्याही मंगवाई २ दुवात कलम ने  
 साई मंगवाई, पुरजा दिया लिखाई । पेला नाम लिख्यो हरी  
 अपनो, पोछे लिखी लछमण की लड़ाई २ ॥१॥ मेघनाथ  
 को बाण चलत है, सब सन्या थर्राई । सक्ती बाण लग्यो  
 लक्षमण के, सेंस सुखी सन्या घबराई २ दवात ॥२॥ सुणो  
 हनुमान भैया बांय मेरी टूटी, हरी बांय मेरे टूटी बांय  
 मेरी टूटी तू मत जाणे झूठी । सारा सेर में फिर आयो,  
 कोईय नी भूप सारी सार न पूछी हरी सार न पूछी ॥३॥  
 लंका में एक वैद्य धनंतर, परबत पर एक बूटी । भरत  
 छत्रगुण घरे नहीं सो काई, कौन लावेगा सरजीवन बूटी २  
 ॥४॥ हनुमान के काची रे कचरी, सिर पचरंगी टोपी ।  
 भरत छत्रगुण घरे है सो कई, बी लावेगा सरजीवन बूटी २  
 ॥५॥ हांथ जोड़कर लछमण ठाड़े, अज्ञा दो मेरा भाई ।  
 मेघनाथ रावण को बेटी, सारी सन्या में भैया धूम मचाई  
 हरी रोल मचाई २ । ६॥ राम लछमण का बाण चलत है,  
 सब सन्या घबराई । भुजा टूट धरणी पर पड़ी शीष पड़यो  
 जठे बैठा रघुराई २ । ७॥ मेला माय मंदोदर बोली, भुजा  
 कहाँ से आई । तुलसीदास भजो भगवाना, मेघनाथ बेटा  
 हार्या रे लड़ाई, हरी हार्या रे लड़ाई ॥८॥ पवन सुत थे मारो  
 ब्रूध लजायो ॥९॥ लंका गयो तो कई कर आयो, पान फूल

फल खायो । जो तू सीता को कारज करतो, तो लंका क्यों  
 नहीं लायो ॥१॥ समुंदर देख डर्यो मन मांही, चालू दिशा  
 नीर भरायो । तीन चलू समुन्दर का करतो, समुन्दर क्यों  
 नी सुकायो ॥२॥ जब जननी ने जोर जणायो, दूध पताला  
 धसांयो । इण दूधा रो पीवण वाला, थोड़ा में घबरायो  
 ॥३॥ लंका कैसे लाऊं मारी जननी, हुकम राम को नाहीं ।  
 तुलसीदास भजो भगवाना, जननी ने जोर जणायो ।  
 रामादल में सुलोचना आई अरज सुनो रघुराई ॥ ढेर ॥  
 मेरे सुसरे ने झगड़ा मोल लिया पिछान्या नहीं आपको कण्ट  
 दिया, वो तो हर लाये सीता मांई ॥ १ ॥ युद्ध लछमन से  
 मेरे पति का हुवा, कोई हारा कोई जीता जगजुआ मेरे  
 पति ने मुक्ति पाई । २॥ चांद खिले कैसे झबके तारे नहीं  
 दुखी जीवों का कोई सहारा, नहीं आप दुखियों के होते  
 सहाई ॥३॥ भुजा कटके गिरी मेरे आंगन में, शीस कटके  
 गिरा प्रभु चरनन में । ये बात भुजा ने लिखके बताई ॥४॥  
 राम कहते जरा धीरज धरना, जिंदे से बढ़कर है मरना  
 अभी देता हूं शीस मंगवाई । ५॥ कटी भुजा लिखी हम जानें  
 कैसे, कटा शीस हंसा हम माने कैसे, यह अंगद ने बात  
 उठाई ॥६॥ घर झगड़े में जाते न मेरे पति, अजी होते न  
 पिताजी सहाई ॥७॥ इस तरफ सती के पति का शीस  
 हंसा उस तरफ सती की परिक्षा हुई । तुलसीदास ने यह  
 फरमाई ॥८॥

## लकड़ी का तमासा

जीते लकड़ी मरते लकड़ी अजब तमासा लकड़ी का ।  
 दुनियां वालों सच कहता हूँ ये जगवासा लकड़ी का, आया  
 जब संसार में प्राणी मिला झूलना लकड़ी का । मां की  
 गोदी में जब खेला, मिला खिलौना लकड़ी का । मां ने  
 चलना तुझे सिखाया, गुड्डा बनाया लकड़ी का । बच्चों के  
 संग खेलन लागा गुल्ली डंडा लकड़ी का । गया स्कूल में  
 जब तू पढ़ने कलम पट्टी तेरी लकड़ी का । जिस हंटर से  
 सारा तुझको हंटर भी था लकड़ी का । गया सुसुर पर जब  
 तू ब्याह ने मिजा वेदिका लकड़ी का । सास सुसर ने दहेज  
 दीना कुर्सी मेज तोहे लकड़ी का । बाल बच्चे जब घर में  
 आए क्रिऊ लूण तेल लकड़ी का । गृहस्थी बन जब घर को  
 आया पलंग मिला तोहे लकड़ी का । वृद्ध हुआ तन कांपन  
 लागा वंडा मिला तुझे लकड़ी का । जब संसार से जावन  
 लागा पट्टा मिला तुझे लकड़ी का । चार भाइयों ने तुझे  
 उठाया चिता बनाया तेरा लकड़ी का । तोड़ के तिनका  
 घर को आए तिनका भी था लकड़ी का । अपन आप तुं  
 फस बैठा है जाल बिछा के मकड़ी का । प्रभु नाम की रटते  
 माला जिसका मणका लकड़ी का ।

श्री गुरु गुण महिमा

तर्ज—छोटी मोटी सैयां

श्री सौभाग्य मुनिजी महाराज लागो तो आप सुहावनार

श्री कृष्ण मुनि महाराज लालो तो लाल सुहावना २ ॥ ढेर ।  
मन मोहन और प्रेम जड़ी हो २ हाँ बानी नजर सुख कार,  
दर्शन से सब दुःख जावना १॥ पुण्य रति पुरु दिन २  
बढ़ावो हाँ २ करजो तुम धर्म प्रचार, जैन की ज्योति  
बढ़ावनः ॥२॥ शान्ति निकेतन ज्ञान निधि हो २ हाँ गुण  
के हो भंडार । नार न कोई पावना ॥३॥ हँसाश्रम सुखई  
आदि में २ हाँ दिशया अति चोनास, नरनारी गुण गावना  
॥४॥ लज्जे तारक तुम हो गुरुवर २ हाँ भवजल से दो तार  
केवल की यह भावना ॥ ५ ॥

### मरुदेवी माता का

मेरी तरफ तु देखले हाँ लाल तो कनैया ॥ ढेर ॥  
माता तुमानी याद करते हैं, करे याद सब परिवार रे हाँ  
लाल तो कनैया । ऋषभ २ मैं करत पुकारं नजर उठा कर  
देखले हाँ छास तेरी मैया । कयो भरत ने आकर मुझसे,  
दादी अयोध्या बार, आया नंद तेरा जैया । सोचा था मैंने  
पुछेगा सुखदुःख संसार का नाता । हे झूठा जंते भूलभुलैया ।  
बनित भावना भाई है जरणी हस्ती के होदे ले लिया है ज्ञान  
केवल मैया । भेरव मुनि कहे माता मरु देवी तुम बँडे हो  
, मोक्ष में करझोड़ पंथ पैया ।

### नवकार मंत्र

मंत्र जपो नवकार भाविक जन नंद जपो नवकार ढेर ।  
पंथीत अक्षर अड़सठ मंगल दाप जपत भवपार । ते-



टूटी है आवोल्यारी डाखरे ॥१०॥ खाती मृगलो मुनिवर  
तीनों जणारे, पोचा है पांचमे देवलोकरे । दस सागर की  
धती पामीयारे आगे होती सिद्धरायरे ।

### श्री मेघकुंवर का स्तवन

श्रेणिक राय सुत धारणी जाया ओ, मेघकुंवर मैया  
नाम घराया ओ त्यागी वैरागी मैया जिन समझाया, जिन  
समझाया फिर घर नहीं आया ओ ॥१॥ थारे तो कारण  
मैया श्री जिन आया ओ । वाणी सुणी ने मैया संजम चित  
लाया ओ ॥ १ ॥ सेजा संथारी मैया अणसण ठाया ओ,  
बायर निकलता मैया साध संताप्या । निद्रा बिना तस मन  
बिलखाया ओ, मन मायी चितवे मैया श्री मुनिराया ओ  
॥२॥ आगे तो गणता मुझने साध सवाया ओ, आज की  
रेण मैया नजरयानी आया ओ । प्रगट परभाते पुछुं श्री  
मुनिराया ओ, जाय मिलूंगा म्हारी धारणी माता ॥३॥  
विध सुं तो वंदना कीधी श्री मुनिराया ओ, पूछण की वेरा  
मैया लाज भराया ओ वीर कहे सुणो धारणी जाया ओ,  
आज की रेण मैया बहु दुख पाया ॥ ४॥ गज भव होता तुम  
भजती जो काया ओ, जीव दया पर मैया बहु चितलाया  
ओ । तीन पगा सुं मैया ऊवा जो रईया तीन दिना में  
कारज सार्या ॥५॥ तीरीयंच भवकैरो मनुष्य ठेराया ओ,  
पुरब भव प्रनु तास जणाया ओ । चलचित होय कर साध  
जगायो ओ, धर्म सवारथ मैया नाम घराया ओ ॥६॥ ये

शन जाप जपत ही सूली तिहासन धार । जो सीता जाप  
जपत ही भई अग्नि जलधार । नगिन्द्र कीर्ति की यही अरज  
है उतरो भवदधि पार । तवन जलम आपने पाया आनंद  
आया हो प्रभुजी प्राणप्यारा प्रभुजी । नेणा से प्यारा प्रभुजी  
चोसठ इन्द्र आवे भेरू ले जावे हो । छपन कुंवारी आवे  
मंगल गावे हो अवधि ज्ञान लगावे मेरु कंपावे हो ।

### बलभद्रजी का स्तवन

मन मोयोरे तुगियापुर नगर सुहावणोरे, जीहा उतरया  
मुनि बल भदर साररे । मन ॥ १ ॥ टेरे ॥ मास खमण को मुनी  
के पारणोरे, आया है नगरी के मायरे । घर से तो रंभा  
पाणी संचरीरे, देख्यो साधुजी रोरूपरे ॥ १ ॥ चुखल्या भरोसे  
बालक फांदोयो रे, नाक्यो हे कुवलारे मायरे । बालु तो  
झालु मुनी थारा रूप ने, कीनी में बालुड़ारी धातरे ॥ २ ॥  
धिक पड़ोनी मारा रूप नेरे, धक २ मारी कायरे ॥ ३ ॥  
अणीरे नगरी में नहीं करसां गोचरीरे । अणी नगरी रो नहीं  
लेसां आहाररे । ४ ॥ वहां से तो मुनिवर संचरयारे । आया  
हे अटवी के मायरे ॥ ५ ॥ वन माई खाती काटे लाकड़ीरे ।  
खातण लाई भातरे ॥ ६ ॥ खाती तो भावे भावनारे, बेरोनी  
मुनी सुजतो अहाररे ॥ ७ ॥ मृगलो तो मन मांय चितवेरे ।  
धन २ खाती थारा भागरे जो में होतो मानवीरे, देतो सुपां  
तर दानरे ॥ ८ ॥ खाती मृगलो मुनिवर तीनों जणारे । बैठा  
छे आंबोल्यारी छांयरे । ९ ॥ चारुं दिशारो वाजो वायरीरे

शन जाप जपत ही सूली सिंहासन धार । जो सीता जाप  
जपत ही भई अग्नि जलधार । नगिन्द्र कीर्ति की यही अरज  
है उतरो भवदधि पार । तवन जलम आपने पाया आनंद  
आया हो प्रभुजी प्राणप्यारा प्रभुजी । नेणा से प्यारा प्रभुजी  
चोसठ इन्द्र आवे भेरू ले जावे हो । छपन कुंवारी आवे  
संगल गावे हो अवधि ज्ञान लगावे मेरु कंपावे हो ।

### बलभद्रजी का स्तवन

मन सोयोरे तुगियापुर नगर सुहावणोरे, जीहा उतरया  
मुनि बल भदर साररे । मन ॥ टेरे ॥ मास खमण को मुनी  
के पारणोरे, आया है नगरी के मायरे । घर से तो रंभा  
पाणी संचरीरे, देख्यो साधुजी रोरूपरे ॥ १ ॥ चुखल्या भरोसे  
बालक फांदोयो रे, नाक्यो हे कुवलारे मायरे । बालु तो  
जालु मुनी थारा रूप ने, कीनी में बालुडारी धातरे ॥ २ ॥  
धिक पड़ोनी मारा रूप नेरे, धक २ मारी कायरे ॥ ३ ॥  
अणीरे नगरी में नहीं करसां गोचरीरे । अणी नगरी रो नहीं  
लेसां आहाररे । ४ ॥ वहां से तो मुनिवर संचरयारे । आया  
हे अटवी के मायरे ॥ ५ ॥ वन माई खाती काटे लाकड़ीरे ।  
खातण लाई भातरे ॥ ६ ॥ खाती तो भावे भावनारे, बेरोनी  
मुनी सुजतो अहाररे ॥ ७ ॥ मृगलो तो मन मांय चितवेरे ।  
धन २ खाती थारा भागरे जो में होतो मानवीरे, देतो सुपा  
तर दानरे ॥ ८ ॥ खाती मृगलो मुनिवर तीनों जणारे । बैठा  
छे आंबोल्यारी छांयरे । ९ ॥ चारुं दिशारो वाजो वायरोरे

टूटी है आवोल्यारी डाखरे ॥१०॥ खाती मृगलो मुनैवर  
तीनों जणारे, पोचा है पांचमे देवलोकरे । दस सागर की  
धती पामीयारे आगे होसी सिद्धरायरे ।

## श्री मेघकुंवर का स्तवन

श्रेणिक राय सुत धारणी जाया ओ, मेघकुंवर मैया  
नाम घराया ओ त्यागी वैरागी मैया जिन समझाया, जिन  
समझाया फिर घर नहीं आया ओ ॥१॥ थारे तो कारण  
मैया श्री जिन आया ओ । वाणी सुणी ने मैया संजम चित  
लाया ओ ॥ १ ॥ सेजा संथारी मैया अणसण ठाया ओ.  
बायर निकलता मैया साध संताप्या । निद्रा बिना तस मन  
बिलखाया ओ, मन मायी चितवे मैया श्री मुनिराया ओ  
॥२॥ आगे तो गणता मुझने साध सवाया ओ, आज की  
रेण मैया नजरयानी आया ओ । प्रगट परभाते पुछुं श्री  
मुनिराया ओ, जाय मिलूंगा म्हारी धारणी माता ॥३॥  
विध सुं तो वंदना कीधी श्री मुनिराया ओ, पूछण की वेरा  
मैया लाज भराया ओ वीर कहे सुणो धारणी जाया ओ,  
आज की रेण मैया बहु दुख पाया ॥ ४ ॥ गज भव होता तुम  
भजती जो काया ओ, जीव दया पर मैया बहु चितलाया  
ओ । तीन पगा सुं मैया ऊवा जो रईया तीन दिना में  
कारज सार्या ॥५॥ तीरीयंच भवकैरो मनुष्य ठेराया ओ,  
पुरब भव प्रनु तास जणाया ओ । चलचित होय कर साध  
जगायो ओ, धर्म सवारथ मैया नाम घराया ओ ॥६॥

जुग तो सैया नहीं रिखी राया ओ, फेर ग्रहोनी तुम संजम  
छाया ओ मन माई चितवे सैया श्री मुनिराया ओ, जाती  
समरण सैया पुरब भव जणाया ओ । ७। त्रीविध २ करी  
तन विसराया ओ, दोय नेण बीना कारमी काया ओ ।  
मास सयारो सैया अणसण ठाया ओ, बिजे विमाण सैया  
जाई सुख पाया ॥ ८ ॥ एक करीभव होसी सिद्ध सवाया  
ओ, पुज प्रसादे श्रावक इन गुण गाया ओ । संमत अठारे  
नेउ वर्ष बत्तीसा ओ, नंदकिशोर श्रावक इम गुण गायाओ ।

### स्तवन

समझ मन मेलारे २ गुरुजी समझावे दे २ हेलारे । ढेर ।  
लख चोरासी भमतो २ मानव भव तू पायोरे । गर्भवास  
तू भुगत २ ने हो गयो कायोरे । पाप कर्म तू कर २ प्राणी,  
ज्यों आयो ज्यों जासीरे । ज्ञानी वचन हृदय धारले, कट  
जावे फांसीरे । झूठी गथा मारन तजदे, तज निन्दा लय-  
राईरे । क्रोध मान अहंकार तजो, जब हे चतुर्गाईरे ।  
परनारी का व्यसन छोड़ दे, चोरी कबडुं न करनारे । चुगली  
चाटी छोड़, प्रभु का ले लो शरणारे ।

### श्री महावीर स्वामी की लावणी

दोहा-चरम तीर्थङ्कर पांय नमु, गुणधर गौतम साम ।,  
भगवंत का गुण गावता, पातक दूर पलाय ॥ समस्त जी  
देवी शारदा, लागु तुमारे पांय । अक्षर दो मुझे चुप सुं तुं  
सरस्वती माय ॥ ढाल- मैं नमु जैन शास्त्र कु कर्म कटजावे

विघ्न टल जावे पाप झड़ जावे मोक्ष मिल जावे । महावीर  
चरण कु शीष नम्या दुख जावे, वृद्धमान चरण कु शीष  
नम्या सुख पावे ॥१॥ कुंडनपुर नगरी पिता सिद्धारथ राजा  
माता त्रिसला दे जी ऐसा नन्दन जाया । कोई बीजा नहीं  
अवतार मुलक मन भावे, जिनजी के नाम से शरीर साता  
पावे ॥२॥ इन्द्र महाराज मिल कर मोछव आवे , जिनजी  
कृ लेकर मेरु शिखर नवरावे । बड़ी धागा देखी इन्द्र संका  
लावे, ये लघु बालक लघु उनकी काया, इनकी रे संका  
इन्द्र मन में लावे ॥३॥ इन्द्र की संका श्री जिनराज मिटावे  
जदी चरण अंगूठी मेरु शिखर हलावे जदी इन्द्र महाराजा  
मन में बहु सुख पावे, ये जग तारण छे अपार जिनकी  
काया श्री जिनराज के बल को पार कोई नहीं पावे ॥ ४ ॥  
इन्द्र महाराजा माजी पास पोड़ावे, जिनजी को देख कर  
तीन लोक सुख पावे ये देवी देवता मिल दरसन को आवे  
घन घड़ी धन भाग भलो दिन पाया, ये छपनकुंवारी मिल  
कर मंगल गावे ॥५॥ अब राजा सिद्धारथ जाचरु ने दानज  
देवे, कंचन घोड़ा गजराज उलट मन देवे जदी राजा सिद्धा  
रथ बहुविध जात जिमावे, वे सकल क्रिया पकवान कसर  
नहीं कांई, अब राजाजी का सुखे २ दिन जावे ॥६॥ प्रभु  
मात पिता ने रती दुख नहीं दीनो, जदी मात पिताजी  
आजखो पूर्णतीनो । सवराज रिद्धी छिटलाई ने संवमली-  
हुया चरम तीर्थद्वार चोखो कारण कीनो, प्रभु संजम ले

कर्मा की खाक उड़ाई ॥७॥ बहु अति हरख से प्रभुजी तप  
 निषजावे, खट मासिक पारणो चन्दण हाथे लेवे । बहु अति  
 हरष से महासतियांजी अहार वेरावे, जदी महासतियांजी  
 कर्मा की कोड़ खपावे, बहु अति हरख से प्रभुजी ने पारणो  
 करावे ॥८॥ प्रभु द्वादश अंग को ज्ञान श्रीजी फरमावे, ऐसी  
 वाणीरे मीठी खीर सुण्या दुख जावे । या बारे जातकी परखदा  
 सुणवा आवे, ऐसी वाणिरे सुण अरिहन्त को सीस नमावे,  
 कोई व्रत करे वैराग मन में लावे ॥९॥ गुणधर गौतम हुवा  
 प्रभुजी का चेला, जाने तुरत लियोसंजम सगला पेला ।  
 चारसौ ने चारहजार दिक्षा लीधी, एक दिन में दिक्षा मोछव  
 कीना, चऊदे हजार चेला प्रभुजी कनेपावे ॥१०॥ प्रभुजी  
 आरज अनारज देस श्रीजी विचरीया, जां खूब कियो उपकार  
 पांवापुरी आया । भवजीवां के भाग प्रभुजी पधार्या,  
 कातिक वदी अमावस सेवापुरी पोता, अब सिद्ध भगवंत  
 को जगत सीस नमावे ॥११॥ संमत उगणीसे साल बतीसो  
 आवे, मगसर की पूनम वार भलो दिन पावे । प्रभु याही  
 लावणी एक चित्त से गावे, जिनका घर में नित नई सम्पत  
 आवे, अरिहन्त के नाम से सर्व कर्म कट जावे विघन टल  
 जावे । १२॥ चरणारो चाकर अरज करे ओ स्वामी नंदलाल  
 को पार उतारो, अन्तरजामी । अब मेरकरीने प्रभुजी मुझने  
 तारो । ये मेर करीने भवसागर पार ऊतारो, सुखलाल सदा  
 अरणारो दास गावे ॥ १३ ॥

## श्री नेम राजुल का स्तवन

पेर पाछलड़ी सी रात हिरण्यांरे । बीचे ओ राजुल  
तारो उगयो जी ।टेरा॥ जठे आया देव विमाण सिंगासन  
पाछयो ओ, दखमण राणी जागियाजी ॥ १ ॥ जठे आया  
गोप्यारा कान जान पधारो ओं, पियाजी नेमीनाथ कीजी ।  
काना बिचे कुण्डल सोय, शीत विराजे ओ नेमीसररे ।  
सेवरोजी ॥२॥ जान्या आया छपन करोड़, हरजी पदारया  
ओ, नेमीसर री जानमेंजी । बाजे बाजारे झणकार नोवत  
बाजे हो, नेमी ॥३॥ नेमजी आया तोरण बार, पशये पुका-  
रया ओ, घुड़ला तो पाछा फेरियाजी । राजल पूछे सएल्या  
ने बात, तोरण वेदोये सएल्यां म्हारी बयों हूयोजी ॥ ४ ॥  
वे छे वाई सांवलिया सिरदार, थांने परणावा हो राजलवाई  
गडपतिजी । तोड़या २ कांकण डोर, नखल्यारी मेंदी ओरा,  
परहरीजी ॥५॥ खोलया २ नवसरहार, काजल टीकी ओरा,  
परहरीजी । खोलया २ सोले सिणगार, शीत की चुंवन  
होरा, परहरीजी ॥६॥ बाख चारोजी ने छोड़, नीम निबो-  
रिये सएल्या मारी कुण लावेजी । गज असवारी ने छोड़  
खर की असवारी ए सएल्या मारी कुण करेजी ॥७॥ असल  
सरवरिया ने छोड़ नाज नाइल्याए सएल्या मारी कुण नाये  
जी । असल नेमजी ने छोड़, ओरा की इच्छा ए सएल्या  
मारी कुण करेजी ॥८॥ चोरन दिन पेजी राजत जाय ।  
पछे पधार्या ओ नेमीसर मोक्ष में जी ।



## भजन

थारे हाथ में हीरो आयोरे, जरा करले कमाई । तू  
नीठ मनुष्य भव पायोरे कठु करले कमाई ॥टेर॥ लम्बोजी  
आउखो पूरण इन्द्रियां । तू शीर निगोगो पायोरे सुन्दर रूप  
देखी तू लुभायो । वृथाई जन्म गमायोरे धन दौलत थारे  
काम नी आवे । तू देखी ने कांई ललचायोरे, सत संगत  
थारे दाय नी आवे । तू धरम अमोलक पायोरे, संत समागम  
मिलीयो सागे । अनुभव प्यालो पायोरे ।

## महावीर प्रार्थना

जय बोलो महावीर स्वामी की । घटर के अन्तरयामी की  
॥टेर॥ जिस जगती का उद्धार किया जो आया शरण वो  
पार किया । जिसने पीड़ सुणी हर प्राणी की ॥१॥ जो पाप  
मिटाने आया था, भरत को आन जगाया था । उस त्रिशला  
नंदन जानी की ॥२॥ हो लाख बार प्रणाम तुम्हें हे वीरप्रभु  
भगवान तुम्हे, मुनि दर्शन मुक्ति गामी की ॥३॥

## भजन

तेरी मटकी में कइये ग्वालन, कृष्ण पूछे बात, मधुरा  
का कैसे मारग छोड़या, कूण तुमारी लार । ग्वालन लुम्का  
वाली, बाजुबन्द बेरखा वाली, और रंगीला चूड़ला वाली,  
और झीना घूँघट वाली, ओड़न ये वसंत्या साड़ी, दीखतड़ी  
— घपीरे रूपाली, बोलतड़ी तू अमृत वाणी चालतणी घूम

धूमाली, मैं थने पूछु परणी कुंवारी ॥१॥ मेरी मटकी में  
 दही दूध काना, तुझे पड़ी क्या बात, तू छे रे हाकिम का  
 लड़का, नहीं छे मूडे मूछ, चलयो जा मुरली वाला, और  
 रंगीली बंसरी वाला, नंदन के मोहन पूछे बात ॥२॥ मैं छुं  
 बाबा नन्द का लाला, कृष्ण मेरा नाम, दान लिया बिना  
 जावा नी देखूँ नन्द बाबा की आन ॥३॥ मैं छूँ बाबा  
 वृद्धभान की लड़की, राधा मेरो नाम, जो तुझे दान लेवा  
 को होवे तो आवेनी गोकुल माय ॥४॥ तू छे अलवेली  
 ग्वालिन, लम्बा तेरा केश, भवरा तेरा तीर कवाणी, मोयो  
 है गोकुल गांव ॥५॥ तू छेये अलवेली ग्वालन, अभी उतारूँ  
 मान, जोवनियाँ रो जोर हटाहूँ, अभी उतारू मान ॥६॥ तू  
 बाबा गांव का ठाकर, म्हारे वांकड़ली, थारे ने म्हारे हेत  
 छेघणो छे, दही में साकरली ॥७॥ राधाकृष्ण के झगड़ी  
 मचियो वृन्दावन के मांय, जो कोई झगड़ी मिटावन वालो  
 बंकुंठा में बात ।

### भजन नारायण का

अमृत नारायण को नाम २ । तजते काम क्रोध अभि-  
 नान ॥८॥ नारायण नर देही बनाई, तू क्यों भूलेरे गंवार ।  
 अमृत छोड़ ने जहर जो पीवो, झंखिया खोल पिछाण ॥९॥  
 पांव दिया तीरथ करने को, हाथ दिया दे दान । जवान दीनी  
 भजन करण कूँ फान दिया मुच ज्ञान ॥ परायो धन पराई  
 रोजन, तू क्यों झूरेरे गंवार । पराया धन की करे वासा-

नरक कुंड की खान ॥३॥ परायो धन पत्थर सम जानी, पर  
नारी को मात । इतना में हरि ना मिले तो तुलसीदास  
जमान ॥४॥

## श्री रहनेमी की ढाल

दोहा— अरिहंत सिद्ध समरुं सदा, आचारज उपाध्याय  
पांच पदा जी को हुं नमुं अठंतर सो बार । मोक्षगामी दोय  
जीवड़ा, राजमति रे नेम चारित्र घणो रलीयावणो, थे  
सुणजो धर प्रेम । २॥ शुभकारी सोरठ देस, राजा श्रीकृष्ण  
नरेश मन मोहनलाल दीपती नगरी द्वारकाजी ॥ १ ॥  
समुद्र विजय तियां भूप सेवादे राणी । रुड़ा रूप मन-  
मोहनलाल राणीजी मानीता जी ॥२॥ ज्यां के जलम्यां हे  
अरिहंत देव चोसठ इन्दर करे सेव मन. बाल ब्रह्मचारी  
बावीसमाजी ॥३॥ अन्त समे राजुल नार, तेल चड़ी ने  
छोड़ी निराधार । मन. सतियां के फिर सेवरोजी ॥ ४ ॥  
रह नेमीजी राजा रुड़ा रूप, भर जोवन भर चोप । मन.  
लघु बंधव, श्री नेमकाजी ॥५॥ परण्या है कन्या पचास,  
भोगवे भोग विलास मन. सुख विलसे संसार काजी ॥६॥  
नाटक ना झणकार, रमण्या रूप रसाल । मन. मनवंचित  
क्रीड़ा करेजी ॥७॥ प्रतिबोध्यां रह नेम, लागो धर्म से प्रेम  
मन. वाणी सुणी ने वैरागियाजी ॥ ८ ॥ जाण्यो है अथोर  
संसार, लीनो हे संजम भार । मन रह नेमी पचासों ही  
परहरीजी ॥९॥ छोड़या हे छत्ता भोग, लीनो है मारग

जोय । मन, कठिन क्रिया मुनि आदरीजी । १० । एक गुफा  
 के मांय घरता जिनेसर को ध्यान । मन, काउसग में क्रिया  
 करेजी ॥ ११ ॥ यो हुई पहली ढाल, रिष रायचन्दजी भणरे  
 रसाल । मन, आगे निरणो सांभलोजी ॥ १२ ॥ दूसरी ढाल-  
 राजमति तो ह्वा साधवी संजम मारग पालेजी, घणी महा-  
 ततियाजी का हुई गुराणी सती दया मारग उजवालेजी ।  
 धी नेम जिनन्द वन्दन को चाल्या, राजुल गड़ गीरनारयां  
 जी । सातसो तो सखी संघाते, लीनो संजम भारोजी । दर-  
 सन को तो लग्यो उमावो, चली आरज्यां तीणवारोजी । २।  
 उजाड़ में तो ऊठी बावड़, मच गयो घोर अंवेगेजी ।  
 मारग में तो वर्षा हो गई, अटवी डंडा कागेजी ॥ ३ ॥  
 बिछड़ गई आरज्यांजी सारी, अंवारो नहीं सूजेजी, सगली  
 महासतियांजी चली गई, सती मारग कीने पूछेजी ॥ ४ ॥  
 राजमती रह गया, अकेला घणा हो गया कायाजी । भीज  
 गया, साड़ी ने कपड़ा, सती गुफा में व्याजी ॥ ५ ॥ राजमती  
 रहे नेमी केरो, मिल्यो गुफा में बांगोजी । भीजा काया  
 छलगा मेल्या, साधवी चतुर चुजाजी ॥ ६ ॥ राजमती  
 लयाई ऊभा, कंचन बरणी कायाजी । उभाया में मीठा  
 देया, पुरय रूप की मायाजी ॥ ७ ॥ रूप देया ५५ मीठी  
 रतिया, संजम से मन भांगोजी । काजी अंधा कछुपन पूरे,  
 दिव्य भोग मन लागोजी ॥ ८ ॥ जोन ऊँहो जीन आरग के  
 नामस मोहन बागोजी । गुह जिमली से मंत्र

पछे करस्यां करणीजी ॥ ६ ॥ कंपन लागी सगली काया  
 सती सोच में ऊभाजी । अंग उपांग तो कछुयन दीखे,  
 साध्वी हेटा बैठाजी ॥१०॥ डरती देख सती से बोल्यां, में  
 छुं रहनेमीजी । समद विजय राजाजी का बेटा, सोच करे  
 छे केमोजी ॥११॥ राजमती तो हिये विमासे, जात वंश  
 रह नेमीजी । सारो शील कदीयन भंजु, समजासु धर प्रेमो  
 जी ॥१२॥ हूजी ढाल तो हो गई पूरी, रीख रायचन्दजी  
 बोले एमोजी । शील संतोषी दोनोंई जीवड़ा, ज्यां घर  
 कुसल खेमोजी ॥१३॥ दो. भीजां पेर्या कापड़ा, ढांकयो सकल  
 सरीर । राजमती कहे रह नेमसे, थे शियल मति खंडो वीर  
 ॥१॥ शील बड़ो संसार में, थे सांभलजो रहेनेम कुमार ।  
 शीयल में सेठा रेंवजो, थने कहूं छुं बारंबार ॥२॥ साध्वी  
 ने वचन कयो छे एम अणीभव की मारे आकड़ी मारे जाव  
 जीव का नेम मुनिवर डिगजे ना थे माठी बिचारी मन मांय  
 मुनि. मारो शील रूपी यो धर्म मुनि, मारो सुगत महेल में  
 मन मुनिवर डिगजे ना, यो तरसे थारो तन मुनि. ॥१॥  
 गांवा नगरां विचरतारे देखो सुन्दर नार । हडु वृक्ष तणी  
 पेरेरे, थे मोटो उठायो भार ॥२॥ हडु वृक्ष हेटे पड़ेरे बाध  
 तणे संजोग । अस्थिर होसी थारी आत्मा थे रुलसी बहू,  
 संसार ॥३॥ गंधन कुल जिम कांई हुवोरे, अगंधन कुल  
 को सरप । भस्म हो जावे आग में पण राखे कुल की शरम  
 ॥४॥ गंधन कुल जिम कांई देखेरे, बंधव सामे जोय ।

चाग्रि चिनामणी सामखो, थे कादा में मत खोय ॥५॥  
 वनियाकी इच्छा कुण करेरे, विक थारो अवतार । जीतवसे  
 मरणो भलो, ये लीना महावत चार ॥६॥ चन्द्र अग्नि  
 ना जरेरे, समुद्र नी जोवे कार । पिच्छम भानु ना उगे,  
 थारो कुलधंतो आचार मुनि. ॥७॥ अन्धक विसनु का पोता  
 रे, समद विजेजी का नन्द । कुल सामो जीवो नहीं थे कांई  
 तोड़ो काचा सूत । ८॥ भोज राजा की पोतीरे, उग्रसेन मारा  
 तात । दोनों का कुल दीपता, थे कांई बिगाड़ो बात मुनि.  
 ॥९॥ जो आवे बीसम चलोरे, नल कवर के उणियार ।  
 जो आवे खुद इन्द्र चली तो, बंधु नहीं लगार मुनी. ॥१०॥  
 गाथा का धणी ग्वालियां रे, थे मती जाणो कोय । संजम  
 का धणी थे नहीं थे चाल्या चारित्र खोय मुनी. ॥११॥ मधु  
 घृंद के फारणरे मुंडो दियी मांड । अल्प सुखा के कारणे  
 थे जुग में होमी भांड मुनी. ॥१२॥ चन्दन वारे वावनारे,  
 फरनु चावे राख । चोया से चुषया पछे, थारे कांईनी आवे  
 हाथ मुनी. ॥१३॥ रतन जतन कर राखजोरे, खंडिया लागे  
 खोड़ । जीवन में धोकी धणो, थे करजो जतन फोड़ । १४॥  
 हाथी लप्या नेमजी रे, महावत राजुन नार । वचन लप्या  
 अंकुश किया, कांई लाया मार्ग ठाण मुनी. ॥१५॥ तीजी  
 टाल तो हो गई पूरी, रिख रायचन्दजी बोले । एम शील  
 संतोषी दोनों ही जीवड़ा, ज्या के रंग धर्म से लागोजी ॥१६॥  
 दोहा-रेहनेमो दोल्पां, धाने कहं सांची बात । सब सतिपां

में मौटकाने, बात कहूं विस्तार ॥१॥ ढाल ४-भला वचन  
 थे बोलिया रेलाल, इस बोल्या रहनेस सुणो साध्वीए । हुं  
 डगियो थे थीर कियोरे लाल, झूंडो झूंडो मायरोरे लाल  
 बुरा निकल्या मारा वेण सुण ॥१॥ मैं अणी समुद्र में डूबतो  
 रेलाल । था लीनो मने झेल सुणो. ॥२॥ थे उपकार मोटो  
 कियो रेलाल । जाणे रंक ने दीनो राज सुणो. ॥३॥ रूप  
 कूप देखि पडियो रेलाल । थारे शील दीपक में दिवलो मेल  
 सुणो ॥४॥ मैं अणी विसे मांय लिपटीयो रेलाल । वली  
 कुसल्यो ने कंगाल सुणो. ॥५॥ थारी काया में कंदप व्या-  
 पियो रेलाल । निरखंता डिगिया मारा नेण सुणी. ॥६॥  
 निरथक वचन मैं बोलिया रेलाल । कुमति घोल्यो बोल  
 सुणो. ॥७॥ मैं मोटी सती ने. संता पीयारेलाल । सागर  
 जितनो भार सुणो । ८॥ मैं नारी परिसो नहीं जीत्योरेलाल  
 मारे घट माय छाियो पाप सुणो. ॥९॥ सब सतियां में मोटी  
 सती रेलाल । थारे घट मांय धणी छे वेराग सुणो ॥१०॥  
 सब पुरुषां में उत्तम हुवारेलाल । रहनेमी अणगार सुणो.  
 ॥११॥ चौथी ढाल पुरी हुई रेलाल । रतना ने नहीं लागे  
 खोड़ सुणो ॥१२॥ दोहा—सुरा तो सांभें हुवा, ने रयाँ संजम  
 में सुर, बिबेकसाय कर्म तोड़ने, अशुभ कर्म किया दूर ॥  
 ढाल ५ थारा सोय पडल अलगा किया, थारा घट माय  
 आय गयो ज्ञान । रहनेस विष जाण्या विष सारखो मारा  
 वचन लिया थे मान, रहनेस थीर कर राखी थारी आत्मा

॥१॥ ये तो नव वाड़ सेठा किया, थारा पड़ गया दुष्ट  
परिणाम रहनेम था तो मोक्षनगर तामें मांडियो, थारा शील  
रथ उपर बैठ । २॥ पंथ लियो जी ये तो पादरो । था तो  
फीनी छे खड़ी रीत रहनेम । ३॥ चाको मन मुगत्यां माय  
जाय लागो, थारा ज्ञानी गुरु से प्रीत रहेनेम । जस फेल्यो  
जी थारो जुग माई, ये तो फीनी छे आछी रीत रेह.  
॥४॥ ये तो जीत्या जी स्वाद जिभ्या तणा, ये तो इन्द्रियां  
फीनी यस्त रहनेम । खाणो ने पीणो पहर्यो, थाके नहीं  
लालच नहीं लोभ रह. ॥ ५ ॥ थाके तेज घणो जी तपस्या  
तणी, थारी चार फषाय जासी दूर रहनेम । कर्मबीज अंकुर  
सेल्या नहीं, थारा परा गया पाप का परिणाम रह. ॥६॥  
जो मन जीतेरे मानवी, ज्यारी जासी जमारो जीत रहनेम  
जो मन मेले रे मोहलो, ज्यारी जुग माय होसी फजीत रह.  
॥७॥ शील उपर हुई पाचमी ढाल, या तो सूत्र के अनुसार  
रहनेम, मिलता मुतर के आतरे, दारे बीसा में कियो  
दिरतार । रहनेम. धीर कर राखी थारी आत्मा ॥८॥

### कन्दु राजा का स्तवन

धन पनटायेरे रे या सदा एकता नहीं रहावेरे ॥१॥  
पुत्रज सी भी तीन अवस्था, दिव्य बीच हो जावे रे । घाल  
एवा दूध अवस्था, पूं पनटा लावे रे ॥२॥ पर कन्दु नृप  
पंथा नगरी फो, नीति से राज चलावे रे । रवी से तेज पुंज  
भूप ई मुतरे भावेरे ॥३॥ एक दिन घन जाता नारग में.



गोवर्द्ध दरसावेरे । खूब पिलाओ दूध इसे, यूँ हुकम सुनावे  
 रे ॥३॥ योवन में हुवो मस्त, दूधमल सांड नाम ठेरावे रे ।  
 ऐसी अवस्था जोय नृप वेद ने बुलावेरे ॥४॥ हम नहीं  
 मरे अमर रहें जग में, नहीं बुढ़ापो आवे रे । जागीरी  
 बक्षीस करुं जो दवा खिलावेरे ॥५॥ नहीं होई नहीं होने  
 को यह सब मित्र मिल समझावेरे । कालरूपी वायु के आगे,  
 सब विरलावे रे ॥६॥ होय बेरागी राजकुंवर ने गादी तुरत  
 बैठावेरे । प्रत्येक बुद्ध संजम ले फिर मोक्ष सिधावेरे ॥७॥

### चित्त समाधि का स्तवन

चित्त समाधि हुवे जी दस बोला, इस भावयो भगवान  
 रे प्राणी । लील विलास सदा रहे चित्त में, आनन्द में दिन  
 जायरे प्राणी । १॥ अपूर्व पुण्य जीव जिन धर्म पायो, ज्यारे  
 कमी न रहे कायरे प्राणी । कल्पवृक्ष ज्यारी आशा पूरे,  
 मनवंचित फल पायरे ॥२॥ दूजे बोले जाति स्मरण पामे,  
 पुण्यतणे प्रसाद रे प्राणी । पूर्वला भव देखे भली पेरे,  
 समझे चतुर सुजान ॥३॥ उत्कृष्ठा नवशे भव लगता, जाणे  
 संतो पंचेन्द्रिय का ठीकरे प्राणी । अपणो परायो आउखो  
 जाणे, मति ज्ञान मंगलीकरे ॥४॥ मृगा पुत्रजी सहल में पाम्या,  
 वलि मेघकुमार रे प्राणी । मल्लिनाथजी का छउ मित्रो,  
 पाम्या समकित सार ॥५॥ क्षत्रिय नामे ऋषिश्वर, वलि सुव-  
 र्शन सेठरे प्राणी । नमीरायजी संजम लीनो, तीनों ही पोंच्या  
 ठेठ ॥६॥ भगु पुरोहितना दोनुं बेटा, वली तेतली प्रधानरे

प्राणी । जाति स्मरण अति सुख पाया, पाया मोक्ष निदान  
 ॥ ७ ॥ तीजे बोले यथार्थ सुनो देखी । जीव अति ही  
 हर्षाय ॥ ८ ॥ वणि भव मांही सुगति सिधावे, यो सुपनो  
 श्रेकार रे प्राणी । अरिहन्त देवजी री माता देखे, ज्यारो  
 भगवती में विस्तार ६ चौथे बोले देवज दर्शन, दीठा  
 ठरे निज नयणरे प्राणी । जगमग २ जोतज दीपे, समदृष्टि  
 ये वेणरे । १० ॥ सोमिल ब्राह्मण ने समझायो, देव समदृष्टि  
 आय रे प्राणी । अरिहन्त देवसुं कर दियो भेटो, भाखियो  
 निर्यावलिका माय ॥ ११ ॥ सकडाल कुंभार कने आई, देव  
 ऊभा प्रत्यक्षरे प्राणी । अरिहंत देवजी सुं कर दियो भेटो,  
 काढ़ दियो मिथ्यात्वरे । १२ ॥ पांचमे बोले अवधिज ज्ञानी,  
 जारी नंदी सूत्र में विस्तार रे प्राणी । आनन्दजी ने महा-  
 सतकजी, वली केशी समण कुमार ॥ १३ ॥ अरिहंत देवजी  
 दुनियां में आया, माताजी रा गरभ मुझार रे प्राणी । पेट में  
 पोड़िया दुनियां देखे, पूरा पुण्य संचया जगन्नाथ । १४ ॥  
 सरवार्थ सिद्धरा देवता देखे, बैठ थका लोकपालरे प्राणी ।  
 अरिहंत देवजी ने प्रश्न पूछे, उत्तर देवे दीनदयाल ॥ १५ ॥  
 छटे बोले अवधिज दरसन जारी नंदी सूत्र में विस्तार रे  
 प्राणी । सातमे बोल सुणो हो सुज्ञानी, मन पर्यवज विस्तार  
 ॥ १६ ॥ मन परवज मुनिराय के होवे, लब्धिवंत अणगार रे  
 प्राणी । ज्यां पुहषा ने सूत्र गूथिया, उत्तर देवे दीनदयाल  
 ॥ १७ ॥ दोय समुद्र द्वीप अढ़ाई, जामें सत्नी पंचेन्द्री होय रे

प्राणी । जा जीवारी मनरी बातां, छानी न रेवे कोय । १८।  
 आठमें बोले केवल ज्ञानी, नवमें केवल दर्शन होयरे प्राणी ।  
 चवदे ही राजु लोक देखी भली पेरे, कहता न आवे पार । १९॥ जघन्य तीर्थङ्कुर बीस बिराजे, उत्कृष्टायां एक सो  
 सितर रे प्राणी । गणधरजी ने केवल ज्ञानी, हुवा छे पाटो-  
 पाटरे । २०॥ लोक मांहे उद्योतजकीनो केवली प्रभु चौबीस  
 रे प्राणी । तीरथ थापी ने कर्मा ने कापी, जगतारण जग-  
 दीश ॥ २१॥ दसमें बोले केवल मरण पाभ्यां, पोछे निर्वाण  
 रे प्राणी । ये दस बोल हुआ संपूर्ण वीर वचन परमाण  
 ॥ २२॥ नेऊ जणारो नामज चाल्यो, अन्तगढ़ सूत्र के मायरे  
 प्राणी । कर्म हणी ने केवल पाया, हुवा सिद्ध भगवंत ॥ २३॥  
 दशाश्रुत स्कंध में चालियो, बलि समवायांगरी साखरे प्राणी  
 इण अनुसारे करणी करने, रिख रायचन्द इम भाखरे प्राणी

### स्तवन

इतना तो होना प्राणी । जब प्राण तन से निकले टे।  
 शुभ ध्यान शुक्ल लेश्या । परणाम में अबुठ्या क्षायक सम्य-  
 कत्व धरले ॥ १॥ संलेषण जो हमसे एक वर्ग हो चुकी हो ।  
 ताजिन्दगी के पापो आलोचना भी करले ॥ २॥ पुद्गल में  
 ना लुभाते असिआउसा जपते । गुरु गुण पे ध्यान धरले  
 ॥ ३॥ पादो गमन अनसन करके । अडोल रहवे चीतराग  
 भाव धरले ॥ ४॥ चउगती के बन्ध टूटे शिवरमण सुख लूटे ।  
 नज स्थान रत्न वरले, जब ॥ ५॥

## धन्नाजी की ढाल

दोहा—नंमा अंग नीजा वरगें में, किया धन्नाजी का  
भाव थे सुणजो चतुरा नरां, धरिये मन हुलास ॥ १ ॥  
वैरागी सिर सेवरो, धन धन्नाजी अणगार । तेय तणा गुण  
वरणवुं पातिक दूर पलाय ॥ २ ॥ ढाल पेली—नगरी  
काकंदीओ अति रलिया वणी, सेंश्रावन उद्यान हो भविक-  
जन परजा लोक सुखी ओ तणी । नगरी में जेशत्रु राजान  
हो भविकजन, भाव धरीने ओ भवियन सांभलो ॥ १ ॥ भद्रा  
सार्थवाही वसे तियां जाने गंज सके नहीं कोय हो भवि.  
तस घर धन्नाजी कुंवर जनमीया, ज्यांरो रूप देखी ने सगन  
थाय हो भ. ॥ २ ॥ भर जोवन में ओ आय जाणी करी पर-  
णाई बत्तीस नार हो भ. । क्रोड़ बत्तीस सोनैयारो डायचो  
सुख विलसे लीला लेरहो भ. ॥ ३ ॥ खट रस भोजन  
विज्यां नित नवीं घणा दासी ने घणा दास हो भ. । मेल  
तेतीसा ओ लीला कर रया नाटकना झणकार हो भ. ॥ ४ ॥  
विचरत वीर जिनेसर समोसर्या, लक्षण एक सेंस ने आठ  
हो भ. । बारा परखदा हो आई, वंदवा लग रह्या धर्म का  
ठाट हो भ. ॥ ५ ॥ कर असवारी ओ राजन् संचर्या, कोणिकरे  
मन कोड़ हो भ. । पंच अभिगमण तियां मुकने, बध्यां  
हे वे कर जोड़ हो भ. ॥ ६ ॥ पहजी ढाल संपूर्ण जे थई,  
समोसयां जिनराज हो भ. । नगरी में हगमग लागी अति  
घणी लोक टोरे २ जाय हो भ. भाव धरीने ओ भवियन

सांभलो ॥७॥ ढाल दूसरी-धन्ना नाम कुंवर बैठा हे गोख  
 मुझार । थे सुणजो चितलाय, लोकां ने देख्या जावताए  
 । १॥ धन्नाजी पूछे एम लोक जावे छे केम थे सुणजो  
 चितलाय । कणी मोछब सेलो मंड्योए ॥ २ ॥ सेवक कहे  
 कर जोड़, समोसर्या जिनराज । थे सुणजो चितलाय,  
 परखदा जावे छे बंदाए ॥ ३॥ सुण्या सेवक का वेण मीठा  
 लाग्या अमिय समान थे, बंदा को मन उलटयो ए ॥ ४॥  
 सकल कियो सिणगार, बहु लोकां रे परिवार जंमाली जीम  
 संचर्याए । ५ । तिया आया जिनराज पंच अभीमण सांच ।  
 थे सन्मुख बैठा श्री वीर के ए ॥ ६॥ जिनवर दे उपदेश  
 काल घटे हमेस । थे । जनम मरण दुख लग रयाए ॥ ७॥  
 जैसी उनालारी छांय, जैसा संसार्या रा भोग । थे । चरणारा  
 दरसन दोयलाए ॥ ८॥ धन कुटुम्ब बहु माल काई फसियो  
 माया रे मांय थे कमल भंमर तणी पेरे ए ॥ ९॥ मेलो मंडयो  
 असराल, अण चित्यो उठ जाय । थे । जीव वटाउ पामणोए  
 ॥ १०॥ जिनवर दे उपदेश, लाग्या वैराग्य का वाण ! थे ।  
 धन्नाजी कहे कर जोड़ी ने ए । ११॥ सैं लेसुं संजम भार,  
 छांडुं बत्तीसी नार । थे । आज्ञा लाऊं घर जाई ने ए । १२॥  
 जिनवर बोले एम जो सुख थानेजी होय ! थे । ढीलनी करणी  
 देवानुं प्रियाजी १३॥ इम भाखे श्री दीनदयाल या थई  
 दूसरी ढाल । थे ! आज्ञा लावे घर जाई ने ए । १४ । २।  
 तीसरी-घरे आई ने इम कहेरे लाल, हूं लेसू संजम भार ।

सुणो मातजी ओ कृपा करीने, दीजो आज्ञारे लाल ढील नी  
 करणी लगार सुणो. ॥८॥ ईवचन श्रवण सुण्यारे लाल,  
 माताजी गया मुरछाय सुत साभलोरे । चेत लई ने माता  
 कहे रि लाल, हूं आगन्या देऊं कणी रीत, सुत साभलो  
 रे । चारित्र छे वच्छां दियलोरे लाल ॥ १ ॥ एकाएकी जो  
 पुत्र मायरे रे लाल, हूं आज्ञा देऊं कणी रीत सुत साभलोरे  
 ई कंचन ई कोमण्यां रे लाल, सुख विलसो धर प्रेम सुत ॥२॥  
 पांचों हो महाव्रत पालणोरे लाल, पांचु ही दुक्कर घोर सुत  
 बावीस पौसा जीतणारे लाल शील पालणी नववाड़ सुत.  
 ॥३॥ खड्ग धारि पर चालणोरे लाल, करणो उग्र विहार  
 सुत । मोय माया दोई जीतणीरे लाल, मरण आया रो नहीं  
 सोग सुत. ॥४॥ सावद्य ओषध नहीं लेणीरे लाल, करणो  
 माथा को लोच सुत । हरगिज थांसु नहीं पलेरे लाल, मत  
 करो झूठी झोड़ ॥५॥ नरक निगोध्या में हूं भम्योरे लाल,  
 हूं भमियो अनन्ती वार सुणो मातजी ओ । जनम मरण  
 दुख मैं सयारे लाल, कयो कठा लग जाय सुणो मातजी ओ  
 कृपा करीने दीजो आज्ञारे लाल ॥६॥ हरगिज तो रे सुं नहीं रे  
 लाल, हूं लेसु संजम भार सुणो मातजी ओ । वरजत माता  
 थाकी गयारे लाल, या थई तीसरी ढाल सुणो हो मातजी  
 ओ. ॥७॥ ढाल चौथी—हारे लाला महाबल कुंवर तणीपेरे,  
 माताजी ने उत्तर देयरे लाला कवर थावरचा तणीपेरे ।  
 दीक्षा लीधी मोठे मंडाणरे, वेरागी वेराग में झलरया ॥८॥

हारे लाला माला रे मोती खोलिया, माता झेल्या है खोल्या  
 रे मायरे लाला । ढरक २ आंसु पड़े, जाणे टुट्यो मोत्यांरो  
 हाररे बेरागी ॥२॥ हारे लाला भगवंत ने दीनी भोलावणी,  
 पुत्र ने दीनी सीखरे लाल । थारी करणी में कसर राखी मती,  
 गुरु की आज्ञा में रीजो ठीकरे वे ॥३॥ हारे लाला माताजी  
 वंद निज थानक गया, धन्नाजी थया अणगाररे लाला । सुमत  
 गुपत नी खप करे, क्रियारा कोट पेले पाररे । वे ॥४॥  
 हारे लाला चरण झेट्या, जिनराज का दीक्षा लीनी तणी  
 यज दिनरे लाला । बेले २ पारणा, जावो जीव लग नहीं  
 घालु भंगरे ॥५॥ हारे लाला जिम सुख होवे तिमकरो, श्री  
 वीर दियो फुरमायरे लाला । धन्नाजी सुण राजी हुआ, अब  
 साहं आतम काजरे ॥६॥ हारे लाला आमल करसुं पारणो  
 खड़ल्या हाथां सुं लेसुं अहाररे लाला । नाकंती बेला मंगा  
 नहीं वंछे एवो, पारणे करसुं अहाररे वे ॥७॥ हारे लाला  
 आहार मिले तो पाणी नहीं मिले, पाणी मिले तो नहीं मिले  
 आहार रे लाला । दिनपणो भाखे नहीं, क्रोधादिक जीत्या  
 मुनिराजरे ॥८॥ हारे लाला आयो बेलारो पारणो, काकंदी  
 नगर मुझाररे लाला । गौतम सामी तणीपेरे, आहार बतायो  
 वीरजी ने लायरे ॥९॥ हारे लाला भगवंत दीनी आगन्या,  
 जाणे बिलमाये बैठो भुजंगरे लाला । मुरछागत आणी नहीं  
 मुनि मांड्यो कर्मासुं जुद्धरे ॥ १० ॥ हारे लाला जिनपव  
 विचरे देस में, धन्नाजी वीरजीरे पातरे लाला । समायक

आवदेई मुनी भणिया इग्यारे अंगरे ॥११॥ हारे लाला तप  
तप्या अति आकरा मुनि, लीधी अतापना घोररे लाल ।  
ध्यान में रेवे तला लीन में, मुनि मांड्यो कर्मसुं जुद्धरे  
॥१२॥ हारे लाला काया तो सुकी कंखर हुई, खंदकजीरी  
पेरे जाणरे लाला । चौथीरे ढाल पूरी हुई, अब शरीर तणो  
विस्ताररे बेरागी ॥१३॥ ढाल पांचवी-सुकी रे छाल काण्ट  
पावड़ी, एवा सुका रिखना पांवोरे । लोई ने मांस सुकी गया  
दुर्बल दिखे छे लुखारे श्री धन्ना मुनिसर तप तप्या ॥१॥  
मूंग उड़दनी कोमल फलियो एवी सुकी तेनी फलियारे ।  
एवी तो धन्ना मुनिराज की सूखी, पग की आगलियारे ॥२॥  
पशु पक्षी ने काग मोरिया, एवी सूखी रिखनी जांघारे ।  
गोड़ारे गांठ वनास्पति, पर परणाम चंगारे ॥३॥ पिड़्या  
तो सींदुं कुपल सारकी, कड़िया ऊंट अबर पावोरे । पेट  
सुकाणो जाणे दीवड़ो, ऊंडो बंढ्यो अषागोरे ॥४॥  
अरीसा उपरा ऊपरी मेलिया, एवी पासलिया जाणोरे  
एवी तो धन्ना मुनिराज की, पासल्या सारली पीछाणोरे ॥५॥  
छाती तो दुपड़ जाणे बीजणो, बय्या खेजडनी फलियारे ।  
हाथारो पंजो बड़को पानड़ो, एवी कुड़त आगलिया तेनी  
फलियारे ॥६॥ गलो तो सुकी कड़वा जेवड़ो, डाढ़ी आम  
तुले जाणोरे । सुखो झरोका होट जेवड़ी, जिम्ब्या सूखी साग  
पानोरे ॥७॥ नाक निगोरा की कांतरी, आख्या छेदर दोई  
जाणोरे । अथवा तो तारो परभात को कान कांदा होत



जाणोरे ॥८॥ सूखो तो कोरो अथवा तूंबडो, एवो सुखो  
 रिखरो शिसोरे ॥ लोही ने मांस सूखी गद्या, बोल थया इक-  
 वीसो ॥९॥ उदर होट कान जेवडी, एवी चांम नस्सा जाणो-  
 रे । सतरे बोला में घाल्या हाड़का, देही दीखे महाविकरालोरे  
 ॥१०॥ ढीला पलांणा तंगी पावड़ा, एवा लटके बेहुं हाथोरे ।  
 अऊंर बले हले चालता, बहुं कंपे जीमे माथोरे ॥११॥ सूखी  
 क्यारी तलगी सगरी, एवा बाजे खड़ २ हाड़ोरे । ढांकी तो  
 अगनी तणीपेरे, तेज दिखे अति साड़ोरे ॥१२॥ तप तप्या हो  
 अति आकरा मुनिवर जोर काया कस्सोरे । परवा नी राखी  
 कणी वात की, सूरत मुगत्यां सुं लागीरे । ढाल-६ठी वीर  
 जितेसर समोसया, जितन्द राय राजगरी के बार ओ ।  
 श्रेणिक राय आया वन्दवा, जितन्द राय साथे अभयकुंवार  
 ओ ॥८॥ ढेर ॥ जिनवर दे धर्मदेशना जितन्द राय सर्वजीवां  
 हितकार ओ श्रेणिकराय पूछा करी जितन्द राय, मुनिवर ।  
 चउदे हजार ओ, दुक्करा करणी निरजरा, जितन्दराय चउ-  
 दमें शिस कुण थाय ओ, वीर जितन्द असड़ी कहे, श्रेणिक  
 राय मुनिवर चउदे हजार ओ, दुक्करा करणी निर्जरा,  
 श्रेणिकराय चउदेमा शीष धन्नाजी थाय हो, श्रेणिक राय  
 राजी हुवा जितन्द राय चरण भेट्यां वारम्बार ओ सुकरथ  
 नर भव थे लियो, जितन्द राय धन्य थारो अवतार ओ,  
 वीर जितन्द समोसया, जितन्दराय राजगरी के मांय ओ,  
 रात्योई धन्नाजी चितवे जितन्द राय, जाण्यो अवीर संसार

ओ, छट्टि रे ढाल-पूरी हुई जिनन्द-राय अंगे सुणो अधि-  
 कार-ओ ढाल सांतमी ॥ धन्ना-मुनिसर मन चितवे, तप-  
 करता सूखी हम-तणी देयके, वीर-जिनेसर ते पूछने आज्ञा  
 लई ने देऊं संथारो ठायके ॥ धन करणी ओ धन्नराज की  
 धन्न करणी ओ मुनिराज की ॥ ८॥ पो उठी वंदे श्री-वीर-  
 ने वीरजी, दीनी-अज्ञा फरमाय के ॥ विसला-गीरी थेवरा  
 संगे, आया है सर्व-साधु-खसाय के ॥ ९ ॥ आयो संथारो एक  
 मास को, थेवर आया वीरजी के पाम ॥ भड़ उपारण तियां  
 मूकते ने, गौतम-सामी, पूछे बेकर जोड़ के ॥ १० ॥ तप तप्या  
 ओ अति-आकरा को सामी, कहां जाई ने, लीधो वास के  
 सागर, तेतीसारे ॥ आऊंखे नऊं-महिता में, स्वारथ सिद्ध होय  
 के ॥ ११ ॥ महाब्रह्मदेह क्षेत्र में, सीझसी, विस्तार जमा अंग के  
 माय के ॥ सत ढाल्यो पूरो हुवो ॥ अशकरण मुनि भणे सूत्र  
 के अनुसार के ॥ १२ ॥ संमत अठारे गुणसाठ में, वैयाख सुदी  
 पुखज मासके ॥ बुद्धि सारु गुण गाविया सामी कुशलचंदजी  
 भणे गुरु परसाद के ॥

### श्री अखाड़ भुतिजी की ढाल

दोहा-बरसन परीसों बाधीसमो, तेना कठज काम ॥  
 पांचो दोसण परहरो सेठा राखो परणाम ॥ १ ॥ उत्तराध्येन-  
 कथा सदे ने, चाल्या अखड़ज भूत ॥ प्रथम प्रणाम पाछो  
 पड़्या, पछे सेठा राख्या सुत ॥ २ ॥ ढाल पेली-अखाड़-भूति  
 अणगर बहु सीखारे परिवार, मन मोहन सामी ॥ अचारज ॥

चड़ती कलाय । १॥ आगम अरथ सो जाण, हेतु दृष्टांत  
 ना जाण । मन । चेला बनाया चोपसोए ॥ २॥ एक चेले  
 कियोजी संथार, गुरु बोल्यां तीण बार । सुण चेला मारा  
 जो तु होवे देवताए ॥ ३॥ तु मुझने कीजे आय, जेजन कीजे  
 काय । सुण चेला मारा गुरु सम जग में कोई नहींये ॥ ४॥  
 एक दोय तीन चेला कियो जी संथार, पण कणीये नी पूछी  
 मारी सार । सुण चेला मारा कणी आई कयो नहींए ॥ ५॥  
 तु मारे चोथो चेलो होय, तुज सम और न कोय । सुण ।  
 मैं साज दियो संजम तणोए । ६॥ तू मारे सीख नित थारे  
 मारे पूरी प्रीत, सुण चेला मारा तु अन्तर बुगता मायराये  
 ॥ ७॥ तु मने मति जाजे भूल, कीजे वचन कबूल । सुण । तु  
 मारे वेगो आवजेए ॥ ८॥ चेला छोड़िया प्राण, जाय उपन्या  
 देव विमाण । मन । रिद्धि वृद्धी पाम्या घणीए ॥ ९॥ झगमग  
 मेलां री जोत, जाणे सूरज उद्योत । मन । जारी झरोकां झल  
 रयाए ॥ १०॥ थांबे पुतली रही फाग मेला मांही मेराप ।  
 मन । रतन जड़त घर आंगणोए ॥ ११॥ पागा रतन जड़ाव,  
 ईसां उपर सोनारा जाण । मन । रतनारो वाण पंचरंगनोए  
 ॥ १२॥ लुवाकसी ओ सेज, दीठा उपजे हेज । मन । सुवालो  
 माखण सारीखोए ॥ १३॥ चुवा चंदण चपेल, जणीरी रेला  
 ठेल । मन । फूल गुलाबी वाड़ी खुलरहीए ॥ १४॥ कपड़ा मांही  
 गलतान, गेणांरो नहीं कोई ज्ञान । मन । देखंता लोचन ठरेए  
 ॥ १५॥ मेंला वींचे दोनों बाग, वली छत्तीसी राग । मन ।

नाटक बत्तीस परकारनाए ॥१६॥ दीपती देवांरी देह, जाग्यो  
 नवलो सनेह । मन-देव्यासु मोह रया देवताए ॥१७॥ एक  
 नाटकरेक्षणकार, वर्ष जावे दोय हजार । मन । गुरु याद आवे  
 नहींए । १८॥ लग रया सुखारा ठाट, गुरु जोवे चेलारी बांट  
 । मन । देवता अजुं आया नहींए ॥१९॥ चेलो तो झल रह्यो  
 जाय, उपनो गुरु ने संदेह । मन । समकित में संका पड़ीए  
 ॥२०॥ या थई पेली ढाल, रिषजी भणरे रसाल । मन आगे  
 विस्तार सांभलीए ॥२१॥ दोहा-अखाड़ भूते मन चितवे  
 नहीं सरग नहीं मोक्ष नेचे नहीं कोई, नारकी सगली बातां  
 फोक ॥१॥ चित्त बिलभ चेलो होतो, पूरो मारो प्रेम ।  
 सूत्र वचन सांचा होवे तो, पाछो नी आवे केम । २॥ ढाल २  
 अखाड़ भूती मन चितवे पाछो जाऊं हो मारे घरबार । के  
 सुन्दर से सुख भोगवूं हुं विलसुं हो हवे लील विलास, के  
 चारित्र से चित्त चल गयो हुवा सरदासे भ्रष्ट के अरिहन्त  
 वचन उथापीयो । हुवा खाली हो गमाई समकित ॥ २ ॥  
 तीण अवसर सिंघासण कंपियो, देव विधो हो हवे अवध-  
 ज्ञान के । गुरा ने देख्या घरे जावता मारग में हो, मांड्यो  
 नाटक प्रधान के । छे महिना नाटक निरखियो, आचारज  
 हो हुवा मन में खुसालके । पूरो हुवो नाटक पांगरे, व्यार  
 करंता हो आया सुखमाल के ॥४॥ दया की परीक्षा करवा  
 भणी देव, कीधा हो नानड़िया सा बाल के । गेणां भारी  
 पेराईने, रुमझुम करता आया हो सुखमाल के ॥५॥

छेउ बालक नाना छोकरा खमावे हो, छे काया का नाथ के।  
 साता छे पुजजी आपके, पांय लाग हो जोड़ी दोनु हाथ के।  
 ॥६॥ प्रथवी अप तेउ वायरो वनस्पति हो, छटी तरस काय  
 के गुरुजी ने कहे छोकरा । मारा दिधा हो माई तांए नाम  
 के ॥७॥ दया छे कायासी पाली घणी, नहीं दीठा हों दया मे  
 भला भाव के । पुण्य पापको फल पायो नहीं हुंतो लेसु  
 हो छेउ ना गेणा उतारी के ॥८॥ बालक ने उरा  
 बुलाई ने गेणा गांठा हो हलीधरा उरा खोल के । छेउना  
 गला मसोसिया बलुड़ा हो, मुंडे नहीं सबया बोल के  
 ॥९॥ गृहस्थी रेधन बिना नहीं सजे, पल्ले पेडियो हो मारे  
 मोखरो माल के । पातेरा गेणा सुं भरिया आचारज हो  
 हुवा मन में खुशाल के ॥१०॥ दया पण दिलसुं गई,  
 देव दीठां हो गुरां कीधो अकाथ के । आज तो मारुग  
 आणसुं, वली छे हो आंख्यां मांही लाज के ॥११॥ दूजी  
 ढाल पूरी हुई, रिख रायचन्द हो कहे छे एम के देखो  
 चतुराई देवरी गुरां ने, हो ज्ञान में लावे छे केम ॥१२॥  
 दोहा-देव रूप मेली करी, कियो साधवी रूप । गेणा गांठा  
 भारी पहरने, झीणा कपड़ा बहु मोल, बायां बाजू बंध  
 वेरखा, गले नवसरयो हार लोलवट टीको झल रयो, पग  
 नेवर झणकार ॥१३॥ सोहन चुडलो हाथ में, कांकण रतन  
 जड़ाव । आंगल्या मूंदड़ी झल रही झीणी चोले चाल ॥१४॥  
 मार्ग मील्या साधजी, दीठा साधवी रूप । लज्जाहीण तू

आपणी, धर्म लजावे केम ॥४॥ आरज्यां कहे सुणो, साधजी  
 हाई बोलो छो बोल । पात्रा तुम्हारा मुकदो लज्जा सारी  
 बोल ॥५॥ अलप दोष छे मायरा, कई परकासो साध ।  
 दोष तुम्हारा देखलो, कीधी बालक घात ॥६॥ वात सुणी  
 मागे चल्या, याकिम जाणे दोष । साधवी रूप मेलो करो  
 हुवो श्रावक को थोक ॥७॥ ढाल ३-सतवाड़ो बेकरे कियो  
 ये घणा नरनार यारां ठाटक सजवाने घोड़ा घणाए ।  
 वाल्या घणा गये घाट, के पुजजी पदारीया ॥९॥ जून  
 प्रावक कई समझणाए, मुडे मुपती बांध के । परदीक्षण  
 देई करीए, भली पेरे पग बांधके ॥२॥ में तो सामा वंदन  
 आवताए, मारो पुरो पुज्यजीसुं रागके । आप सामा मिल्य  
 ए, भला जाग्या मारा भागके ॥३॥ हमें दरशन दीठा आप  
 राए, मारे दुधा बुठा मेहके मन वंछित फलीयाए, आज  
 पावन हुई देहके ॥४॥ इण दरसणरे कारणेए, मैं बारुं बार  
 हजार के । किरपा सामी कीजियेए, लीजे सुजतो अहार के  
 पुजजी पधारियाए ॥५॥ गुरु कहे प्रावक सांभलीए, थारे  
 पुरो धरमसुं रागके । अहार बेरावण तणोए, हीवड़ां नहीं  
 छे मारे खपके ॥६॥ मारे अहार पाणी चईजे नहींए, मारा  
 नेछे नहीं परमाण के । हठ नहीं कीजियेए, थे अवसर का  
 जाणके ॥७॥ बलता श्रावक इस कयेए, जोड़ी दोनो हाथके ।  
 हटीला सामी थे घणाए, क्यों खँचो ये बातके ॥८॥ दोय  
 पैर दिन चढ़ गयोए, फेर हुवो भिक्षारो काल के । चीछड़ी

ने बड़ी भलीए, ऊनी रोटी ने दालके ॥१६॥ दाखांरो धोवण  
 सुंजतोए, मारे पुणभरी परातके । मन होवे तो मीठो  
 लीजिये ए, ऊपर बुरा मिश्री खांड के ॥१७॥ मारे गुरु ने  
 वेरायां दिनाए, नेछे जीमण को नेम के । वेगा खोलो  
 पातराये, थे झोली खोलो नी केमके ॥१८॥ थे मारी झोली  
 झोली झल रहीए, मारे नेछे नहीं परणाम के । थे किम  
 वेरावसोये, नहीं कोई जोरावर रो काम के ॥१९॥ थे  
 श्रावक घणा साँवठाए, थे मने लिधो घेरके । जावण किम  
 दो नहींए, में हुवो मण को लेरके ॥२०॥ में श्रावक घणा  
 देखियाए, पण यो नहीं जोरावर को काम । कटेनी देखियो  
 ए, दीठा अणीयज ठोरके ॥२१॥ पुज सुणो थे पादराए,  
 माडो पात्रा मती करो जेजके । में समगति आपराए,  
 हुलस्यो मारो हेजके ॥ २२ ॥ इतरा चारित्र चेला कीघाए,  
 तीजी ढाल मुझार के । रोष रायचन्दजी इम कहे आगे  
 सुणो अधिकार के ॥ २३॥ दोह—खेंचाताण करता थका,  
 दिया पातरा खोल । गेणा धरती पड़ गया, किया साधु ने  
 चोर ॥ २४॥ गेणा भोज वताय दो, राखी चाओ लाज । जती  
 काँई राखे नहीं, दया बिना केसो काम ॥२५॥ ढाल ४—आमी  
 सामी खेंचता, झोली खोली नीठा नीठ गुराजी ओ । पातरा  
 गेणा से भरिया, छोड़े लोका दीठ । गुरा । थे गेणा कठा से  
 लाविया । को थारां मन की बात गुरांजी थे भेष लजायो  
 लोक में, कयो कठा लरा जाय । गुरा । माय बाप कहे

रोवता, सुत बिना गेणारो साल । कुरले मागे कालजो, जो  
 नहीं देख्या बाल । गुरा । मात तात कहे रोवता, मारा सुत  
 का कांई हवाल । ३। गेणा गया तो आगड़ा, देख्या नहीं  
 जो बाल । गुरा । थे वेगा तो बताय दो, जेज करो मति कोय  
 । ४। थे छाने कठे छिपाविया, मारो जीव निकल्यो जाय  
 । गुरा । जोवता होय तो देखसुं मुवा होवे तो देऊं दाग । ५।  
 आंख्या मिच अबोले रया, आई लाज अथाग । गुरा । जो  
 धरतो फाटी पड़े तो हुं जाऊं पाताल । ६। मोटो अकारज में  
 कियो में मारयां नाता बाल । गुरा । अरिहंत सिद्ध साधर्म को  
 चित धरयां सरणां चार । गुरा । अबखी आई यां वेला, मुझ  
 सरणारो आधार । ७। देवता चारित्र देखिया, रहो गुरांजी  
 में लाज । गुरा । लज्जा रही तो मार्ग आवसी, लज्जासुं सुधरे  
 काज । ९०। गुरु समझावण कारणे, चौथी ढाल मुझार ।  
 । गुरा । गुरु रीख रायचन्दजी इम कहे, आगे सुणो अधिकार  
 वोहा-वारुं मिल्या वारु गुरु हवा भय भांत देवता ज्ञान में  
 देखियो । अब आय मिल्यो एतंत ॥ १॥ सरब माया समेटी  
 करी, साधु रूप बनाय । मथेण वंदणा गुरु से करीने, ऊभो  
 आगे आय । २। आप आवतां कठे अटकीया, कांई दोछो  
 मारग माय । पलेक नाटक देख्यो, तब चेलो बोल्यो वाय  
 ॥ ३॥ पलेक तो किण कारणे, नाटक तो छे मास । देखो  
 सूरज मांडयो, ईम जोवो विमास । ४॥ तर्ज-कोईला परवत  
 धुधतोर लाल । ढेर ॥ ढाल ५-रूप कियो देवता तणोरे



लाल, करी रिद्धि तणो विस्तार हो । गुरांजी हो हुं चित्त  
 बलभ चेलो पुजकोरे लाल, उपन्या स्वर्ग मुझार हो । १।  
 राखो अरिहंत वचनारी आस्तारे लाल, टालो समकित दोष  
 हो । गुरा । नेछे पद देवता तणो रे लाल, उत्कृष्ट यो पद  
 मोक्ष हो । २। हुं संजम पाली हुवो देवतारे लाल, रतन जड़न  
 विमाणहो गुरा । दोय हजार वरष पूरा हुवारे लाल, एक  
 नाटक को परमाण हो । ३। जिम थे नाटक में मोही रयारे  
 लाल, हूं मोय रयो एम हो । गुरा । हूं थाने विसरी गयोरे  
 लाल, लागी नवलो प्रेम हो । ४। समकित में सोंठा कर दिया  
 रे लाल, काड़ दियो मिथ्यासल हो । गुरा । गुरु से ओसंगर  
 हुवारे लाल, कर दिया धरम में लालहो । ५। देवता प्रति-  
 बोधो परो गयारे लाल, गुरु लीधो संजम भारहो । गुरा ।  
 पछे चारित्र पाल्यो नीरमलोरे लाल, बली ओरां को कियो  
 उपकारहो गुरा । ६। अखाड़ भुति भली पेरेरे लाल, जिन-  
 मारग दिपाय हो । गुरा । अन्त समये अणसण करीरे लाल,  
 मोक्ष गामी हुवा कर्म खपाय हो । ७। जिम अखाड़ भुति  
 पछे द्रढ़ रयारे लाल, जिम द्रढ़ रहिजो चतुर सुजाणहो गुरा ।  
 वरसन परीसो जीतजोरे लाल, जिन पामो निरवाण हो । ८।  
 उत्तराध्ययनजी दूसरे रे लाल, कथा में अधिकार हो । सम-  
 कित द्रढ़ पंच ढालियोरे लाल, रीखजी कियो पर उपकार  
 हो । ९। देव गुरुना प्रसादथीरे लाल, नागौर शहर चोमास  
 हो । गुरा । पंच ढाल्यो जोड्यो जुगत से लाल, समकित

जोत प्रकास हो । १०॥ संमत अठारासे छत्तीस में रे लाल,  
आसोज विदी दसमी दीन हो । राखो समकित नीरमलीरे  
लाल, तो जाणु जनम धन हो ।

## प्यारा पारसजी हो

सीस सोहे सेवरो ने मोत्यां की वरमाल, काना कुंडल  
जगमगे ने अंगिया रचाय प्यारा पारसजी हो राज । संकट  
निवारो म्हारी दुरगत टाल ॥ टेर ॥ पदमण चाल्या वांदवाने  
कर सोले लिणगार । पावां नेवर वाजणाने झांझर के झण-  
कार । १॥ मेवमाली देवताने करघम घोर चम २ चमके  
बिजली ने पाणी वर्षे जोर । २। नाका ताई नदियां आई,  
तोय न भीज्यो अंग । घरणेंद्र को आसण कंण्यो आया  
सायब हजूर । ३। निरधन मांगे अन्न-धन वाजो मांगे पुत ।  
साधु मांगे निरमल काया, राजा मांगे रूप । ४। निरधन  
देसा अन्न-धन वांज्या देसा पूत । साधु देसा निरमल काया,  
राजा देसा रूप । थेंई म्हारा देवता ने थेंई म्हारा देव,  
थेंई म्हारा सायबाने थेंई राणाराव । ५।

## श्री आनंदजी की ढाल

अन्न की जात अनेक छे न्यारा २ भेदाजी एह प्रभुजी  
मुझने मोकलो चावल केरो पीठोजी । उपरांत त्याग करा-  
ओजी, व्रत कराओ श्रावक तणा ॥ टेर ॥ १॥ काला मुंगा-  
दिक दालना । घोल बड़ा बड़ी जाणोजीउ ॥ २॥ राय डोड़ी

ने अगतियों वली वथुवा की सागोजी । तीन तरकारी मुझ  
 ने मोकलीउ ॥३॥ खांडका खाजा मुजने मोकला, वली घेवर  
 ताजाजी दोय सुंकड़ी मुजने मोकलीउ ॥४॥ आसोज कानिक  
 नो नोपज्यो घी पण मुजने खाणोजी । खरपडिया आया पीछे  
 ॥५॥ उड़द मूंग मसूर की, दाल तीन जातकी उ फल  
 जात अनेक छे, न्यारा २ भेदोजी । एह । खरबूजो फल खाणो  
 जी । ६। रुखफल जात अनेक छे न्यारा २ भेदोजी । एह।  
 खीरयो आंबो फल खाणोजी । ७। दातण जेठी मधु तणा  
 भोर दांतण क्रा नेमोजी । पीठी धान गेहुं तणा, ऊपरलोचन  
 एवोजी । ८। कुवा तलांवने बावड़ी, जिणो जल में ठेल्यो  
 जी । एह । अदर आकास को झेल्यो । ९। स्नान करवा की  
 विधि कही, कलस्या आठ भराओजी । उपरांत त्याग करा-  
 ओजी । १०। अंग लुवण की विधि कही राते अंगोछे साड़ीजी  
 अंग लुवण मुजने मोकलीउ । ११। अदर सिल्ला रस धूप नो,  
 विलेपण दोई मात का । तेल दोई जातका, सेस पाक लख  
 पाक जाणोजी ए प्रभुजी मुझने मोकली । १२। वस्तर की  
 जात अनेक छे, न्यारा २ भेदोजी । एह। प्रभुजी मुझने मोकली  
 खेम जुगल सफेदोजी । १३। गैणा की जात अनेक छे, न्यारा  
 न्यारा भेदोजी । नामत्रत मूंदड़ी, काना का कुण्डल दोनो  
 कीउ । १४। अगर चंदन को कुंपली, कंकु ने केसर घोरोजी  
 तिलक करना मुझने मोकलीउ । १५। मुख वास जात अनेक  
 छे, पांच जात तंबोलीजी । लोंग डोडा ने इलायची, जाय-

फल ने कंकेडोजीउ । १६। पदम कमल ने मालती, फूल तणी  
 तीन जातोजी । पेरण काजे मुजने मोकलाउ । १७। चार  
 क्रोड़ घर वाखरो, चार क्रोड़ ध्याज वधेजी । चार क्रोड़  
 निधान में ॥ १८ चार गोखलगायां तणी, गाया चालिस  
 हजारोजी । सेवा नंदा नारी मुजने मोकली । १९ चार  
 जहाजा दरियाव में, बलि डूडीयां चार जाणोजी । पानसे  
 गाड़ा मुजने मोकलो बलदया एक हजारोजी ॥ २०। पानसे  
 करवा मुजने मोकलो, देश देसांतर जाणोजी । दरब राख  
 ने बखलो टांक तोली ने घर लाणोजी । २१। पेली ढाल पूरी  
 हुई, ब्रत तणी मरयादाजी, अगे भविष्यन सांभलो समकित  
 को अधिकारीजी । २२। ढाल २- आजपछे अनंतीरथी रे  
 लाल, सन्यासीना शीष सुविचारीरे । जाने हूं वन्दु नहींरे  
 लाल, नहीं करूं पूजा सतकार सु विचारीरे, आनंद सम-  
 कीत उचरीरे लाल । २३॥ भगवंत ना सांधु साधवी रे  
 लाल, आचार में ढीला थाय । जाने हूं वन्दु नहींरे लाल,  
 नहीं नमाऊं मारी शीस । २४। भगवंत ना साधु साधवीरे  
 पडिया निदा के माय जाने हूं वन्दु नहींरे लाल, नहीं नमाऊं  
 मारी कायसु । २५। भगवंतना साधु साधवीरे लाल, मिलिय  
 जमाली में जायसु जाने हूं वन्दु नहींरे लाल, नहीं नमाऊं  
 पंच अंग । २६। पेली बोलौं नहींरे खाल, एकन से दूजी वार  
 सु विचारी रे । नहीं वेराऊं म्हारा हाथसुंरे लाल, असणा-  
 दिक चारों आर । २७॥ घरमाय बैठ थकारे लाल, छे छंडी

को आगार सुविचारीरे । राजाजी हुकम फामावीयोरे लाल ।  
 अथवा नातीला परिवार ॥६॥ जो कोई देवता कोप करे रे  
 लाल, कोई मोटको आयसु, के कोई दुजन आय मिले रे  
 लाल, के कोई नागो अड़जाय ।७। के कोई मेघ खेंच करे रे  
 लाल, मारी अटवी में पड़सी कालसु, जाने तो देणो मुजने  
 मोकलीरे लाल, मारी साला में चूनरो रसाल ॥८॥ भगवंत  
 ना साधु साध्वीरे लाल, चाले सुताके न्यायसु । जाने हं वंदू  
 सहीरे लाल । जाने नमाऊ मारो शीघ्र ॥९॥ भगवंतना साधु  
 साध्वीरे लाल चाले सुताके न्यायसुं जाने हं वंदू सहीरे  
 लाल, पांचो ही अंग नमाय ।१०। भगवंतना साधु साध्वीरे  
 लाल, चाले सूत्र के न्यायसुं । जाने हं वंदू सहीरे लाल,  
 जांकी साहंगा नित सेव ।११। मोक्ष मारग की खय करे रे  
 लाल, चाले सुत्र के न्यायसु जाने बेराऊं मारा हातसेरे लाल  
 असणादिक चारों आर ॥१२॥ चार गोकुल गायं तणारे लाल  
 सोनैया वारा कोड़ सु, सेवा नंदा नारी मुजने मोकलीरे  
 लाल, अधिकांकी ममता दीनी छोड़ १३ चार जाजी  
 क्षियाव मेंरे लाल, बलि डुंडया पानसो जाण सु, विचारीरे  
 पानसे हल मुजने मोकलारे लाल, बलदिया एक हजार  
 ।१४। सुसलिया में मोटकारे लाल, गेरागे मगेसु, पाप नी  
 लागो राई जितोरे लाल, पचख्या हे मेरु समान ॥१५॥  
 भगवंत सरिका गुरु मिल्यारे लाल, म्हारे कमीयन कांय सु,  
 मरक पडंता राखियारे लाल, लागी मुगत से प्रीत ॥१६॥

पूज्य जेमलजी सरीखा गुरु मिलियारे लाल, म्हारे कमीयन  
 रही कोय सु । श्रद्धा में सेंठा कियारे लाल, पुरी जांकी  
 परतीत ॥१७॥ दूजी ढाल पूरी हुईरे लाल, समकित तो  
 अधिकार सु संथारो कणी विधसुं करे रे लाल, थें आगे सुणो  
 अधिकार सुविचारीरे ॥१८॥ दोहा— गौतम उठाया गौचरी  
 कोलग पाड़ामांथ । आनंदजी संथारो कय्यो थें बात सुणो  
 विस्तार ॥१॥ ढाल ३—सामी में तो हाथ जोड़ी ने कब  
 विनतीं, नीचो शीष नमायहो सामी मारी उठगरी सकती  
 नहीं । चरण आगा पधारो हो, सामी में तो अरज कब  
 थांसु विनतीं । टेरा ॥१॥ गौतम चरण आगा किया, बंदीया  
 मन हुलासहो सामी मारो धन दियाड़ो धन घड़ी, सफल  
 हुई मारी देह हो ॥२॥ आनन्द परसन पूछियो, गृहवास में  
 उपजो अवधि ज्ञानहो । गौतम कहे उपजे सही, तुमने उप-  
 ज्यो सो जाणहो । ३। तीन दिशा जोजन पानसे, चौथे चुलहेम  
 जाणहो । ऊंचा देवलोक पेला थकी, नीचो ललीतां नरक  
 वासहो ॥४॥ आनन्द परसन पूछियो, गौतम दियोरे नी-  
 खेदहो । आनन्द प्राय चीत लो अणी बातरो, राखो मुगत्यां  
 सुनेहहो । ५। सांचा ने तो कोई नहीं, झूठा ने लागे दोषहो ।  
 सामी में तो जैसो देख्यो वैसो भांखियो, पराचित लो तुम  
 आपहो ॥६॥ अतरो सुणी ने संका पड़ी, आया प्रभुजीरे  
 पासेहो । सामी में तो अज्ञा लेईने उठयो गौचरी, बात दीदी  
 प्रकासेहो ॥७॥ बलता वीरजी असड़ी कही, वाने नहीं दियो

उपयोगहो । गौतम । आनन्द जाय खमावजो, वे सतवादी  
 सांचा सुगहो । ८। पारणो तो पछे कीधो आया आनन्दके पास  
 हो । गौतम जाय आनन्द खमाविया, ज्यांरी सूत्र में साखहो  
 ॥६॥ थें पण सांच श्रावकां, गुण करीने गंभीर हो । आनन्द  
 श्रद्धा में सेठा रया, गुण किया महावीर हो ॥१०॥ इग्यारे  
 तो पड़मा हुई खम्या कीवी भरपूगहो । आनन्द दया पारी  
 छेकायनी, दिन २ चढ़ता प्रणामहो ॥११॥ सेवा नंदा नारी  
 होती, पतिव्रता सचनीत हो । गौतम दापण सांची श्राविका  
 जिन मारग की परतीतहो ॥ १२ ॥ मास खमणरे संधारे,  
 गया पेहले देवलोकहो । गौतम चार पलारे आऊंखे, चवी ने  
 जासी मोक्षहो । १३॥ पूज्य जयमलजीरा प्रसाद सुं, या थई  
 तीसरो ढाल हो । आगे भवियन सांभलो, देशी श्रावक नो  
 अधिकार हो ॥१४॥ ढाल ४-आनन्दजी के सेवा नंदारे लाल  
 दीपती दोनों की जोड़हो भविकजन चार गोकल गायां  
 तणारे लाल सोनैया बारा क्रोड़ हो भविकजन, श्रावक श्री  
 वृधमानकारे लाल । १। हुवा आनंदजी के एकज लाख ।  
 भवि. । गुण साठ हजार वली ऊपर रे लाल थें सुणजो चित  
 लगाय । २। कामदेवजीरे भद्रा भार्यारे लाल । रूप सरूप  
 श्रेकार । ३। छे गोकल गायां तणारे लाल सोनैया क्रोड़ अठारे  
 भवि. । ३। चुलणी पियाजीरे, सामा मारजारे लाल, पुरे मन  
 जगीसहो भ. । आठ गोकल गायां तणारे लाल, सोनैया क्रोड़  
 चोवीस । ४। सुरादेवजीरे धन्ना सोवतीरे लाल । सोनैया क्रोड़

अठारेहो भवि. छे गोकुल गायां तणारेलाल । अदकारी  
ममता दीनी छोड़ । ५। चुल सतक जीरे बहुला सुन्दरीरेलाल  
दीठा आवे दाय । भ. क्रीड़ अठारे तणा धणीरे लाल । गायां  
साठ हजार । ६। साणा श्रावक कुंड कोलियारे लाल, जांके  
पुषा नामा नारहो भवि. । क्रीड़अठारेरी सायबीरे लाल घर  
गायां सांठ हजार । ७। सगडालजीरे अग्नि भीतारे लाल ।  
बोन्यारे मनवशे धर्म । भवि. आठ गोकल गाया तणारेलाल  
। ८। तीन क्रीड़ सोनैया का घर में धन, महासतकजी हुवा  
मोटकारे लाल । रेवती परमसुख तेरे नारहो भवि. । चौबीस  
क्रीड़ जाजरो परिगरो रे लाल । गायां है असी हजार । ९।  
नन्दण पियाजी के अस्वनी भारजारे लाल कंचन बारा क्रीड़  
हो भ. । चार गोकल गाया तणारेलाल अदकारी ममता दीनी  
छोड़ १०। सोलणी पियाजीरे फाल्गुणीरे लाल, सोनैया बारा  
क्रीड़हो भवि. चार गोकल गायां तणारे लाल, काड़ दियो  
नीचोड़ । ११। दोलतवंत दसी हुवारे लाल । समकित माई-  
लालहो भवि. फटक हियो ज्यांरो उजलोरे लाल, ज्ञान  
लियो घट में धार । १२। दिन २- छठता चैराग मेंरे लाल  
सुसाणा सुवनित हो भवि. । घाला तो लागे साधु साध्वीरे ।  
पूरी जांकी परतीत ॥१३॥

### ❀ प्रार्थना ❀

तर्ज : हिंदुची बदली ज्ञाली हो । वीर जिनंद जयकारी  
हो । सत्य कहूं मैं तो नान सदा सुखकारी हो सत्य कहूं मैं तो



॥ ढेर ॥ वंदे सुरनर सुरपति आके खिलता मनकज दर्शन  
 पाके सहिमा प्रभु की भारो हो ॥१॥ अनंतज्ञानी त्रिजग-  
 स्वामी पूरण ज्ञाता अन्तर्यामी दर्शन मंगलकारी हो ॥२॥  
 प्रभु गुण गाता पार न आवे, सहिमा अद्भुत गाई न जावे  
 कीरति जग विस्तारी हो । ३ । सूरत प्यारी पर उपकारी  
 केवल मुनि को दीना तारी गुरु सौभाग्य गुणधारी हो ॥४॥

### तवन-श्री महावीर भगवान का

तुमको लाखो प्रणाम ॥ ढेर । सिद्धारथ के नंद कहाए  
 त्रिलला मां की कुल से जाये, देवलोक से आप ये आए । १ ।  
 योबनवय में दिक्षाधारी राजपाट को ठोकर मारी, केवल  
 ज्ञान भंडारी । २ ॥ दे उपदेश भव्य जन तारे चारो संघ मिल  
 सेवा सारे करते जय-जयकार । ३ ॥ आवो बीरप्रभु अब आवो  
 शांती सुधारस रंग बरसावो सब में संप करावो ॥ ४ ॥ जैन  
 जाति को सब महिलाये हिल मिलकर तेरे गुण गाए जीब  
 शांति सुख चाए । ५ ॥

### तार्थकर गौत्र बांधे

सांभल हो गौतम बीसबोला से तीर्थछूर हुवे ॥ ढेर ॥  
 अरिहत सिद्ध सुत्र सिद्धान्त को गुणवंत गुरु चौथा जाण ।  
 स्थविर बहु सूत्री तपसी तणा करे स्तुति हित आण ॥ १ ॥  
 बार २ उपयोग देतो ज्ञान में शुद्ध समकित लेवे पाल ।  
 विनय गुरु जो गुरुदेव को, आवश्यक करे दोई काल ॥ २ ॥  
 व्रत पचखाण पाले निर्मला, परमाद टाली शुभ ध्यावे ।

तपस्या जो करे बारे प्रकार नी, देवे अभय सुपातर दान ।  
॥३॥ व्यावच करे गुण कुल संघ की, सर्व जीवां ने सुख  
उपजाय । अपूर्व ज्ञान नित पढ़तो थको, सूत्र की भक्ति  
करे चित्त लाय जिन मारग ने दीपावतो, बांधे तीर्थङ्कर गौत  
चारों ही संघ में होय शिरोमणी, तीनों ही लोक में करे  
उद्योत ॥५॥

## अरिहंतजी का स्तवन

जागो जागोरे जीव अरिहन्तजी, नमूं श्री सिद्धजी वन्दू  
अरिहन्तजी वंदया से मारे पातक झड़ जाय, सिद्धजी वंदया  
से मारे रिद्धि भरपूर ॥६॥ देव दुहुंभी वाजे चवर हुले ।  
चोलठ इन्द्र प्रभुजी का मोछब करे ॥७॥ समुद्र बीजे राजा  
ने सेवा देवी माय, मुगत गया ओ नेमजी राजुल नार ।  
दान दिया बिना कर्म खेनी होय, एवो जाणी ने दान दीजो  
सब कोय ॥८॥ दान दिया सरी हंस कुंवार सुबाहुजी,  
आदनेई ने पाम्या भवनो पार । शील पाल्या बिना कर्म  
खेनी होय, एवो जाणी ने शील पालो सब कोय ॥ ९ ।  
शील पाल्यो श्री ब्राह्मी सुन्दरी दोय, चन्दनवाला आददेई  
ने पाम्या भवनो पार, तपस्या किया बिना कर्म खेनी होय ।  
एवो जाणी ने तपस्या करजो सब कोय, तपस्या करी ओ  
मोटा महावीर । धन्ना मुनि आददेई ने पाम्या भवनो पार  
॥१०॥ भावना भाया बिना कर्म खेनी होय, एवी जाणी ने  
भावना भाजो सब कोय । भावना भाई ओ श्री मोरा देजी

माय, भरतेसरजी आददेई ने पाम्या भवनो पार । ५॥ दया पाल्या बिना कर्म खे नहीं होय, एवो जाणी ने दया पालो सब कोय । दया पाली ओ श्री मेघकुंवार, सेवरथ राजा । आददेई ने पाम्या भवनो पार । ६॥ खम्या किया बिना कर्म खे नहीं होय, एवो जाणीने खम्या करजो सब कोय । खम्या करी ओ श्रीगजसुख माल, अर्जून माली आददेई ने पाम्या भवनो पार ॥ ७॥ मान मेल्या बिना कर्म खे नहीं होय, एवो जाणी ने मान मेलजो सब कोय । मान मेल्यो श्री बाऊंबल अणगार, दसारण भद्र आददेई ने पाम्या भवनो पार ॥ ८॥ सत्य राख्या बिना कर्म खे नहीं होय, एवो जाणीने सत्य राखजो सब कोई । सत्त राख्या श्री हरी चंद्र राय, तारा राणी आददेई ने पाम्या भवना पार ॥ ९॥ धीनो करया बिन कर्म खे नहीं होय, एवो जाणी ने धिनो करजो सब कोय । बिना कियो श्री नंदी खेण अणगार, चित्तजी आददेई ने पाम्या भवनो पार । १०॥ दलाली किया बिना कर्म खे नहीं होय, एवो जाणी ने दलाली करजो दलाली करी श्री कृष्ण महाराज, पंथकजी आददेई ने पाम्या भवना पार ॥ ११॥ समकित लिया बिना कर्म खे नहीं होय, एवो जाणी ने समकित लीजो सब कोय, समकित लीजो श्री श्रेणीक महाराज, दस श्रावक आददेई ने पाम्या भवनो पार ॥ १२॥ दीक्षा लिया बिना कर्म खे नहीं होय, एवो जाणी ने दीक्षा लीजो सब कोय । दीक्षा लीओ श्री जंबुकुमार आठ

राण्यां, आददेई ने पास्या भवतो पार ॥१३॥

## स्तवन

ग्यारा ई गुणधर वीसवयमान बंदु चित्त लाई । प्रभुजी  
प्रभुजी महा विदी क्षत्र में चोथो आरो वीज पुखलावती  
भारी । टेरा १॥ राज करे तिहां श्री हुंस राजा । सांती की  
नामा पटराणी ॥ २ ॥ देवलोक थकी चवीकर आया । पंच  
पंच ज्ञानेज भारी प्रभुजी ॥ ३ ॥ संमत १६ ७६ सी गांव  
सोनैया भारी ॥४॥

## शांतिनाथ का स्तवन

नमो नमो शान्ति जिनंदा । दुष्ट कर्म सब दूर निकन्दारे  
॥टेरा॥ विश्वसेन अचला के नन्दा । गजपुर में अवतार  
घरन्दारे । १॥ महामारी सब रोग नशाया । जग में शांति २  
करंदारे । २॥ दीन दयाल दया के सांगर । जग तारक प्रगटे  
प्रभु चंदारे । ३॥ जप जपे से नवनिध पावे । रोग सोग सब  
भय नशंदारे । ४॥ दिलसुख कुंवरे नित सांती । नाम से जन्म  
जन्म के कट जाय फंदारे । ५॥

## गुणधरजी का स्तवन

शरण में आई ज्यारे आईज्यां । तू गुण गौतमजीरा  
गाईजा । टेरा । तू गर्भवास में आयो थने ऊंदे सिर लटकायो  
थारो जीव घणो दुःख पायो सरण में ॥१॥ प्रभुजी ब्या  
विचारो मने बायर दोनी निकाली । मैं भूलुं नी भक्तिजी

तुम्हारी । २ प्रभुजी कुरणा कीधी मने बाथर दिया निकाली।  
 माया में फंसी रयो भारी । ३। बालपणो हंस खोयो जुवानी  
 में तिरिया संग मोयो तू देख बुढ़ापो घणो रोयो ॥४॥  
 हीरालाल दास ईम गाथो सबरा मंडप मन भायो । तू प्रभु  
 मगन होय जाओ । ५॥

### गौतम सामी का स्तवन

ईतो वीर प्रभु मुगते गया, तब गौतम करे अरदासहो ।  
 अंतर्दामी हां ओ मारा सामी, आप पधायी मुगती महेल  
 में । टेरा प्रभु आप अकेला शिवपुर गया । अब म्हाने कौन  
 आधारहो ॥१॥ हुं तो पूछा करसुं कणीकने कुण देसी संशय  
 निवारहो । मुजने गौयमर कुण केवसी मुख मिठड़ा वचन  
 उचारहो । २॥ प्रभु कुण देसी म्हाने आगन्या, किणग कर-  
 स्युं दीदारहो । हुं तो अंतेवासी हुं तो आपरो मुजने क्यों  
 क्यों नहीं ले गया लारहो ॥३॥ प्रभु अहंनिस में सेवा करी  
 नहीं, दाखयो भेदलिगीरहो । प्रभु एक पक्षनी प्रीतड़ी, किदा  
 किम आवे पार ४। क्षिण अंतर मन में चितवे, इन्द्र भूति  
 अणगारहो । रागद्वेष प्रभु जीतिया, आठोंही कर्म निवारहो  
 । ५। प्रभु उज्ज्वल ध्यान हिपे धर्यो, तब उपनो केवल सार  
 हो । इन्द्र आय ओछब कियो, सुर बोले जय २ कारहो । ६॥  
 ईतो बारा बरस केवल पणे रह्या, पछे पहुंचा मुगत  
 मुजार हो ।



## श्री पुंढरीक कुंडरिक का स्तवन

सांभलहो श्रोता सुरां ने लागेहो धर्म सुहावणो । कायर  
 नो जावे बाजी हार ॥ ढेर ॥ नगरीतो पुंढरी गिरी का  
 राजवी, पुंढरिक कुंडरिक सिरदार । मुनिवर देखी ने वैरा-  
 गिया, कुंडरिक वण्यो अणगार ॥१॥ तपस्या करीने तन  
 तपाविया कीनो है उग्र विहार । विचरत २ एकदिन आविया  
 आपिस पुंढरिक मुझार ॥२॥ मुनिवर पधार्या नलिनी वाग  
 में, माली संदेशो दियो जाय । पुंढरिक राजा हर्ष पामिया,  
 सोचे यो मन के मांय ॥३॥ धन्य है कुंडरिक साधे साधना,  
 हुं फस रह्यो मोह बीच । कर्म काटी ने ओ सिध पामसी,  
 मैं तो पामर पापी नीच ॥४॥ धन दिवस आज महायरो,  
 मिलसी सहोदर भ्रात । दर्शन करवाने चाल्यो ठाठ पाटसुं  
 ले संघ सहु परिवार ॥५॥ देख दुर्बल अंग भ्रात को, बोले  
 है धन अणगार । पुंढरिक यूं भावे शुद्ध भावना, कुंडरिक  
 का पलट्या विचार ॥६॥ मन में भोगारी जागी भावना,  
 सोचे पुंढरिक है खुशहाल । राज्य भोगे ने इन्द्रियां पोखवे,  
 मैं लीनो व्यर्था ही तनझाल ॥७॥ मुनिवर का भाव राजा  
 जाणियो, सोचे कायर भूल्यो भान । संयम छोड़ी ने भोग  
 वंछवे, होसी धर्म की इनमें हाण ॥८॥ धर्म की रक्षा हित  
 राजवी, त्याग्यो वैभव परिवार । कुंडरिक ने राज दियो  
 हर्ष सुं, पुंढरिक वण्यो अणगार ॥९॥ तीन दिवस में तप  
 का तापसुं, पुंढरिकजी पाया कष्ट अपार । शुद्ध भावासुं

देही त्याग ने, पहुंचा स्वार्थ सिद्ध मुझार ॥१०॥ पौष्टिक  
पदार्थ कुंडरिक खाविया, छाग्यो तन में विकार । तीन  
दिवस में देही त्यागने, पहुंचो है नरक मुझार ॥११॥ ईम  
जाणी ने जीव चेत जा, व्रत लेई मत भांग । संयम पाले  
जग में सूरमा, क्रायर रचावे स्वांग ॥१२॥

### ❀ श्री नवकार मंत्र ❀

तुम जपो मंत्र नवकार, यही है सार । करो निस्तोरा,  
दुख हर है प्राण हमारा । १॥ जो सुध मन ध्यान लगा-  
वेंगे, तो जनम मरण मिट जावेंगे । पावेंगे इससे ही मुक्ति  
का द्वारा, दुःख हर है प्राण हमारा । २॥ सब रोग-सोग भय  
जाते हैं, गुण गान प्रेम से गाते हैं । करता है पापी जनका  
ये उधारा ॥३॥ आत्मा को सुख भरपूर मिले, दुश्मन का  
कुछ नहीं जोर चले । यह पाप कर्म को काटन हार दुधारा  
। ४॥ पूज्य काशीराम गुरु राया, जपना सबको फरमाया ।  
जोहरी जपले, कारज सुधरे सारा ॥५॥

### 卐 स्तवन 卐

जय २ जय २ कार परमेष्ठि, जय ३ कार, जय २  
भविजन बोध विधाता । जय २ आत्म शुद्धि विधाता,  
जय भव भंजन हार परमेष्ठि, जय ३ कार ॥१॥ जय सब  
संकट चूरण कर्ता, जय सब आशा पूरण कर्ता । जय जग  
संगलकार ॥२॥ तेरा जाप जिन्होंने कीना, परमानन्द उन्होंने  
लीना । कर गये खेवा पार पर, । ३॥ लीना शरणा सेठ सुद-

शन, सूलीका बन गया सिंहासन । जय २ करे नरनार पर ।  
॥४॥ द्रोपदी चीर सभा में हरना, तब तेरा ही लीना शरणा  
बढ़ गया चीर अपार पर । ॥५॥ सोमा ने तुम सुमरण कीना  
सर्प पुष्प माला कर दीना । वरते मंगलाचार पर । ॥ ६॥  
अमर शरण में हम भी आए, कर्मों के दुख से घबराये ।  
शीघ्र करो उद्धार परमेष्ठि । ७॥

### सोलेमा शांतिनाथ का स्तवन

आपका दरसन की बलिहारी, महिमा जग में भारीजी ।  
सोलेमा जिनजी । शांतिनाथ साता कारीजी ॥टेरा॥ हतनापुर  
विश्वसेण राजा, अचला दे राणी का जायाजी । स्वार्थ सिद्ध  
थकी चवी आया, माताजी चवदे सपना पायाजी । भादवा  
विध सातम चवी आया, जेठ विदी तेरस का जायाजी ।  
पेदा होता हतनापुर मांही, मिर्गों को रोग मिटायाजी ।  
सब लोक ने सुखज आयो, शांति २ वरताईजी । माता-  
पिता नामज दियो, शांति कुंवर परसिद्धोजी । प्रभु कुंवर  
पद रया, वरस पचीस हजारोजी । पछे हूवा मंडलीक राजा  
वरस पचवीस हजारोजी । पूर्व पुण्य किया भारी, चक्र-  
वृत्त की पदवी पायाजी । चौरोसी लाख गजरथ घोड़ा,  
पैदल छिण्णू करोड़ोजी । महेल बयालिस भोम्या, सोहे  
चारु दिसा जोयाजी । राज कुंवारियां चौंसठ हजारो, दो  
दो वरंगणा लारेजी । एक लाख बाणु हजारो, राण्यांरो  
परिवारोजी । दिन २ अधिक जगीसो, नाटक पड़े बत्तीसो



जी । दिन २ हरकमु जोड़ो, वेटा हुआ डेड़ करोड़जी । प्रभु छे खण्ड, केगं स्वामी, मोटा राजा हूवा बत्तीस हजारो जी । छोटा राजा बत्तीस हजारो, जाने सगला करे नमस्कारोजी । सोला सेंस रतनारो खानो, बीस सेंस सोनादपा ना जाणोजी । ज्यांरा घर मांहे नव निधानो, धनरो नहीं परमाणोजी । चवदे रतन भंडारो देव सेवे पच्चीस हजारोजी पेला पहेर में चायो दूजा पहेर में पायोजी । तीजा पहेर में पाको, चौथा पहेर में खायोजी । एक दिन को रसोड़ो, धान सीजे मण चार करोड़ोजी । भाणे बैठण की जोड़ो कुटुम्ब सात करोड़ोजी । दस हजार मण लूण जाणो, जणीसुं तो नहीं लागे ऊंणोजी । बहोत्तर मण होंगरो वगारो नन्याणु मन वेसवारोजी । और मसालो सारो जीणरो तो घणो विस्तारोजी । तीनसो साठ रसोई दारो, लारे तो घणो परिवारोजी । घोरत माई घी को परमाणो, पचास लाख मण जाणोजी । पैंसठ हजार पखाल्या पाणी भरवाने चाल्या जी दीवा करण की जोड़ो उभा छे पांच करोड़ोजी । स्नान कराने वाला ऊभा छे, छत्तीस हजारोजी । गेणा पेरावा वाला ऊभा छे, छत्तीस हजारोजी । धजा पताका वाला ऊभा छे, अनेक हजारोजी । नगर बहोतर हजारो तियां, चौरासी बजारोजी । कोस अड़तालिस हजारो, सैन्यारो विस्तारोजी । प्रभु तेरे तेला किया अखड साध लिया छे खण्डोजी । प्रभु इतनी रिद्धि जो पाया, छिन में दोनी छिट-

काईजी । प्रभु अथिर जाण्यो, संसारो, सैंस पुरुष हुआ  
 यागीजी । प्रभु बरसी दानज दियो, झुगतो सेल्यो परिवारो  
 जी । भादवा बदी छट की दीक्षा लीधी, कीधी छे काया की  
 रक्षाजी । प्रभु एक मास में केवल पासया, कियो छे घणो  
 उपकारोजी । प्रभु चार तीरथ ने तार्या, भव जीवां का  
 कारज सार्याजी । केवली हुवा तीनसो ने चार हजारोजी,  
 जाने तो म्हारो नमस्कारोजी । तीन लाख त्रैसठ हजारो,  
 श्रावक बारा व्रतधारोजी । तीन लाख त्रैसठ हजारो, प्रावि  
 कारो परिवारोजी । चौरासी लाख अणगारो, आर्याजी नेऊ  
 हजारोजी । नवसो साधु साथे संधारो कियो, जेठ बदी तेरस  
 को सीजोजी । आयु लाख वरस को सारो, कर गया खेवा  
 पारोजी । गुरु चंदणभाणजी सामी । ज्यांरी तो अज्ञा पाली  
 जी । प्रभु मत पाखंडी ऊभा आपरे आगे मारे तो दायनी  
 आवेजी । प्रभाते उठी शांति जपे तो, शांति २ बरतावेजी  
 प्रभु दीक्षा पाली वरस पचीस हजारोजी, जाने तो मारो  
 नमस्कारोजी । मैं तो जैन धर्म सांचो जाण्यो, मिथ्यामत  
 हरदय न आण्योजी । मैं तो अर्ज करं सुण लीजो, अजरअमर  
 पद दीजोजी । अर्ज करं कर जोड़ो, काटो करमा की क्रोड़ो  
 जी । रिख रायचन्दजी करे अरदासो, माने तो दीजो प्रभु  
 मुगती को वासोजी ।

श्री मंगल मोटका ए स्तवन

दोहा—मंगल पहेलो अरिहंत नो, दूजो सिद्धनो जाण ।

तीजो मंगल साधु को चौथो केवली परूष्यां दया धर्म पर-  
 माण । मंगल पहलो अरिहंत नो ए, भाव से भणे हितकार  
 तो सर्व विघन दूरा टलेए । पावसी भव तणो पार तो,  
 अरिहंत मोटकाए । जघन्य तीर्थकर वीस छेए उत्कृष्ट, एक  
 सोने साठ तो महाविदेह क्षेत्र मेंए सिद्धगति ना दातारतो ।  
 चौतीस अतिशय से परवरयांए, वाणी का गुण पैंतीस तो  
 एक सो ने आठ लक्षण धणीए, णीत्यां प्रभु रागने रीसतो ।  
 स्वचक्री पर चक्री नोए, देशतणा भयनायतो । इत भीतना  
 हुवेए जहां विचरे जिनराजतो । ज्यां २ जिनेश्वर विचरेए, जठे  
 नहीं पड़े काल दुकाल तो । सो २ कोसां लगेए, नहीं आवे  
 मिरगी ने मारतो । बारे गुणकारी सोवताएं मोटा छे प्रति  
 हाय आठ तो । कांटा नीचा नमेए, चलता होवे सामी वाटतो  
 लोही ने मांस ज्यारो ऊजलोए । सुगंध देवे सास उसास तो  
 कंचन वरणे सुहावणोए सींचिया पुनतणी रासतो । अनंत  
 बल अरिहन्तनोए, ज्ञान दरसन तणी जोततो । भा-मंडल  
 अति सोवताए, जाणे के सूर्य उद्योत तो । ६॥ देवता आई  
 त्रिगडो रचोए, अरिहन्त सेवारे काजतो । बाजे देव दुंद-  
 भीए, समवसरण तणो साजतो । पेला त्रिगड रूपा तणोए  
 सोना का कोसीस सुं साजतो । चार पोरया भणे ये, तोरण  
 मणी माये चंगतो । पावड़िया गड़ पेलो कयोए दस हजार  
 परमाणतो । सोवन गड दूसरोए, रतनारा कोसीसा वारे  
 वारणातो रतन जड़त गड़ तीसरोए, मणीरा कोसीसा वखा-

गतो । बारा पोरया भणेये, पावड़िया पान २ से हजार तो,  
 भीतिया गड़तीनुं कयाए, ऊंचा छे धनुष्य सो पंच तो ।  
 धनुष्य तेतीसाए, बत्तीस अंगुल संचतो एटला भीत चोड़ा  
 कयाए, पावड़िया एक २ हाथ तो । लम्बी चोड़ी कईए, ऊंचा  
 छे धनुष्य पचास तो सोनो ने रूपो वली रत्न मेंए, जोत  
 जगामग जाणतो । गड २ आंतरोए, तेरे से धनुष परमाणतो  
 छबीस धनुष भेदे वेसनेए, पीठ का धनुष दो सो उदार तो ।  
 ऊंचा जाणे जीतराए, चारुं दिशा धजा अभिराम तो ।  
 स्फटीक सिंहासन बैठने ए, श्री जिनवरजी दे उपदेस तो ।  
 भविकजन सांभलोए, छोड़ी ने सकल कलेश तो । चाग्जात  
 का देवताए, देवांगना चारुई जाणतो । चतुर विध संघ  
 कियोए, वारे परखदा को मान तो, साधु ने वली श्राविका  
 ए, श्रावक ने साधवी जाणतो । आचारंग माये आणताए,  
 काड़े छे कर्मा नी खोड़ तो । श्रावक ने वली श्राविकाए,  
 वंमानिक देव तो । ईसान कुंण वेसनेए, जोवे २ प्रभु ना  
 दीदारतो । वली देवी बेमाणनीए, साधु ने साधवी जाणतो ।  
 वायु कुंण वेसनेए, करे २ प्रभुजी की सेव तो । भवनपति  
 बाण व्यंतर जोतषीए । देवता तीनों ही जाणतो । नीरतकुंण  
 वेसनेए, हाथ जोड़ी ने कर सेव तो । भवनपति बाणव्यंतर  
 जोतषीए, देवांगना तीनोई जाणतो । अग्नि कुंण वेसने ए,  
 सुण २ प्रभुना वखाण तो । वाणी छे जोजन गामनी ए,  
 सबकर दूध समान तो । पिया हिया तरपत होवेए,

सुणिया मगन हुई जाय तो । भाषा बड़ी अर्धमागधी ए,  
 अक्षर मेलिया, संदो संदतो । सांसो कोई रेवे नहींए, बोल-  
 ताए उठे परछंद तो । बकरी ने सिंह भेला सुनेए, नहीं उपजे  
 दैर विरोध तो । वादी नर आई नमेए, गालिया अहंकारिया  
 को मान तो । बाल ने बृद्ध समजे सहुए, ऐसा जिनवर तणा  
 वेण तो । भविक चेतें घणाए, लाग्या वैराग्य ना बाण तो ।  
 दरसन दीठा जिनराजनाए, टल जावे भव तणी खोड़तो ।  
 देवता पाछे रयाए, थोड़ा छे एक करोड़ तो । अनन्त ज्ञान  
 तणा धणीए समतां रस भरपूर तो । आया थकीए दालीदर  
 जावे सब दूर तो । पेलोजी संघ संठाण नोए, सोवती जिन  
 तणी देह तो । कृपानाथ जग गुरुए, दीठा जाणे धर्म सनेह तो  
 बारे जोजन ऊंचा कयाए, अशोक वृक्ष परधान तो । सोग  
 सहु टलेए, सोहती धजा अभिराम तो । अशोक वृक्ष छाया  
 करेए, ज्यां रेवे जिनराज तो । तस घरे संपदाए, तरण  
 तारण तणी जहाज तो । तेज मंडल अति सोवताए, बारे  
 गुणा तेज जिनन्द तो । रतन हीरा जड़्याए, जांणो के उगो  
 छे चन्द तो । मस्तक छत्र तीनों धरियाए, श्री जिनवरजी  
 त्रिभुवन स्वामी तो । चंवर दो ही सुर करेए, प्रतक्ष गगन  
 परभाव तो । कुसुम की वर्षा करे देवताए, जोजन जाणु पर-  
 माण तो । वाजे वाजे देव दुन्दभी ए दुन्दभी अमिय समान  
 तो । अनन्त ज्ञान अरिहन्त नाए, किम कहुं जीभड़ी सुं एम  
 तो । पूरा कर नहीं सकयोए, ज्यां मिली जीभ अनेक तो ।

देव ऐसां दूजा नहींए, स्वर्ग मृत्यु पाताल तो । जो शुद्ध  
ध्यावताए, तस घर मंगल माल तो । चार कर्म बाकी रह्या  
ए, बली जेवड़ी समान तो । मुगत पधारियाए, रिख राय-  
चन्दजी कहे छे एम तो ।

### श्री मेघकुंवरजी की ढारां

मेघकुंवरजी की धारणी माता, बोले छे मीठी वाणी  
जी । अन गमताये माता वचन सुणावे, थारी आंखियां में  
पड़सी पाणीजी, मोय तणे वस धारणी बोली ॥१॥ नीठ २  
रेजाया नर भव पाया, थारी छोटी उमर में कछु ये न  
खायोजी । लाठ रमण्यां नेरे जाया छेयन दीजे, भर जीवन  
में लावो लीजोजी ॥ २ ॥ खाणो तो माता कर्म बंधावे,  
भोगवणो महा दुखमी रोगोजी । भले दिसेकये माता पुनवंत  
बोल्या, में आदर सां तप जोगोजी ॥ ३ ॥ कठेर रेजाया सरस  
वेरावे, कठे लूखो सूखोजी दाबी दूबी नेरे जायां । अहार न  
कीजे, कीजे देइ परमाणोजी ॥ ४ ॥ कठे कठे रेजाया मोदक  
वेरावे, कठे वचना से छेदेजी । साधु ने रेजाया खम्याजो  
करणी रागद्वेष दोई तजणोजी ॥ ५ ॥ सोयालेरे जाया, सींय  
जो पड़सी उनारे लू झारोजी । चौमासेरे जाया मेलाजो  
कपड़ा, ये छो अति सुखमालोजी ॥ ६ ॥ श्रेणिक राजा तो कहे  
कुंवर ने थे छो अति सुखमालोजी । सदाई कुसाली में रेतारे  
जाया, मारी पीठ नचीताजी ॥ ७ ॥ बारा वरषारे जाया  
जोग न लीजे, जाओ जीव लग सेणोजी । असड़ी तो वाताए

माता कणी ने सुणावे, मारो मनड़ो होसी सोई करसाजी ।  
 ॥८॥ कायरने ये माता सेणो, दोयलो, में छां अति नर सूग  
 जी । मारी लगीरे परीत मुगत्यांसुजी, में आदर सां तप  
 जोगोजी ॥९॥ ढाल २ ॥ धारणी समझावेओ मेघकुंवार ने  
 जी, तू छे मारे एकीज पूत । तुझ बिना दियाड़ोरे जाया  
 किम निसरेजी, राखो मारा घर को सुत ॥१॥ तुजने परणा-  
 ऊंरे जाया, आठों अंते वरचाजी, कुलबहुंगां अदक सलूप ।  
 गज गम चाल्याओ सुंदर मलकताजी, नेण वेण अति सुख-  
 माल ॥२॥ ऊंचा घरारारे ऊंचा मंदर मालियाजी, केरझ-  
 बुकेजी, बार नाटक नाचेरे जाया घर के आगणे, खेला थारी  
 बउंवारे साथ ॥३॥ एक उणाय तरे जाया मारे छे घणी,  
 खेलाऊं थारी वउंवारा पूत । देव हटीला ओ सासो भागि-  
 योजी, उठाया वेराग्यारा भाव ॥४॥ अन्न धन लछमीरे  
 जाया मारे छे घणीजी, सुख विलसो अणीरे संसार । छति  
 रिद्ध विलसोरे जाया, घर के बारणेजी पछे लीजो संजम  
 भार ॥५॥ रतन कचोरेरे जाया थारे जीमणोजी भांत २ को  
 जी आर । घर २ करणीरे जाया थारे गोचरीजी, सरस-  
 निरस कोजी आर ॥६॥ एक पोयर की ये माता मारे  
 गोचरीजी, सात पोयर कोजी राज । घरसुं तो भली ये  
 माता मारे गोचरी, सरस निरस कोजी आर ॥७॥ अतरो तो  
 केताओ माता थावया धारणीजी, नहीं समझा मेघकुंवार ।  
 छोड़ दिया घरनेजी बार, जाई उभो वन केजी मांय ॥ ८ ॥

पांच रतन ओ प्रभुजीये आपियाजी होजे २ मंगलाजी चार  
 वरत्या २ क्रीड़ कल्याण ॥ ६ ॥ ढाल-३ मोटी वणाई एक  
 सेवकाजी, जणी मांय बैठा मेघकुंवारजी । झुर २ रोवे वारी  
 कामण्यांजी, वरसण लागो सावण मासजी, झुर २ कायर  
 को हियो थरहरेजी ॥१॥ कदीयनी करड़ी नजरयां देखताजी  
 कदीयनी बोलया मुखसे वेणजी । संजम लो तो चूक बताय  
 दोजी, ईवातां नहीं आवे म्हारे दायजी ॥२॥ थांसु तो नेहज  
 मारे अति घणोजी, आंसुझारारो छो केमजी । संजमलो तो  
 ढील करो मतीजी, जाणुं सांचेलो थारो नेयजी ॥३॥ इतरो  
 सुणतां बोलया नहींजी, मन माहे समझा मेघकुंवारजी ।  
 आप स्वारथ दिसे कामण्यांजी, वितारे स्वारथ नहीं कोयजी  
 ॥४॥ कोई नरनारी मंदिर मालियाजी, झांके जालिया में  
 मुंडो घालजी । मुख कमलाणो मोलती का फूल ज्युंजी,  
 कुंवर कमलाणो काची केलजी ॥५॥ कोई नर-नारी मुख से  
 इम कहेजी, संजम लेसी मेघकुंवारजी । अन धन लछमी  
 वारे छे घणीजी, नहीं दे प्रमेसर वाने खाणजी ॥६॥ कोई  
 नरनारी मुखसे इम कहेजी, संजम लेसी मेघ कुंवारजी ।  
 भले वितेक वारी कामण्यांजी, छोड़े मोठा भोजन ने खीरजी  
 ॥७॥ परणी तो बायां चाली सासरेजी, गावे छे गेरा मधुरा  
 गीतजी । कायर हिया का रोवे मानवीजी, नहीं जाणे घर्म  
 का मर्मजी ॥८॥ नगरी तो बीचे होय निसरयाजी, वनमांही  
 आया सुराधीरजी । वाजा तो वाजे बहुत सुहावणाजी,



कायर हियारा दिलगीरजी ॥ ढाल तीसरी ॥ बोल्पा २ ए  
 सखी मारे दादर मोर २ लाल झरोखे बोली कोयली, रतन  
 झरोके बोली कोयली । संजम लेसी ये सखी मारे मेघकुंवार  
 २ भले विसेक वारी कामण्यां । पेरण पेरयाए सखी वारे  
 नवसर्पों हार २ चन्दर हार सोवन चूड़ो वारे हाथ में रंगभर  
 चुड़ो वारे हाथ में । ओड़ण ओड़याए सखी वारे दखणी को  
 घीर नवरंग्यो घाट नीलोजी चमके कांचवो । घीरत बिनाए  
 सखी मारे लूखोजी आहार २ कंथ बिना लूखी कामण्यां ।  
 पिऊ बिना लूखी कामण्यां । गोरज बिना ये सखी मारे  
 फीको कसार २ पियु बिना फीकी कामण्यां । दीपक बिनाए  
 सखी मारे सूनोजी मेल २ पियु बिना सूनी कामण्या । चांदा  
 बिना ये सखी मारे कंसीजी रात २ तारा बिना चन्द सोवे  
 नहीं । वीर बिनाए सखी मारे उणीजी बेन २ पियु बिना  
 उणो कामण्यां । बेन्या झुरेरे जाया मारे वार तेवार २ रेण  
 झुरे वारी कामण्यां । तूं छे २ रेजाया मारे एकीज पूत २  
 तुझ बिना मारे जग सूनो तुज बिना मारे घर सूनो । मेघज  
 लाण्या ये सखी वारे माताजीरे पांव जरणीरे पांव आगन्या  
 दो मारी मातजी मेघज लागा ये सखी वारे, गुरुजीरे पांव  
 पूज्यजीरे पांव संजम दो मारा पूजजी । चारित्र दो म्हारा  
 पूजजी । ढाल ५ । जाया जोग भली तेरे पालजो थे तो  
 रीजोरे, थारा संजम में लाल के चारित्र पालो बच्चा निर-  
 मलो । थारा जनम मरण सहु मिट जायके, अनुमति दोबे

माता धारणी ॥१॥ जाया जोग भली तरे पालजो, थे तो  
 रीजोरे थारा गुरुजीरे पास के । चउदे हजार मुनि मांही थे  
 तो लीजोरे, जाया जस सो भाग के ॥ २ ॥ स्वामी कोई  
 वेरावे खाण्डज खोपरा, स्वामी कोई मोती चूर्या भात के ।  
 में ही वैरायो मारा लालने, थे तो राखजो हो थारा अरथ  
 भडार के ॥३॥ स्वामी कोई वेरावे सणियांसावेटुं सामी  
 कोईओ मेमुदीरो थान के । में ही वेरायो मारा पूतने, थे  
 तो राखजो जी याग कलेजारी कोरके ॥४॥ मारे कलेजारी  
 कोर पुतर होता, में तो सोप्यो हो स्वामी आपने लाय के ।  
 में जाण्यो जुं जाणजो, मारो बालुड़ो हो स्वामी अति सुख-  
 मालके ॥५॥ स्वामी तपस्याओ थोड़ी करावजो, भूख तर-  
 स्या की स्वामी थे लीजो सार संभार के । आगे पण  
 देखियो नहीं, मारा गृहस्थी को केवारो आचार के ॥६॥  
 जाया जोग भली तरे पालजो, मती करजोरे जाया दूसरी  
 मायके । शिवरमणी वेगा वरो, थारा जनम मरण तहुं मिट  
 जायके ॥७॥ माता पुत्र पोंचाई पाछी फर्या, नेण छुटी ओ  
 आंसुड़ा की धारके । छाती फाटे ने हिवड़ो उलटे वरसण  
 लागो हो, श्रावणियारो मास के अनुमति दो माता धारणी ।  
 ढाल छठी ॥ अबे मेघकुंवार संजम लियो । गुरु मिलिया  
 ओ मोटा महावीर नहीं सयोपरीसो साधरो ॥१॥ म्हाने  
 श्रेणिकरो बेटो जाणने, घणा करताजी मारा आदर भाव ।  
 अबे मारो घर छुड़ाइने नहीं पूछीजी मारी साल संभाल

॥२॥ मारे माथे होती कसुमल पागड़ी, होवड़े होताजी गज  
मौत्यारो हार । पाग आंगी मेल्या पछे, उतर गयोजी मारो  
सगलो सिणगार ॥३॥ मारे घणा होताजी रथ पालखी, घणा  
होताजी मारे दासी ने दास । खमाओ खमा करता घणा,  
आठो रम्भाजी मारे उभीजी पास ॥४॥ मारे घणा होताजी  
सदिर सालिया, हाथी घुमेजी मारे राजद्वार । खमाओ खमा  
करता थका, आठों रम्भाजी मारे गावेजी गीत ॥५॥ अठे  
काठी कांकड़ को साथरो, अठे नहीं छेजी फूला छाई सेज ।  
कठे राण्यां की प्रीतड़ी, अठे नहीं छेजी गूराजी सुहेत । ६॥  
अब मेघकुंवर मन में चितवे, पाछो जासांजी मारे घरबार  
में याका कांई लीधो नहीं, नहीं कीधोजी पातरा मांही  
आहार । ७॥ अबे मेघकुंवर मन चितवे, पाछो जासांजी  
मारो राज द्वार । ओघाने सुपति सोपने, में तो जासांजी मारे  
घरबार ॥८॥ यो तो आयो छेबाड़ो साथरो पांवा सूजी मारो  
ठेल्योजी सीस । नरक तणा दुख में सया, नहीं मिलियाजी  
दोई आंख्यारा नेण । ९॥ अबे मेघकुंवर मन चितवे, महा-  
वीरजीओ । लीधा गोध्यारे माय । पूर्व भव समझाविया  
स्वामी ध्यायोजी स्वामी सुकल ध्यान अब सयो परीसो  
साधनो । १०॥ ढाल ७वीं । प्रसन्न उठया भावसुं हो मेघजी  
आया श्री वीर जिनन्दजी के पासहो मुनिसर श्रीवीर जिने-  
सर इम कहे ओ मेघजी ॥१॥ राते असाता पाम्या घणीओ  
मेघजी, दुख वेद्यो मन माय हो मेघजी प्रतिक्रमणो आलव्यो

नहीं हो मेघजी नहीं जाण्यो धर्म को मर्महो ॥ २ ॥ नरक  
निगोदया में थे भम्या हो मेघजी, भमिया अनन्ती वार हो  
दुःख अनन्ता थे सया हो मेघजी, कयो कठा लग जाय हो  
मुनिसर मेघ ॥ ३ ॥ गज भव सुसत्यो पालीयो हो मेघजी,  
हाथी का भव मांय हो मुनि. श्रेणिकरे घर अवतर्या हो मेघ  
जी, अब हुवा मोटा साध हो । ४ । संजम चोखो पालजो हो  
मेघजी, जासो विजय विमाण हो मुनि. एक भवां के आतरे  
हो मेघजी, जासो मुगत गढ़ मांय हो ॥ ५ ॥ जाता सूत्र पहेला  
अध्ययन में होमेघजी, घणो कियो विस्तारहो मुनि. तीन  
पावां से उभा रया हो मेघजी, तीन दिन तीन रातहो ॥ ६ ॥  
दान शियल तप भावना हो मेघजी, अणी जुग में तन्तसार  
हो मेघ पालो अराधो सुध भाव से हो, हो जासी खेवा पार  
हो मुनिसर मेघ. ॥ ७ ॥

## 卐 स्तवन 卐

दीन काय पट्ट कहे सुनो जगनाथ पुकार ॥ १ ॥ प्रभु  
तुम तो मुबित सिधारो अब हमको कौन सहारो । बताओ  
जगदाधार ॥ १ ॥ गति शक्ति विकल तन पायो, कुछ जोर  
चाले न चलायो । अपाहिज हम दुख टार ॥ २ ॥ दीसे नहीं  
कोई सहाई, सब जग हमरो दुखदाई । कहां जावे करतार  
॥ ३ ॥ को धन को सुख के ताई, कोई धर्म हेत अन्याई ।  
करे हमरो संहार ॥ ४ ॥ प्रभु पर्व दिवस जब आवे, तब भी  
नहीं करुणा लावे । करे हमघात अपार ॥ ५ ॥ प्रभु भय तुम

जरा न लावे, हिंसा भर्या धर्म बतावे । कुयुक्ति लगा लवांर  
 ॥६॥ सुन विनय वीर प्रभु बोले, तुम दिये संतन के खोले ।  
 सरावग साखी दार ॥७॥ जो मुनि श्रावक फिर जावे, तो  
 तो कहां पे न्याय करावें । बताओ नाथ विचार ॥८॥ जो  
 साधु श्राद्ध कहाई, करे धर्म में तुम बध धाई । तिन्हों को  
 नरक तैयार ।६। सुन वीर प्रभु की बानी, षट्काय कहे  
 हर्षानी । धन तुमरो अवतार ।१०। श्री सुगुरु मगन मुनि  
 ध्याई, माधव कहे वीर बताई । दया पालो नरनार ।११।

### स्तवन

अरजी सुनिये दीन दयाल । बाल के दोष मिटादोजी ।  
 ॥८॥ करके आप निकलंक मुझे अब पार लगादोजी ।  
 अनन्त काल के दोष जिनन्द वे दूर भगादोजी ।१। गुणनाशक  
 जो दुष्ट भावना तिन्हें नशादोजी अखिल ज्ञान भंडार  
 तुम्हारा नाथ बतादोजी ॥२॥ भव भ्रमण का चक्र कृपालु  
 शीघ्र हटादोजी । मन मतंग यह कहा न माने इसे मना-  
 दोजी ॥३॥ बीच भंवर में डूबती नैया इसे तिरादो जी ।  
 अष्ट कर्म हे अति दुखदायक दूर करादोजी ।४। राग द्वेष  
 और दाम्भिकथादि इन्हें जलादोजी । कृपया शीघ्र ज्ञानगुण  
 को प्रगटा दोजी ॥५॥ अनंतकाल की मोहनींद से मुझे  
 जगादोजी करके कृपा क्षपक श्रेणि पे नाथ चढ़ादो जी  
 केवल मुनि की अन्तिम अरजी मोक्ष दिखादो जी । सब  
 जीवों पर एकभाव हो । यही सिखादोजी ॥७॥

## ५५ स्तवन ५५

देखो चतुर नर या कुण नारी । धर्म पुरुषा ने लागे  
प्यारी जी पापी पुरुषा ने लागे खारी जी ॥टेरा॥ हिवड़ा के  
आगे ऊभी । सोवे नेणा सु प्रीत लगावेजी । किण घर रांती  
ने किण घर धोली । किण घर मूंगा मोलीजी । चारों ई  
मिलकर जपवा लांगी । एक लाय्यो छे उनरे लारेजी ।  
एकसो ने आठज बेटा है पीण अखंड कुंवारीजी । पांचो वरण  
उनमें सोहे मोक्ष नगर को वालीजी ।

## भजन नौद का

बाघरजाई ये नौदरा । जिस घर राम नाम नहीं भावेजी  
॥टेरा॥ बंठ सभा में मिथ्या बोले, निदा करे पराईजी । वह  
घर हमने तुझे बताया, जाइये बिना बुलाई ॥१॥ या तू  
जाइये राजद्वार, या रतिया रस भोगीजी । हमारा पीछा  
छोड़ बावरी, हम हैं रमते जोगीजी ॥२॥ ऊंची मंदरे जहां  
सखीरी, कामण चंवर बुलावेजी । हमारे संग क्या लेगी  
बावली, हम पत्थर पे दुख पावेजी । ३॥ कहे भरतरी सुनरी  
निन्द्रा, यहां नहीं तेरा वासाजी । हम तो रहते राम भरोसे,  
गुरु मिलन की आसाजी ॥४॥

## रसना का स्तवन

तू बिना विचारी मत बोल रसना मतवाली ॥टेर॥  
पर निध्या में प्रसन्न घणी । तू कलो करावन हार । सज्जन

स्नेह मंत्री करे । तू भेद पड़ावन हार ॥ १ ॥ खावा में बड़ी  
चटोकड़ी । तू भ्रष्ट किया नरनार ॥ २ ॥ बात बिगाड़े बोलने  
तू खाय बिगाड़े पकवान ॥ ३ ॥ खूबचन्द मुनि बिनवे । तू  
ज्ञानी का गुण लेवणहार ॥ ४ ॥

## स्तवन

दुनियां ने ऊंधा चश्मा छे । संसार ना दुख बसभां छे २  
॥ टेरे ॥ दोरंगी दुनियां ने हटीली रीत, आत्म स्वरूपमा  
करजो प्रीत २ । सहावीर स्वामी ने अजी छे, मोक्ष जावा  
नी मरजी छे । बेनी बोलजो एकड़े एक । संजम लेवानी  
राखजो टेक २ । पांचड़ें पछीं छगड़ो छे । संसार मा तो  
झगड़ो छे । बेनी बोलजो सातड़े सात । संसार ने तमे  
मारजो लात २ । एकड़े बगड़े थाय छे बार । संसार मा तो  
कई नथी सार । एकड़े पांचड़े पंदर थाय । संयम ले तो  
मोक्ष जवाय २ ।

## आत्मा का भजन

आत्मा रे दाग लगईजे मति । उजली ने मेली बनाईजे  
मति ॥ टेरे ॥ आत्मा थारी अमृत बूंदी । अमृत में जहर  
मिलाईजे मति । आत्मा थारी असली सोनो । सोना में खोट  
मिलाईजे मति । आत्मा थारी ज्ञान को दीवलो । फूंक मार  
बुझाईजे मति । आत्मा थारी ज्ञान की गुदड़ी । पाप की  
खोरी चढ़ाईजे मति । आत्मा थारी ज्ञान पावडियां । चढ़

पावड़ी मुक्ति पाछो आईजे मति । कहत कबीर सुनो भाई  
साधु । वृथा ही जन्म गमाईजे मति ।

### - प्रेम का प्याला

यह सीठा प्रेम का प्याला, कोई पियेगा किस्मतवाला ।  
यह सत्संगवाला प्याला, कोई पीयेगा किस्मत वाला ॥१॥  
प्रेम गुरु है प्रेम है चेला, प्रेम धर्म है प्रेम है मेला । प्रेम की  
फेरो माला । कोई फेरेंगा किस्मत वाला ॥ १ ॥ प्रेम बिना  
प्रभु भी नहीं मिलते, मनके कण्ठ कभी नहीं टलते । प्रेम  
करे उजियाला, कोई करेगा किस्मत वाला ॥२॥ प्रेम का  
गहना प्रेमी पावे, जनम मरण का दुःख मिटावे । कटे कर्म  
जंजाल कोई काटेगा किस्मत वाला ॥३॥ प्रेमी सबके कण्ठ  
मिटावे, लाखों से दुराचार छुड़ावे । प्रेम में हो मतवाला  
कोई होवेगा किस्मत वाला ॥४॥ सुख का सुख प्रेमी पावे  
नरकों में हरगिज नहीं जावे । प्रेम का भोजन आला, कोई  
फेरेंगा किस्मत वाला ॥५॥ गुरु श्री पृथ्वीचंद्र हमारे, अमृत  
प्रेम पिलानेवाले । प्रेम का पंथ निराला कोई चलेगा  
किस्मत वाला ॥६॥

### ॐ जय जगदीश हरे

ॐ जय शारद माता अम्बे जय शारद माता । विद्या  
शुभ वरदानी तू ही जगन्नाता ॥ ॐ जय । वीतराग के  
मुख से गिरा जो प्रगटनां, अंबे अक्षर रूपी घट २ व्यापक  
प्राणी ॥१॥ वाग्दादिनी तेरा जो नर ध्यान धरे अम्बे,



होय प्रबुद्ध विशारद सब सम्मान करे ॥ २ ॥ हंसवाहिनी  
सरस्वती सन्मति दान करो, अम्बे होयवाल घीवृद्धि जड़ता  
दोष हरो ॥ ३ ॥ सिद्धिदायिनी भगवती सुन नर यश गावे,  
अम्बे तुम सुस्मिरन से माता पाठ याद आवे । ॐ बियेबंबीए  
लिविये नित्य प्रतिपाठ करे अंबे होय उत्तीर्ण विद्या पंडितो  
बीच सरे ॥ ५ ॥ प्रसन्न होकर माता काव्य शक्ति दीजे अम्बे  
नमत चौथमल चरनन विनती सुन लीजे ॥ ६ ॥

### श्री अनाथी मुनि की सज्जा

श्री अरिहंत सिद्ध नमस्कार करीने आचारज उपज्ञाया ।  
अर्थ धर्म गत प्राक्रम सांच्यां, शिखावण से चित लाया के  
राजेन्द्र श्रेणिक वन संचर्या ॥ १ ॥ श्री अरिहन्तजी ने सुम-  
रताजी, वाणी शुद्ध मन आणी । अनाथीजी की सज्जाओ  
गुणता, अक्षर आणजो ठामोके ॥ २ ॥ रतनारा भांजण श्रेणिक  
राजा, मगध देस ना भूपालो । बायर क्रीड़ा करवाने चाल्या,  
मंडी कुक्ष वन रसालोके ॥ ३ ॥ श्रेणिक चउदल भेला जो  
किया, भाई बन्द भतीजा । अतेवर सह परवरियां, ओर  
घणा नर दूजाके ॥ ४ ॥ हय गय रथ पयदल पूरा, सात सखी  
सजवाड़ो मोर मुकुट सिर छत्र विराजे, बाजंत्र बाजे रसा-  
लोके ॥ ५ ॥ नाना प्रकार की वृक्षभलता, बहुपंखी सुखपाया ।  
पान फूल कर गेरीओ छायां, नन्दण वन जेम केवायाके ॥ ६ ॥  
वृक्ष हेट एक मुनिवर बैठा, राजाजी नजर्या देख्यां । सुखमाल  
जांरी काया ओ दीखे, मुनिवर लागो छो मीठाके ॥ ७ ॥

काया का दुर्बल जीर्ण वस्त्र, राजजी बात उपाई। लुवा ज्ञाल  
 ज्यांरे अंगजो लागे, कणी भोलाने भरमायाके । ८ तेय तणो  
 रूप देखी ने राजा, उत्तम संजम स्वामी । अतुल रूप देखी  
 विसमयजो पाम्यां, राय करे छे गुण ग्रामोके ॥ ६ ॥ अहो  
 अचरज रूप तुमारो वरण अचरज भारी । आरज अचरज  
 केरी ओ संपदा, भोग समो क्योंनो लायाके ॥ १० ॥ तीन  
 प्रदक्षणा देई ने राजा नीचो शीष नमायो । नई नेड़ा नई  
 अलगा ओ बंठा, कर जोड़ी ने बतलाया के । ११ तरुण  
 पणा में चारित्र लीनो, भोग सभो तुज कांजो । तेनो अर्थ  
 स्वामी मुजने भांखो केम पड़या छो जंजालो के । १२ रूप  
 जैसो सुन्दर मुख थारो, लक्षण बत्तीस अंग । पूरा बदन  
 जैसो थारें चन्द्र विराजे, सेस करण जीम सूरगे ॥ १३ ॥  
 रूप जैसो थे भूप वखाण्यो, जाता नी लागे वारो । दिन  
 चार रमणी का संग में, जिम तिम होय जासी छारोके । १४  
 काया माया कारमी राजा, जैसी दादल की छायां । दस  
 नस्तक लंकापति होता, तो पण छीन मेखपाया के ॥ १५ ॥  
 अनाथी में श्रेणिक राजा, नाथ नहीं तिर मारे । अनुकम्पा  
 सुख साता जो पाम्या, नहीं छे एक लगारोके ॥ १६ ॥ इम  
 तुणी ने हरवयाओ राजा मत्तध देशना भूपालो । भगवंता  
 थे मुनिवर दिलो, थारे नाथ नहीं किम थातीके ॥ १७ ॥  
 नाथ तुमारो धामुं ओ, भगवंत मुनिवर भोगज भोगो ।  
 नथी गोतीला सहपरव्यां, मनुष्य जन्म पायो दीयलोके । १८ ॥

पोते ही आप अनाथी ओ राजा, वीकट कई सहुवातो ।  
 आपरा आप अनाथ थया तो, केम थासी मारो नाथोके  
 ॥१९॥ इस सुणी ने राजा ओ श्रेणिक, मन में पाम्या भ्रांतो  
 बचन अपुरब ऐसा मलियां, मुनिवर बोले छे तोताके ॥२०॥  
 मारी रिद्धि ये नहीं जाणे, टपके कहूं सहुवातो । सगली  
 रिद्धि मुनिवरजी के आगे, अब कहूं सो दिख्यातो के ॥२१॥  
 तेंतीस सेंस रथ हाथी जो घोड़ा, ऋड़ तेंतीस जोधा । पुर  
 पाटण गाम नगर घणेरा, अन्तेवर बहु थासीके ॥२२॥ हेवर  
 घेवर और दीराऊं हीरा रत्न भंडारो । देस तणा राजा  
 कर थापूं भक्ति करेला बहु थारीके । २३ ॥ इतनी रिद्धि  
 पाया ओ मुनिवर, भोग समी पर आया । पृथ्वी केरा नाथ  
 केवाया, झूट कहो नी रिषि रायाके ॥२४॥ आपरो अनाथ  
 पणो तो, हेत जुगत समझाओ । जो थे अनाथ पणे थया तो  
 तो मुझने सहु समझाओके ॥२५॥ मुनिवर भाखे सुणजो हो  
 राजा, एकागर चित्त आणी । जो में अनाथ पणे थया तो,  
 तो तुझने सहु समझाउके ॥२६॥ कोशंबीनामा नगरी  
 पुराणी, पुराणी पुर भेदाणी । ज्या वसे पिता हमारा, धन  
 खरचेला बहु जाणीके ॥२७॥ प्रथम वे मुझे नेतर केरी,  
 अतुल वेदना आई । क्रोध चढ़यो वेरी अति पीड़यो, एवी  
 वेदना मुझे आईके ॥२८॥ तीखा सस्तर उतकृष्टी शरीर,  
 बिसे वेदना आई । कोप चढ़यो वेरी अति पीड़यो, एवी  
 वेदना मुझने आईके ॥२९॥ कर्म अन्तराय सु लेई ने राजा,

मस्तक रोग भेदाणो । घोर दरद दारुणी वेदना, जाणे इन्द्र  
 बज्र छिटकायोके । ३०। तब बोल्या मुझे प्रवत आचारज,  
 विद्या मंत्र का जाणो । भणियां सास्तर कुशल दावा, सूल  
 मंत्र का जाणोके । ३१। वैद्यां मुझने औषध दीनी, चोपयां  
 हितकारी । तोपण वेदना नहींरे मुकाणी, एवो अनाथ पणो  
 मारोके । ३२। पिता माग धन सगलोई, देणो कियो मुझ  
 काजो । तोपण वेदना नहींरे मुकाणी, एवो अनाथ पणो  
 मारो के । ३३। माता मारी श्रेणिक राजा, रती नहीं दुःख-  
 दाई । दाव उपाय किया घनेरा, तोपण वेदना नहींरे मुकाणी  
 के । ३४। भाई बेन मारा श्रेणिक राजा, एक उदरका जाया  
 मां सु मोटा छोटा जो होता, तोपण वेदना नहींरे मुकाणीके  
 । ३५। सोवन चुड़ी ने रंभा ओ रुड़ी, शरीर सुन्दर सुखकारी  
 अवछरा सरकी ने तन-मन हरणी, एवी मुझे घरनारी के  
 । ३६। पान सुपारी ने वीड़ा, जो बारी मायकपुर की वासी  
 प्रेम धरी ने मुझ पदमणी आपे, तोपण मेली निराधारोके  
 । ३७। असणं पाणं खादं सादं गंध वीलेपण जाणो । मुझ  
 जाणंता अजाणंता वाला ने भोग नहीं पायाके । ३८। इन्द्र  
 तणी इन्द्राणि ओ राजा, एवी मुझे घरनारी । कित्राक गुण  
 मुखु भाकुं ओ राजा शील गुणारिया खानोके । ३९। मोटा जो  
 कुल कीने मोटा जो बुद्धकी खोटी नहीं मन मांहि । शील तणी  
 गज कामणीओ वाला, बोले थोड़ी ने वली मीठीके । ४०। खीण  
 मातर मुझ पासेती राजा, जाति नहींरे लगारो । आंसू भरियां

ने नेत्र पुराणा, मुझ गातर सीचंतीके ॥४१॥ तब बोल्या मुझ  
 पासेती राजा, दुःख पाहुं छुं वारंवारो । एकाएकी वेदना ज  
 भोगवुं, यो संसार असारोके ॥४२॥ एक बार वेदना अलग  
 हो जावे, वेदना बहु विस्तारी । अणी भवखंतो ने इन्द्रय  
 जो दमतो, आरंभ तजी ने थहुं अणगारों के ॥४३॥ इम  
 चींतवणा करता ओ राजा, निद्रा विशेष जो आई । रात  
 विदित हुई दिज जो ऊगो, मुझ वेदनारे खपाई के ॥४४॥  
 तेवारे काले प्रभाते, पूछी ने राजा मात पितादिक भाई  
 खंतो दंतो निर आरंतो, प्रवृज्या लेहुं सुखदाईके ॥४५॥ अब  
 नाथ थयो छुं हो राजा नहीं पडुं दुर्गति कानी । रक्षा करसु  
 आत्मा केरी, त्रस थावर सहुं प्राणीके ॥४६॥ आत्मानंदीवेतर  
 णीओ राजा, आत्मा सामली रूखो । आत्मा कामवेनु याहीज  
 आत्मा, नंदणवन जेम केवावे के ॥४७॥ आत्मा करता २ अ  
 राजा, सुख दुख दोनु ही पाया । वेरी मंत्री याही जो आत्म  
 भली बुरी वरतावे के ॥४८॥ अनाथ पणा की बाता ओ राज  
 फेर सुणो नी चितलाई ! मुनिवरजी को मारग लेईने, काय  
 होई मति जावोके ॥ ४९ ॥ पांचो ही महाव्रत लेईने राजा  
 समे प्रणाम नहीं सेव्या । प्रमादखावा बस पड़िया, कर्म बंद  
 नी छे दाणाके ॥ ५० ॥ इरजा सुमति की भाषा नी जाणे  
 अहार वस्त्र की मर्यादा । मात्रा ठल्ला की विद्ध नहीं जाणे  
 मारग जिनेश्वर को लाजेके ॥ ५१ ॥ उदशी मुल नित पि  
 लेवे, निमत दोषण भाखे अगनी आरंभ करी विमासे, कड़व

फल तस जाणोके ॥ ५२ ॥ भोत वार जीव संजम लीनो,  
 साधुजी नाम धरायो शुद्ध क्रिया बिना गरज न सरसी,  
 यूँ इज जन्म गमायोके ॥ ५३ ॥ संयम लेईने मूँड मूँडायो,  
 साधुजी नाम धरायो । घणा काल तक लोच करायो, पार-  
 गती नहीं पायाके ॥ ५४ ॥ पोली मुठी केराओ साथी, ऊपर  
 साग दिखावे । कांच तणा टुकड़ा कर झाल्यां, माणक जीम  
 ललचावेके ॥ ५५ ॥ बुगसकुल मिथ्या ओ मति, सरद पंखी  
 परचारे । श्री जिने दाख्यो ने श्री जिने भाख्यो, श्री जिने  
 पंथ नीचार्योके ॥ ५६ ॥ कुशल्यो लिंग धारी ओ राजा, रखे  
 दूजाने संतापे । एगुण परगुण विद्ध नहीं जाणे, मारग जिने-  
 श्वर को लाजेके ॥ ५७ ॥ तालपुट एकण भव मारे कुगुरु  
 भव २ मारे । धर्म विरोधी जीवड़ो दुख पावे, अण खिल्यो  
 रेवे ताड़ोके ॥ ५८ ॥ लक्षण छप्पन केरा फल नहीं कीजे,  
 नीमत दोषण भाँखे । जंत्र मंत्र करी पेट पुरावे, अन्त समे  
 मरणो नी जोयोके ॥ ५९ ॥ वेरी तो एकण भव मारे कुगुरु  
 भव २ मारे । धर्म विरोधी जीवड़ो दुख पावे, दया बिना  
 करे विलापातोके ॥ ६० ॥ संयम लेई ने वरते ओ मन में,  
 निस्फल वरते जोगो । स्वर्ग तणा सुख खोया जो फले, अणी  
 भव जोगने भोगोके ॥ ६१ ॥ सतगुरु संगत कीजे ओ राजा,  
 कुगुरु संग दुखदाई । कुगुरु तो संसार बधावे, सतगुरु भव  
 थकी तारेके ॥ ६२ ॥ प्रश्न में तुझे पूछुं ओ मुनिवर, ज्ञान  
 विभंग में कियो । भोग आमंत्रणा में तूझे कीनी,

मारो अपराधोके ॥६३॥ कोशंबीती राजगरी आया लाभ  
 अनंतो पाया । मगध देसना राय समझाया, खायक समकित  
 पायाके ॥६४॥ श्रेणिक राजा समकित लीनी, गौत्र तीर्थकर  
 बांध्यो । जीव अजीव को भेद जो जाण्यो, पुन्य पाप कर  
 समझायाके ॥६५॥ तीन प्रदक्षणा देही ने राजा, राजगरी  
 में आया । फटक सिंघासण बेठी ने राजा, मन मांही करेरे  
 विचारोके ॥६६॥ चाकर पुरुष तेड़ाई ने राजा, एवो हुक्म  
 चलायो । राजगरी में पड़ो वजायो, जीव मारण नहीं पावे  
 के ॥६७॥ संमत अठारे ने वरस सतंतर, श्रावण शुद्धि साखो  
 खेमकरण सज्जा परूपी, पजुसणादिक पक्खी के ॥ ६८ ॥

### 卐 स्तवन 卐

तेरे रहने को रहवान । मिला तन बंगला आलीशान  
 ॥टेरा॥ हड्डी मांस चर्म मय सारा, तन है कैसा सुन्दर प्यारा  
 है यह तिमंजला मकान । पांव से लेकर कटि के तांई,  
 पहिला मंजिल है सुन भाई, जिसमें है टट्टी का स्थान । कटी  
 से ग्रीवा तक पहचानो, इसमें है मशीन एक मानो, पचता  
 जिसमें भोजन पान । ग्रीवा से तीजा मंजिल सर, जिसमें  
 बावूजी का दफ्तर, टेलीफोन लगे दो कान । दुबिन है नैनों  
 का प्यारा, वायु हित है नाक दुवारा, मुख से खाते हैं पक-  
 वान । लेकिन तुमको मिला किराये, जिसको पाकर क्यों  
 वीराये, बैठे इसको अपना मान । जब हुक्म मौत का आवे,  
 बंगला खाली तुरन्त करावे, चौथमल कहे भजो भगवान ।

## तपस्या को स्तवन

एकड़े एक तपस्या नी राखो टेक, मारी बेनो तपस्या  
थी मोक्ष थाय छे । बगड़े बे तपस्या नी बोलो जय, तगड़े  
त्रण तपस्या नी राखो पण । चोगड़े चार तपस्यानो करो  
विचार, पांचड़े पांच तपस्या ने नथी आंच । छगड़े छे तप-  
स्या मां नथी भय, सातड़े सात खावा ने मारो लात ॥  
आठड़े आठ तपस्यानो मांडयो ठाट, नवड़े नव तपस्या थी  
न करवो पड़े भव । एकड़े मीड़े दश सदगुरुणी ने आपो जस,  
बे एकड़े अग्यार गुरुणी छे तैयार ॥ एकड़े बगड़े बार खादा  
मां नथी सार, एकड़े तगड़े तेर तपस्यानो आव्यो मेर ॥  
एकड़े चोगड़े चउद तपस्या मांय रहूं, एकड़े पांचड़े पंदर  
उपाश्रय नी अंदर । एकड़े छगड़े सोल गुरुणीजी आप्यो  
कोल, एकड़ें सातड़े सतर गुरुणी ने लख्यो पतर । एकड़े  
आठड़े अठार गुरुणी ज्ञान ना भंडार, एकड़े नवड़े ओग-  
णीस कर्म रूपी बलगीजी गणी । बगड़े मीड़े बीस उपवास  
करूं दसबीस ने तीस ॥

## श्री दशारण भद्रराजा की लावणी

वीर जिन वंदन को आया । दशारण भद्र बड़े राया  
॥ १ ॥ टेरा ॥ पधारिया वीर जिनन्द भारी, दशारण नगरी के  
बहारी । मुनिश्वर चउदे सहस्त्र भारी, अर्जीका छत्तीस  
सहस्त्र सारी ॥ दोहा ॥ समोसरण देवां रच्यो, बैठा श्री  
जिनराज । इन्द्र इन्द्राणी सेवा करे, पाम्या हर्ष हुलास ॥



खबर राजेंद्र भणी लागी, वीर जिन आय उतरिया बारी ।  
 जावणो दर्शन के काजे, करन सजाई बहु साजे ॥ दोहा ॥  
 हाथी घोड़ा रथ पालखी, पायदलरे परिवार । भाई बेटा  
 उमराव अंतेऊर, सबको लीघा लार ॥ २ ॥ अठारे सहस्त्र  
 गज छांजे. घुड़ला लख चौरासी गाजे । एकवीस सहस्त्र रथ  
 जोती, पालखी एक सहस्त्र सोहंती ॥ दोहा ॥ हाथी घूमे  
 घुड़ला हिंसे रथ करे झणकार । पयदल मुख के आगले,  
 बोले जय २ कार ॥ ३ ॥ पांचसो अंतेऊर लारे, करते हैं नवर  
 सिणगारे । पहरिया रत्न जड़ित गेणा, वाजता वाजंत्री वीणा  
 दोहा-छत्र चामर ढुलावता, चाल्या मध्य बजार । राय  
 आपको आडंबर देखने, गर्व किया तिणवार ॥ ४ ॥ स्वर्ग से  
 इन्दर भी आया, भेटियां श्री जिन का पाया । ज्ञान से सर्व  
 बात जाणी, दशारण भद्र बडो मानी । दोहा । मान उता-  
 रण कारणे इन्द्र दियो आदेश । एक एरावत ऐसो लावो,  
 ज्यूं गले गर्व विशेष ॥ ५ ॥ चौसठ सहस्त्र गज छांजे गगन  
 बीच ऊबा ही गाजे । एक २ को ऐसो रूप आयो, सुणता  
 आश्चर्य पायो ॥ दोहा ॥ एक २ के मुख पांच सौ. मुख २  
 पे आठ दन्त । दन्त दन्त पे आठ बावड़ी जिणमें कमल  
 महंत ॥ ६ ॥ पाखंडी लाख २ जांके, नाटक पड़े बत्तीस ।  
 इन्द्र को इंद्रासन सोहे, कणिका उपर मन मोहे ॥ दोहा ॥  
 जिन पर इन्द्र विराजिया, लारे सहुपरिवार । दशारणभद्रजी  
 देख के, गर्व गल्यो तिणवार ॥ ७ ॥ चितत अपने दिल मांही,

बड़ाई किस विध रहे आई । इन्द्र से जीतूं में नाहीं, करन  
 उपाय कठा ताई ॥८॥ अवसर देख संयम लियो, दशारण  
 भद्र नरेन्द्र । तुरत आई उतावलो, पगे लाग्यो शकेंद्र ॥९॥  
 इन्द्र इम मुनिवर से बोले, नहीं कोई आप तणो तुले । और  
 तो सक्ति घणी मारे, देव तो दीक्षा नहीं धारे ॥ दोहा ॥  
 धन्य हो मुनिरायजी, तुम राख्यो मान अखंड । वार २ गुण  
 गावतो, इन्द्र गयो गगन के मध्य । १०॥ मुनिवर संयम शुद्ध  
 पाले, दोष सह आत्म का टाले । मिटाया जनम मरण  
 फेरा, आत्मा अटल हुआ तेरा ॥ दोहा । गुरुदेव प्रसाद से,  
 सुणजो भवियण लोक । जो करणी साचीं करो, तो मिलसी  
 सगला थोक ॥

### भजन कबीरा का

भजन बिना बावरे । हीरा जनम गमायो । टेर । ना  
 संतों की संगत कीनी, मुख नहीं हरि गुण गायो । पच २  
 मरियो बैल की नाई, सोय रयो उठ खायो । मात पिता  
 की करी न सेवा नारी नेह लगायो । सुन २ मीठी बात  
 सुतन की, मोह की जाल फंसायो । पांयन से तीर्थ नहीं कीना  
 हाथ न दान करायो । वेद वचन सुने न कानसे, धाय चलयो  
 ज्यों आयो । झूठी माया में फंस मूरख, ममता महल चुनायो  
 कहत कबीर नगन होय चाल्यो, संग कुछ नहीं धायो ।

### स्तवन

प्रेमी बनकर प्रेम से, ईश्वर के गुण गायो कर । मन

मन्दिर में गाफिले, झाड़ू रोज लगाया कर ॥ ढेर ॥ सोने में तो रात गुजारी, दिन भर करता पाप रहा । इसी तरह बर्बाद तू बंदे, करता अपने आप रहा । प्रातःकाल उठ प्रेम से, सत्संगत में आया कर । नरतन के चोले को पाना, बच्चों का कोई खेल नहीं । जन्म २ के शुभ कर्मों का मिलता जब तक मेल नहीं । नरतन पाने के लिये, उत्तम कर्म कमाया कर । भूखा प्यासा पड़ा पड़ोली तूने रोटी खाई क्या । दुखिया पास पड़ा है तेरे, तूने मौज उड़ाई क्या । सबसे पहिले पूछकर, भोजन फिर तू खाया कर । देख दया उस वीर प्रभु की, जिन शास्त्रों का ज्ञान दिया । जरा सोच ले अपने दिल में, कितनों का कल्याण किया । सब कामों को छोड़कर उस ही का तू ध्यान कर ।

### भजन

करमांवाई को खीचडलो थे तो आरोगो नी मदनगोपाल  
करमांवाई को खीचडो ढेर॥ प्रभुजी थारी प्रेम पुजारी,  
गयो तीरथा न्हान । जातां २ दे गयो थारी सेवारी भोलाण  
जद आई थारा मंदरियारे मांय । मैं छूं दीन अनाथनीरे,  
नहीं जाणुं पूजा फंद । नयो नालदो खोलियो धन्दो गोकुल-  
चन्द, भगतारी राखणियो वाजी भाल । ना कर जाणु  
खटरस भोजन, खाटा से अनुराग । लूखा सूका राम  
सोगरां, गंवार फली को साग, है मीठो दही लाई वाटका  
में घाल । रुठा क्यूं बैठा हो राधा रुखमणरा घणशाम,

भूखा मरता बणे न सौदा । मास दिवस को काम, भूखा  
मरता री चिपजासी थारा गाल । समझ गया सरमा गया,  
स्वामी गास्यो लियो उठाय । धाबलियारो पड़दो कीनो,  
रुच २ भोग लगाय, हरी ने हिरदे लगाई तत्काल ।

### मां की भावना

बालो पांखा बाहिर आयो, माता बैन सुनावेयूँ । म्हागी  
कोख सराहिजे बाला, मैं थने सखरी घुंटीछू ।।टेरा।। तेज  
कटारी नालो मोड़्यो, नालो मोड़त बोलीयूँ । बैर्यांरी  
फौजां में जाजे, सत्य विजय कर आईजेतू । मेड़ी चढ़ कर  
थाल बजायो, थाल बजावत बोलीयूँ । चार खूट चौखण्डे  
रे बाला, नोबतड़ी धमकाईजेतू । कुएं पूजके फलसे आई,  
फलसे बढ़ता बोलीयूँ । फलसां में ढोलारे डमके, आरतड़ी  
करवाईजेतू । गोदयां सूतो बालो चुंखे, माता बोल सुनावेयूँ  
धोला दुध में कायरतारो, कालो दाग न लाइजेतू । बालो  
मांय भुजा पर लीनो, भार वहन्ती बोलीयूँ । धरती मां रो  
भार हटाइजे, मतना भार बढ़ाइजेतू । बालो माँ छाती से  
चेप्यो, छाती चेपत बोलीयूँ । दीन दुखी असहाय जनां ने,  
छाती से चिपकाईजेतू । बालो रंगखटोले सूतो, माता बोल  
जगावेयूँ । बैरियांरी चतुरंगी सेना, गाढी नींद सुलाइजे तू  
सोहन पालणें बालो झूले झोटत २ बोलीयूँ । इतनी बार  
हिलाईजे पृथ्वी, मैं थने जितना झोटाहूँ । इतनो काम करो  
म्हारा बाला, जद जाणुंलो जायोतू । पुत्र जन्म कर रही  
बांझड़ी, नहीं तर में समझूली यूँ ॥

## श्री शांतीनाथ का स्तवन

शान्ति जिन शरण में तेरी, मिटादो नाथ भवफेरी । तेरे  
अनादिकाल से मुझको, लिया है कर्म ने घेरी । इन्हीं दुष्ट  
के फंदे से, छुड़ादो अर्ज यह मेरी । भवोदधि के बीच में आके,  
गिरी है नौका अब मेरी । जरा इसको तुम सहारा लग,  
करके अब महेरी । क्रोध अरु मान और माया लोभ, चार  
लगा लेरी । इन्होंने ज्ञान धन लूटा दिलादो संपदा मेरी ।  
विश्व के दुख से डरकर शरण अब तो लही तेरी । तुम्हीं  
ही शान्ति के सागर, दिखादो मुक्ति की सेरी । दिलमुख  
कुंवर कहत करजोड़ी, गुरणीजी शरण में तोरी । ओजी  
श्री अनला के नन्दा, तिरादो नया अब मेरी ।

### स्तवन

मेरे मन राजा राजा राजा । स्ते जाण्यो जिनेश्वर सांचो ।  
धर्मरत्न पन्ने नहीं बांध्यो; रह्यो पकड़ कर सांचो । १॥  
नानां बंध में निरर्थक खोई, यह है बड़ो तमाशो ।  
समस्त जिन जेवन के मित्र, काल फाड़ रह्यो डांचो । २॥  
भय मोहो बंधे तारोके प्रभु हूँ करणी में कांचो ।  
जीवाजीव के भेद दिखाव्या तिनवर माय्य आछो ।  
विश्व बंधे घेरी-मायन में, देखें ना पग पाछो । ३॥  
रहे 'जिनराय' योगीमा साहो नदयो बंधे ने नाछ्यो ।  
जगत् माय्य की कांछी मित्र गई नाथ निरंजन जांच्यो । ४॥



## ❀ हरि गीतिका ❀

आनंद कन्द मुनिन्द वर श्री नन्द शीतलचन्द है ।  
 काटते भव फन्द त्यागे द्वन्द मुख अरविन्द है ॥  
 आणा वहे जिणंद की, श्री संघ में दिनन्द है ।  
 ऐसे सूरेश्वर नन्द के चरणों में कोटि वन्द हैं ॥  
 श्री कृष्ण गुरुवर देव का जो, ध्यान नित मन में धरे ।  
 कामना मन की फले सुख सम्पदा आती घरे ॥  
 गुणवन्त के गुण गाण से, सब कर्म पुद्गल निझरे ।  
 प्रातः उठ गुरु चरण में, सौभाग्य नित वन्दन करे ।

## श्री आदिश्वर स्वामी का

श्री आदीश्वर स्वामी हो, प्रणमू सिरनामी तुम भणी । प्रभु  
 अन्तर्जामी आप मोपर म्हैर करीजे हो । मेटीजे चिन्ता मनतणी  
 म्हारा काटो पुरङ्कित पाप हो ॥ टेर ॥ आदि धरम की कोधी  
 ॥ भरतक्षेत्र सर्पणी काल में प्रभु जगल्या धरम निवार ।  
 पहिला नरवर १ मुनिवर हो २ होतीर्थकर ३ जिनहुवा ४ केवली  
 ५ प्रभु तीरथ थाप्या चार ॥ २ ॥ मां मरुदेवी थारी हो गज  
 होदे भुक्ति पधारिया । तुम जनम्यां ही परमाण पिता नाभ  
 महाराजा हो । भव देव तणो कर नर थया प्रभु पाम्या, पद  
 निरवाण ॥ ३ ॥ भरतादिक सौ नंदन हो, वे पुत्री ब्रह्मी सुन्दरी ।  
 प्रभु ए थारा अंग जात सगला केवल पाया हो समाया अविचल  
 जोत में कोई श्रीभुवन में विख्यात ॥ ४ ॥ इत्यादिक बहू तारचा हो  
 जिनकुल में प्रभु तुम ऊपना, केइ आगम में अधिकार और  
 असंख्या तारचा हो । ऊवारचा सेवक आपरा प्रभु सरणा ही  
 आधार ॥ ५ ॥ अशरण शरण कहींजे हो प्रभु विरद विचारो  
 सायबा । केई हो गरीब निवाज शरण तुम्हारी आयो हो । हुं  
 चाकर निज चरणा तणो म्हारी सुणिये अरज आवाज ॥ ६ ॥  
 तु करुणा कर ठाकुर हो, प्रभु धरम दिवाकर जग गुरु केई  
 भव दुख दुकृत टाल । विनयचन्द ने आपो हो प्रभु निज गुण  
 संपतसास्वती । प्रभु दिनानाथ दयाल ॥ ७ ॥